LAWS1023: Public International Law

Aniket Sinha

June 2025

Contents

| 1 | Deve | elopment, Nature and Scope of Public International Law | 1 |
|---|-------|--|----|
| 2 | Sour | rces of Public International Law | 3 |
| | 2.1 | Treaties | 4 |
| | 2.2 | International Custom | 5 |
| | | 2.2.1 Elements of Custom | 5 |
| | | 2.2.2 Regional Customary International Law | 9 |
| | | 2.2.3 Persistent Objection | 9 |
| | 2.3 | General Principles of Law | 10 |
| | 2.4 | Judicial Decisions and the Teaching of Publicists | 12 |
| | | 2.4.1 United Nations General Assembly Resolutions | 13 |
| | | 2.4.2 UN Security Council | 15 |
| | 2.5 | Soft Law | 15 |
| 3 | The l | Law of Treaties | 17 |
| | 3.1 | Defining Treaties | 17 |
| | 3.2 | Entry into a Treaty | 20 |
| | 3.3 | Registration and Application of Treaties | 22 |
| | 3.4 | Reservations to Treaties | 24 |
| | | 3.4.1 Permissibility | 25 |
| | | 3.4.2 Acceptance and Objection | 26 |
| | | 3.4.3 Legal Effect | 27 |
| | 3.5 | Interpretation of Treaties | 28 |
| | | 3.5.1 Key Rules of Treaty Interpretation | 28 |
| | 3.6 | Invalidity of Treaties | 31 |
| | | 3.6.1 Void | 31 |
| | | 3.6.2 Invalid | 32 |
| | 3.7 | Termination, Withdrawal and Suspension | 33 |
| | | 3.7.1 Express or Implied Agreement | 34 |
| | | 3.7.2 Denunciation/Withdrawal | 34 |
| | | 3.7.3 Material Breach | 35 |
| | | 3.7.4 Impossibility | 36 |
| | | 3.7.5 Fundamental Change of Circumstances | 36 |
| | 3.8 | VCLT and Custom | 38 |
| 4 | Inte | rnational Law and Australian Law | 47 |
| - | 4.1 | Role of International Law in Domestic Law | 47 |
| | 4.2 | Monism and Dualism | 48 |

ii CONTENTS

| | 4.3 | Custom | ry International Law in Australian Law | | | | | | | | |
|---|------------|-------------------------------------|--|--|--|--|--|--|--|--|--|
| | | 4.3.1 | Criminal Law and Customary International Law | | | | | | | | |
| | 4.4 | Treaties | n Australian Law . . . | | | | | | | | |
| | 4.5 | Treaty N | aking Process | | | | | | | | |
| | 4.6 | | nting Treaties | | | | | | | | |
| | | 1 | Constitutional Considerations | | | | | | | | |
| | | | egislative Concerns | | | | | | | | |
| | 4.7 | | Interpretation and International Law | | | | | | | | |
| | | | Polites Principle | | | | | | | | |
| 5 | Dans | anality S | atehood and Self-Determination 63 | | | | | | | | |
| J | 5.1 | - | | | | | | | | | |
| | 3.1 | | 3 | | | | | | | | |
| | | | O | | | | | | | | |
| | 5 0 | | Other International Legal Persons | | | | | | | | |
| | 5.2 | | d | | | | | | | | |
| | | | he Montevideo Criteria for Statehood | | | | | | | | |
| | | | .2.1.1 Population | | | | | | | | |
| | | | .2.1.2 Territority | | | | | | | | |
| | | | .2.1.3 Government | | | | | | | | |
| | | | .2.1.4 Capacity to Enter into Relations with Other States 67 | | | | | | | | |
| | 5.3 | Recogni | ion of States | | | | | | | | |
| | 5.4 | Recogni | ion of Governments | | | | | | | | |
| | 5.5 | Right to | Self-Determination | | | | | | | | |
| | | | External Right to Self-Determination | | | | | | | | |
| | | | ndigenous Peoples and the Right to Self-Determination | | | | | | | | |
| 6 | Title | to Territ | ory 75 | | | | | | | | |
| U | 6.1 | | | | | | | | | | |
| | 6.2 | | Acquiring Territory | | | | | | | | |
| | 0.2 | | | | | | | | | | |
| | | | 1 | | | | | | | | |
| | | | 1.2.1.1 Intention to Occupy | | | | | | | | |
| | | | 2.2.1.2 Effective Occupation | | | | | | | | |
| | | | Cession | | | | | | | | |
| | | | Prescription | | | | | | | | |
| | | | Accretion and Avulsion | | | | | | | | |
| | | | Conquest | | | | | | | | |
| | 6.3 | 3 Contested Territorial Sovereignty | | | | | | | | | |
| | 6.4 | Maritim | Zones | | | | | | | | |
| | | 6.4.1 | Maritime Zones | | | | | | | | |
| | | | .4.1.1 Territorial Sea | | | | | | | | |
| | | | .4.1.2 Contiguous Zone | | | | | | | | |
| | | | .4.1.3 Exclusive Economic Zone (EEZ) | | | | | | | | |
| | | | .4.1.4 Continental Shelf | | | | | | | | |
| | | | .4.1.5 High Seas | | | | | | | | |
| | | | .4.1.6 Archipelagic Waters | | | | | | | | |
| | | | .4.1.7 Deep Seabed | | | | | | | | |
| | 6.5 | | ca | | | | | | | | |
| | 6.6 | | and Outer Space | | | | | | | | |
| | 0.0 | rmspace | and Outer Space | | | | | | | | |

CONTENTS iii

| | | 6.6.1 | Airspace | | | . 93 |
|---|-------|-----------|-------------|--|---------|-------|
| | | 6.6.2 | Outer Sp | pace | | . 93 |
| 7 | Iuris | diction | | | | 97 |
| | 7.1 | | ırisdiction | | | |
| | 7.2 | | | tion | | |
| | | 7.2.1 | | al Principle | | |
| | | 7.2.2 | | ity Principle | | |
| | | 7.2.3 | | re (Security) Principle | | |
| | | 7.2.4 | | ersonality Principle | | |
| | | 7.2.5 | | lity Principle | | |
| | | 7.2.3 | 7.2.5.1 | Piracy and Marine Terrorism | | |
| | | | 7.2.5.1 | Genocide | | |
| | | | 7.2.5.3 | War Crimes and Crimes Against Humanity | | |
| | | | 7.2.5.4 | Torture | | |
| | | 7.2.6 | | ion and Extradition | | |
| | 7.3 | | | | | |
| | 7.5 | 7.3.1 | | e ICJ | | |
| | | 7.3.1 | | e of Illegally Obtained Custody | | |
| | | | 7.3.1.1 | Domestic Courts | | |
| | | | 7.3.1.2 | International Criminal Courts | • • | . 118 |
| 8 | Imm | unity fro | om Jurisdi | ction I | | 119 |
| | 8.1 | Foreign | n State Imi | munity | | . 119 |
| | | 8.1.1 | Absolute | Immunity Principle | | . 120 |
| | | 8.1.2 | Restricti | ve Immunity Principle | | . 120 |
| | 8.2 | Foreign | | nmunities Act 1985 (Cth) | | |
| | | 8.2.1 | | - Immunity from Jurisdiction | | |
| | | 8.2.2 | | 0 - Submission to Jurisdiction | | |
| | | 8.2.3 | Section 1 | 1 - Commercial Transactions | | . 126 |
| | | 8.2.4 | | 2 - Employment Proceedings | | |
| | | 8.2.5 | | 3 - Injury and Damage to Property | | |
| | | 8.2.6 | Section 1 | 4 - Ownership, Possession and Use of Property | | . 129 |
| | | 8.2.7 | | 5 - Intellectual Property | | |
| | | 8.2.8 | | 6 - Membership of Bodies Corporate | | |
| | | 8.2.9 | | 7 - Arbitrations | | |
| | | 8.2.10 | | 8 - Actions in rem | | |
| | | 8.2.11 | | 9 - Bills of Exchange | | |
| | | 8.2.12 | | 20 - Taxes | | |
| | 8.3 | | | eign State Officials | | |
| | 0.5 | 8.3.1 | • | nt Heads of State | | |
| | | 0.5.1 | 8.3.1.1 | Civil Proceedings in Representative Capacity | | |
| | | | 8.3.1.2 | Civil or Criminal Proceedings in Personal Capacity | | |
| | | 822 | | | | |
| | | 8.3.2 | | Heads of State | | |
| | | 8.3.3 | | nt Foreign Affairs Ministers | | |
| | | 8.3.4 | The Troil | | | |
| | | 8.3.5 | | ngs Concerning State Torture | | |
| | | | 8.3.5.1 | Civil Proceedings in the United Kingdom | | |
| | | | 8.3.5.2 | Australia | | . 138 |

iv CONTENTS

| 9 | Imm | unity fro | om Jurisdiction II | 141 | | | | | | | | | | |
|----|-------|-----------|---|-----|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|
| | 9.1 | Immun | nity and International Criminal Courts | 141 | | | | | | | | | | |
| | 9.2 | Foreign | n State Immunity and <i>Jus Cogens</i> | 142 | | | | | | | | | | |
| | 9.3 | Foreign | Act of State Doctrine | 145 | | | | | | | | | | |
| | 9.4 | Diplom | natic Immunity and Inviolability | 147 | | | | | | | | | | |
| | | 9.4.1 | Diplomatic Inviolability | 152 | | | | | | | | | | |
| | | 9.4.2 | Diplomatic Agents | 156 | | | | | | | | | | |
| | | 9.4.3 | Abuse of Diplomatic Immunities | 159 | | | | | | | | | | |
| 10 | State | Respon | nsibility I | 163 | | | | | | | | | | |
| | | - | l Principles of State Responsibility | 163 | | | | | | | | | | |
| | 10.2 | | | 164 | | | | | | | | | | |
| | | 10.2.1 | Excess of Authority or Contravention of Instructions | 166 | | | | | | | | | | |
| | | 10.2.2 | Actions of Non-Organs | 167 | | | | | | | | | | |
| | | 10.2.3 | Conduct Directed or Controlled by a State | 167 | | | | | | | | | | |
| | | 10.2.4 | Absence of Official Authorities | 169 | | | | | | | | | | |
| | | 10.2.5 | Insurrectional Movements | 169 | | | | | | | | | | |
| | | 10.2.6 | Conduct Acknowledged and Adopted by a State | 170 | | | | | | | | | | |
| | 10.3 | Circum | nstances Precluding Wrongfulness (Defences) | 171 | | | | | | | | | | |
| | 10.4 | | tion, Standing and Implementation | 175 | | | | | | | | | | |
| | 10.5 | | quences of Wrongful Acts (Remedies) | 177 | | | | | | | | | | |
| 11 | State | Respon | nsibility II | 181 | | | | | | | | | | |
| | 11.1 | | ionary Nature of Diplomatic Protection | 181 | | | | | | | | | | |
| | 11.2 | | atment of Foreign Nationals | 183 | | | | | | | | | | |
| | 11.2 | 11.2.1 | Standard of Treatment | 183 | | | | | | | | | | |
| | 11.3 | | sibility Requirements | 185 | | | | | | | | | | |
| | 11.4 | | ality of Claims Requirement | 185 | | | | | | | | | | |
| | 11.1 | 11.4.1 | Multiple Nationalities | 187 | | | | | | | | | | |
| | 11.5 | | natic Protection of Corporations | 188 | | | | | | | | | | |
| | 11.6 | | | 191 | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | |
| 12 | | of Force | | 195 | | | | | | | | | | |
| | 12.1 | | Armed Force in International Law | 195 | | | | | | | | | | |
| | 12.2 | | ition on the Use of Force | 196 | | | | | | | | | | |
| | | 12.2.1 | Historical Development of the Law on the Use of Force | 196 | | | | | | | | | | |
| | | 12.2.2 | Charter of the United Nations, and the Present Law | 197 | | | | | | | | | | |
| | | | 12.2.2.1 Declaration on Friendly Relations 1970 | 198 | | | | | | | | | | |
| | | | 12.2.2.2 Resolution on Definition of Aggression 1974 | 199 | | | | | | | | | | |
| | | 12.2.3 | Use of Force | 199 | | | | | | | | | | |
| | | 12.2.4 | Threat of Force | 200 | | | | | | | | | | |
| | 12.3 | Self-De | | 200 | | | | | | | | | | |
| | | 12.3.1 | Armed Attack | 201 | | | | | | | | | | |
| | | 12.3.2 | Timing of an Armed Attack | 202 | | | | | | | | | | |
| | | | 12.3.2.1 Anticipatory Self-Defence | 203 | | | | | | | | | | |
| | | | 12.3.2.2 Pre-Emptive Self-Defence | 203 | | | | | | | | | | |
| | | 12.3.3 | Necessity and Proportionality | 204 | | | | | | | | | | |
| | | 12.3.4 | Terrorist Attacks | 206 | | | | | | | | | | |
| | 12.4 | Collect | ive Security | 207 | | | | | | | | | | |

CONTENTS v

| | 12.5 | Human | itarian Inte | ervention | and the | e Resp | onsibi | lity 1 | to Pr | otect | · . | | | . 208 |
|----|-------|-----------|---------------|-------------|-----------|----------|--------|--------|-------|-------|-----|------|--|-------|
| | | 12.5.1 | Humanita | rian Inter | ventior | 1 | | | | | | | | . 208 |
| | | 12.5.2 | Responsib | ility to Pr | otect | | | | | | | | | . 208 |
| 13 | Inter | mational | l Dispute Se | ettlement | | | | | | | | | | 209 |
| 13 | 13.1 | | ation | | | | | | | | | | | |
| | | _ | | | | | | | | | | | | |
| | 13.2 | | ion | | | | | | | | | | | |
| | 13.3 | | · | | | | | | | | | | | |
| | 13.4 | | ation | | | | | | | | | | | |
| | 13.5 | | ition | | | | | | | | | | | |
| | 13.6 | | l Settlement | | | | | | | | | | | |
| | 13.7 | | tional Cour | | | | | | | | | | | |
| | | 13.7.1 | Jurisdictio | | | | | | | | | | | |
| | | | | Reciproci | | | | | | | | | | |
| | | | | Existence | | | | | | | | | | |
| | | 13.7.2 | Admissibil | lity | | | | | | | | | | . 221 |
| | | | 13.7.2.1 | Indispens | able Th | nird Pa | rty . | | | | | | | . 221 |
| | | | 13.7.2.2 | Non-Just | iciable [| Disput | e | | | | | | | . 222 |
| | | 13.7.3 | Provisiona | l Measure | s | | | | | | | | | . 223 |
| | | 13.7.4 | Advisory J | urisdictio | n | | | | | | | | | . 225 |
| | Scaff | `11 | | | | | | | | | | | | 227 |
| А | | | . NT . | 1.0 | C | `n 11· | т. | | 1 | т | | | | 227 |
| | A.1 | | pment, Nati | | | | | | | | | | | |
| | A.2 | | s of Public I | | | | | | | | | | | |
| | A.3 | | w of Treatie | | | | | | | | | | | |
| | A.4 | | tional Law | | | | | | | | | | | |
| | A.5 | | ality, Stateh | | | | | | | | | | | |
| | A.6 | | Territory | | | | | | | | | | | |
| | A.7 | | ırisdiction | | | | | | | | | | | |
| | A.8 | | ity from Jui | | | | | | | | | | | |
| | A.9 | | ity From Ju | | | | | | | | | | | |
| | A.10 | State R | .esponsibilit | :y I (Wror | ıgful A | cts of S | State) | | | | | | | . 269 |
| | A.11 | State R | esponsibilit. | y II (Dipl | omatic | Prote | ction) | | | | | | | . 277 |
| | A.12 | Use of 1 | Force | | | | | | | | | | | . 283 |
| | A.13 | Interna | tional Disp | ute Settle | ment | | | | | | | | | . 289 |
| В | Tuto | rial Prol | Jame | | | | | | | | | | | 295 |
| Ь | B.3 | | S | | | | | | | | | | | |
| | D.3 | | | | | | | | | | | | | |
| | | B.3.1 | Objectives | | | | | | | | | | | |
| | | B.3.2 | Applicabil | | | | | | | | | | | |
| | | B.3.3 | Can Astra | | | | | | | | | | | |
| | | B.3.4 | Treaty Into | | | | | | | | | | | |
| | | B.3.5 | Customary | | | | | | | | | | | |
| | | B.3.6 | Benthos' P | | | | | | | | | | | |
| | | B.3.7 | Socioecono | | | | | | | | | | | |
| | | B.3.8 | Conclusion | | | | | | | | | | | |
| | B.4 | Interna | tional Law | and Aust | calian L | aw | | | | | | | | . 299 |
| | B.5 | Persona | ality, Stateh | ood and S | Self-Det | termin | ation | | | | | | | . 304 |
| | | B.5.1 | Right to S | elf-Detern | ninatio | n | | | | | | | | . 304 |

vi CONTENTS

| | B.5.2 | Statehood of ISD | 305 |
|------|------------------|---|-----|
| | B.5.3 | Recognition of ISD | 306 |
| | B.5.4 | Violation of Bulgan's Territorial Integrity | 306 |
| | B.5.5 | Lawfulness of SDAZ Establishment | 306 |
| B.6 | Title to | Territory | 307 |
| | B.6.1 | Issue for Arema | 307 |
| | B.6.2 | Binton's Claims | 308 |
| | B.6.3 | Validity of 2025 Law and Maritime Claims | 309 |
| B.7 | State Iu | urisdiction | 310 |
| | B.7.1 | Istan's Jurisdiction to Prosecute Renee | 311 |
| | | B.7.1.1 Criminal Jurisdiction | 311 |
| | | B.7.1.2 Civil Jurisdiction | 312 |
| | | B.7.1.3 Enforcement Jurisdiction | 312 |
| | B.7.2 | Australia's Jurisdiction to Prosecute Istan's Chief Prosecutor | 312 |
| | | B.7.2.1 Criminal Jurisdiction | 312 |
| B.8 | Immun | nity from Jurisdiction I | 313 |
| | B.8.1 | Question 1: Evolution of State Immunity Since 1985 | 314 |
| | B.8.2 | Question 2: Exceptions to Immunity and Potential Criminal Exceptions | 314 |
| | B.8.3 | Question 3: Ambiguities in FSIA and Immunity Scope | 315 |
| | B.8.4 | Question 4: Enforcement Challenges and Broader Immunity Trends | 316 |
| B.9 | | nity from Jurisdiction II | 316 |
| D.) | B.9.1 | Question 1: Diplomatic Inviolability and Obligations of the Receiving | 310 |
| | D.7.1 | State | 317 |
| | B.9.2 | Question 2: Civil Proceedings and Potential Defendants | 318 |
| | B.9.3 | Question 3: Liability of Istan, Ambassador, and Executive Assistant (EA) | 319 |
| | B.9.4 | Question 4: Criminal Jurisdiction and Immunity | 319 |
| | B.9.5 | Question 5: Civil Jurisdiction for Commercial Activities | 320 |
| B.10 | | Responsibility I | 320 |
| D.10 | B.10.1 | General Principles of State Responsibility | 321 |
| | B.10.2 | Responsibility of Pacific (P) for Funding/Training Insures in Arcadia (A) | 321 |
| | B.10.2 | Responsibility of Arcadia (A) for Damages to Shoemakers (S) | 322 |
| | B.10.4 | Responsibility of Arcadia (A) for Looting in Pacifica (PQ) and Rocket | 922 |
| | D.10.1 | Attacks | 323 |
| B.11 | State R | Responsibility II | 325 |
| D.11 | B.11.1 | Objective Purpose | 325 |
| | B.11.2 | Legal Status | 326 |
| | B.11.3 | How to Give Effect | 327 |
| B.12 | Use of | | 327 |
| D.12 | B.12.1 | UN Charter Article 2(4) | 328 |
| | B.12.1 | Humanitarian Intervention and Self-Determination | 329 |
| | B.12.2 B.12.3 | UN Security Council Veto and General Assembly | 329 |
| | B.12.3 B.12.4 | | 329 |
| | B.12.4 B.12.5 | Xeta's Actions (Operation Panoptes) | 330 |
| | B.12.5 B.12.6 | Zenith's Bombings | 331 |
| R 12 | | nentation, Enforcement and Accountability | 331 |
| B.13 | B.13.1 | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | 332 |
| | B.13.1 | Part A: Establishing ICJ Jurisdiction | |
| | | Part B: Substantive Claims and Jurisdictional Considerations | 333 |
| | B.13.3 | Part C: Alternative Jurisdictional Pathways and Third-Party Issues | 334 |

| vii |
|-----|
| 334 |
| 335 |
| 343 |
| |

viii CONTENTS

List of Cases

| 2.0.0.1 | Ure v Commonwealth (2016) 329 ALR 452 |
|---------|--|
| 2.2.1.1 | North Sea Continental Shelf Cases (Germany v Denmark; Germany v Netherlands) |
| [1 | .969] ICJ Rep 3 |
| 2.2.1.2 | Military and Paramilitary Activities in and against Nicaragua [1986] ICJ Rep 14 |
| 2.2.1.3 | Nicaragua v Colombia [2023] ICJ Rep 413 |
| 2.2.2.1 | Asylum Case (Colombia v Peru) [1950] ICJ Rep 226 |
| 2.2.2.2 | R (app. Al-Saadoon v Sec. of Defence) [2010] 1 All ER 271 |
| 2.2.3.1 | Anglo Norwegian Fisheries Case (UK v Norway) [1951] ICJ Rep 116 |
| 2.3.0.1 | Bay of Bengal (Bangladesh/Myanmar) [2012] ILTOS 12 |
| 2.3.0.2 | Chagos Marine Protected Area Arbitration (Mauritius v United Kingdom) (2015) |
| X | XXI RIAA 359 |
| 2.4.0.1 | The Paquete Habana 175 US 677 (1900) (United State Supreme Court) |
| 2.4.1.1 | Legality of the Threat or Use of Nuclear Weapons [1996] ICJ Rep 254 |
| 3.1.0.1 | Legal Status of Eastern Greenland (Denmark v Norway) (1993) PCIJ Series A/B, |
| N | Io 53 |
| 3.1.0.2 | Maritime Delimitation and Territorial Questions (Qatar v Bahrain) (1994) ICJ Rep |
| 1 | 12 |
| 3.1.0.3 | Nuclear Test Cases (Australia v France) (1974) ICJ Rep 253 |
| 3.4.3.1 | Republic of India v CCDM Holdings, LLC [2025] FCAFC 2 |
| 3.5.1.1 | Whaling in the Antarctic Case [2014] ICJ Rep 226 |
| 3.7.5.1 | Gabčíkovo-Nagymaros Case [1997] ICJ Rep 7 |
| 4.1.0.1 | Australian Competition and Consumer Commission v PT Garuda (No 9) [2013] |
| F | CA 323 |
| 4.3.0.1 | Chow Hung Ching v R (1949) 77 CLR 449 |
| 4.3.0.2 | Mabo v Queensland (No 2) (1992) 175 CLR 1 |
| 4.3.0.3 | Habib v Commonwealth (2010) 183 FCR 62 |
| 4.3.1.1 | Nulyarimanna v Thompson (1999) 165 ALR 621 |
| 4.3.1.2 | R v Jones [2006] 2 All ER 741 |
| 4.4.0.1 | <i>Dietrich v R</i> [1992] HCA 57 |
| 4.4.0.2 | Bradley v Commonwealth (1973) 128 CLR 557 |
| 4.6.1.1 | Horta v Commonwealth (1994) 181 CLR 183 |
| 4.6.1.2 | Koowarta v Bjelke-Petersen (1982) 153 CLR 168 |
| 4.6.1.3 | Commonwealth v Tasmania (1983) 158 CLR 1 |
| 4.7.1.1 | Polites v Commonwealth (1945) 70 CLR 60 |
| 4.7.1.2 | Al-Kateb v Godwin (2004) 219 CLR 562 |
| 5.1.2.1 | WHO Advisory Opinion [1996] ICJ Rep 66 |
| 5.1.2.2 | Reparations for Injuries Case [1949] ICJ Rep 174 |
| 5.1.2.3 | Texaco Overseas Petroleum Company v Libya (1977) 53 ILR 389 |
| 5.2.1.1 | Customs Union Between Germany and Austria (1931) PCIJ Series A/B No 41 |

x LIST OF CASES

| 5.5.0.1 | Burkina Faso/Mali [1986] ICJ Rep 554 | 71 |
|---------|--|-----|
| 5.5.0.2 | Chagos Islands Advisory Opinion [2019] ICJ Rep 95 | 72 |
| 5.5.1.1 | Reference Re Secession of Quebec (1988) 2 SCR 217 | 73 |
| 6.2.1.1 | Western Sahara Advisory Opinion [1975] ICJ Rep 162 | 76 |
| 6.2.1.2 | Mabo v Queensland (No 2) (1992) 175 CLR 1 | 76 |
| 6.2.1.3 | Clipperton Island Arbitration (France v Mexico) 1932 | 78 |
| 6.2.3.1 | Island of Palmas Case (Netherlands v US) (1928) | 79 |
| 6.3.0.1 | Legal Status of Eastern Greenland (Norway v Denmark) (1933) PCIJ | 80 |
| 6.3.0.2 | Case Concerning Sovereignty Over Pulau Ligitan and Pulau Spiadan (Indonesia v | |
| M | Ialaysia) [2002] ICJ Rep 625 | 81 |
| 6.3.0.3 | Case Concerning Sovereignty Over Pedra Branca/Pulau Batu Puteh, Middle Rocks | |
| aı | nd South Ledge (Malaysia/Singapore) [2008] ICJ Rep 12 | 81 |
| 6.4.1.1 | South China Sea Arbitration (Philippines v China) [2016] PCA | 92 |
| 7.2.1.1 | SS Lotus (France v Turkey) (1927) PCIJ | 98 |
| 7.2.1.2 | R v Turnbull; ex parte Petroff (ACTSC, 1971) | 100 |
| 7.2.1.3 | R v Disun; R v Nardin (WASC, 2003) | 100 |
| 7.2.1.4 | <i>Ward v R</i> (1980) 142 CLR 308 | 100 |
| 7.2.2.1 | <i>XYZ v Commonwealth</i> (2006) 227 CLR 532 | 102 |
| 7.2.3.1 | A-G v Eichmann (Dist Ct. of Jerusalem, 1961) | 103 |
| 7.2.3.2 | US v Benitez (US Ct. of A for 11 th Cir, 1984) | 103 |
| 7.2.3.3 | <i>Joyce v DPP</i> (HoL, 1946) | 103 |
| 7.2.3.4 | R v Casement (1917) Eng Ct. of Crim. A | 103 |
| 7.2.4.1 | US v Yunis (US Ct. of A for 11 th Cir, 1991) | 104 |
| 7.2.5.1 | US v Dire (Court of Appeal for the 4 th Circuit, 2012) | 109 |
| 7.2.5.2 | Achille Lauro Incident (1985) | 109 |
| 7.2.5.3 | A-G v Eichmann (Dist Ct of Jerusalem, 1961) | 110 |
| 7.2.5.4 | Nulyarimma v Thompson (1999) FCAFC | 110 |
| 7.2.5.5 | Arrest Warrant (Democratic Republic of the Congo v Belgium) (2002) ICJ | 111 |
| 7.2.5.6 | Criminal Complaint against Donald Rumsfeld (2007) German Prosecutor-General | 111 |
| 7.2.5.7 | <i>Pinochet (No 3)</i> [1999] 2 All ER 97 | 112 |
| 7.2.5.8 | National Commissioner of the South African Police Service v Southern African Hu- | |
| m | nan Rights Litigation Centre (2013) SA Const Court | 113 |
| 7.2.6.1 | Belgium v Senegal (2012) ICJ | 113 |
| 8.1.1.1 | The Schooner Exchange v McFaddon (US Supreme Court, 1812) | 120 |
| 8.1.2.1 | I Congresso del Partido (1983) HoL | 121 |
| 8.2.1.1 | <i>Pt Garuda v ACCC</i> [2012] HCA 33 | 122 |
| 8.2.1.2 | Firebird Global Master Fund II Ltd v Nauru (2015) 326 ALR 396 | 123 |
| 8.2.2.1 | Kingdom of Spain v Infrastructure Services Luxembourg S.à.r.l. [2023] HCA 11 | 124 |
| 8.2.2.2 | Republic of India v CCDM Holdings, LLC [2025] FCAFC 2 | 125 |
| 8.2.3.1 | Australian International Islamic College Board Inc v Saudi Arabia [2013] QCA 129 | 127 |
| 8.2.5.1 | Tokic v Government of Yugoslavia (1999) NSWSC Unreported | 129 |
| 8.3.1.1 | Thor Shipping A/S v 'Al Duhail' (2008) 252 ALR 20 | 134 |
| 8.3.1.2 | Tatchell v Mugabe (2004) 136 ILR 572 | 134 |
| 8.3.1.3 | Gaddafi (2001) 125 ILR 490 | 135 |
| 8.3.2.1 | Harb v Prince Abdul Aziz Bin Fahd Bin Abdul Aziz [2015] EWCA Div 481 | 135 |
| 8.3.3.1 | Arrest Warrant Case [2002] ICJ Rep 3 | 136 |
| 8.3.5.1 | Al Adsani v Kuwait (1995) 103 ILR 420 (QBD and CA) | 138 |
| 8.3.5.2 | Jones v Saudi Arabia [2007] AC 270 | 138 |

LIST OF CASES xi

| 8.3.5.3 | Zhang v Zemin [2010] NSWCA 255 | 138 |
|----------|--|-----|
| 9.2.0.1 | Jurisdictional Immunities of the State (Germany v Italy) [2012] ICJ Rep 99 | 142 |
| 9.3.0.1 | <i>Spycatcher Case</i> (1988) 165 CLR 30 | 145 |
| 9.3.0.2 | Hicks v Ruddock (2007) 156 FCR 574 | 145 |
| 9.3.0.3 | Habib v Commonwealth (2010) 183 FCR 62 | 146 |
| 9.4.1.1 | Saudi Arabian Cultural Mission v Alramadi [2024] FCA 1060 | 153 |
| 9.4.1.2 | Tehran Hostages [1980] ICJ Rep 3 | 154 |
| 9.4.1.3 | Minister for Foreign Affairs & Trade v Magno (1992) 37 FCR 298 | 154 |
| 9.4.2.1 | Basfar v Wong [2022] UKSC 20 | 157 |
| 9.4.3.1 | Dickinson v Del Solar [1930] 1 KB 376 | 160 |
| 9.4.3.2 | Georgian Diplomat in Washington D.C. (1998) | 160 |
| 10.2.0.1 | Corfu Channel [1949] ICJ Rep 4 | 164 |
| 10.2.0.2 | Trail Smelter (1938/1941) III RIAA 1905 | 165 |
| 10.2.0.3 | Immunity from Legal Process Advisory Opinion [1999] ICJ Rep 62 | 165 |
| 10.2.0.4 | Kalgoorlie Riots Incident (1934) | 165 |
| 10.2.1.1 | Youmans v Mexico (1926) IV RIAA 110 | 166 |
| 10.2.1.2 | Caire Claim (1929) 5 ADPIL Cases 146 | 166 |
| 10.2.3.1 | Military and Paramilitary Activities in and against Nicaragua [1986] ICJ Rep 14. | 168 |
| 10.2.3.2 | Genocide Case (Bosnia/Herzegovina v Serbia/Montenegro) [2007] ICJ Rep 43 | 168 |
| 10.2.5.1 | Bolivar Railways Company Case (1903) IX RIAA 445 | 170 |
| 10.2.5.2 | Short v Iran (1987) Iran-USCTR 76 (Iran/US Claims Tribunal) | 170 |
| 10.2.6.1 | US Diplomatic and Consular Staff in Tehran [1980] ICJ Rep 3 | 170 |
| 10.2.6.2 | Home Missionary Society Claim (1921) VI RIAA 42 | 171 |
| 10.2.6.3 | Asian Agricultural Products (1991) CSID Case No. ARB/87/3 | 171 |
| 10.3.0.1 | Law Debenture Trust Corpn plc v. Ukraine [2023] UKSC 11 | 172 |
| 10.3.0.2 | Rainbow Warrior Ruling (1986) XIX RIAA 199 | 173 |
| 10.3.0.3 | Rainbow Warrior Arbitration (1990) XX RIAA 215 | 173 |
| 10.4.0.1 | Belgium v Senegal | 176 |
| 10.4.0.2 | Whaling in the Antarctic Case [2014] | 176 |
| 10.5.0.1 | Chorzow Factory Case (1928) PCIJ (Ser. A) No. 17 | 177 |
| 11.1.0.1 | Barcelona Traction [1970] ICJ Rep 3 | 182 |
| 11.1.0.2 | Abbasi v Secretary of State [2002] EWCA Civ 1598 | 182 |
| 11.1.0.3 | Hicks v Ruddock (2007) 156 FCR 574 | 182 |
| 11.2.1.1 | <i>Neer v Mexico</i> (1926) 4 RIAA 60 | 183 |
| 11.2.1.2 | Quintanilla (1926) 4 RIAA 60 | 184 |
| 11.2.1.3 | Loewen Group v US (2006) NAFTA Arbitration Tribunal | 184 |
| 11.4.0.1 | Re (Al Rawi and Others) Secretary of State [2006] EWCA Civ 1279 | 185 |
| 11.4.0.2 | Nottebohm Case (Liechtenstein v Guatemala) [1955] ICJ Rep 4 | 186 |
| 11.5.0.1 | Barcelona Traction Case (Belgium v Spain) [1970] ICJ Rep 3 | 188 |
| 11.5.0.2 | Diallo Case (Guinea v DRC) [2007] ICJ Rep 582 | 190 |
| 12.3.1.1 | Oil Platforms (Iran v US) (2003) | 202 |
| 12.3.3.1 | <i>Caroline Case</i> (1841/1842) | 204 |
| 12.3.3.2 | Oil Platforms (Iran v US) (2003) | 204 |
| 12.3.3.3 | Armed Activities Case (DRC v Uganda) (2005) | 205 |
| 12.3.3.4 | Nicaragua (Nicaragua v US) (1986) | 205 |
| 13.1.0.1 | Ukraine v Russia [2019] ICJ Rep 558 | 210 |
| 13.1.0.2 | South West Africa [1962] ICJ 319 | 211 |
| 13.3.0.1 | Dogger Bank Inquiry (1904) | 214 |

xii LIST OF CASES

| 13.4.0.1 | Australia-Timor Leste Conciliation (2016) | 214 |
|----------|--|-----|
| 13.7.1.1 | Nicaragua v United States [1984] ICJ Rep 392 | 219 |
| 13.7.1.2 | Norwegian Loans Case (France v Norway) [1957] ICJ Rep 9 | 220 |
| 13.7.1.3 | Interhandel Case (Switzerland v United States) [1959] ICJ Rep 6 | 220 |
| 13.7.1.4 | Marshall Islands Case [2016] ICJ Rep 833 | 220 |
| 13.7.2.1 | Monetary Gold (Italy v France; UK and US) [1954] ICJ Rep 19 | 221 |
| 13.7.2.2 | East Timor (Portugal v Australia) [1955] ICJ Rep 6 | 222 |
| 13.7.2.3 | Nauru v Australia [1992] ICJ Rep 240 | 222 |
| 13.7.2.4 | Legal Consequences of the Construction of a Wall in Occupied Palestinian Territory | |
| [20 | 004] ICJ 136 | 222 |
| 13.7.3.1 | La Grand (Germany v United States) [2001] ICJ Rep 466 | 223 |
| 13.7.3.2 | Application of the Convention on the Prevention and Punismnent of Crime of Geno- | |
| cid | le in the Gaza Strip (South Africa v Israel) [2024] ICJ Rep 1 | 224 |

List of Statute

| 2.0.0.1 | Statute of the International Court of Justice Article 38 | 3 |
|----------|---|-----|
| 2.4.0.1 | Statute of the International Court of Justice Article 59 | 12 |
| 4.4.0.1 | Constitution s 61 | 54 |
| 4.7.0.1 | Acts Interpretation Act 1901 (Cth) s 15AB(1)-(2) | 58 |
| 4.7.1.1 | Australian Constitution s 128 | 61 |
| 5.4.0.1 | Foreign Corporations (Application of Laws) Act 1989 (Cth) | 70 |
| 7.2.1.1 | <i>Crimes Act 1900 ss 10A, 10C</i> | 101 |
| 7.2.1.2 | <i>Crimes Act 1900 s 10C</i> | 101 |
| 7.2.4.1 | Criminal Code 1995 (Cth) Div 115 - Harming Australians | 104 |
| 7.3.0.1 | Rome Statute of the International Criminal Court Article 12 | 114 |
| 7.3.0.2 | Rome Statute of the International Criminal Court Article 17 | 115 |
| 7.3.0.3 | Rome Statute of the International Criminal Court Article 25 | 116 |
| 7.3.0.4 | Rome Statute of the International Criminal Court Article 27 | 117 |
| 8.2.1.1 | Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 9 | 121 |
| 8.2.2.1 | Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 10 | 123 |
| 8.2.3.1 | Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 11 | 126 |
| 8.2.4.1 | Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 12 | 127 |
| 8.2.5.1 | Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 13 | 129 |
| 8.2.6.1 | Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 14 | 129 |
| 8.2.7.1 | Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 15 | 130 |
| 8.2.8.1 | Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 16 | 130 |
| 8.2.9.1 | Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 17 | 131 |
| 8.2.10.1 | Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 18 | 132 |
| 8.2.11.1 | Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 19 | 133 |
| 8.2.12.1 | Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 20 | 133 |
| 9.1.0.1 | Rome Statute of the International Criminal Court Article 27 | 141 |
| 9.1.0.2 | Rome Statute of the International Criminal Court Article 13 | 142 |
| 13.7.1.1 | Statute of the ICJ Article 34 | 217 |
| 13.7.1.2 | Statute of the ICJ Article 59 | 217 |
| 13.7.1.3 | Statute of the ICJ Article 36 | 217 |
| 13.7.3.1 | Statute of the ICJ Article 41 | 223 |

xiv LIST OF STATUTE

List of Conventions

| 2.0.0.1 | Charter of the United Nations Article 92 | 3 |
|---------|---|----|
| 2.2.3.1 | International Law Commission 2019 Report Chapter V Conclusion 14 | 9 |
| 2.4.2.1 | Charter of the United Nations Article 25 | 15 |
| 3.1.0.1 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 2 | 17 |
| 3.1.0.2 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 3 | 18 |
| 3.2.0.1 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 6 | 21 |
| 3.2.0.2 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 7 | 21 |
| 3.2.0.3 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 24 | 22 |
| 3.3.0.1 | Charter of the United Nations Article 102 | 23 |
| 3.3.0.2 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 80 | 23 |
| 3.3.0.3 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 26 | 23 |
| 3.3.0.4 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 27 | 23 |
| 3.3.0.5 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 46 | 23 |
| 3.3.0.6 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 18 | 24 |
| 3.3.0.7 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 34 | 24 |
| 3.4.1.1 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 19 | 25 |
| 3.4.2.1 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 20 | 26 |
| 3.4.3.1 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 21 | 27 |
| 3.5.1.1 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 31 | 28 |
| 3.5.1.2 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 32 | 30 |
| 3.6.1.1 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 51 | 31 |
| 3.6.1.2 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 52 | 31 |
| 3.6.1.3 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 53 | 31 |
| 3.6.1.4 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 64 | 31 |
| 3.6.2.1 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 46 | 32 |
| 3.6.2.2 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 47 | 32 |
| 3.6.2.3 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 48 | 32 |
| 3.6.2.4 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 49 | 32 |
| 3.6.2.5 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 79 | 33 |
| 3.7.1.1 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 54 | 34 |
| 3.7.1.2 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 57 | 34 |
| 3.7.2.1 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 56 | 34 |
| 3.7.3.1 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 60 | 35 |
| 3.7.4.1 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 61 | 36 |
| 3.7.5.1 | 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 62 | 37 |
| 4.3.1.1 | 1948 Convention on the Prevention and Punishment of the Crime of Genocide Arti- | |
| c] | le 2 | 52 |
| 5.2.0.1 | 1933 Montevideo Convention on the Rights and Duties of States Article 1 | 66 |
| 6.4.0.1 | UNCLOS Articles 5, 7 | 83 |

| 6.4.1.1 | UNCLOS Articles 2-4 | 84 |
|----------|---|-----|
| 6.4.1.2 | UNCLOS Article 33 | 85 |
| 6.4.1.3 | UNCLOS Articles 55-58 | 85 |
| 6.4.1.4 | UNCLOS Articles 76-77 | 87 |
| 6.4.1.5 | UNCLOS Articles 86-90 | 89 |
| 6.4.1.6 | UNCLOS Articles 46-49 | 90 |
| 6.5.0.1 | 1959 Antarctic Treaty Article 4 | 93 |
| 6.6.2.1 | 1967 Outer Space Treaty | 93 |
| 6.6.2.2 | 1979 Agreement Governing the Activities of States on the Moon and Other Celestial | |
| Вс | dies Article 11 | 94 |
| 7.2.5.1 | UNCLOS Article 101 | 108 |
| 7.2.5.2 | 1984 Convention Against Torture Article 1 | 112 |
| 9.4.0.1 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 1 | 148 |
| 9.4.0.2 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 3 | 149 |
| 9.4.0.3 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 4 | 149 |
| 9.4.0.4 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 5 | 149 |
| 9.4.0.5 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 6 | 150 |
| 9.4.0.6 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 7 | 150 |
| 9.4.0.7 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 8 | 150 |
| 9.4.0.8 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 9 | 150 |
| 9.4.0.9 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 10 | 150 |
| 9.4.0.10 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 11 | 151 |
| 9.4.0.11 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 12 | 151 |
| 9.4.0.12 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 13 | 151 |
| 9.4.0.13 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 14 | 151 |
| 9.4.0.14 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 15 | 152 |
| 9.4.0.15 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 16 | 152 |
| 9.4.0.16 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 17 | 152 |
| 9.4.0.17 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 18 | 152 |
| 9.4.0.18 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 19 | 152 |
| 9.4.1.1 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 22 | 152 |
| 9.4.1.2 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 29 | 155 |
| 9.4.1.3 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 29 | 156 |
| 9.4.2.1 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 31 | 156 |
| 9.4.2.2 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 37 | 158 |
| 9.4.2.3 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 33 | 159 |
| 9.4.3.1 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 32 | 159 |
| 9.4.3.1 | 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 32 | 160 |
| 10.1.0.1 | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Arti- | 160 |
| | | 1/2 |
| 10.2.0.1 | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Ar- | 163 |
| | ele 4 | 165 |
| | | 103 |
| 10.2.1.1 | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Arti- | 1// |
| | | 166 |
| | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Arti- | 167 |
| | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Arti- | 107 |
| 10.2.3.1 | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Arti- | 167 |
| CI | Ξ() | 107 |

LIST OF CONVENTIONS xvii

| | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Ar- |
|----------|---|
| | ele 9 |
| 10.2.5.1 | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Arti- |
| | 210 |
| 10.2.6.1 | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Ar- |
| tic | ·le 11 |
| 10.3.0.1 | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Ar- |
| tic | ·le 20 |
| 10.3.0.2 | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Ar- |
| tic | ele 21 |
| 10.3.0.3 | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Ar- |
| | de 22 |
| 10.3.0.4 | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Ar- |
| | ·le 23 |
| 10.3.0.5 | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Ar- |
| | ele 24 |
| 10.3.0.6 | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Ar- |
| | ·le 25 |
| 10.4.0.1 | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Ar- |
| | ele 42 |
| | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Ar- |
| | le 48 |
| | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Ar- |
| | tle 46 |
| | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Ar- |
| | ele 47 |
| | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Ar- |
| | tle 31 |
| | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Ar- |
| | le 34 |
| | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Ar- |
| | le 35 |
| 10.5.0.4 | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Ar- |
| | le 36 |
| 10.5.0.5 | 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Ar- |
| | le 37 |
| 11.3.0.1 | 2001 Articles on State Responsibility for Internationally Wrongful Acts Article 44 . |
| 11.4.0.1 | 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 4 |
| 11.4.0.2 | 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 8 |
| 11.4.1.1 | 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 6 |
| 11.4.1.2 | 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 7 |
| 11.5.0.1 | 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 9 |
| 11.5.0.1 | 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 11 |
| 11.5.0.2 | 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 12 |
| 11.6.0.1 | |
| | Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 44 |
| 11.6.0.2 | 2006 Draft Articles on Diplomatic Protections Article 14 |
| 11.6.0.3 | 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 15 |
| 12.2.1.1 | 1919 Covenant of the League of Nations Article 12 |

| | 197 |
|-----|-----|
| | 197 |
| | 198 |
| | 199 |
| | 199 |
| | 200 |
| | 207 |
| | 207 |
| | 207 |
| . 2 | 209 |
| . 2 | 209 |
| 9 | 213 |
| 10 | 213 |
| 11 | 213 |
| 12 | 213 |
| 13 | 213 |
| 14 | 213 |
| | |

Topic 1

Development, Nature and Scope of Public International Law

Topic 2

Sources of Public International Law

- In contrast to domestic systems of law, the sources of public international law are often
 more challenging to ascertain, as there is a wide variety of material sources, and limited
 machinery for formal law-making (e.g., there's no global legislature, no global court with
 universal compulsory jurisdiction, and a lack of precedent)
- The source doctrine in international law is state-centric, and hinges on states consenting to be bound by the sources of international law
- The International Court of Justice (ICJ) is the primary judicial organ of the United Nations, with the Statute of the International Court of Justice forming an integral part of the Charter of the United Nations

Charter of the United Nations Article 92

The International Court of Justice shall be the principal judicial organ of the United Nations. It shall function in accordance with the annexed Statute, which is based upon the Statute of the Permanent Court of International Justice and forms an integral part of the present Charter.

• The accepted sources of public international law are set out in Article 38(1) of the *Statute* of the *International Court of Justice*

Statute of the International Court of Justice Article 38

- 1. The Court, whose function is to decide in accordance with international law such disputes as are submitted to it, shall apply:
 - a. international conventions, whether general or particular, establishing rules expressly recognized by the contesting states;
 - b. international custom, as evidence of a general practice accepted as law;
 - c. the general principles of law recognized by civilized nations;
 - d. subject to the provisions of Article 59, judicial decisions and the teachings of the most highly qualified publicists of the various nations, as subsidiary means for the determination of rules of law.
- 2. This provision shall not prejudice the power of the Court to decide a case ex aequo et

bono, if the parties agree thereto.

- There is an emphasis on state consent to be bound to the jurisdiction of the ICJ
- There is no clear hierarchy governing which facet or source is to be applied first (e.g., treaties do not always trump international conventions)
 - However, the sources in art 38(1)(d) (judicial decisions and the writings of publicists) are 'subsidiary' rather than direct sources
- States always remain the primary actors in the application of international law
- Art 38(1) is 'generally regarded as a complete statement of the sources of international law' in Australia, following *Ure v Commonwealth* (2016) 329 ALR 452

Ure v Commonwealth (2016) 329 ALR 452

This case involved two highly remote islands (Elizabeth Reef and Middleton Reef) in the southwest Pacific Ocean, around 80 nautical miles north of Lord Howe Island. In 1970, Mr Ure erected a sign on the bridge of a ship wrecked on Middleton Reef above the high-tide mark, and claimed title to the islands.

10 years later, his son brought proceedings against the Commonwealth (Mr Ure had died), the question for determination on the assumed facts (including the assumed fact that, in 1970, the islands were unoccupied and constituted *terra nullius* in respect of which no state had claimed sovereignty) was whether, under public international law, there existed a rule that an individual may acquire proprietary title in unoccupied land not claimed by any sovereign state.

The Federal Court examined the sources of the aforementioned rule. At paragraph [15], it was held that "Australian courts have accepted that Art[icle] 38(1) [of the Statute of the International Court of Justice 1945] sets out the sources of international law: Polyukhovich v. The Commonwealth (1991) 172 CLR 501 at 559 per Brennan J" The Court held that a rule of customary international law requires proof of both (following North Sea Continental Shelf Cases (FRG v Denmark; FRG v The Netherlands) at [29] - [31]):

- "Extensive and virtually uniform" state practice
- Opinio juris (a belief by states that state practice is rendered obligatory on it)

Whilst the plaintiff attempted to show evidence of state practice supporting their rule, this was rejected by the Court, which held that the rule was not a general principle of law recognised in municipal legal systems within the meaning of Art 38(1)(c). The plaintiff's appeal was dismissed.

2.1 Treaties

• Under Art 38(1)(a) of the *Statute of the International Court of Justice*, 'conventions' (embodying all binding international agreements) are a source of public international law (e.g., treaties, protocols, statutes, charters, covenants, etc.)

- The law of treaties is governed in the 1969 *Vienna Convention on the Law of Treaties* (VLCT) (see Topic 3 on page 17), and now constitutes the most voluminous source of PIL (due to a rapid increase in the number of treaties in the 20th and 21st centuries)
- Treaties can be either bilateral (between two states) or multilateral (between more than two states)
- Some treaties may be a mere source of obligation (often known as 'treaty contracts'), whilst others form a more generalised source of law ('law-making treaties', especially those that contribute to the generation of customary law, such as the *Charter of the United Nations*)
 - Some treaties, such as the Universal Declaration of Human Rights, can adopt a constitutional tone

2.2 International Custom

- Under Art 38(1)(b) of the *Statute of the International Court of Justice*, international custom can be evidence of a general practice accepted as law, and comprises two components:
 - An objective element ('general practice')
 - A subjective or psychological element ('accepted as law'), known as opinio juris sive necessitatis (the belief that the practice is obligatory)
 - * This is often shortened to opinio juris
- Customary international law binds all states, even if they have not participated in its creation (with the very narrow exception of the 'persistent objector')
- Certain customary norms are *jus cogens*, which are peremptory norms from which no derogation is permitted

2.2.1 Elements of Custom

- Evidence of state practice
 - This constitutes any material which demonstrates the activities and views of states and state officials (e.g., legislation, statements of officials, court decisions, voting records in international forums, etc.)
- Requirements for practice to generate custom, which include
 - Consistency of the practice over time
 - The practice being widespread
 - The practice being representative of multiple states (including the states most likely being affected)
 - Having developed over a lengthy period (but customary norms may still emerge rapidly if there is an overwhelming practice of it)
 - The practice does not need to be entirely uniform

- Practice must be accompanied by opinio juris
 - Opinio juris refers to the belief that the state practice is obligatory
 - This is notionally as important as state practice, and the two are often weighed on a sliding scale:
 - * If there is extensive state practice, then *opinio juris* tends to be less important (which gives rise to a rebuttable presumption that there is sufficient *opinio juris*)
 - * If there is limited state practice, then opinio juris may be more important
- Treaties may codify custom in order to reduce ambiguity

North Sea Continental Shelf Cases (Germany v Denmark; Germany v Netherlands) [1969] ICJ Rep 3

ICJ Summary: These cases concerned the delimitation of the continental shelf of the North Sea as between Denmark and the Federal Republic of Germany, and as between the Netherlands and the Federal Republic, and were submitted to the Court by Special Agreement. The Parties asked the Court to state the principles and rules of international law applicable, and undertook thereafter to carry out the delimitations on that basis. By an Order of 26 April 1968 the Court, having found Denmark and the Netherlands to be in the same interest, joined the proceedings in the two cases. In its Judgment, delivered on 20 February 1969, the Court found that the boundary lines in question were to be drawn by agreement between the Parties and in accordance with equitable principles in such a way as to leave to each Party those areas of the continental shelf which constituted the natural prolongation of its land territory under the sea, and it indicated certain factors to be taken into consideration for that purpose. The Court rejected the contention that the delimitations in question had to be carried out in accordance with the principle of equidistance as defined in the 1958 Geneva Convention on the Continental Shelf. The Court took account of the fact that the Federal Republic had not ratified that Convention, and held that the equidistance principle was not inherent in the basic concept of continental shelf rights, and that this principle was not a rule of customary international law.

In this case, the ICJ held that treaty norms could become custom (but not in this instance), and that treaty provisions may become customary norm/customary international law (however, this was also not made out in this instance). Additionally, a short time frame is not a bar to establishing custom, but the practice needs to be extensive and virtually uniform (this was not the case here).

Military and Paramilitary Activities in and against Nicaragua [1986] ICJ Rep 14

ICJ Summary: On 9 April 1984 Nicaragua filed an Application instituting proceedings against the United States of America, together with a Request for the indication of provisional measures concerning a dispute relating to responsibility for military and paramilitary activities in and against Nicaragua. On 10 May 1984 the Court made an Order indicating provisional measures. One of these measures required the United States immediately to cease and refrain from any action restricting access to Nicaraguan ports, and, in particular, the laying of mines. The Court also indicated that the right to

sovereignty and to political independence possessed by Nicaragua, like any other State, should be fully respected and should not be jeopardized by activities contrary to the principle prohibiting the threat or use of force and to the principle of non-intervention in matters within the domestic jurisdiction of a State. The Court also decided in the aforementioned Order that the proceedings would first be addressed to the questions of the jurisdiction of the Court and of the admissibility of the Nicaraguan Application. Just before the closure of the written proceedings in this phase, El Salvador filed a declaration of intervention in the case under Article 63 of the Statute, requesting permission to claim that the Court lacked jurisdiction to entertain Nicaragua's Application. In its Order dated 4 October 1984, the Court decided that El Salvador's declaration of intervention was inadmissible inasmuch as it related to the jurisdictional phase of the proceedings.

After hearing argument from both Parties in the course of public hearings held from 8 to 18 October 1984, on 26 November 1984 the Court delivered a Judgment stating that it possessed jurisdiction to deal with the case and that Nicaragua's Application was admissible. In particular, it held that the Nicaraguan declaration of 1929 was valid and that Nicaragua was therefore entitled to invoke the United States declaration of 1946 as a basis of the Court's jurisdiction (Article 36, paragraphs 2 and 5, of the Statute). The subsequent proceedings took place in the absence of the United States, which announced on 18 January 1985 that it "intends not to participate in any further proceedings in connection with this case". From 12 to 20 September 1985, the Court heard oral argument by Nicaragua and the testimony of the five witnesses it had called. On 27 June 1986, the Court delivered its Judgment on the merits. The findings included a rejection of the justification of collective self-defence advanced by the United States concerning the military or paramilitary activities in or against Nicaragua, and a statement that the United States had violated the obligations imposed by customary international law not to intervene in the affairs of another State, not to use force against another State, not to infringe the sovereignty of another State, and not to interrupt peaceful maritime commerce. The Court also found that the United States had violated certain obligations arising from a bilateral Treaty of Friendship, Commerce and Navigation of 1956, and that it had committed acts such to deprive that treaty of its object and purpose.

It decided that the United States was under a duty immediately to cease and to refrain from all acts constituting breaches of its legal obligations, and that it must make reparation for all injury caused to Nicaragua by the breaches of obligations under customary international law and the 1956 Treaty, the amount of that reparation to be fixed in subsequent proceedings if the Parties were unable to reach agreement. The Court subsequently fixed, by an Order, time-limits for the filing of written pleadings by the Parties on the matter of the form and amount of reparation, and the Memorial of Nicaragua was filed on 29 March 1988, while the United States maintained its refusal to take part in the case. In September 1991, Nicaragua informed the Court, inter alia, that it did not wish to continue the proceedings. The United States told the Court that it welcomed the discontinuance and, by an Order of the President dated 26 September 1991, the case was removed from the Court's List.

In this case, the ICJ affirmed that to give rise to a custom, state practice does not need to be "perfect, in the Sense that States should have refrained, with complete consistency,

from the use of force of from intervention in each other's internal affairs". Here, the norms relied upon by Nicaragua were part of customary international law, which had a separate applicability to the *Charter of the United Nations*. Additionally, if a treaty gives rise to custom, the custom exists independently of the treaty. Moreover, if it has been pointed out that there has been a number of instances of states contravening a treaty, the courts have held that there does not need to be consistently correct conduct from the states to affirm the custom, and that some variation in practice is acceptable, especially when these variations are treated as breaches of the rule rather than emergence of a new rule (thereby affirming the existing rule).

The Court does not consider that, for a rule to be established as customary, the corresponding practice must be in absolutely rigorous conformity with the rule. In order to deduce the existence of customary rules, the Court deems it sufficient that the conduct of States should, in general, be consistent with such rules, and that instances of State conduct inconsistent with a given rule should generally have been treated as breaches of that rule, not as indications of the recognition of a new rule. If a State acts in a way *prima facie* incompatible with a recognized rule, but defends its conduct by appealing to exceptions or justifications contained within the rule itself, then whether or not the State's conduct is in fact justifiable on that basis, the significance of that attitude is to confirm rather than to weaken the rule.

Nicaragua v Colombia [2023] ICJ Rep 413

The Court addressed Nicaragua's request to define the maritime boundary in areas beyond the 2012 Judgment's limits, focusing on two key legal questions posed in its October 4, 2022 Order. The primary question was whether, under customary international law, a State's entitlement to an extended continental shelf beyond 200 nautical miles could extend within 200 nautical miles of another State's baselines. The Court concluded that it could not, based on the interrelationship between the exclusive economic zone and continental shelf regimes under customary law, as reflected in UNCLOS, and widespread State practice showing opinio juris against such overlap. Consequently, the Court rejected Nicaragua's submissions for delimiting overlapping continental shelf areas with Colombia's mainland and islands (San Andrés, Providencia, Serranilla, Bajo Nuevo, and Serrana), finding no overlapping entitlements to delimit, thus rendering the second question on criteria for outer limits unnecessary to address. The decision, supported by a majority of thirteen to four votes on key points, reaffirmed Colombia's maritime entitlements within 200 nautical miles and upheld the 2012 Judgment's findings, dismissing Nicaragua's claims without needing further proceedings.

Even though Colombia is not a party to the *UN Convention on the Law of the Sea*, the ICJ held it still provided key evidence of custom, even though Colombia wasn't a party to it. The practices under it were "indicative of *opinio juris*", even if such practice may have been motivated in part by considerations other than a sense of legal obligation".

2.2.2 Regional Customary International Law

Asylum Case (Colombia v Peru) [1950] ICJ Rep 226

Colombia granted de la Torre (who was the head of an unsuccessful revolutionary group in Peru) political asylum in the Colombian Embassy in Lima, Peru. Colombia invoked 'American international law' to allow it to grant political asylum (referring to the Americas as a continent, not the United States); this supposed custom was that a unilateral decision to hold something was politically motivated was sufficient. The ICJ held that there was insufficient evidence of such regional customary norm, as such a practice had too much contradiction and fluctuation to be a regional standard. The ICJ concluded that regional standards need a higher standard of stability and continuity to apply as international law.

R (app. Al-Saadoon v Sec. of Defence) [2010] 1 All ER 271

In this case, there was a serious risk that the plaintiff would face death at the hands of the Iraqi system if they were deported. The question at hand was whether an obligation of non-refoulement (non-return) to countries where the death penalty available as a rule of regional customary international law in Europe? There is a concept of regional customary international law that bound the UK and other states in the Council of Europe that prevented a European state from transferring a person to a third state where the death penalty was a possibility. The English Court of Appeal found that this had not been established in this instance by the materials cited (including the European Union Charter of Fundamental Rights). The Court accepted that there could be such a rule of regional customary international law, but on the evidence presented, this rule had not been established, and the relevant elements invoked by the claimants did not establish this rule of regional custom.

2.2.3 Persistent Objection

- This is a fairly narrow doctrine under customary international law
- States which consistently object to the emergence of a rule of custom from its earliest point of gestation will not be bound by this custom should the rule emerge; otherwise, they will be bound to it
- A state cannot be a persistent objector to a jus cogens principle, following the International Law Commission's 2019 report, at Conclusion 14 of Chapter V

International Law Commission 2019 Report Chapter V Conclusion 14

Rules of customary international law conflicting with a peremptory norm of general international law (jus cogens)

1. A rule of customary international law does not come into existence if it conflicts with a peremptory norm of general international law (*jus cogens*). This is without prejudice to the possible modification of a peremptory norm of general international law (*jus cogens*) by a subsequent norm of general international law having the same character.

- A rule of customary international law not of a peremptory character ceases to exist
 if and to the extent that it conflicts with a new peremptory norm of general
 international law (jus cogens).
- 3. The persistent objector rule does not apply to peremptory norms of general international law (*jus cogens*).

Anglo Norwegian Fisheries Case (UK v Norway) [1951] ICJ Rep 116

To determine its coastal baselines, Norway drew a system of straight baselines. The UK objected to Norway's straight baselines, as Norway had suddenly closed the waters that were open to British fishing vessels (the regular practice was to not have a system of straight baselines). The question before the ICJ was whether there was a rule of custom prohibiting baselines more than 10 nautical miles in length. The ICJ held that there was no such rule, but even it did exist, Norway was a persistent objector (and so even if it did exist, it wouldn't apply to Norway). Accordingly, the UK lost.

2.3 General Principles of Law

- Under Art 38(1)(c) of the *Statute of the International Court of Justice*, general principles of law recognised by civilised nations form a source of public international law
- The objective of including the general principles of law is to avoid the *non liquet* (the situation where 'it is not clear')
- This includes general principles of both international law and municipal law
- Examples of this include *res judicata* (the principle of finality, holding that once a case is decided, it is final and cannot be relitigated), the principle that a breach of an obligation is accompanied by an obligation to make reparations, and the principles of acquiescence and estoppel

Bay of Bengal (Bangladesh/Myanmar) [2012] ILTOS 12

This judgement by the International Tribunal for the Law of the Sea addressed the delineation of maritime zones (territorial sea, exclusive economic zone (EEZ), and continental shelf) between the two states. The Tribunal, affirming its jurisdiction under the *United Nations Convention on the Law of the Sea* (UNCLOS), rejected Bangladesh's claim that the 1974 and 2008 Agreed Minutes constituted a binding agreement for the territorial sea, finding them non-binding due to their conditional nature and lack of formal approval, resulting in there being no **estoppel**. It delimited the territorial sea using equidistance adjusted for St. Martin's Island, and for the EEZ and continental shelf within 200 nautical miles (nm), it applied a provisional equidistance line adjusted for Bangladesh's concave coast to avoid a cut-off effect. The Tribunal also asserted jurisdiction over the continental shelf beyond 200 nm, delimiting it based on geological entitlement and equity, resulting in a single maritime boundary, though creating a "grey area" where Bangladesh's continental shelf overlapped Myanmar's EEZ, which it left unresolved for

future negotiation.

Regarding Article 38(1)(c), the ITLOS Judgment implicitly engaged such principles, particularly equity, in its delimitation process. While the Judgment primarily applied UNCLOS provisions (Articles 15, 74, 83, and 76), the Tribunal's adjustment of the equidistance line to achieve an "equitable solution", notably to mitigate the cut-off effect of Bangladesh's concave coast, reflects the general principle of equity, a concept widely accepted across legal systems and frequently invoked in maritime delimitation (e.g., North Sea Continental Shelf cases). The dissenting opinion of Judge Lucky explicitly references Article 38 in the context of Articles 74 and 83, advocating the angle-bisector method over equidistance to ensure fairness, underscoring equity infra legem as a method to interpret and apply the law justly. Thus, the Judgment's reliance on equity to balance the parties' rights demonstrates how general principles under Article 38(1)(c) supplement treaty law in achieving a fair outcome specific to this case.

The Tribunal observes that, in international law, a situation of **estoppel** exists when a State, by its conduct, has created the appearance of a particular situation and another State, relying on such conduct in good faith, has acted or abstained from an action to its detriment. The effect of the notion of **estoppel** is that a State is precluded, by its conduct, from asserting that it did not agree to, or recognize, a certain situation.

In the view of the Tribunal, the evidence submitted by Bangladesh to

In the view of the Tribunal, the evidence submitted by Bangladesh to demonstrate that the Parties have administered their waters in accordance with the limits set forth in the 1974 Agreed Minutes is not conclusive. There is no indication that Myanmar's conduct caused Bangladesh to change its position to its detriment or suffer some prejudice in reliance on such conduct. For these reasons, the Tribunal finds that Bangladesh's claim of estoppel cannot be upheld.

Chagos Marine Protected Area Arbitration (Mauritius v United Kingdom) (2015) XXXI RIAA 359

The arbitral tribunal, constituted under Annex VII of the United Nations Convention on the Law of the Sea (UNCLOS), addressed a dispute between Mauritius and the United Kingdom (UK) concerning the UK's establishment of a Marine Protected Area (MPA) around the Chagos Archipelago on 1 April 2010. Mauritius argued that the UK, as the administering power of the British Indian Ocean Territory (BIOT), lacked the authority to unilaterally declare the MPA, violating UNCLOS and international law by disregarding Mauritius' rights, including fishing rights and the UK's undertakings to return the Archipelago and share resource benefits when no longer needed for defense purposes. The Tribunal found it lacked jurisdiction over Mauritius' sovereignty claims (First and Second Submissions) and a related dispute (Third Submission), but unanimously asserted jurisdiction over the Fourth Submission, concluding that the UK breached Articles 2(3), 56(2), and 194(4) of UNCLOS due to insufficient consultation and failure to balance Mauritius' rights, rendering the MPA's declaration incompatible with the Convention. The Tribunal emphasised procedural inadequacies rather than the MPA's environmental merits, urging further negotiations, and ordered costs to be borne equally by the parties.

Here, the Tribunal's interpretation of UNCLOS provisions, such as Article 2(3), relied on general principles like good faith and due regard, which are widely accepted across legal systems and reflect fundamental norms ensuring equitable conduct between states. These principles, derived from domestic legal traditions and adapted to the international context, served to evaluate the UK's obligations to consult and balance Mauritius' rights, demonstrating their role as a gap-filling mechanism where treaty or customary rules are ambiguous or silent. The Tribunal's reference to good faith in Article 2(3) and the balancing requirement in Article 56(2) underscores how general principles, as per Article 38(1)(c), provide a flexible yet authoritative basis for resolving disputes, reinforcing the coherence and fairness of international legal obligations beyond specific treaty terms.

[438] Further to this jurisprudence, **estoppel** may be invoked where (a) a State has made clear and consistent representations, by word, conduct, or silence; (b) such representations were made through an agent authorized to speak for the State with respect to the matter in question; (c) the State invoking **estoppel** was induced by such representations to act to its detriment, to suffer a prejudice, or to convey a benefit upon the representing State; and (d) such reliance was legitimate, as the representation was one on which that State was entitled to rely.

2.4 Judicial Decisions and the Teaching of Publicists

- Under Art 38(1)(d) of the Statute of the International Court of Justice, judicial decisions taken
 at both a domestic and an international level, and the teaching of publicists can be
 considered as sources of public international law
- However, these are 'subsidiary means' for the determination of rules of law, and are treated as having lesser significance than other sources
- Publicists generally constitute academics who are distinguished in the field, and probably have been dead for a long period of time
- Decisions taken by the ICJ do not constitute binding precedent in future decisions, and remain merely persuasive, following Art 59 of the Statute of the International Court of Justice
- It has been held that these other sources are "resorted to by judicial tribunals not for the speculations of their authors concerning what the law ought to be, but for trustworthy evidence of what the law really is", per *The Paquete Habana* 175 US 677 (1900)

Statute of the International Court of Justice Article 59

The decision of the Court has no binding force except between the parties and in respect of that particular case.

The Paquete Habana 175 US 677 (1900) (United State Supreme Court)

The U.S. Supreme Court reviewed the capture of two Spanish fishing vessels, the Paquete Habana and the Lola, by U.S. naval forces during the Spanish-American War. Both vessels, owned by Spanish subjects in Havana and crewed by Cuban fishermen, were engaged in

coast fishing off Cuba and Yucatan, carrying live fish caught by their crews. Captured in April 1898 near Havana by U.S. blockading ships, they were unarmed, unaware of the war or blockade, and made no attempt to resist or aid the enemy. The District Court for the Southern District of Florida condemned them as prizes of war on May 30, 1898, selling them for \$490 and \$800, respectively, asserting no legal exemption existed without a treaty or proclamation. The Supreme Court reversed this, finding their capture unlawful under international law, which exempts coast fishing vessels pursuing a peaceful trade from war prizes, and ordered restitution with compensatory damages.

This decision illustrates how customary international law integrates with other legal sources when treaties or domestic acts are absent. It ruled that the exemption of coast fishing vessels is an established rule of customary international law, derived from the consistent practice and *opinio juris* of civilised nations, evidenced by historical treaties (e.g., 1521 Charles V-Francis I treaty), state practice (e.g., U.S. in the Mexican War), and jurists' writings. Absent a controlling treaty, executive order, or statute (none of which existed here), the Court relied on this custom, distinguishing it from the non-binding UNGA resolutions in the 1996 ICJ Nuclear Weapons case, which lacked sufficient state practice to form custom. The decision aligns with treaty-based exemptions, but asserts judicial authority to enforce customary norms directly. This case therefore underscores custom's enforceability in U.S. courts, complementing treaties and executive discretion in wartime.

Pg. 175

International law is part of our law, and must be ascertained and administered by the courts of justice of appropriate jurisdiction as often as questions of right depending upon it are duly presented for their determination. For this purpose, where there is no treaty and no controlling executive or legislative act or judicial decision, resort must be had to the customs and usages of civilized nations, and, as evidence of these, to the works of jurists and commentators who by years of labor, research, and experience have made themselves peculiarly well acquainted with the subjects of which they treat. Such works are resorted to by judicial tribunals not for the speculations of their authors concerning what the law ought to be, but for trustworthy evidence of what the law really is.

2.4.1 United Nations General Assembly Resolutions

- The United Nations General Assembly (UNGA) is the plenary body of the UN, generating a large amount of documents, of which the most important are the UNGA Resolutions, since:
 - All UN members have a seat and can thus contribute to the formation of these resolutions
 - The UNGA has many different capacities, and can adopt different decisions (however, these are recommendatory, and not legally binding)
 - The UNGA has generally influenced PIL as it is a great forum for state practice and opinio juris
- Decisions of the UNGA are not binding, except in the key areas of admission of member states, suspension of member states, and matters related to the UN budget (if these wre

not binding, the UN would not be able to function)

- These resolutions provide evidence on the state of customary international law, as it is a great forum to evidence what states are doing
- The UNGA can also be far more responsive than the traditional case-by-case process of implementing customary international law, and ultimately serves to advance the norms of international law
- UNGA resolutions can influence international law in three main ways:
 - 1. Interpreting the Charter of the United Nations
 - 2. Affirming recognised customary norms (this is done by a resolution of the UNGA)
 - 3. Influencing the creation of new customary norms (e.g., a resolution can be the spark that creates a new customary norm)
- Furthermore, it has been held in *Legality of the Threat or Use of Nuclear Weapons* [1996] ICJ Rep 254 that UNGA resolutions may "sometimes have normative value" (at [70]), and can provide "evidence important for the establishing the existence of a rule or the emergence of a *opinio juris*" (at [70])
- Such evidence can include:
 - The voting records of the UNGA
 - Transcripts of what was said on the floor of the UNGA
 - Margins of the votes undertaken in the UNGA

Legality of the Threat or Use of Nuclear Weapons [1996] ICJ Rep 254

The Court was asked whether the threat or use of nuclear weapons was permitted under international law. They found no specific authorisation or comprehensive prohibition of nuclear weapons in customary or conventional international law. It ruled that any such threat or use must comply with the UN Charter, prohibiting unlawful force (Article 2(4)) and regulating self-defense (Article 51), and international humanitarian law (IHL), which requires distinguishing between combatants and civilians and avoiding unnecessary suffering. While the Court concluded that nuclear weapons' indiscriminate effects would "generally" violate IHL, it could not definitively rule on their legality in extreme self-defense scenarios threatening a state's survival. It unanimously affirmed an obligation under Article VI of the Non-Proliferation Treaty (NPT) to pursue nuclear disarmament in good faith.

The ICJ clarified the role of UNGA resolutions in international law, particularly in the context of nuclear weapons. Resolutions are not legally binding on their own but may have normative value as evidence of customary law if supported by state practice and opinio juris ([70]-[73]). The Court found that these resolutions, despite large majorities, did not establish a customary prohibition due to opposition from nuclear states, abstentions, and the lack of consistent practice, reflecting a divide between emerging opinio juris and the deterrence policy adhered to by some states. They signal deep concern and a desire for

2.5. SOFT LAW 15

a ban, but alone, they fall short of creating a legal rule.

The ICJ's analysis underscores that UNGA resolutions complement, rather than independently create, binding norms. Their significance depends on content, adoption conditions, and state acceptance, but in this case, they did not overcome the absence of universal consensus ([70] - [71]). In contrast, the NPT's Article VI imposes a clear legal duty on its 182 parties to negotiate disarmament, reinforced by UNGA resolutions but distinct in its binding force ([99] - [103]). Thus, while UNGA resolutions highlight an evolving legal consciousness and support treaty obligations, they were insufficient in 1996 to resolve the legality of nuclear weapons definitively, illustrating the Court's cautious approach to law-making based solely on such instruments.

[70] The Court notes that General Assembly resolutions, even if they are not binding, may sometimes have normative value. They can, in certain circumstances, provide evidence important for establishing the existence of a rule or the emergence of an *opinio juris*. To establish whether this is true of a given General Assembly resolution, it is necessary to look at its content and the conditions of its adoption; it is also necessary to see whether an *opinio juris* exists as to its normative character. Or a series of resolutions may show the gradual evolution of the *opinio juris* required for the establishment of a new rule.

2.4.2 UN Security Council

- The UN Security Council can adopt a direct role in international law making (e.g., following the September 11 attacks, Resolution 1373 was deemed a form of 'international legislation')
- However, the UN Security Council has limited law-making capacity, and can adopt certain binding resolutions, but these may have expedited impacts
 - Under art 25 of the Charter of the United Nations, these resolutions are only binding on members of the UN

Charter of the United Nations Article 25

The Members of the United Nations agree to accept and carry out the decisions of the Security Council in accordance with the present Charter.

2.5 Soft Law

- Soft law refers to rules that are binding but vague, and/or 'rules' that are clear but not binding
- They serve as a convenient encompassment of a variety of non-legally binding instruments used in contemporary international relation
- Whilst soft law instruments are not in and of themselves legally binding, they can articular standards or norms that will, over time, become concrete and be transformed into international law

- They can also be used to interpret other sources of international law (e.g., treaty or custom)
- An example is the precautionary principle, which is central to international environmental law:
 - These constitute cost-effective measures to protect the environment, with their implementation to not be delayed whilst there is uncertainty to their efficacy (i.e., protect the environment now rather than wait for complete certainty)
 - This was articulated in 1992 in the United Nations General Assembly, and can now be found in different areas of international law (an example of soft law becoming hard law over time)

Topic 3

The Law of Treaties

3.1 Defining Treaties

- A treaty refers to a binding agreement between states (or international organisations) that is governed by international law
- They perform various functions, including:
 - Transferring territory (like conveyance)
 - Bargaining (like contracts)
 - Setting out general international law (like legislation)
 - Creating international organisation (like articles of association)
 - Establishing new legal orders (like constitutions)
- The primary treaty on treaties (but not the only one) is the 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties (VCLT), which was based on the work of the International Law Commission¹, and is mostly declaratory of customary international law
 - The VCLT was signed in 1969, but entered into force in 1980, and so only applies to treaties concluded after 1980; however, many of its provisions can apply to treaties concluded before 1980 as a matter of general international law
 - Most provisions within the VCLT are customary, which can be helpful in resolving disputes as not all states are party to the VCLT, but its core rules nonetheless apply to them as a matter of custom
- VCLT Art 2(1)(a) defines what a treaty is (an international agreement between States, in either a singular instrument or in multiple instruments, and in any form whatsoever, as long as it is written)

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 2

Use of Terms

1. For the purposes of the present Convention:

¹A body within the United Nations tasked with the codification and progressive development of public international law

- (a) "treaty" means an international agreement concluded between States in written form and governed by international law, whether embodied in a single instrument or in two or more related instruments and whatever its particular designation;
- (b) "ratification", "acceptance", "approval" and 'accession" mean in each case the international act so named whereby a State establishes on the international plane its consent to be bound by a treaty;
- (c) "full powers" means a document emanating from the competent authority of a State designating a person or persons to represent the State for negotiating, adopting or authenticating the text of a treaty, for expressing the consent of the State to be bound by a treaty, or for accomplishing any other act with respect to a treaty;
- (d) "reservation" means a unilateral statement, however phrased or named, made by a State, when signing, ratifying, accepting, approving or acceding to a treaty, whereby it purports to exclude or to modify the legal effect of certain provisions of the treaty in their application to that State;
- (e) "negotiating State" means a State which took part in the drawing up and adoption of the text of the treaty;
- (f) "contracting State" means a State which has consented to be bound by the treaty, whether or not the treaty has entered into force;
- (g) "party" means a State which has consented to be bound by the treaty and for which the treaty is in force;
- (h) "third State" means a State not a party to the treaty;
- (i) "international organization" means an intergovernmental organization.
- 2. The provisions of paragraph 1 regarding the use of terms in the present Convention are without prejudice to the use of those terms or to the meanings which may be given to them in the internal law of any State.
- Under Art 3 of the VCLT, the definition given in Art 2(1)(a) does not affect agreements between states and other subjects of international law, or between those other subjects (i.e., it only affects agreements between states)
 - However, equivalent norms of custom, or another treaty, may apply to the treaties not covered within the scope of the VCLT
- The VCLT additionally does not apply to non-written treaties on the text of Art 3
 - However, it does not foreclose the possibility of an oral agreement/treaty, and as much of the VCLT is custom, the rules set out in it will still apply to oral agreements/treaties, but which of those rules falls into that scope is vague

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 3

International agreements not within the scope of the present Convention

The fact that the present Convention does not apply to international agreements concluded between States and other subjects of international law or between such other subjects of international law, or to international agreements not in written form, shall not affect:

- (a) the legal force of such agreements;
- (b) the application to them of any of the rules set forth in the present Convention to which they would be subject under international law independently of the Convention;
- (c) the application of the Convention to the relations of States as between themselves under international agreements to which other subjects of international law are also parties.

Legal Status of Eastern Greenland (Denmark v Norway) (1993) PCIJ Series A/B, No 53

In this case, the Permanent Court of International Justice held that Norway was bound by an oral undertaking given to Denmark that it would not oppose its claim to sovereignty over Greenland. The Court held that "as a result of the undertaking [by the Norwegian Foreign Minister], Norway is under an obligation to refrain from contesting Danish sovereignty over Greenland as a whole, and *a fortiori* to refrain from occupying a part of Greenland".

- Treaties are very flexible, and may be embodied in one or several instruments (e.g., an exchange of notes (which is more than one instrument) can constitute a treaty), and there are no requirements as to the form of the treaty
 - The key consideration is the objective intention of the parties (which can be discern from the text of the treaty)

Maritime Delimitation and Territorial Questions (Qatar v Bahrain) (1994) ICJ Rep 112

Summary of Facts: The case concerning maritime delimitation and territorial questions between Qatar and Bahrain was initiated when Qatar filed an application with the International Court of Justice (ICJ) on 8 July 1991, seeking resolution of disputes over sovereignty of the Hawar Islands, sovereign rights over the shoals of Dibal and Qit'at Jaradah, and the delimitation of maritime areas. The dispute, rooted in a long-standing conflict, saw mediation efforts by Saudi Arabia starting in 1976, culminating in key agreements: the 1987 exchanges of letters between the leaders of Qatar, Bahrain, and Saudi Arabia, and the 1990 Doha Minutes signed by their foreign ministers. These agreements aimed to refer the disputes to the ICJ. Bahrain contested the Court's jurisdiction, arguing the 1990 Minutes were not legally binding and did not permit unilateral referral by Qatar. After written and oral proceedings, the ICJ delivered its judgment on 1 July 1994, addressing jurisdiction and admissibility.

Issues and Principles: The primary issue was whether the Court had jurisdiction to hear the case based on the 1987 exchanges of letters and the 1990 Doha Minutes, and whether Qatar's application was admissible. Bahrain argued the Minutes were merely a record of

negotiations, not a binding agreement, and that unilateral referral was not permitted. The ICJ determined that both the 1987 letters and 1990 Minutes constituted international agreements with legal force, creating obligations to submit the dispute to the Court. A key principle was the interpretation of international agreements under the Vienna Convention on the Law of Treaties, emphasising their terms and context over subjective intent. The Court also addressed the scope of the dispute, noting Qatar's application covered only part of the agreed "Bahraini formula," and thus decided to allow both parties five months to submit the entire dispute, either jointly or separately, to ensure comprehensive resolution as intended by the agreements.

In this case, the International Court of Justice held that an exchange of letters between the Emir of Qatar and the Ruler of Bahrain constituted a treaty, and that the exchange of letters was a valid means of concluding a treaty.

"The Minutes are not the simple record of a meeting ... They enumerate the commitments to which the Parties have consented ... They constitute an international agreement".

Unilateral declarations made by a party may have binding effect

Nuclear Test Cases (Australia v France) (1974) ICJ Rep 253

In this case, the International Court of Justice held that a unilateral declaration by France that it would not conduct nuclear tests in the atmosphere was binding on France, and that the declaration was a unilateral act having legal effect.

"An undertaking ... if given publicly with an intent to be bound, even though not made within the context of international negotiations, is binding".

- [43] When it is the intention of the State making the declaration that it should become bound according to its terms, that intention confers on the declaration the character of a legal undertaking, the State being thenceforth legally required to follow a course of conduct consistent with the declaration. An undertaking of this kind, if given publicly, and with an intent to be bound, even though not made within the context of international negotiations, is binding.
- There is no requirement that a treaty needs to involve 'consideration' (i.e., a promise, price, detriment or forbearance given as a value for a promise); this results in the potential for treaties to be one-sided

3.2 Entry into a Treaty

- Only states, international organisations and other international entities with capacity to enter into treaties (i.e., international persons) may be parties to a treaty
- Under Art 7 of the VCLT, Heads of State, Heads of Government and Ministers of Foreign Affairs have the capacity to conclude treaties without producing "full powers"

- "Full powers" refers to a document or a set of documents evidencing authority for the bearing/undersigned individual to act on behalf of the state and thereby enter into treaties
- Since a state does not have any physical existence, it has to act through a representative (which can be one of the above individuals, or another individual who has produced full powers)

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 6

Capacity of States to conclude treaties

Every State possesses capacity to conclude treaties.

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 7

Full Powers

- 1. A person is considered as representing a State for the purpose of adopting or authenticating the text of a treaty or for the purpose of expressing the consent of the State to be bound by a treaty if:
 - (a) he produces appropriate full powers; or
 - (b) it appears from the practice of the States concerned or from other circumstances that their intention was to consider that person as representing the State for such purposes and to dispense with full powers.
- 2. In virtue of their functions and without having to produce full powers, the following are considered as representing their State:
 - (a) Heads of State, Heads of Government and Ministers for Foreign Affairs, for the purpose of performing all acts relating to the conclusion of a treaty;
 - (b) heads of diplomatic missions, for the purpose of adopting the text of a treaty between the accrediting State and the State to which they are accredited;
 - (c) representatives accredited by States to an international conference or to an international organization or one of its organs, for the purpose of adopting the text of a treaty in that conference, organization or organ.
- Entry into a treaty is a two-step process, entailing:
 - 1. Signature (which is when a state expresses a willingness to continue the treaty-making process, but is not bound by the treaty at this point)
 - 2. Ratification (which indicates that the state consents to be bound by the treaty once it has been ratified)
 - 3. Accession (this only arises when a state becomes party to a treaty already negotiated and signed by other states, and has the same legal effect as ratification)
- There is a period of time between signature and ratification, which allows states to implement the provisions of the treaty into their domestic law, and for the state to prepare for the treaty to be given effect

- Signature is not sufficient for a state to be bound; they must have either ratified or acceded to the treaty
- A treaty enters into force when the relevant provisions in the treaty addressing this point have been satisfied
 - If the treaty is silent on this point, it will enter into force when all the parties have consented to be bound by the treaty, following Art 24(2) of the 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties
 - * However, a treaty will almost always include a provision on when it will enter into force
 - A treaty enters into force for a specific party when it has consented to be bound, and when the treaty has entered into force generally

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 24

Entry into force

- 1. A treaty enters into force in such manner and upon such date as it may provide or as the negotiating States may agree.
- 2. Failing any such provision or agreement, a treaty enters into force as soon as consent to be bound by the treaty has been established for all the negotiating States.
- 3. When the consent of a State to be bound by a treaty is established on a date after the treaty has come into force, the treaty enters into force for that State on that date, unless the treaty otherwise provides.
- 4. The provisions of a treaty regulating the authentication of its text, the establishment of the consent of States to be bound by the treaty, the manner or date of its entry into force, reservations, the functions of the depositary and other matters arising necessarily before the entry into force of the treaty apply from the time of the adoption of its text.

3.3 Registration and Application of Treaties

- In order to be recognised as binding instruments before UN organisations, they must be registered with the UN, following Art 102 of the Charter of the United Nations
 - This is a position reinforced in Art 80 of the 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties
 - This is not a requirement for the treaty to be binding, but is a requirement for the treaty to be recognised by the UN
- The principle of pacta sunt servanda, following 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties
 Art 26, requires that "every treaty in force is binding upon the parties to it, and must be
 performed by them in good faith"

- Under Art 27 of the VCLT, a party may not invoke the provisions of its internal law (i.e., domestic law) as justification for its failure to perform a treaty
 - This is subject to Art 46 of the 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties, which
 allows a party to invoke its internal law as a justification for its failure to perform a
 treaty if the other party was aware of that law, and the law is not contrary to the
 treaty

Charter of the United Nations Article 102

- 1. Every treaty and every international agreement entered into by any Member of the United Nations after the present Charter comes into force shall as soon as possible be registered with the Secretariat and published by it.
- 2. No party to any such treaty or international agreement which has not been registered in accordance with the provisions of paragraph 1 of this Article may invoke that treaty or agreement before any organ of the United Nations.

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 80

Registration and publication of treaties

- 1. Treaties shall, after their entry into force, be transmitted to the Secretariat of the United Nations for registration or filing and recording, as the case may be, and for publication.
- 2. The designation of a depositary shall constitute authorization for it to perform the acts specified in the preceding paragraph.

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 26

"Pacta sunt servanda"

Every treaty in force is binding upon the parties to it and must be performed by them in good faith.

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 27

Internal law and observance of treaties

A party may not invoke the provisions of its internal law as justification for its failure to perform a treaty. This rule is without prejudice to article 46.

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 46

Provisions of internal law regarding competence to conclude treaties

1. A State may not invoke the fact that its consent to be bound by a treaty has been expressed in violation of a provision of its internal law regarding competence to

conclude treaties as invalidating its consent unless that violation was manifest and concerned a rule of its internal law of fundamental importance.

- 2. A violation is manifest if it would be objectively evident to any State conducting itself in the matter in accordance with normal practice and in good faith.
- Under Art 18 of the 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties, a state is obliged to refrain from acts that would defeat the object and purpose of a treaty (e.g., if a treaty requires objects to be returned, then Art 18 prohibits the state from destroying those objects during the transfer process)
- When states have signed a treaty that has not yet been ratified, they must not undermine the spirit of the treaty in this intermediary phase
- Under Art 34 of the 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties, treaties do not impose obligations or create rights for third states in the absence of their consent (pacta tertiss nex nocent nec prosunt)

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 18

Obligation not to defeat the object and purpose of a treaty prior to its entry into force

A State is obliged to refrain from acts which would defeat the object and purpose of a treaty when:

- (a) it has signed the treaty or has exchanged instruments constituting the treaty subject to ratification, acceptance or approval, until it shall have made its intention clear not to become a party to the treaty; or
- (b) it has expressed its consent to be bound by the treaty, pending the entry into force of the treaty and provided that such entry into force is not unduly delayed.

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 34

General rule regarding third States

A treaty does not create either obligations or rights for a third State without its consent.

3.4 Reservations to Treaties

- If a state agrees to the general principles of a treaty, but does not agree with a specific provision or a set of provisions, they can enact a reservation when signing the treaty
- This has the effect of the reserving state and the states with whom the reservation was
 made being bound to the extent which they agreed to, and the reserved provisions not
 applying between those states (but still applying between the other states)
- A reservation is defined in Art 2(1)(d) of the 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties (on Page 17)

- Reservations can be made by a state at any stage of the treaty-making procedure
- Reservations are different from an 'interpretative declaration', which is a statement made
 by a state to clarify its understanding of a treaty, but does not affect the legal effect of the
 treaty
 - States can use interpretative declarations to clarify their understanding of a treaty,
 but they cannot use them to change the legal effect of the treaty
- The rules of reservation prescribed under the VCLT apply only to multilateral treaties (as a reservation to a bilateral treaty is effectively a counter-offer)

3.4.1 Permissibility

• The default position taken under Art 19 of the VCLT is that reservations are permissible, unless they are explicitly prohibited by the treaty or the reservation is incompatible with the object and purpose of the treaty

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 19

Formulation of reservations

A State may, when signing, ratifying, accepting, approving or acceding to a treaty, formulate a reservation unless:

- (a) the reservation is prohibited by the treaty;
- (b) the treaty provides that only specified reservations, which do not include the reservation in question, may be made; or
- (c) in cases not failing under subparagraphs (a) and (b), the reservation is incompatible with the object and purpose of the treaty.
- Under the *ILC Guide to Practice on Reservations*, the test for incompatibility of a reservation is whether "a reservation is incompatible with the object and purpose of the treaty if it affects an essential element of the treaty that is necessary to its general tenor, in such a way that the reservation impairs the *raison d'être* [the most important reason] of the treaty"
- If a reservation is impermissible, the traditional view is that the impermissible reservation vitiates the consent of the state to the treaty as a whole, and results in the state not being a party to the treaty, following *Reservations to Genocide Convention* [1951] ICJ Rep 15
- The emerging view, especially for human rights treaties, is that the offending reservation is null and void, and may be severed, with the state bound by the treaty without the protection of the reservation (unless consent to be bound is conditional on the reservation)
 - This will cut out/sever the reservation, and will bind a state without the protection of their reservation

3.4.2 Acceptance and Objection

- If a treaty expressly allows for reservations, then no acceptance of a reservation is required by the other parties
- Acceptance by all parties will be required if a treaty has a small number of parties, and the application of the treaty in its entirety is an essential condition of signing
- In all other cases:
 - Acceptance by the other contracting state(s) of the reservation results in the reserving state being bound by the treaty (with the reservation incorporated); and
 - Objection to a reservation does not prevent entry into force of a treaty between the objecting state and the reserving state, unless the objecting state says otherwise

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 20

Acceptance of and objection to reservations

- 1. A reservation expressly authorized by a treaty does not require any subsequent acceptance by the other contracting States unless the treaty so provides.
- 2. When it appears from the limited number of the negotiating States and the object and purpose of a treaty that the application of the treaty in its entirety between all the parties is an essential condition of the consent of each one to be bound by the treaty, a reservation requires acceptance by all the parties.
- 3. When a treaty is a constituent instrument of an international organization and unless it otherwise provides, a reservation requires the acceptance of the competent organ of that organization.
- 4. In cases not falling under the preceding paragraphs and unless the treaty otherwise provides:
 - (a) acceptance by another contracting State of a reservation constitutes the reserving State a party to the treaty in relation to that other State if or when the treaty is in force for those States;
 - (b) an objection by another contracting State to a reservation does not preclude the entry into force of the treaty as between the objecting and reserving States unless a contrary intention is definitely expressed by the objecting State;
 - (c) an act expressing a State's consent to be bound by the treaty and containing a reservation is effective as soon as at least one other contracting State has accepted the reservation.
- 5. For the purposes of paragraphs 2 and 4 and unless the treaty otherwise provides, a reservation is considered to have been accepted by a State if it shall have raised no objection to the reservation by the end of a period of twelve months after it was notified of the reservation or by the date on which it expressed its consent to be bound by the treaty, whichever is later.

3.4.3 Legal Effect

- Three scenarios can arise when a permissible reservation is made:
 - If state A accepts state R's reservation, then the treaty is modified between A and R (but only between A and R) to the extent of the reservation (VCLT Art 21(1) and (2)) (Page 27)
 - Other parties will not be bound by this reservation; it acts like a side agreement with R along the lines of the reservation
 - 2. If state B objects to state R's reservation and says the treaty is not to apply, then there is no treaty between them at all (VCLT Art 20(4)(b)) (Page 26)
 - 3. If state C objects to state R's reservation but does not say that treaty is not to apply, then treaty applies but 'the provisions to which the reservation relates do not apply ... to the extent of the reservation' (VCLT Art 21(3)) (Page 27)

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 21

Legal effects of reservations and of objections to reservations

- 1. A reservation established with regard to another party in accordance with articles 19, 20 and 23:
 - (a) modifies for the reserving State in its relations with that other party the provisions of the treaty to which the reservation relates to the extent of the reservation; and
 - (b) modifies those provisions to the same extent for that other party in its relations with the reserving State.
- 2. The reservation does not modify the provisions of the treaty for the other parties to the treaty inter se.
- 3. When a State objecting to a reservation has not opposed the entry into force of the treaty between itself and the reserving State, the provisions to which the reservation relates do not apply as between the two States to the extent of the reservation.

Republic of India v CCDM Holdings, LLC [2025] FCAFC 2

This case involved India having entered a reservation to a Convention, with a question arising as to whether the reservation applied only in Indian proceedings, or whether it also applied in Australia. Whilst it is rare for a reservation issue to come up in a domestic court, the Full Federal Court explained and applied the provisions of the VCLT on reservations in an enforcement of judgements case concerning foreign state immunity; the Court also referred to the *ILC Guide to Practice on Reservations to Treaties* in its reasoning at [63] to [70]. At [63], the Court emphasised the reciprocal effect of reservations, holding that "the effect of a reservation is that between the reserving and accepting state... the reservation modifies the provision of the treaty to the extent of the reservation for each party reciprocally (see Art 21(1)(a) and (b) of the Vienna Convention)". This case reinforces the idea of reciprocity whereby if a reservation is made, it applies to both states (i.e., it removes the particular provision for both states, not just one state).

3.5 Interpretation of Treaties

- There are several conceptual approaches to treaty interpretation:
 - Formalist/Textual (formal adherence to the terms of the treaty)
 - Restrictive (deference to state sovereignty)
 - Teleological (to give effect to the object and purpose of the treaty)
 - Effectiveness (to ensure the treaty regime remains as effective as possible)
 - Originalist (to focus on the original purpose of the treaty)
- The Australian courts will apply the VCLT when interpreting a treaty that has been incorporated into Australian law
 - In the example of DHI22 v Qatar Airways [2024] FCA 348, the Court found that a claim in relation to invasive medical examinations was not addressed by the Montreal Convention (as these were not an 'accident' within the meaning of the Convention)
 - This case dealt with the liability of carriers for accidents that occur on board an aircraft
- To ensure national uniformity in treaty interpretation for treaties incorporated into legislation, the courts do not apply the rules of statutory interpretation but instead apply the VCLT

3.5.1 Key Rules of Treaty Interpretation

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 31

General rule of interpretation

- 1. A treaty shall be interpreted in good faith in accordance with the ordinary meaning to be given to the terms of the treaty in their context and in the light of its object and purpose.
- 2. The context for the purpose of the interpretation of a treaty shall comprise, in addition to the text, including its preamble and annexes:
 - (a) any agreement relating to the treaty which was made between all the parties in connection with the conclusion of the treaty;
 - (b) any instrument which was made by one or more parties in connection with the conclusion of the treaty and accepted by the other parties as an instrument related to the treaty.
- 3. There shall be taken into account, together with the context:
 - (a) any subsequent agreement between the parties regarding the interpretation of the treaty or the application of its provisions;
 - (b) any subsequent practice in the application of the treaty which establishes the agreement of the parties regarding its interpretation;

- (c) any relevant rules of international law applicable in the relations between the parties.
- 4. A special meaning shall be given to a term if it is established that the parties so intended.
- · Good faith
 - The requirement of good faith is enshrined in Art 31(1) of the VCLT (Page 28)
- Subsequent agreement/practice and applicable international law
 - Under VCLT Art 31(3) (Page 28), any subsequent agreement or practice between the parties is to be taken into account when interpreting a treaty
 - The resolutions of internal organisations can be taken into account as subsequent agreement/practice if this position is supported by all parties, following Whaling in the Antarctic Case [2014] ICJ Rep 226 at [83]

Whaling in the Antarctic Case [2014] ICJ Rep 226

Summary of Facts: This case was initiated when Australia filed an application with the International Court of Justice (ICJ) on May 31, 2010, alleging that Japan's Second Phase of its Japanese Whale Research Program under Special Permit in the Antarctic (JARPA II) violated the International Convention for the Regulation of Whaling (ICRW). Australia claimed that JARPA II, involving the lethal sampling of minke, fin, and humpback whales in the Southern Ocean, was not for scientific research as permitted under Article VIII of the ICRW, but rather constituted commercial whaling in breach of the Schedule's moratorium provisions. Japan defended JARPA II as a legitimate scientific program aimed at ecosystem monitoring and multi-species competition studies. New Zealand intervened under Article 63 of the ICJ Statute, supporting Australia's position. After written and oral proceedings, including expert testimony, the ICJ delivered its judgment on March 31, 2014, ruling by a 12-4 vote that JARPA II did not qualify as scientific research under Article VIII and that Japan had breached specific Schedule provisions.

Issues and Principles: The central issue was whether JARPA II's special permits for killing whales fell within Article VIII, paragraph 1, of the ICRW, which exempts whaling "for purposes of scientific research" from other Convention restrictions. Sub-issues included Japan's compliance with Schedule paragraphs 10(e) (zero catch limit for commercial whaling), 10(d) (factory ship moratorium), 7(b) (Southern Ocean Sanctuary), and 30 (permit review requirements). The ICJ first affirmed its jurisdiction, rejecting Japan's argument that Australia's reservation to maritime delimitation disputes applied, as no such dispute existed between the parties. On the merits, the Court interpreted Article VIII objectively, focusing on whether JARPA II's design and implementation were reasonable in relation to its stated scientific objectives, rather than adopting a specific definition of "scientific research." Key findings included: the significant expansion of lethal sampling from JARPA to JARPA II lacked justification; sample sizes (e.g., 850 minke whales annually) were not transparently derived or necessary for stated goals;

actual takes were far lower than targets without program adjustment; and non-lethal methods were underutilised. The Court concluded JARPA II was not "for purposes of scientific research," thus breaching Schedule provisions 10(e), 10(d), and 7(b) (for fin whales), but not 30, as Japan had submitted its initial plan for review. Remedies ordered Japan to revoke JARPA II permits and refrain from issuing new ones under that program. Principles applied included treaty interpretation under the Vienna Convention, emphasising objective assessment over subjective intent, and the duty of cooperation within the ICRW framework.

This case concerned Japan's whaling program for Minke whales around Antarctica, which Australia challenged. Australia was successful in getting the ICJ to hold that Japan's program amounted to commercial whaling, which is prohibited under the treaty for Antarctica.

[83] Article VIII expressly contemplates the use of lethal methods, and the Court is of the view that Australia and New Zealand overstate the legal significance of the recommendatory resolutions and Guidelines on which they rely. First, many IWC resolutions were adopted without the support of all States parties to the Convention and, in particular, without the concurrence of Japan. Thus, such instruments cannot be regarded as subsequent agreement to an interpretation of Article VIII, nor as subsequent practice establishing an agreement of the parties regarding the interpretation of the treaty within the meaning of subparagraphs (a) and (b), respectively, of paragraph (3) of Article 31 of the Vienna Convention on the Law of Treaties.

Secondly, as a matter of substance, the relevant resolutions and Guidelines that have been approved by consensus call upon States parties to take into account whether research objectives can practically and scientifically be achieved by using non-lethal research methods, but they do not establish a requirement that lethal methods be used only when other methods are not available.

The Court however observes that the States parties to the ICRW have a duty to co-operate with the IWC and the Scientific Committee and thus should give due regard to recommendations calling for an assessment of the feasibility of non-lethal alternatives. The Court will return to this point when it considers the Parties' arguments regarding JARPA II (see paragraph 137).

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 32

Supplementary means of interpretation

Recourse may be had to supplementary means of interpretation, including the preparatory work of the treaty and the circumstances of its conclusion, in order to confirm the meaning resulting from the application of article 31, or to determine the meaning when the interpretation according to article 31:

- (a) leaves the meaning ambiguous or obscure; or
- (b) leads to a result which is manifestly absurd or unreasonable.
- Supplementary means of interpretation

- This is governed by Art 32 of the VCLT
- Supplementary means of preparation include what is known as the preparatory works (travaux préparatoires), which can include notes of discussions taken prior to signing/ratification of the treaty
- This is somewhat of a last-resort measure, and is generally used when the reader is scratching their head as to the meaning of the treaty

3.6 Invalidity of Treaties

3.6.1 Void

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 51

Coercion of a representative of a State

The expression of a State's consent to be bound by a treaty which has been procured by the coercion of its representative through acts or threats directed against him shall be without any legal effect.

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 52

Coercion of a State by the threat or use of force

A treaty is void if its conclusion has been procured by the threat or use of force in violation of the principles of international law embodied in the Charter of the United Nations.

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 53

Treaties conflicting with a peremptory norm of general international law ("jus cogens")

A treaty is void if, at the time of its conclusion, it conflicts with a peremptory norm of general international law. For the purposes of the present Convention, a peremptory norm of general international law is a norm accepted and recognized by the international community of States as a whole as a norm from which no derogation is permitted and which can be modified only by a subsequent norm of general international law having the same character.

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 64

Emergence of a new peremptory norm of general international law ("jus cogens")

If a new peremptory norm of general international law emerges, any existing treaty which is in conflict with that norm becomes void and terminates.

3.6.2 Invalid

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 46

Provisions of internal law regarding competence to conclude treaties

- 1. A State may not invoke the fact that its consent to be bound by a treaty has been expressed in violation of a provision of its internal law regarding competence to conclude treaties as invalidating its consent unless that violation was manifest and concerned a rule of its internal law of fundamental importance.
- 2. A violation is manifest if it would be objectively evident to any State conducting itself in the matter in accordance with normal practice and in good faith.

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 47

Specific restrictions on authority to express the consent of a State

If the authority of a representative to express the consent of a State to be bound by a particular treaty has been made subject to a specific restriction, his omission to observe that restriction may not be invoked as invalidating the consent expressed by him unless the restriction was notified to the other negotiating States prior to his expressing such consent.

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 48

Error

- 1. A State may invoke an error in a treaty as invalidating its consent to be bound by the treaty if the error relates to a fact or situation which was assumed by that State to exist at the time when the treaty was concluded and formed an essential basis of its consent to be bound by the treaty.
- 2. Paragraph 1 shall not apply if the State in question contributed by its own conduct to the error or if the circumstances were such as to put that State on notice of a possible error.
- 3. An error relating only to the wording of the text of a treaty does not affect its validity; article 79 then applies.

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 49

Fraud

If a State has been induced to conclude a treaty by the fraudulent conduct of another negotiating State, the State may invoke the fraud as invalidating its consent to be bound by the treaty.

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 79

- 1. Where, after the authentication of the text of a treaty, the signatory States and the contracting States are agreed that it contains an error, the error shall, unless they decide upon some other means of correction, be corrected:
 - (a) by having the appropriate correction made in the text and causing the correction to be initialled by duly authorized representatives;
 - (b) by executing or exchanging an instrument or instruments setting out the correction which it has been agreed to make; or
 - (c) by executing a corrected text of the whole treaty by the same procedure as in the case of the original text.
- 2. Where the treaty is one for which there is a depositary, the latter shall notify the signatory States and the contracting States of the error and of the proposal to correct it and shall specify an appropriate time-limit within which objection to the proposed correction may be raised. If, on the expiry of the time-limit:
 - (a) no objection has been raised, the depositary shall make and initial the correction in the text and shall execute a proces-verbal of the rectification of the text and communicate a copy of it to the parties and to the States entitled to become parties to the treaty;
 - (b) an objection has been raised, the depositary shall communicate the objection to the signatory States and to the contracting States.
- 3. The rules in paragraphs I and 2 apply also where the text has been authenticated in two or more languages and it appears that there is a lack of concordance which the signatory States and the contracting States agree should be corrected.
- 4. The corrected text replaces the defective text ab initio, unless the signatory States and the contracting States otherwise decide.
- 5. The correction of the text of a treaty that has been registered shall be notified to the Secretariat of the United Nations.
- 6. Where an error is discovered in a certified copy of a treaty, the depositary shall execute a process-verbal specifying the rectification and communicate a copy of it to the signatory States and to the contracting States.

3.7 Termination, Withdrawal and Suspension

- Termination of a treaty refers to it ceasing to exist
- Denunciation/withdrawal refers to when a party withdraws from a treaty (if it is multilateral, it will continue to exist for other parties)
- Suspension refers to the treaty remaining on foot, but its performance has been suspended/stopped for some period of time

- Internal grounds for termination, withdrawal and suspension stem from the treaty itself or the will of the parties (the required steps are spelled out in the treaty itself)
- External grounds for termination, withdrawal and suspension stem from external factors (e.g., material breach)

3.7.1 Express or Implied Agreement

- Under Arts 54 and 57 of the VCLT, a treaty can be terminated or suspended by agreement of the parties
- This is consistent with the consensual basis of international law

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 54

Termination of or withdrawal from a treaty under its provisions or by consent of the parties

The termination of a treaty or the withdrawal of a party may take place:

- (a) in conformity with the provisions of the treaty; or
- (b) at any time by consent of all the parties after consultation with the other contracting States.

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 57

Suspension of the operation of a treaty under its provisions or by consent of the parties

The operation of a treaty in regard to all the parties or to a particular party may be suspended:

- (a) in conformity with the provisions of the treaty; or
- (b) at any time by consent of all the parties after consultation with the other contracting States.

3.7.2 Denunciation/Withdrawal

- A party may denounce/withdrawal from a treaty if the treaty itself permits it, if all of the
 parties consent to the denouncement/withdrawal, or if the right to denounce/withdrawal
 can be implied from the nature of the treaty
- Under Art 56 of the VCLT, a party must give at least 12 months' notice of its intention to denounce/withdrawal from a treaty

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 56

Denunciation of or withdrawal from a treaty containing no provision regarding termination, denunciation or withdrawal

1. A treaty which contains no provision regarding its termination and which does not

provide for denunciation or withdrawal is not subject to denunciation or withdrawal unless:

- (a) it is established that the parties intended to admit the possibility of denunciation or withdrawal; or
- (b) a right of denunciation or withdrawal may be implied by the nature of the treaty.
- 2. A party shall give not less than twelve months' notice of its intention to denounce or withdraw from a treaty under paragraph 1.

3.7.3 Material Breach

- If a state breaches a treaty, it commits an internationally wrongful act (see Topic 10)
- Serious breaches can have consequences under the law of treaties
- A material breach is an impermissible repudiation of the treaty or violation of a provision essential for achieving the object and purpose of the treaty, following VCLT Art 60
- If there has been a material breach, the other parties in the treaty can suspend or terminate the treaty, if they wish to do so

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 60

Termination or suspension of the operation of a treaty as a consequence of its breach

- 1. A material breach of a bilateral treaty by one of the parties entitles the other to invoke the breach as a ground for terminating the treaty or suspending its operation in whole or in part.
- 2. A material breach of a multilateral treaty by one of the parties entitles:
 - (a) the other parties by unanimous agreement to suspend the operation of the treaty in whole or in part or to terminate it either:
 - (i) in the relations between themselves and the defaulting State; or
 - (ii) as between all the parties;
 - (b) a party specially affected by the breach to invoke it as a ground for suspending the operation of the treaty in whole or in part in the relations between itself and the defaulting State;
 - (c) any party other than the defaulting State to invoke the breach as a ground for suspending the operation of the treaty in whole or in part with respect to itself if the treaty is of such a character that a material breach of its provisions by one party radically changes the position of every party with respect to the further performance of its obligations under the treaty.
- 3. A material breach of a treaty, for the purposes of this article, consists in:
 - (a) a repudiation of the treaty not sanctioned by the present Convention; or

- (b) the violation of a provision essential to the accomplishment of the object or purpose of the treaty.
- 4. The foregoing paragraphs are without prejudice to any provision in the treaty applicable in the event of a breach.
- 5. Paragraphs 1 to 3 do not apply to provisions relating to the protection of the human person contained in treaties of a humanitarian character, in particular to provisions prohibiting any form of reprisals against persons protected by such treaties.

3.7.4 Impossibility

 A state may terminate or withdraw from a treaty if its performance has become impossible because 'an object indispensable for the execution of the treaty' has permanently disappeared or been destroyed, following VCLT Art 61

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 61

Supervening impossibility of performance

- 1. A party may invoke the impossibility of performing a treaty as a ground for terminating or withdrawing from it if the impossibility results from the permanent disappearance or destruction of an object indispensable for the execution of the treaty. If the impossibility is temporary, it may be invoked only as a ground for suspending the operation of the treaty.
- 2. Impossibility of performance may not be invoked by a party as a ground for terminating, withdrawing from or suspending the operation of a treaty if the impossibility is the result of a breach by that party either of an obligation under the treaty or of any other international obligation owed to any other party to the treaty.

3.7.5 Fundamental Change of Circumstances

- A state may suspend/terminate, or withdraw, from a treaty if there has been a fundamental change of circumstances since the treaty was concluded, following VCLT Art 62
- For this to happen, three requirements need to be satisfied:
 - The circumstances at the conclusion of the treaty must have been an essential basis of consent
 - The change must not have been foreseen
 - The change must radically transform the extent of the obligations still to be performed
- International courts are very reluctant to find that impossibility and/or fundamental change of circumstances have been made out (i.e., these have a very high threshold and consequently a very limited scope)

1969 Vienna Convention on the Law of Treaties Article 62

Fundamental change of circumstances

- 1. A fundamental change of circumstances which has occurred with regard to those existing at the time of the conclusion of a treaty, and which was not foreseen by the parties, may not be invoked as a ground for terminating or withdrawing from the treaty unless:
 - (a) the existence of those circumstances constituted an essential basis of the consent of the parties to be bound by the treaty; and
 - (b) the effect of the change is radically to transform the extent of obligations still to be performed under the treaty.
- 2. A fundamental change of circumstances may not be invoked as a ground for terminating or withdrawing from a treaty:
 - (a) if the treaty establishes a boundary; or
 - (b) if the fundamental change is the result of a breach by the party invoking it either of an obligation under the treaty or of any other international obligation owed to any other party to the treaty.
- 3. If, under the foregoing paragraphs, a party may invoke a fundamental change of circumstances as a ground for terminating or withdrawing from a treaty it may also invoke the change as a ground for suspending the operation of the treaty.

Gabčíkovo-Nagymaros Case [1997] ICJ Rep 7

This case involved questions of treaty law, state responsibility, succession of states (new states succeed to their obligation of their parent states, e.g., Soviet Union → Russia), and international environmental law. It arose from disagreement over a joint project between Hungary and Czechoslovakia to construct a series of locks and dams along a shared stretch of the Danube (under a 1977 Treaty). Hungary suspended work on the project after environmental protests were conducted by civil society. Czechoslovakia investigated a unilateral alternative ('Variant C'), resulting in Hungary seeking to terminate the 1977 Treaty.

The rules of the VCLT concerning the termination and suspension of treaties were considered by virtue of being part of customary international law (the VCLT itself was not applicable as the parties joined it after the 1977 Treaty; later treaties cannot be applied to earlier treaties). The 1977 Treaty contained no provision concerning termination, and therefore it could only be terminated according to limited grounds set out in VCLT.

Performance was not impossible (and in any event impossibility cannot be invoked by party which itself breaches treaty). Hungary's argument was that it could not comply with the terms of the treaty without severely damaging the surrounding environment. The plea of fundamental change of circumstances can only be applied in exceptional circumstances,

and there were none here; the court refused to apply art 62, as there were no radical changes to the obligations of the parties. Hungary was not entitled to invoke Slovakia's breach of treaty for terminating, as at that time no breach had yet taken place. Slovakia adopted Variant C because of Hungary's breach; Hungary by its own conduct had prejudiced its right to terminate the treaty. Although both Hungary and Slovakia failed to comply with the treaty, this reciprocal conduct did not bring treaty to an end nor justify its termination.

'The Court would set a precedent with disturbing implications for treaty relations and the integrity of the rule pacta sunt servanda if it were to conclude that a treaty in force between States, which the parties have implemented in considerable measure and at great cost over a period of years, might be unilaterally set aside on grounds of reciprocal non-compliance.'

The Court is very reluctant to declare the treaty as ineffective, emphasising the centrality of *pacta sunt servanda*. Thus, this case shows that treaties are very hard to get out of (when drafting treaties, it is wise to include provisions for breach and change of circumstance, as external measures are hard to invoke).

3.8 VCLT and Custom

- The table below outlines which VCLT provisions reflect or may reflect customary international law
- In this table, the following authorities are used:

| Aust | Aust, Anthony, <i>Modern Treaty Law and Practice</i> (Cambridge University Press, 3rd ed, 2013) |
|----------------|--|
| Corten & Klein | Corten, Oliver, and Pierre Klein (eds), <i>The Vienna Conventions on the Law of Treaties: A Commentary</i> (Oxford University Press, 2011) |
| Dörr & | Dörr, Oliver and Kirsten Schmalenbach (eds), Vienna Convention on the |
| Schmalenbach | Law of Treaties, A Commentary (Springer-Verlag, 2018) |
| Hollis | Hollis, Duncan B (ed), <i>The Oxford Guide to Treaties</i> (Oxford University Press: Oxford, 2012) |
| Villiger | Villiger, Mark E, Commentary on the 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties (Martinus Nijhoff, 2009) |

Table 3.4: Customary International Law Status of VCLT Articles

| Article | Customary International Law? | Authority |
|---------|---------------------------------|--|
| 1 | N/A | Schmalenbach in Dörr & Schmalenbach, p. 94 |

| Article | Customary International Law? | Authority |
|---------|---------------------------------|---|
| 2 | Yes | Maritime Delimitation and Territorial Questions between Qatar and Bahrain (Jurisdiction and Admissibility) [1994] ICJ Rep 112, para 23 |
| 2(1)(a) | Yes | Temple of Preah Vihear (Cambodia v Thailand) (Preliminary Objections) [1961] ICJ Rep 17, p. 31 |
| 2(1)(d) | Yes | Maritime Delimitation in the Indian Ocean (Somalia v. Kenya) (Judgement) [2017] ICJ Rep 3, para 42 |
| | | Summary of Practice of the Secretary-General as Depository of Multilateral Treaties, prepared by the Treaty Section of the Office of Legal Affairs, UN, 1994, ST/LEG7/Rev.1, p. 49 para. 161 |
| | | Land and Maritime Boundary between Cameroon and Nigeria (Cameroon v Nigeria: Equatorial Guinea intervening) (Judgment) ICJ Rep p.303, para. 263 |
| 3 | N/A | Schmalenbach in Dörr & Schmalenbach, p. 56 |
| 1 | N/A | Schmalenbach in Dörr & Schmalenbach, p. 94 |
| 4 | 1\/\Lambda | Dopagne in Corten & Klein 2011, p. 80 |
| 5 | I Indidente | Schmalenbach in Dörr & Schmalenbach, p. 99 |
| 3 | Unlikely | H. Anderson in Corten & Klein, p. 103 |
| (| Yes | Turp & Roch in Corten & Klein, p. 111 |
| 6 | | Schmalenbach in Dörr & Schmalenbach, p. 115 |
| | Partly | Hoffmeister in Dörr & Schmalenbach, p. 132 |
| 7 | | Maritime Delimitation in the Indian Ocean (Somalia v. Kenya) (Judgment) [2017] ICJ Rep, para 43 |
| 7(1) | Yes | Villiger, p. 146 |
| 7(2)(a) | Yes | Armed Activities on the Territory of the Congo (New Application: 2002) case (Democratic Republic of Congo v Rwanda), Jurisdiction and Admissibility, Judgment [2006] ICJ Reports 6, para. 46 |
| 7(2)(c) | "Progressive development" | Hoffmeister in Dörr & Schmalenbach, p. 133 |
| 0 | Maylea | Angelet & Leidgens in Corten & Klein, p. 157 |
| 8 | Maybe | Hoffmeister in Dörr & Schmalenbach, p. 146 |
| 0(1) | Yes | Villiger, p.163 |
| 9(1) | | Hoffmeister in Dörr & Schmalenbach, p. 153 |
| 9(2) | Unclear | Aust, pp.79-80 |
| 10 | V | Villiger, p. 171 |
| 10 | Yes | Hoffmeister in Dörr & Schmalenbach, p. 165 |
| 11 | "Some customary value" | Szurek in Corten & Klein, p. 192 |
| 11 | | Continued on next page |

| Article | Customary International Law? | Authority |
|----------|---------------------------------------|---|
| | | Land and Maritime Boundary (Cameroon v Nigeria) (Judgment) ICJ Rep 303, para 264 |
| 12 | Yes in its entirety | Hoffmeister in Dörr & Schmalenbach, p. 183 |
| 12(1)(a) | Yes | Maritime Delimitation in the Indian Ocean (Somalia v. Kenya) (Judgment) [2017] ICJ Rep 1, para 45 |
| 12(1)(b) | Yes | Aust, p. 91 |
| 12(1)(c) | No | Van Assche in Corten & Klein, pp.216-217 |
| 12(2)(a) | Yes | Van Assche in Corten & Klein, pp.216-217 |
| 12(2)(b) | Maybe | Van Assche in Corten & Klein, pp.216-217 Aust p. 91 |
| 13 | Yes | Van Assche in Corten & Klein, p. 257 |
| 14 | Yes, but its actual content uncertain | Hoffmeister in Dörr & Schmalenbach, p. 195 Hoffmeister in Dörr & Schmalenbach, p. 203 |
| 15 | Yes | Marchi in Corten & Klein, p. 334 Hoffmeister in Dörr & Schmalenbach 2018 pp. 219 |
| 16 | Yes | Land and Maritime Boundary between Cameroon v Nigeria (Preliminary Objections), [1998], p.275, para. 31 Horchani, in Corten & Klein, p. 337 Hoffmeister in Dörr & Schmalenbach, p. 231 |
| 17 | Yes | Hilling, in Corten & Klein, p. 364 |
| 18 | Yes | Greece v Commission C-203/07 P [2008] ECR I-8161, para 64 Bradley in Hollis, pp. 212-213 |
| | | Summary of Practice of the Secretary-General as Depository of Multilateral Treaties, prepared by the Treaty Section of the Office of Legal Affairs, UN, 1994, ST/LEG7/Rev.1, p.61, para. 204 |
| 19 | Yes | European Commission on Human Rights, in Temelstasch case (1983) 5 EHRR 417, p. 432 |
| | | Reservations to the Convention on Genocide (Advisory Opinion) ICJ Rep 15, p. 24 |
| 20 | Yes | Müller in Corten & Klein, p. 495 |
| 20(4) | No | Walter in Dörr & Schmalenbach, p. 311 |
| 20(5) | No | Aust, p. 128 |
| 21(1) | Yes | Muller in Corten & Klein, p. 542 |
| 21(2) | Yes | Walter in Dörr & Schmalenbach, pp. 349 |
| 21(3) | No | Swaine in Hollis, p. 294 |

| Article | Customary International Law? | Authority |
|---------------|--------------------------------------|---|
| 22 | Vaa | Corten & Klein 2011, p. 574 |
| 22 | Yes | Armed Activities on the Territory of the Congo (Democratic Republic of the Congo v Rwanda), Jurisdiction and Admissibility, (Judgment) [2006] ICJ Rep 6, para 14 |
| 22(1) | Yes | Commentary on guideline 2.5.1, Report of the ILC to the General Assembly, 2003, A/58/10, p.199, para. 14 |
| | | Walter in Dörr & Schmalenbach, p. 361 |
| 22(3)(a) | Yes | Armed Activities on the Territory of the Congo (New Application: 2002) (Democratic Republic of the Congo v. Rwanda), Jurisdiction and Admissibility, Judgment, ICJ Reports 2006 p.6, para. 41 |
| 23 | Yes | Pellet and Schabs in Corten & Klein, p. 596 |
| 23(1) and (4 | 4) Yes | Commentary on guideline 2.5.1, Report of the ILC to the General Assembly, 2003, A/58/10, p. 199, para. 14 |
| | | Walter in Dörr & Schmalenbach, p. 380 |
| 23(2) and (3) | Yes | Walter in Dörr & Schmalenbach, p. 380 |
| 24 | Yes | Land and Maritime Boundary between Cameroon and Nigeria (Preliminary Objections) [1998] ICJ Rep 275, para. 31 |
| | | Krieger in Dörr & Schmalenbach, p. 425 |
| 25(1) | Yes | Villiger, p. 357 |
| 25(2) | Maybe | Mathy in Corten & Klein, pp.640-641 |
| 26 | Binding as a general principle of IL | Gabcikovo-Nagymaros Projects Case (Hungary v Slovakia) ICJ Reports 1997 p.7, para. 142 |
| _0 | | Pulp Mills on the River Uruguay (Argentina v. Uruguay) (Judgment) ICJ Rep 135, para 145 |
| | | Boustany & Didat in Corten & Klein, p. 705 |
| 27 | Yes | Certain Questions of Mutual Assistance in Criminal Matters (Djibouti v France) (Judgment) [2008] ICJ Rep 177, para. 124 |
| | | ELSI (United States v Italy) (Judgment) [1989] ICJ Rep 15 |
| | | Fisheries Case (UK v Norway) [1951] ICJ Rep 116, 132 |
| | | Questions relating to the Obligation to prosecute or extradite (Belgium v Senegal) (Judgment) [2012] ICJ Rep 423, para 100 |

| Article | Customary International Law? | Authority |
|---------|---------------------------------|---|
| 28 | Yes | Application of the Convention on the Prevention and Punishment of the Crime of Genocide (Croatia v. Serbia) (Judgment) [2015] ICJ Rep 3, para 95 |
| | | Case of Janowiec and Others v Russia [2013], ECHR 1003, para 121 |
| | | Karagiannis in Corten & Klein, p. 735 |
| 29 | Likely yes | Council v Front Polisario [2013] ECJ C-104/16 P 973, para 95 |
| | | von der Decken in Dörr & Schmalenbach, p. 522 |
| | | Aust, p. 228 |
| 30 | Uncertain | von der Decken in Dörr & Schmalenbach, p. 542 |
| | | Orakhelashvili in Corten & Klein, p. 774 |
| | | Dispute regarding Navigational and Related Rights (Costa Rica v. Nicaragua) (Judgment) [2009] ICJ Rep 213, para. 47 |
| 31 | Yes | Application of the Convention on the Prevention and Punishment of the Crime of Genocide (Bosnia and Herzegovina v. Serbia and Montenegro), (Judgment) [2007] ICJ Rep 43, para. 160 |
| | | Arbitral Award (Guinea-Bissau v Senegal) [1991] ICJ Rep 53, para 48 |
| | | Legal Consequences of the Construction of a Wall in the Occupied Palestinian Territory (Advisory Opinion) [2004] ICJ Rep 136, para. 94 |
| | | Territorial Dispute (Libyan Arab Jamahiriya v Chad) (Judgment) ICJ Rep 83, para. 41 |
| | | Sovereignty over Pulau Ligitan and Pulau Sipadan (Indonesia/Malaysia) (Judgment) [2002] ICJ Rep 645, para. 37 |
| 32 | V | Same as Article 31 |
| 32 | Yes | Le Bouthillier in Corten & Klein, p. 846 |
| 33 | Yes, especially 33(4) | LaGrand (Germany v. United States of America), (Judgment), ICJ Rep 466, para. 101 |
| | | Dörr in Dörr & Schmalenbach, p. 63 |
| 34 | Yes | Harris and Sivakumaran, Cases and Materials on International Law (8th ed, 2015) p. 687 |
| | | David in Corten & Klein, pp.888-889 |
| | | Proelss in Dörr & Schmalenbach, p. 657 |
| 25 | Vac | Laly-Chevalier in Corten & Klein, p. 903 |
| 35 | Yes | Continued on next pag |

| Article | Customary International Law? | Authority |
|---------|---------------------------------|---|
| | | Question of the Delimitation of the Continental Shelf between Nicaragua and Colombia beyond 200 nautical miles from the Nicaraguan Coast (Nicaragua v. Colombia) (Preliminary Objections) [2016] ICJ Rep 100, (Separate opinion of Judge Owada) p. 154, para 34 |
| 36(1) | Maybe | D'Argent in Corten & Klein, pp. 930-931 Proelss in Dörr & Schmalenbach, p.732 |
| 36(2) | Probably | D'Argent in Corten & Klein, p.944 |
| 37 | Maybe | Gaja in Corten & Klein, p. 949 |
| 38 | Maybe | Proelss in Dörr & Schmalenbach, p. 94 |
| 39 | Maybe | Sands in Corten & Klein, p. 968 Von der Decken in Dörr & Schmalenbach, p. 761 |
| 40 | Yes, but diverging opinions | Summary of Practice of the Secretary-General as Depository of Multilateral Treaties, prepared by the Treaty Section of the Office of Legal Affairs, UN, 1994, ST/LEG7/Rev.1, p.76, para. 252 |
| | | von der Decken in Dörr & Schmalenbach, p. 769 |
| | | Ardault and Dormoy in Corten & Klein, p. 980 |
| 41 | Likely | Jadhav Case (India v. Pakistan) Provisional Measures, Order of 18 May 2017, [2017] ICJ Rep 231, Declaration of Judge Bhandari p. 5, para 12 |
| | | Rignaux et al in Corten & Klein, p. 994 |
| 42 | Yes | Gabčikovo-Nagymaros (Hungary v Slovakia) [1997] ICJ Rep 92, para. 100 |
| | | von der Decken in Dörr & Schmalenbach, p. 794 |
| 43 | Yes | Military and Paramilitary Activities in and against Nicaragua (Nicaragua v United States) (Merits) [1986] ICJ Rep 14, para 178 |
| | | Tehran Hostages Case (United States v Iran) [1980] ICJ Rep 3, para 62 |
| | | von der Decken in Dörr & Schmalenbach, p. 816 |
| 44 | Yes | Falkowska in Corten & Klein, p. 1053 |
| 45 | Yes | Certain Norwegian Loans (France v Norway) Separate Opinion of Judge Lauterpacht [1956] ICJ, pp 56-7 |
| | | Maritime Delimitation in the Indian Ocean (Somalia v. Kenya) (Judgment) [2017] ICJ Rep 161, para 49 |
| 46 | Yes | Von der Decken in Dörr & Schmalenbach, p. 828 |
| 47 | Yes | Rensmann in Dörr & Schmalenbach, p. 866 |
| | | Rensmann in Dörr & Schmalenbach, p. 878 |
| 48 | Yes | Continued on next page |

| Article | Customary International Law? | Authority |
|---------|---------------------------------|--|
| | | Phillips Petroleum Co v Iran Case No 39, (1982) 70 ILR 483 |
| | | Joe Verhoeven, 'Invalidity of Treaties: Anything New in/under the Vienna Conventions' in Enzo Cannizzaro (ed), The Law of Treaties Beyond the Vienna Convention, (Oxford Scholarship Online 2011) pp.302-303 |
| 49 | No | Rensmann in Dörr & Schmalenbach, p. 913 |
| 50 | No | Rensmann in Dörr & Schmalenbach, p. 921 Cot in Corten & Klein, p. 1173 |
| | | Distefano in Corten & Klein, p. 1185 |
| 51 | Yes | Rensmann in Dörr & Schmalenbach, p. 934 |
| | | Dubai-Sharjah Border Arbitration (1981) 91 ILR 543, 569 |
| | Yes | Fisheries Jurisdiction (United Kingdom v. Iceland) (Jurisdiction) ICJ Rep 3, para.24 |
| 52 | | Genocide Case (Further Requests for the Indication of Provisional Measures) (separate opinion Lauterpacht) [1993] ICJ Rep 407, para 100 |
| | | Schmalenbach in Dörr & Schmalenbach, p. 959 |
| | | Corten in Corten & Klein, p. 1204 |
| | | Lagerwall in Corten & Klein, p. 1465 |
| 53 | Yes | Armed Activities on the Territory of the Congo (Democratic Republic of the Congo v Rwanda) (Separate Opinion of Judge ad hoc Dugard) [2006] ICJ Rep 6, para. 8 |
| | | Suy in Corten & Klein, p. 1226 |
| | | Schmalenbach in Dörr & Schmalenbach, p. 966 |
| | | Prosecutor v Morris Kallon and Brima Bazzy Kamara, (2004) case no. SCSL-2004-15 AR72 and no. SCSL-2004-16-AR72, paras 61-62 |
| 54(a) | Vac | Giegerich in Dörr & Schmalenbach, p. 1018 |
| 94(a) | Yes | Chapaux in Corten & Klein, p. 1238 |
| 54(b) | Maybe | Chapaux in Corten & Klein, p. 1240-41 |
| | | Chapaux in Corten & Klein, p.1247-48 |
| 55 | No | Military and Paramilitary Activities in and against Nicaragua (Jurisdiction and Admissibility) [1984] ICJ Rep 392, para 60 |
| | | Giegerich in Dörr & Schmalenbach, p. 1058 |

Continued on next page

| Article | Customary International Law? | Authority |
|----------|---|---|
| 56(1)(a) | Yes | Giegerich in Dörr & Schmalenbach, p. 1063 |
| 56(2) | Yes but content uncertain | Giegerich in Dörr & Schmalenbach, p. 1077 |
| 57 | No | Giegerich in Dörr & Schmalenbach, p. 1082 |
| 58(1)(a) | Yes | Giegerich in Dörr & Schmalenbach, p. 1084 |
| 58(1)(b) | Maybe | Giegerich in Dörr & Schmalenbach, p. 1084 |
| 58(2) | Yes | European Communities-Measures Affecting the Importation of Certain Poultry Products, WT/DS69/R (12 March 1998) (Report of the Panel), para 206 |
| 59 | Yes | Giegerich in Dörr & Schmalenbach, p. 1128 |
| 60 | Yes "in many respects" | Legal Consequences for the States of the Continued Presence of South Africa in Namibia (South West Africa) (Advisory Opinion) ICJ Rep 47, para 95 Gabčikovo-Nagymaros (Hungary v Slovakia) [1997] ICJ Rep 7, para 99, 109 |
| | | Simma and Tams in Corten & Klein, pp. 1356-1357 |
| 61 | Yes "in many respects" | Gabčikovo-Nagymaros (Hungary v Slovakia) [1997] ICJ Rep 92, p.7, paras. 99 and 102 |
| 62 | Yes, "in many respects" | Fisheries Jurisdiction (United Kingdom v. Iceland) (Jurisdiction), ICJ Reports 1973 p.3, para. 36 |
| | | Gabčikovo-Nagymaros (Hungary v Slovakia) [1997] ICJ Rep 92, para. 46 and 99 |
| | | Shaw and Fournet in Corten & Klein, p. 1416-19 |
| 63 | Yes | Giegerich in Dörr & Schmalenbach, p. 1197 United States Diplomatic and Consular Staff in Tehran (United States of America v Iran) (Merits) [1980] ICJ Rep 3, p.28, para. 54 |
| | | Angelet in Corten & Klein, p. 1440 |
| 64 | Yes | Gabčikovo-Nagymaros (Hungary v Slovakia) [1997] ICJ Rep 92, para 112 |
| | | Schmalenbach in Dörr & Schmalenbach, p. 1206-7 |
| | | Lagerwall in Corten & Klein, p. 1459 and 1465 |
| 65 | Yes, "generally reflect[s] customary international law" | Fisheries Jurisdiction (United Kingdom v. Iceland) (Jurisdiction) ICJ Rep 3, para 44 |
| | | Gabčikovo-Nagymaros (Hungary v Slovakia) [1997] ICJ Rep 92, para 109 |
| | | Krieger in Dörr & Schmalenbach, p. 1213 |
| | | Prost in Corten & Klein, p. 1490 and 1498 |
| 66 | Mixed views | "[G]enerally reflect[s]" CIL: Gabčikovo-Nagymaros Project (Hungary/Slovakia) [1997] ICJ Rep 7, para 109 Continued on next page |

| Article | Customary International Law? | Authority |
|---------|--|--|
| | | Not CIL: Armed Activities Case (DRC v Rwanda) (Jurisdiction and Admissibility) [2006] ICJ Rep 6, para 125 |
| | | Krieger in Dörr & Schmalenbach, p. 1234 |
| 67 | Yes, "generally reflect[s] customary international | Gabčikovo-Nagymaros Project (Hungary/Slovakia) [1997] ICJ Rep 7, para 109 |
| | law" | Tzanakopoulos in Corten & Klein, p. 1548-9 |
| 68 | Yes, "in many respects" | Legal Consequences for the States of the Continued Presence of South Africa in Namibia (South West Africa) (Advisory Opinion) ICJ Rep 47, para. 94 |
| | | Tzanakopoulos in Corten & Klein, p. 1565 |
| 70 | Yes | Appeal Relating to the Jurisdiction of the ICAO Council (India v Pakistan) [1972] ICJ Rep 46, 54, para 16 |
| | | Wittich in Dörr & Schmalenbach, p. 1299 |
| 71 | Unclear | Crépeau, Côté and Rehaag in Corten & Klein, p. 1615 |
| 71 | | Wittich in Dörr & Schmalenbach, p. 1317 |
| 72 | Unclear | Couveur and Espalie Berdud in Corten & Klein, p. 1628 |
| 72 | | Wittich in Dörr & Schmalenbach, p. 1326 |
| | Generally not CIL | Krieger in Dörr & Schmalenbach, p. 94 |
| 73-75 | | Angelet and Clave in Corten & Klein, p. 1678 |
| | | Tomuschat in Corten & Klein, p. 1689 |
| 76 & 77 | Yes | Tichy and Bittner in Dörr & Schmalenbach, p. 1410, 1414, 1416 |
| | | Caflisch in Corten & Klein, p. 170 |
| | | Ouguergouz, Villalpando & Morgan-Foster in Corten & Klein 2011, p. 1717 |
| 70.0.70 | No progressive | Tichy & Bittner in Dörr & Schmalenbach, p. 1433, 1439 |
| 78 & 79 | development | Kolb in Corten & Klein , p. 1779, 1782 |
| 80 | Yes | Klein in Corten & Klein , p. 1799 |
| 81-85 | No | Final Provisions |

Topic 4

International Law and Australian Law

4.1 Role of International Law in Domestic Law

- Domestic law can be taken as a source of public international law, as evidence of custom and/or the general principles of public international law
- International law may recognise institutions of domestic law that have an
 important/extensive role in international law (e.g., in the case of Barcelona Traction
 (Belgium v Spain) [1970] ICJ Rep 3, the ICJ recognised that corporations can be recognised
 within international law)
- States cannot invoke absent/inconsistent domestic law as an excuse for failing to meet their obligations under international law
 - In Alabama Claims Arbitration (US/Britain) (1872), it was held that Britain could not "justify itself for a failure in due diligence on the plea of insufficiency of the legal means of action which it possessed"
 - * Here, the US was successful in pursuing compensation for Britain's failure to perform its obligations as a neutral party during the civil war, by claiming Britain had failed to stop the construction of Confederate ports
 - * Britain claimed that they did not have executive permission to do so
 - * The court held that in matters of international law, the British government cannot justify itself by reference to insufficient or absence of domestic law
 - In Sandline Arbitration (1998), Papua New Guinea (PNG) could not rely on internal law to support their plea that an international contract was invalid
 - * This case was a commercial arbitration between PNG and Sandline (which was a mercenary company). The government of PNG entered into a\$36m contract for Sandline to supply mercenaries to assist the PNG defence forces in their fight against the boganville revolutionary army
 - * PNG made a payment of \$18m, but declined to make the second half of the payment, claiming that the agreement had been reached contrary to the PNG constitution (i.e., they didn't have approval from Parliament for the hiring of external military forces)
 - * The tribunal held that the contract was governed by international law, and applied the principle that a state cannot rely on its own internal laws for the basis that the claim was wrong/illegal

- * This case reinforces the principle that a state cannot cite inconsistent/absent domestic law to escape their obligations
- In an Australian Court, public international law, like Australian law, cannot be proved law by expert evidence, following ACCC v PT Garuda (No 9) [2013] FCA 323
 - Generally, to refer to the law of another country, expert evidence can be called upon to give context and content of the other country's law
 - This is not the case for international law, as it is treated as being the same as Australian law for the purposes of interpreting it

Australian Competition and Consumer Commission v PT Garuda (No 9) [2013] FCA 323

This case concerned the ACCC's claim that PT Garuda had engaged in price fixing in relation to air cargo services. The ACCC sought to rely on expert evidence to prove the existence of public international law, which the court rejected.

The court held that public international law, like Australian law, cannot be proved by expert evidence. This is because the court is the ultimate arbiter of the law, and so it is the court's responsibility to determine the law, rather than an expert witness.

Perram J at [31] In truth, opinion evidence is not receivable on an issue of domestic law because the law is not a matter for proof or disproof. It is for this reason, as pointed out in Cross on Evidence at [3075], that a judge is not obliged to accept a proposition of law agreed upon by the parties: cf *Damberg v Damberg* (2001) 52 NSWLR 492 at [149].

4.2 Monism and Dualism

- Monism refers to the idea that international law and domestic law are part of a single legal system, and that international law is automatically incorporated into domestic law
- Incorporation refers to the notion that international law is automatically a part of domestic law, and there are several variations of this notion:
 - (a) The courts are to apply international law unless it is inconsistent with statute (i.e., apply international law over common law)
 - (b) The courts are to apply international law unless it is inconsistent with statute or common law
- It is relatively rare to find a state that automatically accepts international law; it is much more likely that the process of incorporation will be mediated by the courts
- Dualism refers to the notion that there are two independent systems of law; international law has no direct impact upon municipal law, and must be implemented into domestic law through executive order, legislation or judicial decision (i.e., the opposite of monism)
 - If there is an interaction between domestic and international law, it mus the
 governed by either international law or domestic law; they cannot just freely interact

- Transformation refers to the notion that international law must be transformed into domestic law before it can be applied, and has several variations:
 - (a) Only legislation may implement the provisions of international law
 - (b) Legislation or court decisions may implement the provisions of international law

4.3 Customary International Law in Australian Law

- In Australia, the automatic incorporation of customary international law has been rejected
 - There is no clear authority on this, but it can be said to a high degree of confidence that the Courts are not happy with custom becoming an automatic part of Australian common law
- However, custom can influence courts, and be a source of common law, which is known as the soft transformation approach
 - This approach has not been clearly endorsed by the courts (i.e., the notion that custom may be adopted by the courts, and not exclusively left to the parliament to implement)
- This is in contrast to the UK, where they are more open to the incorporation approach with the exception for international crimes
- The case of *Trendex Trading* [1977] QB 529, which was a case involving foreign state immunity, approached this issue
 - This case concerned a contract for the purchase of cement by the Nigerian government; the terms of the contract were governed by English law and gave jurisdiction to the courts of England and Wales
 - The case looked at the extent to which the rules of immunity under international law could apply in English common law
 - The shipments of concrete were clogging up the port of Lagos
 - The Central Bank of Nigeria cancelled these contracts, and Trendex sued the Central Bank of Nigeria under the contract, and the Court found that the bank was separate from the state, and could not claim immunity
 - This case demonstrated that when the rules of international law had changed, the UK courts were justified in applying these new rules
 - Per Lord Denning MR at page 544, "[i]ntl. law does change: and the courts have applied the changes without...any Act of Parliament. In a sense, the doctrine of incorporation admits to the reality of international law"
- Likewise, the recent example of Law Debenture Trust v Ukraine [2023] UKSC 11 held that it
 was English, and not international, law which was to be applied to ascertain whether the
 defence of duress applies to an English contractual dispute
 - The facts of this case relate to a loan made by Russia to Ukraine (who, at the time of writing, remain engaged in armed conflict)

- As part of this conflict, Ukraine stopped paying moneys owed under this loan, and raised various justifications for doing so, under both English contract law and under PIL
- Ukraine claimed economic and military duress as to being forced into the threat, arguing that they could rely on the doctrine of countermeasures, which allowed for them to take retaliatory measures against Russia in response to Russia's 2014 annexation of Crimea
- The Court held that the relationship between domestic and international law was far more complex than as suggested in *Trendex*
- The UK Supreme Court adopted PIL as a source of law, so long as it was not inconsistent with English law
- At [204], the court held that "It seems preferable, therefore, to regard customary international law not as automatically a part of the common law but as a source of the common law on which courts in this jurisdiction may draw as appropriate."
- The cases of Chow Hung Ching v R (1949) 77 CLR 449 and Mabo v Queensland (No 2) (1992) 175 CLR 1 provide some insight into the influence of public international law in Australian law
- Additionally, in *Habib v Commonwealth* (2010) 183 FCR 62, for some claims surrounding fundamental human rights, the common law should reflect universal norms

Chow Hung Ching v R (1949) 77 CLR 449

This was a pivotal case concerning Chinese army labourers who had been convicted of assault in Papua New Guinea (which was then under Australian UN mandate), with the central question being whether they enjoyed immunity as 'visiting armed forces'. The Chinese government claimed that the labourers were immune from prosecution under international law, as they were part of the Chinese army. The HCA held that no immunity applied as they were in PNG as civilians, not in their capacity as members of the military forces of China. Generally, when foreign armed forces are present in a country, they are protected by a status of forces treaty, which affords them certain types of immunities.

| Latham | International law is not as such part of the law of Australia (Chung Chi | |
|----------|---|--|
| CJ at | Cheung v. The King, and see Polites v. The Commonwealth), but a universally | |
| Page 462 | recognized principle of international law would be applied by our courts: | |
| | West Rand Central Gold Mining Co. v. The King. | |
| Dixon J | The theory of Blackstone (automatic incorporation) is 'regarded as without | |
| at Page | foundation' and the 'true view' is that of Brierly 'that international law is not | |
| 477 | part, but is one of the sources' of Australian law. The immunity of foreign | |
| | armed forces held to be part of the common law. | |
| | armed forces held to be part of the common law. | |

Starke J at Page 471 The Courts acknowledge the existence of a body of rules which nations accept amongst themselves. On any judicial issue they seek to ascertain what the relevant rule is, and, having found it, they will treat it as incorporated into the domestic law, so far as it is not inconsistent with rules enacted by statutes or finally declared by their tribunals." What then are the immunities of arms and military forces of other nations accepted by our courts? It is by no means easy to answer that question, for in modern times those immunities are settled by conventions between the nations

This case held that the common law can be developed by regard to customary international law where it is not inconsistent with domestic law (i.e., it opens up potential for development, but does not automatically give it status). Here, there was no relevant treaty, and so the issue was of common law and of customary international law

Mabo v Queensland (No 2) (1992) 175 CLR 1

This was a landmark case that recognised the native title of Indigenous Australians to the lands of Australia. Additionally, it provides some insight into the influence of public international law. In it, the High Court rejects the automatic inclusion of international law in the Australian legal system, but holds that it is still a good influence. This is particularly the case when referring to aspects of international law that touch on universal human values (e.g., areas like international human rights law may be more amenable to being relevant in terms of incorporating international law).

Brennan J at Page 42 "The common law does not necessarily conform with international law, but international law is a legitimate and important influence on the development of the common law, especially when international law declares the existence of universal human values."

Habib v Commonwealth (2010) 183 FCR 62

This case was a civil claim for torture committed overseas. Habib was an Australian citizen, and was accused of being involved in various terrorist offences for which he was never proven to have committed. He was kept in detention overseas; moreover, the Australian authorities knew he was being detained and was being seriously mistreated. He brought a civil claim for tort against the Australian government seeking damages for what he alleged was torture. Ordinary, this is a type of case that is hard to win in an Australian Court as they will not decide on matters that happened by other governments in their country. However, Black CJ of the federal court held that the foreign act of state doctrine must yield when we are looking at a case involving torture (which is one of the most serious international crimes) - i.e., the doctrine could be modified to take note of the international prohibition of torture. The overarching principle of this case is that in a civil claim for torture (or any serious crime forbidden under international norms), the common law of state doctrine should reflect universal norms.

Black CJ at [7]

I agree with Jagot J that the common law has evolved such that the authorities do not support the application of the act of state doctrine in the present case. If, however, the choice were finely balanced, the same conclusion should be reached. When the common law, in its development, confronts a choice properly open to it, the path chosen should not be in disconformity with moral choices made on behalf of the people by the Parliament reflecting and seeking to enforce universally accepted aspirations about the behaviour of people one to another.

4.3.1 Criminal Law and Customary International Law

• The courts have held that customary/international criminal law established by custom can **never** be part of the Australian common law, following *Nulyarimanna v Thompson* (1999) 165 ALR 621, and *R v Jones* [2006] 1 All ER 741

1948 Convention on the Prevention and Punishment of the Crime of Genocide Article 2

In the present Convention, genocide means any of the following acts committed with intent to destroy, in whole or in part, a national, ethnical, racial or religious group, as such:

- (a) Killing members of the group;
- (b) Causing serious bodily or mental harm to members of the group;
- (c) Deliberately inflicting on the group conditions of life calculated to bring about its physical destruction in whole or in part;
- (d) Imposing measures intended to prevent births within the group;
- (e) Forcibly transferring children of the group to another group.

Nulyarimanna v Thompson (1999) 165 ALR 621

This case questioned whether genocide was an offence under criminal law (this case was decided before Australia became a party to the 1998 Rome Statute of the International Criminal Court and implemented the Statute in legislation). At the time, Australia was a party to the genocide convention, but it was yet to implement the crime of genocide as a matter of legislation.

A number of indigenous people had argued that the Commonwealth had committed genocide against their people (by extinguishing their native title, and failing to apply for UNESCO for their lands). They alleged that Commonwealth ministers and certain others had committed genocide by:

- (a) Adopting laws and policies that extinguished native title; and
- (b) Not applying for World Heritage listing of certain Indigenous lands

The Court held that genocide was not part of Australian common law, and so it never

decided. Wilcox J and Whitlam J held that a *jus cogens* prohibition of genocide was not automatically part of Australian common law, and that criminal offences must be created by statute, not by the courts. Moreover, it is for Australian parliaments to create criminal law, not for the common law to decide criminal law. Wilcox J held that if custom could create common law crime, 'it would lead to the curious result that an international obligation incurred pursuant to customary law has greater domestic consequences than an obligation incurred, expressly and voluntarily, by Australia signing and ratifying an international convention'. It is a point of the treaty process in Australia that mere ratification isn't sufficient to make it law; it must be placed into legislation by parliament. Merkel J (dissenting) held that the offence of genocide is an offence under Australian common law, and that the Australian approach is the 'common law adoption approach'; a rule of international law is to be adopted by a court so long as it is not inconsistent with legislation or public policy.

Wilcox J held that if domestic criminal law could be influenced by customary/international criminal law, it would lead to the position where international obligations have greater obligations than domestic consequences, sidelining domestic law and thus a state's independence to make its own criminal laws.

| If this were the position, it would lead to the curious result that an |
|--|
| international obligation incurred pursuant to customary law has greater |
| domestic consequences than an obligation incurred, expressly and |
| voluntarily, by Australia signing and ratifying an international convention. |
| "This Court has never accepted that the Constitution contains an |
| implication that it should be interpreted to conform with the rules of |
| international law If the rule were applicable to a Constitution, it would |
| operate as a restraint on the grants of power conferred". |
| |

R v Jones [2006] 2 All ER 741

In 2003, Margaret Jones and others broke into a RAF base, and caused damage to fuel tankers and bomb trailers at the beginning of the second Iraq war. They were subsequently charged with conspiracy to cause criminal damage contrary to the UK's *Criminal Law Act* 1967. The defendant sought to rely on the legal justification that she had acted to impede the commission of the customary international law crime of aggression by the UK and the US (i.e., they should not be culpable because they broke the law to prevent the worse crime of aggression).

The House of Lords held that whilst the crime of aggression was part of customary international law, it was not a crime under English law in the absence of any specific statutory authority saying otherwise - no such authority existed. Lord Bingham held that automatic incorporation of common law crimes would unjustifiably usurp the legislature. Likewise, Lord Mance held that 'even crimes under public international law can no longer be, if they ever were, the subject of any automatic reception or recognition in domestic law by the courts'. Moreover, Lord Hoffman held that new domestic offences 'should not creep into existence as a result of an international consensus to which only the executive of this country is a party', emphasising the concerns surrounding the separation of powers.

4.4 Treaties in Australian Law

- The power to enter into treaties is an exclusively Executive prerogative power under s 61 of the Constitution
 - This power was inherited from the UK Imperial government, who initially negotiated and entered into treaties on Australia's behalf
 - From 1926, Australia began to enter into treaties on its own behalf
- "The federal executive, though the Crown's representative, possessed exclusive and unfettered treaty-making power" Koowarta v Bjelke-Petersen (1982) 153 CLR 168 at [215], per Stephen J

Constitution s 61

The executive power of the Commonwealth is vested in the Queen and is exercisable by the Governor-General as the Queen's representative, and extends to the execution and maintenance of this Constitution, and of the laws of the Commonwealth.

- The power to implement treaties is a legislative power, and is vested in the Parliament under s 51(xxix) of the Constitution ("The Parliament shall, subject to this Constitution, have power to make laws for the peace, order, and good government of the Commonwealth with respect to: ... external affairs")
- The provisions of a treaty do not form part of Australian law, unless they have been implemented by statute, which was determined in *Dietrich v R* [1992] HCA 57
- The same principle applies to implementing the resolutions of international organisations (such as those of the United Nations' Security Council), following *Bradley v Commonwealth* (1973) 128 CLR 557
- This approach arises as a result of the separation of powers doctrine (treaty-making is for the Executive, law-making is for the Parliament); there are limited exceptions for peace treaties and maritime boundary agreements, although these have never been tested

Dietrich v R [1992] HCA 57

In this case, the accused made an argument that he was entitled to publicly-funded legal representation in a criminal case under art 14 of the *International Covenant on Civil and Political Rights* (of which Australia was a party). The High Court held that this was not the case, as the ratification of the covenant as an executive act did not affect Australian law, as its provisions had not been legislated and thus implemented by the Parliament, following Brennan CJ, and Mason and McHugh JJ. **The Court held that the provisions of a treaty do not form part of Australian law unless they have been implemented by statute.**

Bradley v Commonwealth (1973) 128 CLR 557

In this case, the executive was concerned about the activities of a place in Crows Nest known as the Rhodesian Information Centre, which was an agent of the illegal Southern Rhodesian regime. The UN Security Council passed a binding resolution on all members, requiring them not to recognise the illegal Rhodesian regime, and to take action against them in their own jurisdictions. In line with this, the Australian government shut down all communications to this centre, but as the resolution had not been implemented in Australian law, it was found that the government did not have any legislative authority to do what it had done.

Barwick CJ and Gibbs J at Page 582 Two matters were suggested as justifying an exercise of discretion in the defendants' favour. First, reliance was placed upon the resolutions of the Security Council to which reference has already been made. These resolutions are, in their terms, addressed to Member States who, by Art. 25 of the Charter, have agreed "to accept and carry out the decisions of the Security Council in accordance with the present Charter". However, resolutions of the Security Council neither form part of the law of the Commonwealth nor by their own force confer any power on the Executive Government of the Commonwealth which it would not otherwise possess. The Parliament has passed the Charter of the United Nations Act 1945 (Cth), s 3 of which provides that "The Charter of the United Nations (a copy of which is set out in the Schedule to this Act) is approved". That provision does not make the Charter itself binding on individuals within Australia as part of the law of the Commonwealth.

4.5 Treaty Making Process

- Australia can enter into two different types of treaties:
 - Bilateral treaties, which enter into force for Australia after
 - 1. Signature
 - 2. Subsequent exchange of notes stating that the constitutional process is completed
 - Multilateral treaties, which enter into force for Australia after
 - 1. Signature
 - 2. Subsequent ratification (or accession if there was no previous signature)
 - This process for multilateral treaties allows for the Commonwealth to implement any legislation to allow for the treaty's provisions to be enlivened in domestic law (i.e., sign → prepare domestic law for the treaty's provisions → ratify)
- There is no constitutional requirement for the Parliament to be involved in the treaty-making process
 - However, only Parliament can pass legislation to implement treaties
 - The Commonwealth can enter into any treaty that it wishes to, but it cannot implement the treaty without the Parliament's approval
- As a matter of policy, since 1996 Parliament has been consulted on the treaty-making process

- However, they are not given a veto, but rather are provided a capacity to provide input into this process
- This was the result of the 1995 report of the Senate Legal and Constitutional References Committee ('Trick or Treaty?')
- It is now 'required' that all proposed treaty actions are tabled in Parliament at least 15 sitting days prior to any binding action being undertaken (with exemptions for urgent or sensitive treaties)
- To implement a treaty, a National Interest Analysis (NIA) must be prepared, which is akin to an explanatory memoranda for a treaty, and outlines why Australia has entered into a treaty
- The treaty should also be reviewed by the Joint Standing Committee on Treaties (JSCOT), which is a parliamentary committee that reviews Australia's participation in treaties

4.6 Implementing Treaties

4.6.1 Constitutional Considerations

- The constitution enables the executive to enter into treaties as part of the 'external affairs' provision in s 51(xxix) of the *Constitution*
 - This provision governs the relations between Australia and other countries/international organisations, matters external to Australia, and the implementation of international law (including custom, treaties, international recommendations, etc.)
- The Commonwealth parliament does not have plenary power to legislate on whatever it
 wants to, but only to legislate with respect to matters conferred on it by the Constitution (s
 51)
- The external affairs power will support legislation applicable to matters geographically external to Australia (*Horta v Commonwealth* (1994) 181 CLR 183)

Horta v Commonwealth (1994) 181 CLR 183

In 1995, Indonesia invaded East Timor, and remained in occupation of it until the early 2000s; this occupation was held to be unlawful as a matter of PIL. However, this did not stop Australia from accepting Indonesia sovereignty over East Timor, and subsequently, Australia concluded a treaty with Indonesia which allowed for them to access oil in the Timor Gap. The plaintiff argued that the law implementing the 1989 Timor Gap Treaty was invalid as the treaty itself was void (by virtue of recognising Indonesia's unlawful occupation of East Timor). The High Court said that they do not have to address that issue, as there is an element of the external affairs power that says that they have to only look at whether the law applies geographically externally to Australia; the law applied to the Timor sea, which was valid. Moreover, even if the treaty was void as a matter of PIL, that didn't undermine or impugn the character of this law as one with respect to external affairs.

Per Curiam, 'the area of the Timor Gap and the exploration...and exploitation of, petroleum resources ... [are] matters ... geographically external to Australia. There is an obvious and substantial nexus between each of them and Australia' '[E]ven if the Treaty were void or unlawful under international law ... the [impugned Acts] would not thereby be deprived of their character as laws with respect to "External Affairs". Moreover, this case leaves unresolved the question as to whether the executive can enter into treaties that are unlawful; the HCA did not deal with it as they held that it was still lawful in a way.

 It has been reinforced that the external affairs power will support legislation that implements treaties in Australian law

Koowarta v Bjelke-Petersen (1982) 153 CLR 168

The Aboriginal Land Fund Commission had entered into a contract to purchase a pastoral lease in Queensland. The Queensland government refused to consent to the transfer as the purchaser was Aboriginal. The Commission sued under the *Racial Discrimination Act 1975* (Cth), and the Queensland government challenged the validity of the legislation. The Court found that the Act was valid as it implements the *1969 International Convention on the Elimination of All Forms of Racial Discrimination (ICERD)*. Mason J held that a law implementing custom would be a law with respect to external affairs, indeed 'any matter which has 'become the topic of international debate, discussion and negotiation constitutes an external affair before Australia enters a treaty relating to it'.

Commonwealth v Tasmania (1983) 158 CLR 1

This case concerned the validity of the World Heritage Conservation Act 1983 (Cth), which implemented the 1972 Convention Concerning the Protection of the World Cultural and Natural Heritage. The majority of the Court held that most of the legislation was valid in respect to external affairs and the external affairs power; Tasmania had challenged the validity of the legislation. The majority additionally held that the Commonwealth can legislate to implement a treaty, but that power is not unlimited.

Deane J held that the law under s 51(xxix) of the *Constitution* must carry into effect treaty obligations, and be reasonably considered to be appropriate and adapted to achieving this objective (i.e., reasonable proportionality between the designated object and the means for achieving it). That is, the legislation must bear some relation to the treaty, and must be reasonably appropriate and adapted to achieving the objective of the treaty.

4.6.2 Legislative Concerns

- Australia will generally not ratify a treaty until the legislation to domestically implement the provisions of the treaty is in place
- Legislation will be needed to implement a treaty if the treaty creates rights for or imposes
 obligations upon individuals; however, it will not be very detailed as often there is existing
 legislation or common law at the state or federal levels that allows Australia to comply
 with the terms of the treaties

- Existing legislation can often be used to make the necessary regulations to implement international provisions
 - For example, the Charter of the United Nations Act 1945 (Cth) was used to implement UNSC resolutions dealing with sanctions and the listing of terrorist organisations and the subsequent freezing of assets; generally, this legislation is used to implement UNSC regulations (i.e., it is delegation legislation)
- · Legislation may 'give a treaty the force of law'
 - This generally occurs where the treaty has been drafted with domestic incorporation in mind (e.g., the *Diplomatic Privileges and Immunities Act 1967* (Cth) s 7, which holds that the Vienna Convention on Diplomatic Relations is to have force of law)
- Generally, there is the translation of treaty provisions into domestic legislation
 - This is the most common practice
 - It avoids uncertainty by directly translating the terms of the treaty into Australian law
 - It may refer to terms of a treaty (e.g., Migration Act 1958 (Cth) s 4 refers to the definition of a 'refugee')
- If legislation 'approves' a treaty, it is not binding
 - This merely notes that the terms of the treaty are acceptable to Australia, but does not implement them (i.e., it is not sufficient to be binding)
 - The mere approval of Parliament does not give a treaty the force of law, as discussed in Bradley v Commonwealth (1973) 128 CLR 557 (which discussed the Charter of the UN Act 1945 (Cth))
 - The practice of approving the provisions of treaties has since lapsed

4.7 Statutory Interpretation and International Law

- There are several scenarios where international law can be used to interpret domestic law
- International law can be used as extrinsic material when interpreting legislation which refers to a treaty, following the *Acts Interpretation Act 1901* (Cth) ss 15AB(1) and (2)(d)
- International law can be used to interpret a legislative provision that incorporates a treaty provision (here, the rules of treaty interpretation (i.e., the VCLT) are applied, rather than the rules of statutory interpretation)
- If its language permits, a legislative provision is interpreted to avoid placing Australia in breach of its international obligations, following the Polites principle

Acts Interpretation Act 1901 (Cth) s 15AB(1)-(2)

(1) Subject to subsection (3), in the interpretation of a provision of an Act, if any material not forming part of the Act is capable of assisting in the ascertainment of the meaning of the provision, consideration may be given to that material:

- (a) to confirm that the meaning of the provision is the ordinary meaning conveyed by the text of the provision taking into account its context in the Act and the purpose or object underlying the Act; or
- (b) to determine the meaning of the provision when:
 - (i) the provision is ambiguous or obscure; or
 - (ii) the ordinary meaning conveyed by the text of the provision taking into account its context in the Act and the purpose or object underlying the Act leads to a result that is manifestly absurd or is unreasonable.
- (2) Without limiting the generality of subsection (1), the material that may be considered in accordance with that subsection in the interpretation of a provision of an Act includes:
 - (a) all matters not forming part of the Act that are set out in the document containing the text of the Act as printed by the Government Printer;
 - (b) any relevant report of a Royal Commission, Law Reform Commission, committee of inquiry or other similar body that was laid before either House of the Parliament before the time when the provision was enacted;
 - (c) any relevant report of a committee of the Parliament or of either House of the Parliament that was made to the Parliament or that House of the Parliament before the time when the provision was enacted;
 - (d) any treaty or other international agreement that is referred to in the Act;
 - (e) any explanatory memorandum relating to the Bill containing the provision, or any other relevant document, that was laid before, or furnished to the members of, either House of the Parliament by a Minister before the time when the provision was enacted;
 - (f) the speech made to a House of the Parliament by a Minister on the occasion of the moving by that Minister of a motion that the Bill containing the provision be read a second time in that House;
 - (g) any document (whether or not a document to which a preceding paragraph applies) that is declared by the Act to be a relevant document for the purposes of this section; and
 - (h) any relevant material in the Journals of the Senate, in the Votes and Proceedings of the House of Representatives or in any official record of debates in the Parliament or either House of the Parliament.

4.7.1 Polites Principle

• The Polites principle refers to the presumption that Parliament intends to give effect to Australia's obligations under international law (following *Polites v Commonwealth* (1945) 70 CLR 60)

Polites v Commonwealth (1945) 70 CLR 60

In this case, Mr Polites (a Greek national), was given notice under regulations requiring him to serve in the Australian Defence Force (i.e., a situation where a foreign national was being conscripted, which is explicitly prohibited by international law). This case resulted in the High Court reviewing the legislation, and held that the legislation was valid. This was despite an established rule of international law that aliens may not be required to serve in armed forces.

From Latham CJ's statement (below), it is the case that the Commonwealth parliament can still pass legislation that is inconsistent with public international law, but every effort should be made to avoid this where possible.

| Latham | It must be held that legislation otherwise within the power of the |
|---------|---|
| CJ at | Commonwealth Parliament does not become invalid because it conflicts |
| Page 69 | with a rule of international law, though every effort should be made to |
| Ü | construe Commonwealth statutes so as to avoid breaches of international |
| | law and of international comity. |
| Dixon J | It is a rule of construction that, unless a contrary intention appear, general |
| at Page | words occurring in a statute are to be read subject to the established rules of |
| 77 | international law and not as intended to apply to persons or subjects which, |
| | according to those rules, a national law of the kind in question ought not to |
| | include. |

• The Polites principle does not apply for constitutional interpretation, following *Al-Kateb v Godwin* (2004) 208 ALR 124, as it would violate s 128 of the Constitution otherwise, which explicitly requires a referendum to amend it

Al-Kateb v Godwin (2004) 219 CLR 562

This case concerned whether a stateless Palestinian man could be subject to indefinite detention as a result of a lack of a state to which he could be deported to. Whilst this case has been overturned, the discussion between Kirby J and McHugh J is still relevant, especially in the context of the Polites principle. Note that McHugh J's position reflect that of the majority.

| Kirby J | Whatever may have been possible in the world of 1945, the complete |
|-----------|--|
| at [175] | isolation of constitutional law from the dynamic impact of international law |
| | is neither possible nor desirable today. That is why national courts, and |
| | especially national constitutional courts such as this, have a duty, so far as |
| | possible, to interpret their constitutional texts in a way that is generally |
| | harmonious with the basic principles of international law, including as that |
| | law states human rights and fundamental freedoms. |
| McHugh | "This Court has never accepted that the Constitution contains an |
| J at [66] | implication that it should be interpreted to conform with the rules of |
| | international law If the rule were applicable to a Constitution, it would |
| | operate as a restraint on the grants of power conferred". |

• The majority held that the constitution is fundamentally different from statute, and so it is not to be interpreted in a way to conform to the rules of public international law, as to do so would violate the independence of the constitution under s 128

Australian Constitution s 128

This Constitution shall not be altered except in the following manner:

The proposed law for the alteration thereof must be passed by an absolute majority of each House of the Parliament, and not less than two nor more than six months after its passage through both Houses the proposed law shall be submitted in each State and Territory to the electors qualified to vote for the election of members of the House of Representatives.

But if either House passes any such proposed law by an absolute majority, and the other House rejects or fails to pass it, or passes it with any amendment to which the first-mentioned House will not agree, and if after an interval of three months the first-mentioned House in the same or the next session again passes the proposed law by an absolute majority with or without any amendment which has been made or agreed to by the other House, and such other House rejects or fails to pass it or passes it with any amendment to which the first-mentioned House will not agree, the Governor-General may submit the proposed law as last proposed by the first-mentioned House, and either with or without any amendments subsequently agreed to by both Houses, to the electors in each State and Territory qualified to vote for the election of the House of Representatives.

When a proposed law is submitted to the electors the vote shall be taken in such manner as the Parliament prescribes. But until the qualification of electors of members of the House of Representatives becomes uniform throughout the Commonwealth, only one-half the electors voting for and against the proposed law shall be counted in any State in which adult suffrage prevails.

And if in a majority of the States a majority of the electors voting approve the proposed law, and if a majority of all the electors voting also approve the proposed law, it shall be presented to the Governor-General for the Queen's assent.

No alteration diminishing the proportionate representation of any State in either House of the Parliament, or the minimum number of representatives of a State in the House of Representatives, or increasing, diminishing, or otherwise altering the limits of the State, or in any manner affecting the provisions of the Constitution in relation thereto, shall become law unless the majority of the electors voting in that State approve the proposed law

In this section, Territory means any territory referred to in section one hundred and twenty-two of this Constitution in respect of which there is in force a law allowing its representation in the House of Representatives.

Topic 5

Personality, Statehood and Self-Determination

5.1 International Legal Personality

- International legal personality refers to the capacity of an actor to exercise rights, duties and powers on the international plane
- It is not an absolute concept, and the capacity of international actors varies, including aspects such as:
 - To be subject to some or all international obligations
 - To have the power to enter into treaties
 - To enjoy some or all immunities from jurisdictions of national courts
 - To make claims before international tribunals and committees
- Personality is not an absolute concept, but is akin to a spectrum (the capacity of intentional actors varies; e.g., the UN has a different capacity than a state)

5.1.1 States as International Legal Persons

- States are the central/principal subjects of international law
- Attributes of statehood include:
 - Plenary powers in the international sphere (external sovereignty)
 - Exclusive competence within their own territory (internal sovereignty)
 - Not subject to compulsory jurisdiction of international courts without consent/permission (this flows from the independent nature of states and the consensual nature of international law)
 - Enjoyment of equality (formally, but not necessarily substantively; formal equality is to be distinguished from relative equality in terms of size, economy, powers and global standing)
- States maintain complete external sovereignty on the international sphere

5.1.2 Other International Legal Persons

- International organisations
 - These are created by treaties agreed to by states, and many international organisations are conferred with a degree of personality and autonomy
 - International organisations do not possess general competence, but are instead governed by the principle of 'speciality' (i.e., they can only act within the limits of their powers as defined by their constitutive treaties) (WHO Advisory Opinion [1996] ICJ Rep 66)
 - International organisations may enter into treaties
 - International organisations may be responsible for wrongful acts, following ILC Draft
 Articles on the Responsibility of International Organisations (2011)
- · Non-territorialised persons
 - Examples include the Holy See (the government of the Vatican, a sui generis entity)
 - * It is treated as having international legal personality since the Middle Ages, independently of having any territorial existence
 - * The Vatican also possesses a tiny territorial possession in Rome (the Vatican City); as a territory, it is regarded in international law as being a microstate (the Holy See and the Pope have a separate legal personality)

WHO Advisory Opinion [1996] ICJ Rep 66

This Advisory Opinion answered two similar advisory proceedings that examined the legality of the use of nuclear weapons. One was performed by the UN's request to the ICJ to examine this issue, with the ICJ holding that the general assembly did have capacity to request an advisory opinion. The other was requested by the WHO, but the ICJ rejected this quest.

The ICJ found that it could issue an advisory opinion only where the agency requesting it is:

- Duly authorised to request one (the WHO met this requirement)
- The question has to be of a legal character (the WHO's request met this requirement)
- The question must be within the scope of the agency's activities (the WHO's request
 did not meet this requirement, as the WHO was not competent to issue an advisory
 opinion on the legality of nuclear weapons)

The WHO had capacity to consider and respond to the health requests of nuclear weapons/hazardous activity, but their question was not on the health effects, but rather was on general questions of whether nuclear weapons could be lawfully used.

The ICJ held that when looking at an international organisation, it cannot be assumed that they have general competence; they are governed by the principle of speciality, and thus the powers that they possess are in the treaty that created them.

Reparations for Injuries Case [1949] ICJ Rep 174

This decision of the ICJ deals generally with the character of international personality, and was a rather narrow case. The key question in this case was whether the UN could pursue a claim against Israel in relation to negligent failure to protect a UN official from being killed by a terrorist group in Jerusalem?

The ICJ held that the UN could seek compensation, as for this purpose the UN was an international legal person. The Court looked at the nature of international legal personality, explaining that the notion of personality and specifically the personality of the UN and other international organisations arises from the requirements/nature of international life. In order for the UN to perform the job that it was entrusted to by the UN Charter, it is necessary to enjoy and exercise certain functions and rights that set it apart as an international legal person. The Court does hold that the UN's international personality should not be exaggerated; the fact that it has international personality is not the same as saying that the UN is identical to a state or that its legal personality and rights and duties are the same as those of a state (in fact, it is a different degree of personality to that possessed by a state).

"[T]he development of international law has been influenced by the requirements of international life ... the [UN is] exercising and enjoying, functions and rights which can only be explained on the basis of the possession of a large measure of international personality... Accordingly, the Court has come to the conclusion that the [UN] is an international person. That is not the same thing as saying that it is State, which it certainly is not, or that its legal personality and rights and duties are the same as those of a State."

If the UN is to discharge its functions, 'the attribution of international personality is indispensable'. The Court emphasised the functional indispensability of having personality in order for the UN to be able to perform the functions for which it was established.

· Individuals

- Individuals have some degree of international personality, but it is very different from those of states and organisations
- Individuals cannot enter into treaties
- Individuals generally do not have standing before international courts, except in certain cases (e.g., human rights courts/tribunals)
- Some areas of international law have conferred obligations upon individuals:
 - * International criminal law ('crimes against international law are committed by men, not by abstract entities', following *Nuremberg Trial Judgement* (1947))
 - · Prior to this, it was unclear as to whether individuals could be held liable for international crimes
 - These are the most serious crimes, and have a high threshold (e.g., crimes against humanity, genocide, etc.)

- · Official capacity is irrelevant; all individuals are equally liable in matters of international criminal law
- * Individual criminal law is outlined in the *Rome Statute of the International***Criminal Court (1998) Art 25, which refers to 'individual criminal responsibility'
- International human rights law holds that all individuals are bearers of rights conferred by international law
- There are multiple covenants on human rights (including civil, political, etc.)
- Corporations (?)
 - Corporations do not have international legal personality, but may be parties to contracts governed by international law ('internationalised' contracts), following Texaco Overseas Petroleum Company v Libya (1977) 53 ILR 389
 - As far as international law is concerned, corporations are not subjects of international law, but rather are objects of international law, and are not international people

Texaco Overseas Petroleum Company v Libya (1977) 53 ILR 389

This case involved a dispute between Texaco (an oil company) and Libya, and the issue was whether the Libyan government had the right to nationalise the oil industry in Libya. The Libyan government had nationalised the oil industry, including Texaco's oil deposits, and Texaco was seeking compensation for this.

The arbitration was not covered by the law of Libya, but rather incorporated international law; i.e., it was a contract governed by PIL (an 'internationalised' contract). Whilst Texaco as a company was not an international person, it was a party to a contract under international law and so could avail the principles under PIL.

5.2 Statehood

- Statehood is formally defined by the 1933 Montevideo Convention on the Rights and Duties of States in Article 1
- This was accepted as reflecting customary international law
- Whilst there were very few signatories to the convention (19 states), it is now accepted as a reflection of customary international law
- It is moreover evidence of customary international law; but it is binding only upon states that have signed
- The first three criteria are considered 'elastic'

1933 Montevideo Convention on the Rights and Duties of States Article 1

The state as a person of international law should possess the following qualifications:

1. A permanent population

5.2. STATEHOOD 67

- 2. A defined territory
- 3. Government
- 4. Capacity to enter into relations with other states

5.2.1 The Montevideo Criteria for Statehood

5.2.1.1 Population

- There is no minimum number of people required to constitute a state (e.g., Nauru has less than 10,000 people but is still a state)
- The population must be permanent

5.2.1.2 Territority

- There is no minimum size of territory required to constitute a state (e.g., the Vatican City is a microstate, and Nauru has an area of 21 square kilometres)
- The boundaries do not need to be completely fixed/undisputed
- There must be a reasonably coherent territory that is effectively governed by the state

5.2.1.3 Government

- The state must have an organised and effective government (of any form, whether it be a dictatorship, monarchy, democracy, etc.)
- It is not the quality or the form of the government that matters, but rather whether it can effectively control the area

5.2.1.4 Capacity to Enter into Relations with Other States

- To be a state, an entity cannot be subject to the control of another state (i.e., independent from the legal authority of another state)
- So long as a state is not placed under the legal authority of another state, it remains an
 independent state, following Customs Union Between Germany and Austria (1931) PCIJ Series
 A/B No 41 (per Judge Anzilotti)

Customs Union Between Germany and Austria (1931) PCIJ Series A/B No 41

The PCIJ was asked to advise whether Austria, by entering into a customs union with Germany, was in violation of two treaties that sought to prevent Austria from being subsumed within the German Reich. The PCIJ held that Austria was not giving up political control, but was giving up immigration freedom and customs control. The PCIJ held that Austria was in breach of the treaties, but it was still a state as it was not under the complete legal authority of another state, and was still politically independent.

- The Montevideo criteria are...somewhat misleading and—as regards the capacity to enter into relations with other States—circular ... [T]he central criterion for statehood, which sheds light on the criteria of government and capacity to enter into international relations, is a given territorial community's independence (Crawford, 2015)
- It is contentious as to whether other criteria should be imposed on statehood; for example, the EC Declaration on New States in Eastern Eruope and Soviet Union (1991) proposed:
 - Respect for the *UN Charter*
 - Respect for the rights of ethnic and national groups and minorities
 - Respect for borders
 - Commitment to peaceful dispute settlement
- Whilst these additional criteria are state practice, they aren't sufficient that they have become customary international law, and as such, the Montevideo criteria is still the most widely accepted definition of statehood

5.3 Recognition of States

- Recognition is the act by which one state acknowledges that an entity is a state
- There are two key theories on the legal effect of recognition:
 - Constitutive theory: recognition by other states is a precondition to statehood (i.e., a condition precedent)
 - Declaratory theory: recognition by other states does not create an entity's statehood, but merely acknowledges that the entity is a state (i.e., it is a condition subsequent; it makes life easier, but does not stop anyone)
- The declaratory theory is the dominant view in international law, and is the view of the ICJ; however, the practice of recognition may be important evidence for determining the existence of a state
- Recognition by a state of an entity as a state will often be accompanied a statement that addresses some of the Montevideo criteria, which tends to be helpful evidence of whether an entity is a state (but isn't enough in and of itself)
- If an entity emerges as a result of unlawfulness, the general importance of the principle of territorial integrity applies
 - International law contains no prohibition of declarations of independence, but other states should not recognise a unilateral seceding entity before it has acquired statehood, following Kosovo Advisory Opinion [2010] ICJ Rep 403
 - * It is important to look at the powers of entities to declare independence
- International law does contain some scenarios where there is mandatory non-recognition of entities as states
 - The Stimson Doctrine holds that recognition of a state may not be extended when a state is created as a result of unlawful use of force/aggression

- This arose from the creation of Manchukuo, which was a Japanese puppet state in China from 1932 to 1945; the then US Secretary of State declared that the US would not recognise the new Japanese puppet state that Japan purported to create in China
- It is a core rule of international law that puppet states (artificial entities created by breaches of international law) will not be recognised as states

5.4 Recognition of Governments

- The recognition of governments is a completely separate issue from the recognition of states, and generally arises when there is a change of government within the state
- In the modern context, it only arises if there is an unconstitutional change in the government (e.g., a revolution or a military coup)
- It is usually the case that a new government is given legal recognition; it is very rare for such a question to arise
- Australia used to always recognise a change in government of another state (including by normal means such as an election) with a statement, but ceased this practice in 1988
- Presently, Australia has implied recognition; a new government will be recognised by Australia as legitimate, unless if there was a case before an Australian court to decide whether the foreign government's actions were legitimate, it is up to that court to determine whether the government was properly in control of that territory
- Recognition of a government in the modern era is moreover discerned from the actual relationship between Australia and the relevant state (continuing the theme of implied recognition)
- In the modern day, Australian courts and tribunals will examine several criteria, including the constitutionality of the new government, the control by the government over the territory, dealings on a government-to-government basis, and the extent of international recognition
- There are also statutory variations to the common law position
 - Foreign Corporations (Application of Laws) Act 1989 (Cth) exemplifies how implied recognition works in terms of foreign corporations
 - * s 7(2) holds that whether a body or person has been validly incorporated in a place outside Australia is to be determined by reference to the law applied in that place
 - * s 9(1) holds that the application of this Act is not affected by the recognition or non-recognition, at any time, by Australia
 - s 7(2) provides clear directives (that the court is to look at the law applicable in the foreign place)
 - This Act asks if a foreign corporation is a corporation under their home place's law (i.e., it is a domestic law issue)

Foreign Corporations (Application of Laws) Act 1989 (Cth)

Section 7

Law applied in place of incorporation applicable law in determining questions relating to status of foreign corporation etc.

- (1) The section applies in relation to the determination of a question arising under Australian law (including a question arising in a proceeding in an Australian court) where it is necessary to determine the question by reference to a system of law other than Australian law.
- (2) Any question relating to whether a body or person has been validly incorporated in a place outside Australia is to be determined by reference to the law applied by the people in that place.
- (3) Any question relating to:
 - (a) the status of a foreign corporation (including its identity as a legal entity and its legal capacity and powers); or
 - (b) the membership of a foreign corporation; or
 - (c) the shareholders of a foreign corporation having a share capital; or
 - (d) the officers of a foreign corporation; or
 - (e) the rights and liabilities of the members or officers of a foreign corporation, or the shareholders of a foreign corporation having a share capital, in relation to the corporation; or
 - (f) the existence, nature or extent of any other interest in a foreign corporation; or
 - (g) the internal management and proceedings of a foreign corporation; or
 - (h) the validity of a foreign corporation's dealings otherwise than with outsiders;
- (4) A matter mentioned in subsection (2) or (3) is not to be taken, by implication, to limit any other matter mentioned in those subsections.

Section 9

Recognition or non - recognition irrelevant consideration in application of Act etc.

- (1) It is the intention of the Parliament that the application of this Act is not to be affected by the recognition or non recognition, at any time, by Australia:
 - (a) of a foreign state or place; or
 - (b) of the government of a foreign state or place; or
 - (c) that a place forms part of a foreign state; or
 - (d) of the entities created, organised or operating under the law applied by the people in a foreign state or place.
- (2) Without limiting subsection (1), it is also the intention of the Parliament that the application of this Act is not to be affected by the presence or absence, at any time, of diplomatic relations between Australia and any foreign state or place.

5.5 Right to Self-Determination

- The right to self-determination refers to the rights of all peoples to determine freely their political status and to pursue their economic, social and cultural development, following 1966 ICCPR and 1966 ICECSR Common Art 1
- It has been held by Nicholson that these are rights accorded to 'peoples' rather than states
- Self-determination has been defined as "the need to pay regard to the freely expressed will of peoples" at Western Sahara Advisory Opinion [1975] ICJ Rep 12 at [59]
- It is moreover accepted that it is a part of customary international law, and may well
 constitute a jus cogens
- The availability of the right does not necessarily equate to a specific outcome such as independence and secession (but a new state, free association or integration may all be legitimate expressions of the right); the mere fact of concluding that people have a right to self-determination does not equate to them having a right to independence and to cessate
- The law seeks to strike a balance between the right to self-determination (one of the most central jus cogens) norms, and the principle of territorial integrity (which is also a jus cogens norm)
- In light of the question of 'what is a people?', it has been held that:
 - 'Self-determination is the collective right of 'peoples'. Various conditions or characteristics of 'peoples' have been put forward, including common historical tradition, racial or ethnic identity, cultural homogeneity, linguistic unity, religious or ideological affinity, territorial connection [particularly important for indigenous peoples], common economic life, and consisting of a certain minimum number. However, no permanent, universally acceptable list of criteria for a 'people' exists' (Joseph and Castan, 2013)
- The right to self-determination is subject to the principle of *uti possidetis juris* (respect for existing frontiers)
- If a new state has emerged from an area granted independence, they (the new entity) will possess the same borders/frontiers as they did prior to independence

Burkina Faso/Mali [1986] ICJ Rep 554

This case concerned the border between Burkina Faso and Mali, which was a colonial border. The ICJ held that the principle of *uti possidetis juris* applies to the borders of states that have emerged from colonial rule. The ICJ held that the principle of *uti possidetis juris* is a principle of international law, and is a principle that is recognised by the UN General Assembly. By fixing the boundaries even when a new entity emerged, the principle was to prevent the independence and stability of new states being endangered by struggles challenging frontiers following the withdrawal of colonial power.

• In 1992 in Opinion No 3 (1992), Arbitration Commission, EC Conference on Yugoslavia, 'Can the internal boundaries between Croatia and Serbia and between Bosnia and Hercegovina and Serbia be regarded as frontiers in terms of public international law?', it was held that the principle of *uti possidetis juris* generally can be applied when there is the breakup of a federal state into multiple component parts

Chagos Islands Advisory Opinion [2019] ICJ Rep 95

The Chagos Archipelago has been administered by the UK since 1814 as part of the British colony of Mauritius. In 1965, the Chagos was detached from the territory of Mauritius and established as the British Indian Ocean Territory, with islanders displaced to enable the establishment of a US military facility on the largest island, Diego Garcia. Mauritius became independent in 1968 and was admitted to the UN. During the advisory proceedings, the International Court of Justice (ICJ) was tasked with determining whether the process of decolonisation of Mauritius was lawfully completed in 1968 and what international legal consequences stemmed from the continued UK administration of the Chagos. The ICJ found that the right to self-determination crystallised as a customary rule with the adoption of Resolution 1514(XV) in 1960, which has a declaratory character.

The ICJ ruling emphasised that peoples of non-self-governing territories are entitled to exercise their right to self-determination in relation to the territory as a whole, and any detachment by the administering power contrary to the will of the people of the territory is a breach of their right to self-determination. Consequently, non-self-governing territories, such as those under colonial occupation, may achieve self-governance through emergence as a sovereign independent state, free association with an independent state, or integration with an independent state, provided these options reflect the free and genuine will of the people concerned. Due to the unlawful detachment of the Chagos, the process of decolonisation was not lawfully completed when Mauritius became independent in 1968, rendering the continued UK administration of the Chagos a wrongful act that entails state responsibility. The UK must therefore end its administration as rapidly as possible.

Since respect for the right to self-determination is an obligation *erga omnes*, all states have a legal interest in protecting that right, and all UN members must cooperate with the UN to complete the decolonisation of Mauritius. This obligation *erga omnes* means that the responsibility to ensure self-determination is owed to the international community as a whole, and any state has standing to complain if this right is not respected, even if the state does not have a particular or special interest. For example, Australia can raise concerns regarding the Chagos, despite having no direct interest in the matter.

5.5.1 External Right to Self-Determination

- The external right to self-determination is the right by which certain peoples can choose to become independent (generally, people cannot do this)
- This applies in three scenarios:
 - 1. Peoples under colonial rule (i.e., colonies) and non-self-governing territories
 - 2. Peoples subject to alien subjugation, domination or exploitation
 - 3. (Possibly) peoples under oppression and blocked from meaningful self-determination ('remedial secession')

Reference Re Secession of Quebec (1988) 2 SCR 217

This case concerned the secession of Quebec, which is culturally and linguistically diverse from Canada. International law does not specifically grant component parts of sovereign states the legal right to unilateral secession. Ordinarily, the right to self-determination is fulfilled through internal self-determination of a people's political, economic, social and cultural development. Moreover, the right to external self-determination arises only in most extreme cases (colonial domination, alien subjugation, domination or exploitation, possibly also where internal self-determination denied). In this instance, the population of Quebec were granted access to government.

- When a people expresses its choice about its status relative to the external world, there are three options:
 - 1. Emergence as a sovereign independent state
 - 2. Free association with an independent state (e.g., the Cook Islands, which is in free association with New Zealand)
 - 3. Integration with an independent state
- The right to self-determination is not the same as a power to establish a new state; the new entity must meet the Montevideo criteria for statehood (although these criteria tend to be applied less strictly)

5.5.2 Indigenous Peoples and the Right to Self-Determination

- This is an example of internal self-determination, which is the pursuit of development within the framework of an existing state (remedial secession may be available if this right is not respected)
- Distinctive characteristics of Indigenous peoples include:
 - Descent from populations inhabiting territory at the time of conquest
 - Retaining some of their own social, economic, cultural and political organisations
 - They self-identify as Indigenous peoples
- The 2007 UN Declaration on the Rights of Indigenous Peoples states the following:
- Article 3 "Indigenous peoples have the right to self-determination. By virtue of that right they freely determine their political status and freely pursue their economic, social and cultural development."
- Article 4 "Indigenous peoples, in exercising the right to self-determination, have the right to autonomy or self-government in matters relating to their internal and local affairs, as well as ways and means for financing their autonomous functions."
- Article 46(1) "Nothing in this Declaration [authorises or encourages] any action which would dismember or impair, totally or in part, the territorial integrity or political unity of sovereign and independent states."
 - The 2017 Uluru Statement from the Heart provides some important insight on this matter

- 'We seek constitutional reforms to empower our people and take a rightful place in our own country. When we have power over our destiny our children will flourish.'
- 'It captures our aspirations for a fair and truthful relationship with the people of Australia and a better future for our children based on justice and self-determination.'
- Despite the referendum outcome, Australia's indigenous people still have the inalienable right to self-determination

Topic 6

Title to Territory

6.1 Territory

- Territory is an essential element of statehood; it is within territory that a state's legal authority is exercised
- Sovereignty in relation to territory is "the right to exercise therein, to the exclusion of any other State, the functions of a State" *Island of Palmas* (1928) (Judge Huber)
- States generally have complete authority over what happens within their territory, subject to international law
- "The basic legal concept of State sovereignty in customary international law, expressed in ... Art 2(1), of the UN Charter, extends to the internal waters and territorial sea of every State and to the air space above its territory" *Nicaragua* [1986] ICJ Rep 14
- There is a distinction between sovereignty (dominium) and jurisdiction (imperium)
 - For example, there are some areas (e.g., maritime areas) where states do not have sovereignty/ownership, but enjoy extensive jurisdictional rights (e.g., an exclusive economic zone (EEZ), where they have jurisdiction to regulate access to the zone, and access to the resources within it, but they do not have sovereignty over it)
 - It is only in some circumstances where jurisdiction can extend beyond areas of sovereignty

6.2 Modes of Acquiring Territory

6.2.1 Occupation

- Occupation is the formal act of intention and demonstration of effective control over territory
- The territory must be unoccupied (i.e., not subject to the sovereignty of another state)
- Territory may be acquired through occupation if it is *terra nullius* (i.e., no population, or if the territory is abandoned)
- This generally occurs through physical settlement, but only when the territory is uninhabited or abandoned (at which points it is considered *terra nullius*)

 Occupation is "an original means of peaceably acquiring sovereignty over territory" – Western Sahara Advisory Opinion [1975] ICJ Rep 162

Western Sahara Advisory Opinion [1975] ICJ Rep 162

This case concerned a dispute over sovereignty to West Sahara, which was formerly a Spanish colony. It was claimed by both Morocco (on the basis of Spain's former colonisation), and by Mauritania. The ICJ was asked by the UNGA about the status of Western Sahara. It held that occupation was only valid if it was *terra nullius*.

In its Advisory Opinion, the ICJ noted at [80] that "territories inhabited by tribes or peoples having a social and political organization [are] not regarded as terrae nullius". Moreover, colonial occupation was often not of *terra nullius*, but through agreement with local rulers. Western Sahara was inhabited by nomadic peoples, who were nonetheless socially and politically organised. Moreover, there were no ties to Morocco or Mauritania so as would disrupt or upset decolonisation and self-determination.

From this case, it is held that there can only be a valid occupation if the territory is truly terra nullius. In this instance, it was an enormous territory inhabited by relatively few people, but the ICJ held that this was not necessarily problematic, nor that the peoples occupying in Western Sahara were nomadic. The tribes in Western Sahara were socially and politically organised, and did effectively occupy the territory. The ICJ also held that when Spain colonised Western Sahara, it did not argue that it was occupying Western Sahara. The Spanish King in 1884 instead stated that he was taking the area of Western Sahara under his protection on the basis of agreements entered into with local rulers, which does not indicate an occupation.

The process of self-determination remains incomplete (Western Sahara is often considered Africa's last colony), with completing claims by the Sahrawi Arab Democratic Republic (Polisario), and Morocco.

Mabo v Queensland (No 2) (1992) 175 CLR 1

The question arising from this case was that when the British invaded Australia, did they acquire sovereignty over the land, but also acquire land rights that had the effect of extinguishing any pre-existing land rights held by the Indigenous occupants of Australia?

| Brennan | If the international law notion that inhabited land may be classified as terra |
|-----------|---|
| J at [41] | nullius no longer commands general support, the doctrines of the common |
| | law which depend on the notion that native peoples may be "so low in the |
| | scale of social organization" that it is "idle to impute to such people some |
| | shadow of the rights known to our law" (In re Southern Rhodesia (1919) AC, |
| | at pp 233-234) can hardly be retained. If it were permissible in past centuries |
| | to keep the common law in step with international law, it is imperative in |
| | today's world that the common law should neither be nor be seen to be |
| | frozen in an age of racial discrimination. |
| Brennan | The acquisition of territory is chiefly the province of international law; the |
| J at [47] | acquisition of property is chiefly the province of the common law. |

| Deane | [T]here are problems about the establishment of the Colony in so far as the |
|---------|--|
| and | international law of the time is concerned contemporary international |
| Gau- | law would seem to have required a degree of actual occupation of a |
| dron JJ | "discovered" territory over which sovereignty was claimed by settlement and |
| at [3] | it is scarcely arguable that the establishment by Phillip in 1788 of the penal |
| | camp at Sydney Cove constituted occupation of the vast areas of the |
| | hinterland of eastern AustraliaHowever, in so far as the establishment of |
| | British sovereignty is concerned, those problems do not exist for the |
| | purposes of our domestic law. |

Brennan J held that international law never regarded territory that was occupied as *terra nullius*. Consequently, the common law must disregard this fiction that Australia was *terra nullius* at the time of British colonisation.

Deane and Gaudron JJ held that whilst the prerogatives of the Crown to acquire territory were in question, from the perspective of domestic law, we cannot question whether the territory was lawfully acquired (as this was a power of the Crown at the time in the eyes of domestic law, and hence could not be questioned). The Court can be look at what happens with the common law, and that the acquisition of radical title over Australia by Britain did not have the effect of extinguishing, in all circumstances, pre-existing native title.

6.2.1.1 Intention to Occupy

- For an intention to occupy to be manifest:
 - There must be an expression of formal intent to claim possession of the land (e.g., the planting of a flag); this is known as *animus occupandi*
 - There must be a demonstration of effective control
 - Territory must be claimed by a state authority, not a private actor
 - * If a private citizen holds state authority to claim territory, this is generally sufficient, but it needs to be done by a state organ
- Under Australian law, individuals may not acquire title in unoccupied land not claimed by a state, following Ure v Commonwealth [2016] FCAFC 8 (Page 4)
 - Private individuals cannot claim/acquire title in terra nullius

6.2.1.2 Effective Occupation

- For there to be effective occupation, there must be:
 - A continuous and peaceful display of state authority
 - A responsible authority that exercises governmental functions (effectivités)
 - Spatial extent (although not necessarily all territory), duration, continuity, and peacefulness are all relevant considerations
- It is not normally essential that a state has control over every exact area of land of their territory; this requirement tends to be relaxed especially in relation to remote/hard-to-access areas

Clipperton Island Arbitration (France v Mexico) 1932

This case concerned a dispute between France and Mexico over the sovereignty of Clipperton Island, which was 1200km off the coast of Mexico. In 1897, a Mexican naval vessel landed and raised a flag, claiming success to title on the basis of Spanish discovery in 1836. However, Spain did not incorporate the island into its territory. A French naval officer on a private vessel claimed the uninhabited island in 1858 as French territory.

Mexico had not exercised sovereignty over the island before the arrival of the French sailors, and so the land was *territorium nullius*. On the other hand, France had "made known in clear and precise manner [its] intention to consider [the] island her territory".

It is generally the case that there must also be effective occupation in claiming the land, by establishing within the territory an organisation to give effect to laws (this was not considered here, however, due to the remoteness of the territory).

6.2.2 Cession

- Cession is the intentional transfer of sovereignty over territory from one state to another
- it is a consensual/voluntary process, and can be done for either a price or for free

6.2.3 Prescription

- Prescription is the acquisition of title to territory formerly occupied by another state through a peaceful exercise of sovereignty
- It bears a number of similarities to a doctrine of Roman law and aspects of common law, and is an idea of 'squatter's rights'
- In cases of possession, the other state has a valid title to territory, but is not actively asserting their right to that title, and so the possessing state eventually gains title by occupying it; it turns a possessory interest into a fully proprietary interest
- Prescription can also be considered as the legitimisation of a doubtful title through the passage of time (e.g., adverse possession and immemorial possession)
- There are a number of criteria for prescription:
 - À titre de souverain (in exercise of sovereign powers)
 - * The possession has to be under state authority; it cannot be by a private actor
 - Peaceful possession
 - * Prescription cannot be claimed when there was a conflict/war; this would instead be considered conquest, which is illegal under international law
 - Public
 - * Prescription must be made publicly known
 - Uninterrupted
 - Endure for a length of time

- Acquiescence by the other state
 - * This is a contested point
 - * The original title holder must have acquiesced to the acquisition of title by the new owner
 - * The original title holder may (meekly) protest to some extent, or otherwise stop asserting their title, which evinces an intention to surrender their title over the land

Island of Palmas Case (Netherlands v US) (1928)

This case concerned a dispute between the Netherlands and the US over the sovereignty of Palmas Island, which was located between the Philippines and Indonesia. The US claimed title to the island on the basis of discovery, but the Netherlands claimed title on the basis of prescription. The Philippines ceded the island to the US after the 1898 Spanish-American war (an example of cession), but in 1906 the US discovered the Dutch flag flying on Palmas (the US thought they had title over the Philippines as it had been given to them by the Spaniards). The Netherlands claimed title on the basis of acts of state authority that they had exercised from 1677 onwards.

Judge Huber held that the island was part of the Netherlands. On the topic of Spain's apparent discovery, he he held that 'Discovery alone, without any subsequent act [of governmental authority], cannot ... prove sovereignty'. He also held that this was at most an 'incholate title that had to be perfected by effective occupation' (the title hadn't been matured enough to be sufficient). Thus, there was no Spanish occupation of the island, and the US could not claim title on the basis of discovery. The Netherlands had exercised effective occupation over the island, and so they had a valid title to it.

Judge Huber said that when it comes to working out the relevant manifestations of sovereignty, it is fair to acknowledge that sovereignty can take different forms according to the unique geographic and historical conditions within a particular place. Whilst the expression of sovereignty should be continuous in principle, some intermittence and discontinuity is acceptable.

Here, the Netherlands, particularly through the Dutch East India Company (an instrument of the Dutch state), had displayed state authority in a manner that was open, public, continuous and peaceful (despite it not being frequent and there being some gaps). There was no evidence that any display of authority by Spain or another power could counterbalance the manifestation of the sovereignty of the Netherlands. Moreover, the principle of **commonality** states the essential need to display state authority over state territory.

This case also raised a question of intertemporal law: should the law of the 16th century be applied (when Spain made the discovery), or the law of the 19th century be applied (when the territory was in dispute)? The earlier law may be relevant to the creation of rights, but the later law was relevant to the continued existence of rights (generally, the contemporaneous/earlier law should be applied). Under 19th century law, discovery alone was insufficient for the acquisition of title (the later law determines whether the rights continue to exist). It was held in the case that "a juridical fact (something legally relevant)

must be appreciated in light of the law contemporary with is, and not of the law in force at the time when a dispute ... falls to be settled ... [However] a distinction must be drawn between the creation of rights and the existence of rights".

6.2.4 Accretion and Avulsion

- Accretion is the gain of physical territory through natural processes
- Avulsion is the loss of physical territory through natural processes
- An example of accretion is when there is the formation of new land through volcanic activity, or the gradual deposit of sediment by a river
- An example of avulsion is when a river changes course, and the land on one side of the river is lost to another state (e.g., erosion)

6.2.5 Conquest

- Conquest is the forceful, unlawful acquisition of territory
- Under *Charter of the United Nations* Art 2(4), conquest is now illegal under international law (under this article, it is contrary to a *jus cogens* norm)

6.3 Contested Territorial Sovereignty

• The outcome in any case of contested territorial sovereignty is usually binary; either the state will have sovereignty over the territory or they will not have sovereignty

Legal Status of Eastern Greenland (Norway v Denmark) (1933) PCIJ

In this case, Norway occupied Eastern Greenland in 1931, when Denmark claimed that it had sovereignty from the 1700s. Occupation generally involves intention and a will to act as a sovereign within a territory, as well as some actual display of some authority; additionally, the land has to be *terra nullius*. It is often the case that very little in way of an actual exercise of sovereignty is sufficient for a claim, provided that the opposing state cannot make out a superior claim, especially in cases of thinly populated or settled countries (there is a presumption that the original claimer has a superior title). Legislation is an obvious example of sovereign authority; if a parliament passes a law that applies to a piece of territory, it indicates sovereign authority.

The PCIJ held that there was a latent Danish claim that had never been challenged until 1921. There was additionally no dispute over Danish authority to Greenland until 1921. Hence, the PCIJ held that Denmark had displayed sufficient authority to confer a valid title.

Case Concerning Sovereignty Over Pulau Ligitan and Pulau Spiadan (Indonesia v Malaysia) [2002] ICJ Rep 625

This case concerned a contest over the sovereignty of islands in Celebes sea (which is between the two countries). To resolve the dispute, the court looked to the extent to which the states have displayed effective authority (effectivities). In the case of small islands that are uninhabited or not permanently inhabited, effectivities will generally be scarce, as there is very little in the way of displaying a sovereign claim, but this is not fatal to establishing the claim.

The Court will only take into account activities before the dispute crystallised (the **critical date**), as any activities once the dispute has materialised will be self-serving in each country's interests. None of Indonesia's *effectivities* were legislative or of regulatory character, and did not constitute acts a titre de souverain (under sovereign authority); they had done certain things in relation to the islands, but they were not governmental and hence not under the cloak of sovereign authority.

Malaysia, on its own account and in respect of its predecessor sovereign Great Britain, had engaged in modest but diverse activities, including legislative, administrative and quasi-judicial acts (e.g., regulations for turtle egg collection, establishment of bird sanctuaries, and lighthouse). The judgement held that the sheer number of examples of Malaysia's activities ultimately accounted to a much stronger display of state authority as opposed to Indonesia's claims.

Case Concerning Sovereignty Over Pedra Branca/Pulau Batu Puteh, Middle Rocks and South Ledge (Malaysia/Singapore) [2008] ICJ Rep 12

This case concerned a dispute over islets at the entrance to Singapore Strait. Singapore claimed these islands on the basis of occupation, or that the title of the islets had subsequently passed to Singapore through the actions of the UK. Malaysia pointed to the actions of its predecessor state; Johor had original sovereignty over Pedra Branca/Pulau Batu Putch, but sovereignty had passed on the basis of conduct of the parties.

The UK and Singapore had installed and operated a lighthouse, investigated marine incidents, installed naval communications equipment, and had engaged in land reclamation, all of which were held to be à titre de souverain (i.e., all acts were done under state authority).

The court got involved in a balancing process. They found that whatever Malaysia's original title had been, that tile had been extinguished as a result of the UK and Singapore's activities, and that Malaysia did not respond to the UK and Singapore's conduct. As such, by 1980, sovereignty had passed to Singapore.

The key point from this case is to look at the nature and degree of the actual exercise of state authority over features prior to the crystallisation of the dispute.

6.4 Maritime Zones

- Maritime zones are governed by the 1982 UN Convention on the Law of the Seas (UNCLOS)
- UNCLOS operates on a 'take it or leave it' basis; states can either accept the treaty in its entirety, or not at all

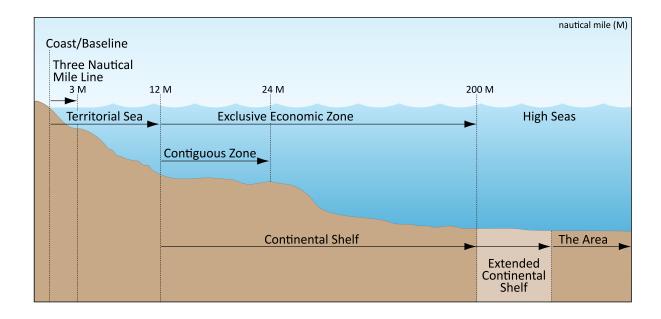


Figure 6.1: Maritime Zones as Defined in the UNCLOS

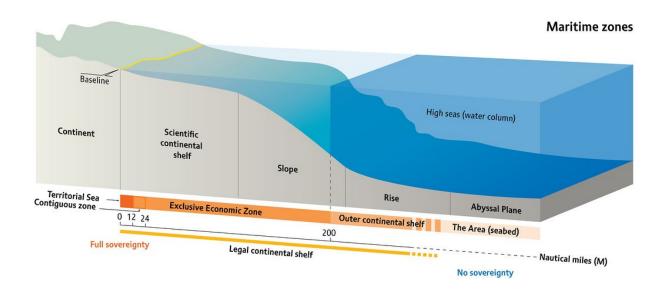


Figure 6.2: Maritime Zones as Defined in the UNCLOS (Alternative Representation)

- There are a number of different lines and zones that are important in international law
- Baselines

- Normal baselines follow the contours of the coast in all of its sinuosity, following UNCLOS Art 5 (these are the default baselines)
- Straight baselines, which are used in cases primarily where the coast is deeply indented/otherwise irregular, are special baselines that are drawn up upon dots along the coast, following UNCLOS Art 7

83

- Coastal baselines may take a combination of normal and straight baselines, depending on the complexity and geometry of the coast
- Baselines are necessary as a projection point for maritime zones

UNCLOS Articles 5, 7

Article 5

Normal baseline

Except where otherwise provided in this Convention, the normal baseline for measuring the breadth of the territorial sea is the low-water line along the coast as marked on large-scale charts officially recognized by the coastal State.

Article 7

Straight baselines

- 1. In localities where the coastline is deeply indented and cut into, or if there is a fringe of islands along the coast in its immediate vicinity, the method of straight baselines joining appropriate points may be employed in drawing the baseline from which the breadth of the territorial sea is measured.
- 2. Where because of the presence of a delta and other natural conditions the coastline is highly unstable, the appropriate points may be selected along the furthest seaward extent of the low-water line and, notwithstanding subsequent regression of the low-water line, the straight baselines shall remain effective until changed by the coastal State in accordance with this Convention.
- 3. The drawing of straight baselines must not depart to any appreciable extent from the general direction of the coast, and the sea areas lying within the lines must be sufficiently closely linked to the land domain to be subject to the regime of internal waters.
- 4. Straight baselines shall not be drawn to and from low-tide elevations, unless lighthouses or similar installations which are permanently above sea level have been built on them or except in instances where the drawing of baselines to and from such elevations has received general international recognition.
- 5. Where the method of straight baselines is applicable under paragraph 1, account may be taken, in determining particular baselines, of economic interests peculiar to the region concerned, the reality and the importance of which are clearly evidenced by long usage.
- 6. The system of straight baselines may not be applied by a State in such a manner as to cut off the territorial sea of another State from the high seas or an exclusive economic zone.

6.4.1 Maritime Zones

6.4.1.1 Territorial Sea

- The territorial sea is an inherent, non-claimable zone
- It extends 12 nautical miles from the baseline, following UNCLOS Art 3
- · States have territorial sovereignty in this area; they own it, and have extensive authority
- There are very few exceptions to this authority the most prevalent is the right of innocent passage

UNCLOS Articles 2-4

Article 2

Legal status of the territorial sea, of the air space over the territorial sea and of its bed and subsoil

- 1. The sovereignty of a coastal State extends, beyond its land territory and internal waters and, in the case of an archipelagic State, its archipelagic waters, to an adjacent belt of sea, described as the territorial sea.
- 2. This sovereignty extends to the air space over the territorial sea as well as to its bed and subsoil.
- 3. The sovereignty over the territorial sea is exercised subject to this Convention and to other rules of international law.

Article 3

Breadth of the territorial sea

Every State has the right to establish the breadth of its territorial sea up to a limit not exceeding 12 nautical miles, measured from baselines determined in accordance with this Convention.

Article 4

Outer limit of the territorial sea

The outer limit of the territorial sea is the line every point of which is at a distance from the nearest point of the baseline equal to the breadth of the territorial sea.

6.4.1.2 Contiguous Zone

- The contiguous zone is an enforcement zone for customs (the movement of goods), tax, immigration and quarantine laws
- It operates in the 12-24 nautical mile range from the baseline, right after the territorial sea, following *UNCLOS* Art 33(2)
- Coastal states can enforce the law against vessels only in the matters of customs, tax, immigration and quarantine

6.4. MARITIME ZONES 85

• The origins of this zone go back to the US Prohibition era, when people were attempting to smuggle alcohol into the US

• This is not a zone of sovereignty, but is rather a zone of enforcement jurisdiction

UNCLOS Article 33

Contiguous Zone

- 1. In a zone contiguous to its territorial sea, described as the contiguous zone, the coastal State may exercise the control necessary to:
 - (a) prevent infringement of its customs, fiscal, immigration or sanitary laws and regulations within its territory or territorial sea;
 - (b) punish infringement of the above laws and regulations committed within its territory or territorial sea.
- 2. The contiguous zone may not extend beyond 24 nautical miles from the baselines from which the breadth of the territorial sea is measured.

6.4.1.3 Exclusive Economic Zone (EEZ)

- This is a creation of UNCLOS
- Coastal states have the right to claim up to 200 nautical miles from the baseline as their exclusive economic zone (per *UNCLOS* Art 57), in which they have rights to all of the living and non-living resources (including everything in the soil, subsoil, water column, etc.), and everything on the surface (e.g., renewable energy resources)
- This is the most important zone economically
- This is not a zone of sovereignty, but is merely a zone where a state has the rights over resources and the right to regulate them
 - For example, they cannot forbid foreign ships from passing through, but they can forbid foreign ships from fishing in the zone

UNCLOS Articles 55-58

Article 55

Specific legal regime of the exclusive economic zone

The exclusive economic zone is an area beyond and adjacent to the territorial sea, subject to the specific legal regime established in this Part, under which the rights and jurisdiction of the coastal State and the rights and freedoms of other States are governed by the relevant provisions of this Convention.

Article 56

Rights, jurisdiction and duties of the coastal State in the exclusive economic zone

1. In the exclusive economic zone, the coastal State has:

- (a) sovereign rights for the purpose of exploring and exploiting, conserving and managing the natural resources, whether living or non-living, of the waters superjacent to the seabed and of the seabed and its subsoil, and with regard to other activities for the economic exploitation and exploration of the zone, such as the production of energy from the water, currents and winds;
- (b) jurisdiction as provided for in the relevant provisions of this Convention with regard to:
 - (i) the establishment and use of artificial islands, installations and structures;
 - (ii) marine scientific research;
 - (iii) the protection and preservation of the marine environment;
- (c) other rights and duties provided for in this Convention.
- 2. In exercising its rights and performing its duties under this Convention in the exclusive economic zone, the coastal State shall have due regard to the rights and duties of other States and shall act in a manner compatible with the provisions of this Convention.
- 3. The rights set out in this article with respect to the seabed and subsoil shall be exercised in accordance with Part VI.

Article 57

Breadth of the exclusive economic zone

The exclusive economic zone shall not extend beyond 200 nautical miles from the baselines from which the breadth of the territorial sea is measured.

Article 58

Rights and duties of other States in the exclusive economic zone

- 1. In the exclusive economic zone, all States, whether coastal or land-locked, enjoy, subject to the relevant provisions of this Convention, the freedoms referred to in article 87 of navigation and overflight and of the laying of submarine cables and pipelines, and other internationally lawful uses of the sea related to these freedoms, such as those associated with the operation of ships, aircraft and submarine cables and pipelines, and compatible with the other provisions of this Convention.
- 2. Articles 88 to 115 and other pertinent rules of international law apply to the exclusive economic zone in so far as they are not incompatible with this Part.
- 3. In exercising their rights and performing their duties under this Convention in the exclusive economic zone, States shall have due regard to the rights and duties of the coastal State and shall comply with the laws and regulations adopted by the coastal State in accordance with the provisions of this Convention and other rules of international law in so far as they are not incompatible with this Part.

6.4.1.4 Continental Shelf

 The continental shelf is an inherent seabed resources zone, and a prolongation of a state's territory

- States have ownership of the resources on sea bed and the subsoil, and of any living resources that live on the seabed (e.g., crustaceans, sea snails, etc.)
- This overlaps to a significant extent with the EEZ

UNCLOS Articles 76-77

Article 76

Definition of the continental shelf

- 1. The continental shelf of a coastal State comprises the seabed and subsoil of the submarine areas that extend beyond its territorial sea throughout the natural prolongation of its land territory to the outer edge of the continental margin, or to a distance of 200 nautical miles from the baselines from which the breadth of the territorial sea is measured where the outer edge of the continental margin does not extend up to that distance.
- 2. The continental shelf of a coastal State shall not extend beyond the limits provided for in paragraphs 4 to 6.
- 3. The continental margin comprises the submerged prolongation of the land mass of the coastal State, and consists of the seabed and subsoil of the shelf, the slope and the rise. It does not include the deep ocean floor with its oceanic ridges or the subsoil thereof.
- 4. (a) For the purposes of this Convention, the coastal State shall establish the outer edge of the continental margin wherever the margin extends beyond 200 nautical miles from the baselines from which the breadth of the territorial sea is measured, by either:
 - (i) a line delineated in accordance with paragraph 7 by reference to the outermost fixed points at each of which the thickness of sedimentary rocks is at least 1 per cent of the shortest distance from such point to the foot of the continental slope; or
 - (ii) a line delineated in accordance with paragraph 7 by reference to fixed points not more than 60 nautical miles from the foot of the continental slope.
 - (b) In the absence of evidence to the contrary, the foot of the continental slope shall be determined as the point of maximum change in the gradient at its base.
- 5. The fixed points comprising the line of the outer limits of the continental shelf on the seabed, drawn in accordance with paragraph 4 (a)(i) and (ii), either shall not exceed 350 nautical miles from the baselines from which the breadth of the territorial sea is measured or shall not exceed 100 nautical miles from the 2,500 metre isobath, which is a line connecting the depth of 2,500 metres.

- 6. Notwithstanding the provisions of paragraph 5, on submarine ridges, the outer limit of the continental shelf shall not exceed 350 nautical miles from the baselines from which the breadth of the territorial sea is measured. This paragraph does not apply to submarine elevations that are natural components of continental margin, such as its plateaux, rises, caps, banks and spurs.
- 7. The coastal State shall delineate the outer limits of its continental shelf, where that shelf extends beyond 200 nautical miles from the baselines from which the breadth of the territorial sea is measured, by straight lines not exceeding 60 nautical miles in length, connecting fixed points, defined by coordinates of latitude and longitude.
- 8. Information on the limits of the continental shelf beyond 200 nautical miles from the baselines from which the breadth of the territorial sea is measured shall be submitted by the coastal State to the Commission on the Limits of the Continental Shelf set up under Annex II on the basis of equitable geographical representation. The Commission shall make recommendations to coastal States on matters related to the establishment of the outer limits of their continental shelf. The limits of the shelf established by a coastal State on the basis of these recommendations shall be final and binding.
- 9. The coastal State shall deposit with the Secretary-General of the United Nations charts and relevant information, including geodetic data, permanently describing the outer limits of its continental shelf. The Secretary-General shall give due publicity thereto.
- 10. The provisions of this article are without prejudice to the question of delimitation of the continental shelf between States with opposite or adjacent coasts.

Article 77

Rights of coastal States over continental shelf

- 1. The coastal State exercises over the continental shelf sovereign rights for the purpose of exploring it and exploiting its natural resources.
- 2. The rights referred to in paragraph 1 are exclusive in the sense that if the coastal State does not explore the continental shelf or exploit its natural resources, no one may undertake these activities without the express consent of the coastal State.
- 3. The rights of the coastal State over the continental shelf do not depend on occupation, effective or notional, or on any express proclamation.
- 4. The natural resources referred to in this Part consist of the mineral and other non-living resources of the seabed and subsoil together with living organisms belonging to sedentary species, that is to say, organisms which, at the harvestable stage, either are immobile on or under the seabed or are unable to move except in constant physical contact with the seabed or the subsoil.

6.4. MARITIME ZONES 89

6.4.1.5 High Seas

• These are areas of the sea that are not subject to the jurisdiction of any state, and are open to all states

- They cannot be claimed by any state, and are thus non-appropriable
- There are certain cardinal freedoms on the high seas that cannot be violated (e.g., navigation, freedom)

UNCLOS Articles 86-90

Article 86

Application of the provisions of this Part

The provisions of this Part apply to all parts of the sea that are not included in the exclusive economic zone, in the territorial sea or in the internal waters of a State, or in the archipelagic waters of an archipelagic State. This article does not entail any abridgement of the freedoms enjoyed by all States in the exclusive economic zone in accordance with article 58.

Article 87

Freedom of the high seas

- 1. The high seas are open to all States, whether coastal or land-locked. Freedom of the high seas is exercised under the conditions laid down by this Convention and by other rules of international law. It comprises, inter alia, both for coastal and land-locked States:
 - (a) freedom of navigation;
 - (b) freedom of overflight;
 - (c) freedom to lay submarine cables and pipelines, subject to Part VI;
 - (d) freedom to construct artificial islands and other installations permitted under international law, subject to Part VI;
 - (e) freedom of fishing, subject to the conditions laid down in section 2;
 - (f) freedom of scientific research, subject to Parts VI and XIII.
- 2. These freedoms shall be exercised by all States with due regard for the interests of other States in their exercise of the freedom of the high seas, and also with due regard for the rights under this Convention with respect to activities in the Area.

Article 88

Reservation of the high seas for peaceful purposes

The high seas shall be reserved for peaceful purposes.

Article 89

Invalidity of claims of sovereignty over the high seas

No State may validly purport to subject any part of the high seas to its sovereignty.

Article 90

Right of navigation

Every State, whether coastal or land-locked, shall enjoy the right to sail ships flying its fag on the high seas.

6.4.1.6 Archipelagic Waters

- These were created under UNCLOS Part IV
- These are the waters within an archipelago
- All of these waters are held to be very similar to the territorial sea

UNCLOS Articles 46-49

Article 46

Use of terms

For the purposes of this Convention:

- (a) "archipelagic State" means a State constituted wholly by one or more archipelagos and may include other islands;
- (b) "archipelago" means a group of islands, including parts of islands, interconnecting waters and other natural features which are so closely interrelated that such islands, waters and other natural features form an intrinsic geographical, economic and political entity, or which historically have been regarded as such.

Article 47

Archipelagic baselines

- 1. An archipelagic State may draw straight archipelagic baselines joining the outermost points of the outermost islands and drying reefs of the archipelago provided that within such baselines are included the main islands and an area in which the ratio of the area of the water to the area of the land, including atolls, is between 1 to 1 and 9 to 1.
- 2. The length of such baselines shall not exceed 100 nautical miles, except that up to 3 per cent of the total number of baselines enclosing any archipelago may exceed that length, up to a maximum length of 125 nautical miles.
- 3. The drawing of such baselines shall not depart to any appreciable extent from the general configuration of the archipelago.
- 4. Such baselines shall not be drawn to and from low-tide elevations, unless lighthouses or similar installations which are permanently above sea level have been built on them or where a low-tide elevation is situated wholly or partly at a distance not exceeding the breadth of the territorial sea from the nearest island.

91

- 5. The system of such baselines shall not be applied by an archipelagic State in such a manner as to cut off from the high seas or the exclusive economic zone the territorial sea of another State.
- 6. If a part of the archipelagic waters of an archipelagic State lies between two parts of an immediately adjacent neighbouring State, existing rights and all other legitimate interests which the latter State has traditionally exercised in such waters and all rights stipulated by agreement between those States shall continue and be respected.
- 7. For the purpose of computing the ratio of water to land under paragraph l, land areas may include waters lying within the fringing reefs of islands and atolls, including that part of a steep-sided oceanic plateau which is enclosed or nearly enclosed by a chain of limestone islands and drying reefs lying on the perimeter of the plateau.
- 8. The baselines drawn in accordance with this article shall be shown on charts of a scale or scales adequate for ascertaining their position. Alternatively, lists of geographical coordinates of points, specifying the geodetic datum, may be substituted.
- The archipelagic State shall give due publicity to such charts or lists of geographical coordinates and shall deposit a copy of each such chart or list with the Secretary-General of the United Nations.

Article 48

Measurement of the breadth of the territorial sea, the contiguous zone, the exclusive economic zone and the continental shelf

The breadth of the territorial sea, the contiguous zone, the exclusive economic zone and the continental shelf shall be measured from archipelagic baselines drawn in accordance with article 47.

Article 49

Legal status of archipelagic waters, of the air space over archipelagic waters and of their bed and subsoil

- 1. The sovereignty of an archipelagic State extends to the waters enclosed by the archipelagic baselines drawn in accordance with article 47, described as archipelagic waters, regardless of their depth or distance from the coast.
- 2. This sovereignty extends to the air space over the archipelagic waters, as well as to their bed and subsoil, and the resources contained therein.
- 3. This sovereignty is exercised subject to this Part.
- 4. The regime of archipelagic sea lanes passage established in this Part shall not in other respects affect the status of the archipelagic waters, including the sea lanes, or the exercise by the archipelagic State of its sovereignty over such waters and their air space, bed and subsoil, and the resources contained therein.

6.4.1.7 Deep Seabed

- This is referred to as 'the Area' in the UNCLOS, and is considered as the common heritage
 of mankind
- Once an individual/ship leaves the continental shelf and enters the deep seabed, it cannot be appropriated by any state; it is instead vested in all people (i.e., they have a stake in it)
- The International Seabed Authority (established by *UNCLOS* and based in Jamaica) is responsible for the management of the deep seabed by issuing licences on an equitable basis to ensure all countries can access the resources in the deep sea
- The deep sea lies immediately below the high seas

South China Sea Arbitration (Philippines v China) [2016] PCA

Prior to 2016, the Philippines challenged China's claim to the entirety of the South China Sea, and to China's assertion of maritime zones from particular features in the Sea. The Tribunal examining these issues was established under *UNCLOS*.

The first key issue was China's 'Nine-Dash Line', which was held to be incompatible with *UNCLOS*. This is because the zone extended very substantially beyond China's coastline, and well beyond the 200 nautical mile limit of the EEZ. The Tribunal held that the Nine-Dash Line was not a valid claim to maritime zones, and that China had no rights to the waters within the line. Moreover, as China was a party to *UNCLOS*, any historical claims were extinguished upon the signing of the treaty, and so historical maritime zones could not be argued.

Moreover, none of the maritime features in dispute were islands as defined in *UNCLOS*. The Tribunal held that none of the features were capable of generating an EEZ or continental shelf, and that they were all either rocks or low-tide elevations. As such, the Tribunal held that China had no rights to any maritime zones from these features. At most, they could generate a territorial sea, but not an EEZ or continental shelf. The Tribunal also held that China had violated the Philippines' rights in the EEZ, and that China had failed to protect the marine environment in the area.

6.5 Antarctica

- There are 7 claimants to territory in Antarctica: Argentina, Australia, Chile, France, New Zealand, Norway, and the UK
- Article 4 of the 1959 Antarctic Treaty provides that no new claims to territory in Antarctica
 may be made, but that there is no renunciation of any existing claims (i.e., they are frozen
 whilst the treaty is in force)
- Whilst the treaty is in force, no acts conducted can constitute a basis for asserting, supporting or denying a claim to territorial sovereignty in Antarctica

1959 Antarctic Treaty Article 4

- 1. Nothing contained in the present Treaty shall be interpreted as:
 - (a) a renunciation by any Contracting Party of previously asserted rights of or claims to territorial sovereignty in Antarctica;
 - (b) a renunciation or diminution by any Contracting Party of any basis of claim to territorial sovereignty in Antarctica which it may have whether as a result of its activities or those of its nationals in Antarctica, or otherwise;
 - (c) prejudicing the position of any Contracting Party as regards its recognition or non-recognition of any other State's right of or claim or basis of claim to territorial sovereignty in Antarctica.
- 2. No acts or activities taking place while the present Treaty is in force shall constitute a basis for asserting, supporting or denying a claim to territorial sovereignty in Antarctica or create any rights of sovereignty in Antarctica. No new claim, or enlargement of an existing claim, to territorial sovereignty in Antarctica shall be asserted while the present Treaty is in force.

6.6 Airspace and Outer Space

6.6.1 Airspace

- A state has sovereignty over the airspace above its territory and territorial sea (cujus est solum ejus est usque ad coelum)
- Other states have the freedom of overflight over the contiguous zone, the EEZ, and high seas
- The boundary between national airspace and outer space is not clearly defined

6.6.2 Outer Space

- The 1967 Outer Space Treaty Art 2 provides that outer space is not subject to national appropriation by any means
- Article 1 of this treaty additionally holds that outer space is the province of mankind
- There are 113 parties to this treaty

1967 Outer Space Treaty

Article 1

The exploration and use of outer space, including the moon and other celestial bodies, shall be carried out for the benefit and in the interests of all countries, irrespective of their degree of economic or scientific development, and shall be the province of all mankind.

Outer space, including the moon and other celestial bodies, shall be free for exploration

and use by all States without discrimination of any kind, on a basis of equality and in accordance with international law, and there shall be free access to all areas of celestial bodies.

There shall be freedom of scientific investigation in outer space, including the moon and other celestial bodies, and States shall facilitate and encourage international co-operation in such investigation.

Article 2

Outer space, including the moon and other celestial bodies, is not subject to national appropriation by claim of sovereignty, by means of use or occupation, or by any other means.

- The 1979 Moon Agreement Art 11(1) provides that the moon and other celestial bodies are the common heritage of mankind
- There are only 18 parties to this treaty

1979 Agreement Governing the Activities of States on the Moon and Other Celestial Bodies Article 11

- 1. The moon and its natural resources are the common heritage of mankind, which finds its expression in the provisions of this Agreement, in particular in paragraph 5 of this article.
- 2. The moon is not subject to national appropriation by any claim of sovereignty, by means of use or occupation, or by any other means.
- 3. Neither the surface nor the subsurface of the moon, nor any part thereof or natural resources in place, shall become property of any State, international intergovernmental or non-governmental organization, national organization or non-governmental entity or of any natural person. The placement of personnel, space vehicles, equipment, facilities, stations and installations on or below the surface of the moon, including structures connected with its surface or subsurface, shall not create a right of ownership over the surface or the subsurface of the moon or any areas thereof. The foregoing provisions are without prejudice to the international regime referred to in paragraph 5 of this article.
- 4. States Parties have the right to exploration and use of the moon without discrimination of any kind, on the basis of equality and in accordance with international law and the terms of this Agreement.
- 5. States Parties to this Agreement hereby undertake to establish an international regime, including appropriate procedures, to govern the exploitation of the natural resources of the moon as such exploitation is about to become feasible. This provision shall be implemented in accordance with article 18 of this Agreement.
- 6. In order to facilitate the establishment of the international regime referred to in paragraph 5 of this article, States Parties shall inform the Secretary-General of the United Nations as well as the public and the international scientific community, to

the greatest extent feasible and practicable, of any natural resources they may discover on the moon.

- 7. The main purposes of the international regime to be established shall include:
 - (a) The orderly and safe development of the natural resources of the moon;
 - (b) The rational management of those resources;
 - (c) The expansion of opportunities in the use of those resources;
 - (d) An equitable sharing by all States Parties in the benefits derived from those resources, whereby the interests and needs of the developing countries, as well as the efforts of those countries which have contributed either directly or indirectly to the exploration of the moon, shall be given special consideration.
- 8. All the activities with respect to the natural resources of the moon shall be carried out in a manner compatible with the purposes specified in paragraph 7 of this article and the provisions of article 6, paragraph 2, of this Agreement.

Topic 7

Jurisdiction

- State jurisdiction refers to the power or competence of a state to prescribe or enforce its laws
- State jurisdiction includes:
 - Prescriptive jurisdiction, which is the power to enact laws/assert jurisdiction by legislation (legislative power)
 - Adjudicative jurisdiction, which is the power to apply laws and decide disputes (judicial power)
 - Enforcement jurisdiction, which is the ability to enforce laws within a state's territory (executive power)
- Enforcement jurisdiction is almost always confined to a state's territory, but prescriptive jurisdiction is becoming increasingly extraterritorial
- The litmus test for the limits of state jurisdiction is **protest by other states**
- The rules around custom in relation to jurisdiction have been formed by states asserting jurisdiction, and by some states resisting/opposing jurisdiction

7.1 Civil Jurisdiction

- Civil jurisdiction refers to the exercise by states of power (prescriptive and adjudicative) over persons, matters or things in private disputes (e.g., torts, contracts, family law, etc.)
- International law places very few limits on the assertion of civil jurisdiction, taking a hands-off approach to the power of states
- This has resulted in many situations where states have been extravagant in exercising civil powers internationally
- For example, the *Alien Tort Claims Act 1789* (US) conferred jurisdiction on US federal courts in civil actions by non-nationals for violations of international law
 - Following a revitalisation of this law in the 1980s, it has now been interpreted restrictively by the US Supreme Court (see Sosa v Alvare-Machain (SCOTUS, 2004) and Kiobel v Royal Dutch Petroleum (SCOTUS, 2013))

- In Kiobel v Royal Dutch Petroleum, Nigerian plaintiffs were injured by Royal Dutch Petroleum
- In Sosa v Alvare-Machain, a Mexican national was kidnapped by US agents in Mexico and brought to the US for trial

7.2 Criminal Jurisdiction

- International law sets limits on the assertion of of criminal jurisdiction by states
- States can only assert criminal jurisdiction when they can establish that their jurisdiction is supported by one or more of the following principles:
 - Territorial principle
 - Nationality principle
 - Protective principle (also known as the security principle)
 - Passive personality principle (also known as the passive nationality principle)
 - Universality principle
- These principles are not mutually exclusive, and states can assert jurisdiction on the basis of more than one principle (e.g., a crime on the territory of one state committed against citizens of another state, which becomes so severe that it shocks all humans (a crime against humanity) would invoke the territorial principle, the nationality principle, the passive personality principle and the universality principle)
- If there is an overlap in jurisdiction, or there is otherwise concurrent jurisdiction, the state with the most significant connection to the crime will usually be the one to prosecute (generally, the state with custody has the first opportunity to prosecute)
 - To exercise jurisdiction, a state must have custody of the offender

7.2.1 Territorial Principle

- The territorial principle holds that states may exercise criminal jurisdiction where an element of a criminal offence takes place within its territory
 - Criminal laws are normally expressed to apply in the territories of a state
- This applies where an element of an offence occurs within the jurisdiction of a state, or where an effect of the offence was felt within the state's jurisdiction
- The territorial principle requires some sort of geographical nexus, but not necessarily that
 the entirety of an offence is committed within the territory of the forum asserting
 jurisdiction

SS Lotus (France v Turkey) (1927) PCIJ

This case involved the collision of two vessels on the high seas, one French and one Turkish. The collision had occurred as a result of the criminal negligence of the master of the watch on the French vessel. The Turkish courts asserted criminal jurisdiction over the French master of the watch, and sought to prosecute him in the Turkish courts. France argued that Turkey could not exercise jurisdiction, instead arguing in favour of the customary rule of exclusive jurisdiction of the flag state over collisions on the high seas; i.e., that France, as the flag state of the offending vessel and of the master of the watch, had sole jurisdiction.

The PCIJ held that there was no such rule, and that Turkey was entitled to assert criminal jurisdiction. It did so on what is now a highly-contended basis that "anything which international law does not expressly prohibit, it permits" (i.e., a permissive view of state jurisdiction). This view is no longer subscribed to, as the prevailing view now is that states when asserting criminal jurisdiction need to identify valid basis for doing so (in this instance, the valid basis was held to be the territorial principle).

The PCIJ held that the territorial principle of jurisdiction meant that if at least one of the constituent elements of an offence took place in a state's territory, that is sufficient to enliven the territorial principle. Here, as some effects were felt in Turkey as a result of the damage to the Turkish vessel, the PCIJ held that as the vessel was akin to the floating territory of Turkey (this is not generally correct), the territorial principle was enlivened in manner that held that not all elements of the offence had to be in a state so long as some effect was felt by the state.

"The territoriality of all criminal law ... is not an absolute principle." States may exercise jurisdiction on a territorial basis if 'if one of the constituent elements of the offence, and more especially its effects, have taken place there'. '[O]nce it is admitted that the effects of the offence were produced on the Turkish vessel, it becomes impossible to hold that there is a rule of international law which prohibits Turkey from prosecuting...' '... in this case, a prosecution may also be justified from the point of view of the so-called territorial principle' (this statement embodies the now-discredited 'floating territory' principle). Moreover, 'there is no rule of international law in regard to collision cases to the effect that criminal proceedings are exclusively within the jurisdiction of the State whose flag is flown.'

The rules created by this case around jurisdiction of vessels on the high seas has now been overturned by *UNCLOS* Art 97 (the exclusive flag state criminal jurisdiction for high seas collisions), which holds that if there is a collision in the high seas between two different nationalities, the victim vessel and thus state has no jurisdiction over the perpetrator vessel (which is exclusively under the jurisdiction of the flag vessel).

- The territory of a state is a nuanced issue
 - It is clear that vessels bearing a state's flag are not considered to be part of the territory of that state
 - Following R v Turnbull; ex parte Petroff (ACTSC, 1971), the grounds of an embassy remain part of the ACT's territory for the purposes of jurisdiction (but enforcement of that jurisdiction is a separate issue, due to diplomatic inviolability)
 - Following R v Disun; R v Nardin (WASC, 2003), the territory of a state includes its territorial seas

R v Turnbull; ex parte Petroff (ACTSC, 1971)

Petroff and another defendant were charged under ACT law for attempted bombing of the USSR embassy in Canberra. The defendant argued that he did not commit a crime within the ACT (and thus within Australia), but rather did so within the USSR. The ACT Supreme Court held that "the premises of a foreign embassy are not outside the territory to which the criminal law applies", and as such, the criminal law of the ACT applied throughout the ACT; the missions of foreign states do not become foreign territory, despite being subject to inviolable protections.

R v Disun; R v Nardin (WASC, 2003)

The MV Tampa, a Norwegian vessel, had rescued 400 asylum seekers from a sinking vessel in the Indian Ocean. They sought to enter the Australia territorial sea to offload the asylum seekers so that they could be offloaded, looked after and then make claims for protection. The defendants were subsequently charged with people-smuggling offences, as they had not been given the requisite permission but nonetheless still steered the ship into Australia's territorial waters.

In their defence, the defendants argued that they were arrested on a Norwegian vessel within the Australian territorial sea, and that this meant that they had been arrested on Norwegian territory. Consequently, they argued that they should be governed by extradition laws before they could be prosecuted. The Western Australian Supreme Court rejected this, holding that the territory of Australia included all of Australia's land territory and also its territorial sea. It is moreover a general rule of international law that a state possesses jurisdiction in virtue of its sovereignty over persons and property found in its territory.

- If a criminal offence has connections with several states, the territorial principle will be enlivened in those states, with two approaches taken to resolve this conflict:
 - Subjective territorial jurisdiction this is the exercise of prescriptive jurisdiction by
 the state in which the criminal offence originated but was completed outside its
 territory (i.e., look at the start place of the offence)
 - Objective territorial jurisdiction this is the exercise of prescriptive jurisdiction by
 the state in which the criminal offence is completed, even if the offence was initiated
 outside its territory (i.e., look at the end place of the offence)
- Following Ward v R (1980) 142 CLR 308, the High Court held that Victoria tended to follow objective territorial jurisdiction

Ward v R (1980) 142 CLR 308

This was a case of murder, where the accused (Ward) was standing on of of the bank of the Murray River in Victoria, where he fired a gun and killed a victim who was standing by the water of the river. The High Court faced the factual issue of deciding whether the victim was in NSW or in Victoria at the time he was struck; upon closer examination, the High Court held that the victim was in NSW at the point he was killed. The High Court examined the relevant Victorian statute, and found that it adhered to the

objective/terminatory theory, and as such, the venue of the crime was where the act took effect upon the victim (which was NSW in this case).

- This is a principle that has been codified in NSW through *Crimes Act 1900* ss 10A, 10C, where the geographic nexus of a crime is within NSW if the offence was committed wholly or partly within NSW, or has an effect in NSW (i.e., was committed wholly outside NSW, but has a material effect in NSW)
 - s 10A holds that it will also apply to an offence beyond the territorial limits of NSW if there is a geographic nexus between the offence and the state
 - s 10C delineates how to determine if there is a geographic nexus

Crimes Act 1900 ss 10A, 10C

Application and effect of Part

- (1) This Part applies to all offences.
- (2) This Part extends, beyond the territorial limits of the State, the application of a law of the State that creates an offence if there is the nexus required by this Part between the State and the offence.
- (3) If the law that creates an offence makes provision with respect to any geographical consideration concerning the offence, that provision prevails over any inconsistent provision of this Part.
- (4) This Part is in addition to and does not derogate from any other basis on which the courts of the State may exercise criminal jurisdiction.

Crimes Act 1900 s 10C

Extension of offences if there is a geographical nexus

- (1) If—
 - (a) all elements necessary to constitute an offence against a law of the State exist (disregarding geographical considerations), and
 - (b) a geographical nexus exists between the State and the offence,

the person alleged to have committed the offence is guilty of an offence against that law.

- (2) A geographical nexus exists between the State and an offence if—
 - (a) the offence is committed wholly or partly in the State (whether or not the offence has any effect in the State), or
 - (b) the offence is committed wholly outside the State, but the offence has an effect in the State.

7.2.2 Nationality Principle

- The nationality principle refers to the application of criminal laws to nationals (i.e., citizens) of states
- Determining the nationality of a person is a matter left to municipal law; it is up to states to confer or rescind nationality (an individual cannot make a unilateral declaration of renunciation, for example), with international law setting very few limits on this matter
- An example of the nationality principle is Criminal Code 1995 (Cth) Div. 272 ('Child Sex Offences Outside Australia'), which was challenged in XYZ v Commonwealth (2006) 227 CLR 532

XYZ v Commonwealth (2006) 227 CLR 532

In this case, Gleeson CJ held that "[t]he assertion of extra-territorial criminal jurisdiction is not, in itself, contrary to the principles of international law ... The territorial principle of legislative jurisdiction over crime is not the exclusive source of competence recognised by international law. Of primary relevance to the present case is the nationality principle, which covers conduct abroad by citizens or residents of a state". In this case, the High Court considered whether the Div. 272 provisions were supported by the external affairs power. Gleeson CJ noted that there was no problem with the principle of extraterritorial jurisdiction; the relevant principle was the nationality principle, which applies to both citizens and residents of states (suggesting a broader application of this principle, rather than just states).

7.2.3 Protective (Security) Principle

- The protective (security) principle is concerned less with where an offence is committed (territorial) and who committed the offence (nationality), but rather with the nature of the offence, and whether it impairs some kind of fundamental/vital state security interest
- Jurisdiction is exercised over persons (including non-nationals) who have committed acts abroad prejudicial to the security of the state
- States can take action against nationals/non-nationals where the offence was serious enough to violate state security
- This is a controversial basis of state jurisdiction, and is generally limited to offences infringing vital state interests, and as such, is not invoked very often
- Examples include:
 - Genocide of the Jewish people A-G v Eichmann (Dist Ct. of Jerusalem, 1961)
 - Attempted murder of government agents US v Benitez (US Ct. of A for 11th Cir, 1984)
 - Propaganda Joyce v DPP (HoL, 1946); R v Casement (1917) Eng Ct. of Crim. A.

A-G v Eichmann (Dist Ct. of Jerusalem, 1961)

Eichmann was abducted by the Israeli secret service from Buenos Aires, where he had been living under a different name. He was taken to Israel to face trial for carrying out the so-called Holocaust final solution in Nazi Germany. He faced trial in Israel, and was ultimately convicted. The Israeli prosecutors presented multiple bases upon which they asserted that Israel possessed jurisdiction:

- The character of the offence as involving genocide of the Jewish people (enlivening the universal principle of jurisdiction)
- Invoking jurisdiction to protect the very existence of the Jewish state of Israel (enlivening the protective principle)

US v Benitez (US Ct. of A for 11th Cir, 1984)

This case involved the attempted murder of two government agents, with the US authorities prosecuting a Colombian national. The Court justified this by saying that the crime would have potential ramifications for the broader security of the United States.

Joyce v DPP (HoL, 1946)

The defendant was born in the US, and had fraudulently obtained a UK passport by claiming he was born in Ireland. In 1939, when WW2 began, he moved to Germany and began to work for German radio services, broadcasting propaganda to the British people. He was tried for treason by the British authorities, which was controversial as it was unclear as to whether he had British nationality to begin with (he had acquired his British passport fraudulently). Jallett LJ proposed an alternate basis for jurisdiction, stating that "no principle of comity demands that a state should ignore the crime of treason committed against it outside its own territory..." This case is often cited in support of the protective principle.

R v Casement (1917) Eng Ct. of Crim. A.

This case involved a British subject who in Germany was trying to persuade British prisoners of war to give up their allegiance to Britain and join the German military. He was put on trial in the UK, and was convicted of treason. This case is often cited in support of the protective principle, and for its enablement of the prosecution of nationals and non-nationals where there has been some infringement of a vital state security interest

7.2.4 Passive Personality Principle

- The passive personality principle allows for criminal jurisdiction to be asserted anywhere in the world to citizens of a state, enabling the national state of the victim of an offence to assert jurisdiction over the offender
- The SS Lotus Case (1927) PCIJ expressly reserved the question as to whether this was a valid basis of jurisdiction

- Examples of this principle being exercised include
 - Taking hostages during the hijacking of an aircraft US v Yunis (US Ct. of A for 11th Cir, 1991)
 - Harming Australians abroad Criminal Code 1995 (Cth) Div 115

US v Yunis (US Ct. of A for 11th Cir, 1991)

This case involved the defendant and four other men who boarded a Royal Jordanian flight in Beirut and then hijacked the flight. A number of passengers were American citizens, and two of them had been detained (but otherwise unharmed). On the basis of the passive personality principle, the US Court held that it had jurisdiction of this matter.

• Under *Criminal Code 1995* (Cth) Div 115, Australian nationals are protected by Australian criminal law as a national of Australia in the event that they are subject to harm abroad

Criminal Code 1995 (Cth) Div 115 - Harming Australians

115.1 Murder of an Australian citizen or a resident of Australia

- (1) A person commits an offence if:
 - (a) the person engages in conduct outside Australia (whether before or after 1 October 2002 or the commencement of this Code); and
 - (b) the conduct causes the death of another person; and
 - (c) the other person is an Australian citizen or a resident of Australia; and
 - (d) the first-mentioned person intends to cause, or is reckless as to causing, the death of the Australian citizen or resident of Australia or any other person by the conduct; and
 - (e) if the conduct was engaged in before 1 October 2002—at the time the conduct was engaged in, the conduct constituted an offence against a law of the foreign country, or the part of the foreign country, in which the conduct was engaged.

Note: This section commenced on 1 October 2002.

- (1A) If the conduct constituting an offence against subsection (1) was engaged in before 1 October 2002, the offence is punishable on conviction by:
 - (a) if, at the time the conduct was engaged in, the offence mentioned in paragraph (1)(e) was punishable on conviction by a term of imprisonment (other than imprisonment for life)—a maximum penalty of imprisonment for a term of not more than that term; or
 - (b) otherwise—a maximum penalty of imprisonment for life.
- (1B) If the conduct constituting an offence against subsection (1) was engaged in on or after 1 October 2002, the offence is punishable on conviction by a maximum penalty of imprisonment for life.
 - (2) Absolute liability applies to paragraphs (1)(c) and (e).

- (3) If:
 - (a) a person has been convicted or acquitted of an offence in respect of conduct under a law of a foreign country or a part of a foreign country; and
 - (b) the person engaged in the conduct before 1 October 2002;

the person cannot be convicted of an offence against this section in respect of that conduct.

115.2 Manslaughter of an Australian citizen or a resident of Australia

- (1) A person commits an offence if:
 - (a) the person engages in conduct outside Australia (whether before or after 1 October 2002 or the commencement of this Code); and
 - (b) the conduct causes the death of another person; and
 - (c) the other person is an Australian citizen or a resident of Australia; and
 - (d) the first-mentioned person intends that the conduct will cause serious harm, or is reckless as to a risk that the conduct will cause serious harm, to the Australian citizen or resident of Australia or any other person; and
 - (e) if the conduct was engaged in before 1 October 2002—at the time the conduct was engaged in, the conduct constituted an offence against a law of the foreign country, or the part of the foreign country, in which the conduct was engaged.

Note: This section commenced on 1 October 2002.

- (1A) If the conduct constituting an offence against subsection (1) was engaged in before 1 October 2002, the offence is punishable on conviction by:
 - (a) if, at the time the conduct was engaged in, the offence mentioned in paragraph (1)(e) was punishable on conviction by imprisonment for a term of less than 25 years—a maximum penalty of imprisonment for a term of not more than that term; or
 - (b) otherwise—a maximum penalty of imprisonment for a term of not more than 25 years.
- (1B) If the conduct constituting an offence against subsection (1) was engaged in on or after 1 October 2002, the offence is punishable on conviction by a maximum penalty of imprisonment for a term of not more than 25 years.
 - (2) Absolute liability applies to paragraphs (1)(b), (c), and (e).
 - (3) If:
 - (a) a person has been convicted or acquitted of an offence in respect of conduct under a law of a foreign country or a part of a foreign country; and
 - (b) the person engaged in the conduct before 1 October 2002;

the person cannot be convicted of an offence against this section in respect of that conduct.

115.3 Intentionally causing serious harm to an Australian citizen or a resident of Australia

- (1) A person commits an offence if:
 - (a) the person engages in conduct outside Australia; and
 - (b) the conduct causes serious harm to another person; and
 - (c) the other person is an Australian citizen or a resident of Australia; and
 - (d) the first-mentioned person intends to cause serious harm to the Australian citizen or resident of Australia or any other person by the conduct.

Penalty: Imprisonment for 20 years.

(2) Absolute liability applies to paragraph (1)(c).

115.4 Recklessly causing serious harm to an Australian citizen or a resident of Australia

- (1) A person commits an offence if:
 - (a) the person engages in conduct outside Australia; and
 - (b) the conduct causes serious harm to another person; and
 - (c) the other person is an Australian citizen or a resident of Australia; and
 - (d) the first-mentioned person is reckless as to causing serious harm to the Australian citizen or resident of Australia or any other person by the conduct.

Penalty: Imprisonment for 15 years.

(2) Absolute liability applies to paragraph (1)(c).

115.5 Saving of other laws

This Division is not intended to exclude or limit the operation of any other law of the Commonwealth or of a State or Territory.

115.6 Bringing proceedings under this Division

- (1) Proceedings for an offence under this Division must not be commenced without the Attorney-General's written consent.
- (2) However, a person may be arrested, charged, remanded in custody, or released on bail, in connection with an offence under this Division before the necessary consent has been given.

115.7 Ministerial certificates relating to proceedings

(1) A Minister who administers one or more of the following Acts:

- (a) the Australian Citizenship Act 2007;
- (b) the Migration Act 1958;
- (c) the Australian Passports Act 2005;

may issue a certificate stating that a person is or was an Australian citizen or a resident of Australia at a particular time.

(2) In any proceedings, a certificate under this section is *prima facie* evidence of the matters in the certificate.

115.8 Geographical Jurisdiction

Each offence against this Division applies:

- (a) whether or not a result of the conduct constituting the alleged offence occurs in Australia; and
- (b) if the alleged offence is an ancillary offence and the conduct to which the ancillary offence relates occurs outside Australia—whether or not the conduct constituting the ancillary offence occurs in Australia.

115.9 Meaning of causes death or harm

In this Division, a person's conduct causes death or harm if it substantially contributes to the death or harm.

7.2.5 Universality Principle

- The universality principle is the exercise of jurisdiction over particular offences because of their seriousness (e.g., genocide), or because they may otherwise go unpunished (e.g., piracy, crimes committed on the high seas, crimes beyond territorial jurisdiction)
- There is no need to establish a link or nexus between the offender or offence and the prosecuting state other than custody
- The basis of this is that it is the duty of the international community to repress the crimes to which it applies (because it is the type of crimes that can only effectively be dealt with in universal jurisdiction (e.g., piracy), or because they are particularly heinous (e.g., genocide))
 - The exercise of universal jurisdiction without custody (i.e., in absentia) is controversial; usually, custody is the only necessary link for a state to exercise their powers under the universality principle
- It is difficult to discern a coherent theory for those offences to which universal jurisdiction has applied; it has been developed on a case-by-case basis
- Crimes over which universal jurisdiction may be exercised include:
 - Piracy (attack on a vessel on the high seas for private ends)
 - Slavery (exercise of powers of ownership over persons)

- Genocide (certain acts including murder committed with intent to destroy in whole or in part, a national, ethnical, racial or religious group)
- War crimes (serious breaches of the laws of war, such as intentional attacks on civilians)
- Crimes against humanity (certain acts including murder committed as part of a widespread or systematic attack directed against any civilian population)
- Torture (state infliction of pain/suffering to obtain information)

7.2.5.1 Piracy and Marine Terrorism

- Piracy was the first offence over which universal jurisdiction was accepted to apply, as it has a functional aspect to it which enables for the law to be enforced against pirates, which is otherwise very difficult as it occurs beyond the jurisdiction of any state
- International law has come to view that any state with custody of the offending pirate can exercise jurisdiction over them
- Piracy can only be committed on the high seas; if it is conducted in the territorial seas, it
 would not be piracy and would likely be subject to the national law of where the sea is
 located
- Under UNCLOS Art 101, piracy is defined in Art 101(a)
- It requires two vessels (one of which is attacking the other), that such an attack takes place
 on the high seas, and that it is done for private ends (i.e., government ships cannot commit
 piracy)

UNCLOS Article 101

Definition of Piracy

Piracy consists of any of the following acts:

- (a) any illegal acts of violence or detention, or any act of depredation, committed for private ends by the crew or the passengers of a private ship or a private aircraft, and directed:
 - (i) on the high seas, against another ship or aircraft, or against persons or property on board such ship or aircraft;
 - (ii) against a ship, aircraft, persons or property in a place outside the jurisdiction of any State;
- (b) any act of voluntary participation in the operation of a ship or of an aircraft with knowledge of facts making it a pirate ship or aircraft;
- (c) any act of inciting or of intentionally facilitating an act described in subparagraph (a) or (b).

US v Dire (Court of Appeal for the 4th Circuit, 2012)

This case involved the prosecution of Somali pirates, who attacked a vessel off the coast of Somalia on the high seas. Whilst the pirates thought they were attacking a merchant vessel, it was a US frigate disguised as a merchant ship. The US chased the pirates, arrested them and took them to the US for trial. The jurisdiction of the court was asserted on the basis of universality. Dire argued that there was no true offence of piracy having being committed here, but rather it was at most attempted piracy; there was no act of violence or degradation against the vessel, but rather an attempted act that was thwarted. The US Courts rejected this logic, holding that the *UNCLOS* definition of piracy was broad enough to involve attempted acts of piracy. This case held that actual robbery was *not* an essential element of piracy, and that attempted/frustrated robbery on the high seas constitutes piracy *jure gentium*.

 In the 1960s-1980s, it was clear that the law of piracy was not being applied to acts of marine terrorism

Achille Lauro Incident (1985)

In 1985, four armed men who claimed to represent the Palestinian Liberation Front took control of an Italian cruiseliner on the high seas. However, they had laid on board after boarding in Genova, rather than boarding the ship from another vessel on the high seas, preventing the definition of piracy from being enlivened. Moreover, they killed a Jewish-American prisoner by shooting him dead and pushing him over the side of the vessel, and did this to make a political point, rather than for a commercial advantage or to otherwise loot the ship. From this incident, it was evident that piracy did not apply to incidents that commenced purely on board one vessel.

- The 1988 Convention for the Suppression of Unlawful Acts against the Safety of Maritime Navigation remedied the situation in the Achille Lauro Incident (1985), by establishing international criminal offences relating to the safety of maritime navigation, including the seizing of control of a ship by force
- Maritime terrorism and other terrorism are now the subject of a treaty-based system of quasi-universal jurisdiction; this is not true jurisdiction, as jurisdiction may only be exercised over crimes committed on the territory of parties or over nationals of parties to the convention
 - A sufficient number of states have ratified these conventions, providing a broad enough basis for states to take action against a whole host of terrorist attacks (e.g., financing terrorists, bombing, aircraft hijacks, etc.)
- These conventions require some sort of connection between the state party to the convention and the offender/the place of the offence
- "Unlike those offenses supporting universal jurisdiction under customary international law

 that is, piracy, war crimes, and crimes against humanity that now have fairly precise
 definitions and that have achieved universal condemnation, 'terrorism' is a term as loosely
 deployed as it is powerfully charged." US v Yousef (2003) US ct of Ap, 2nd Circuit (contra
 US v Yunis (1991))

7.2.5.2 Genocide

- Genocide refers to the killing or other crimes with the intent to destroy, in part or in whole, a national, ethnical, racial or religious group
- Genocide requires an additional fault element (dolus specialis)
 - If there was a special intention to destroy a group that was manifest even through only one murder, that will amount to genocide, making it subject to universal jurisdiction

A-G v Eichmann (Dist Ct of Jerusalem, 1961)

See the existing note for this case under the Protective Principle on Page 103.

"These crimes...are grave offences against the law of nations itself ... international law, in the absence of an International [Criminal] Court, is in need of the judicial and legislative organs of every country to give effect to its criminal interdictions and bring the criminals to trial. The jurisdiction to try crimes under international law is universal." This case was held to have three bases for jurisdiction:

- Passive personality principle
- Protective principle
- Universality principle (the crimes committed were grave offences against the laws of natures themselves)

This case also demonstrated that the ICC has limitations, and continues to have salience today for national courts to take actions in cases of genocide.

Nulyarimma v Thompson (1999) FCAFC

See the existing note for this case on Page 52.

The FCAFC was not prepared to accepted that genocide comprised part of Australian common law, but noted that the court did accept that genocide could be subject to universal jurisdiction and that it was up to each state to determine themselves how they will exercise that jurisdiction. Wilcox J noted that "[u]niversal jurisdiction conferred by the principles of international law is a component of sovereignty ... and the way in which sovereignty is exercised will depend on each common law country's peculiar constitutional arrangements."

7.2.5.3 War Crimes and Crimes Against Humanity

- The 1945 Charter of the International Military Tribunal at Nuremberg, created after the Second World War, defines crimes against peace (i.e., aggression), war crimes and crimes against humanity
- In Australia, Brennan J in Polyukhovich v Commonwealth (War Crimes Act Case) (1991)
 HCA at [33] held that "a law which vested in an Australian court a jurisdiction recognized

by international law as a universal jurisdiction is a law with respect to Australia's external affairs...international law recognizes a State to have universal jurisdiction to try suspected war criminals"

- This case concerned the constitutionality of legislation passed in Australia that had retrospective effect vested in Australia's criminal jurisdiction with respect to crimes committed in Europe in WW2
- Following Brennan J, the Court held that this legislation was valid, and that states have rights to exercise universal jurisdiction over war criminals
- Presently, the *Criminal Code 1995* (Cth) implements the *1998 Rome Statute of the International Criminal Court* into Australian law, which defines war crimes and crimes against humanity in more detail (the *War Crimes Act* is now repealed)

Arrest Warrant (Democratic Republic of the Congo v Belgium) (2002) ICJ

This case addresses the immunity of foreign affairs ministers and the concept of universal jurisdiction over war crimes and crimes against humanity. The case arose when Belgium initiated a prosecution against the Foreign Affairs Minister of the Democratic Republic of the Congo, asserting universal jurisdiction in absentia despite the lack of any connection between Belgium and the offence; neither the offence nor the perpetrator had links to Belgium, and there were no Belgian victims involved. This represented a bold application of universal jurisdiction, as the accused was not in custody and had no ties to the prosecuting state.

The primary issue in the case was the immunity of the Congolese Foreign Affairs Minister, but a subsidiary question emerged: can a state exercise universal jurisdiction over an offence or offender with no connection to that state, particularly in absentia? The ICJ ultimately did not address this question directly, as it ruled that the minister was protected by immunity. However, the case sparked important discussions on universal jurisdiction in absentia through separate opinions by several judges. Judges Higgins, Kooijmans, and Buergenthal opined that "a State may choose to exercise a universal criminal jurisdiction in absentia [provided] certain safeguards are in place ... [i.e. no violation of immunity, jurisdiction only over 'most heinous' crimes, including war crimes and crimes against humanity]". In contrast, Judge Guillaume expressed a more restrictive view, arguing that customary international law recognises only one true case of universal jurisdiction - piracy. These views, while influential, were not part of the court's official judgment but were expressed in separate opinions, highlighting the ongoing debate over the scope and application of universal jurisdiction in international law.

Criminal Complaint against Donald Rumsfeld (2007) German Prosecutor-General

The case was brought before the German Prosecutor-General, targeting the former U.S. Secretary of Defense for alleged war crimes involving acts of torture during the Iraq War, specifically at Abu Ghraib prison in Iraq and Guantanamo Bay. The complaint accused Rumsfeld of responsibility for these acts, which were described as some of the most severe instances of torture within the U.S. prison system in Iraq. The prosecution was initiated in Germany, despite Rumsfeld neither being present in the country nor expected to be, raising questions about the application of universal jurisdiction over such crimes.

The German Prosecutor-General, however, decided not to proceed with the case and provided a detailed explanation for this decision. Under German law, prosecutors have the discretion to refuse to institute proceedings when the defendants and their acts lack any connection to Germany. The Prosecutor-General determined that the alleged wrongdoing had no link to Germany whatsoever, and thus, despite the technical ability to exercise universal jurisdiction over such war crimes, it was deemed more appropriate for the U.S. justice system to handle the matter. The Prosecutor-General emphasised that a "legitimizing domestic linkage" was necessary to justify German jurisdiction over crimes committed by foreigners against foreigners outside the country, a linkage that was absent in this case. This case highlights the permissive nature of universal jurisdiction, meaning it allows states to exercise jurisdiction over certain international crimes but does not mandate them to do so, although in some circumstances there may be an obligation to exercise such jurisdiction.

7.2.5.4 Torture

- Torture is defined in 1984 Convention Against Torture Art 1(1)
- For the purposes of international law, torture refers to state torture (i.e., only at the hands of a state official)
- It is widely accepted that torture is subject to universal jurisdiction

1984 Convention Against Torture Article 1

- 1. For the purposes of this Convention, the term "torture" means any act by which severe pain or suffering, whether physical or mental, is intentionally inflicted on a person for such purposes as obtaining from him or a third person information or a confession, punishing him for an act he or a third person has committed or is suspected of having committed, or intimidating or coercing him or a third person, or for any reason based on discrimination of any kind, when such pain or suffering is inflicted by or at the instigation of or with the consent or acquiescence of a public official or other person acting in an official capacity. It does not include pain or suffering arising only from, inherent in or incidental to lawful sanctions.
- 2. This article is without prejudice to any international instrument or national legislation which does or may contain provisions of wider application.

Pinochet (No 3) [1999] 2 All ER 97

Between 1973 and 1990, Pinochet oversaw a regime that violated the rights of people following a coup in 1973 that deposed the democratically-elected government. After leaving office, Pinochet in 1998 travelled to the UK for medical treatment, where he was made the subject of an extradition request by the Spanish government to face criminal charges in Spain. The UK courts had to determine if they had jurisdiction over Pinochet as a former head of state of Chile. In their judgement, the Law Lords noted that torture may attract universal jurisdiction. Lord Brown-Wilkinson stated that the "The jus cogens nature of the international crime of torture justifies states in taking universal jurisdiction over torture wherever committed. International law provides that offences jus cogens may

be punished by any state..."

 There have been attempts to invoke state torture against people who are absent from the forum exercising jurisdiction; different approaches are taken as to whether such jurisdiction can be maintained in absentia

National Commissioner of the South African Police Service v Southern African Human Rights Litigation Centre (2013) SA Const Court

This case involved an investigation into alleged acts of torture committed in Zimbabwe by officials of the Zimbabwe state. The South African Constitutional Court held that "it would appear that the predominant international position is that presence of a suspect is required at a more advanced stage of criminal proceedings...". Moreover, they held that "the exercise of universal jurisdiction for purposes of the investigation of an international crime committed outside our territory, may occur in the absence of a suspect without offending our Constitution or international law."

7.2.6 Prosecution and Extradition

- A question arises whether there is a duty or prosecute or extradite a defendant relation to these severe crimes (aut dedere aut judicare?)
- Generally, there is an obligation to do so under several treaties (and potentially at customary international law)
- The adoption of a permissive jurisdiction means that if a crime can be identified, a state can assert jurisdiction over the offender
- There are some crimes subject to universal jurisdiction, which are subject to a mandatory requirement to exercise jurisdiction
 - If a state has custody of such a defendant, they must either prosecute them, or extradite them to a state where they will face prosecution (this is found arguably at customary international law, and is certainly a matter of treaty law in relation to a number of offences)

Belgium v Senegal (2012) ICJ

Belgium accused Senegal of violating the *Convention Against Torture* by failing to prosecute or extradite the former President of Chad, who was accused of torture and present in Senegal. Senegal, as a party to the Convention, was bound by its obligations, particularly under Article 7, which mandates that states either prosecute or extradite individuals accused of torture to prevent them from escaping the consequences of their actions. Belgium, despite having no direct involvement in the matter, argued that Senegal's inaction contravened the Convention, and the Court agreed, emphasising that Article 7 serves as a critical mechanism to ensure suspects face accountability for their criminal responsibility.

The Court highlighted that Senegal was obligated to submit the case to its competent

authorities for prosecution within a reasonable time, or, if an extradition request was made, it could fulfill its obligation by extraditing the accused. However, Senegal failed to take either action in a timely manner, thereby breaching its duties under the Convention. This case underscores the importance of Article 7 as a core provision of the *Convention Against Torture*, designed to prevent impunity by ensuring that states actively address allegations of torture through prosecution or extradition.

7.3 Jurisdiction of the ICJ

- The *Rome Statute of the International Criminal Court* provides for the broad jurisdiction of the ICC, and has been broadly adopted (but not universally adopted)
- The ICJ maintains subject matter jurisdiction over genocide, war crimes, crimes against humanity, and aggression (including the planning of, preparation, initiation or execution of an act of aggression)
- Personal jurisdiction, governed by Rome Statute of the International Criminal Court Article
 12, delineates which offenders can be subjected to the ICJ's jurisdiction; it has two general criteria:
 - The crime is committed in the territory of a party to the Statute, or by a national or a party (i.e., the offender is a national of the state)
 - The state is a party to the Rome Statute of the International Criminal Court

Rome Statute of the International Criminal Court Article 12

Preconditions to the exercise of jurisdiction

- 1. A State which becomes a Party to this Statute thereby accepts the jurisdiction of the Court with respect to the crimes referred to in article 5.
- 2. In the case of article 13, paragraph (a) or (c), the Court may exercise its jurisdiction if one or more of the following States are Parties to this Statute or have accepted the jurisdiction of the Court in accordance with paragraph 3:
 - (a) The State on the territory of which the conduct in question occurred or, if the crime was committed on board a vessel or aircraft, the State of registration of that vessel or aircraft;
 - (b) The State of which the person accused of the crime is a national.
- 3. If the acceptance of a State which is not a Party to this Statute is required under paragraph 2, that State may, by declaration lodged with the Registrar, accept the exercise of jurisdiction by the Court with respect to the crime in question. The accepting State shall cooperate with the Court without any delay or exception in accordance with Part 9.
- Complementarity under *Rome Statute of the International Criminal Court* Art 17 refers to the notion that if a state cannot prosecute a crime, the ICC has jurisdiction to do so

• This echoes *A-G v Eichmann* (Dist Ct. of Jerusalem, 1961), and supports the notion that whilst states have primary responsibility for enforcing criminal law, the ICC is a fallback; i.e., it complements jurisdiction, rather than replacing it

Rome Statute of the International Criminal Court Article 17

Issues of admissibility

- 1. Having regard to paragraph 10 of the Preamble and article 1, the Court shall determine that a case is inadmissible where:
 - (a) The case is being investigated or prosecuted by a State which has jurisdiction over it, unless the State is unwilling or unable genuinely to carry out the investigation or prosecution;
 - (b) The case has been investigated by a State which has jurisdiction over it and the State has decided not to prosecute the person concerned, unless the decision resulted from the unwillingness or inability of the State genuinely to prosecute;
 - (c) The person concerned has already been tried for conduct which is the subject of the complaint, and a trial by the Court is not permitted under article 20, paragraph 3;
 - (d) The case is not of sufficient gravity to justify further action by the Court.
- 2. In order to determine unwillingness in a particular case, the Court shall consider, having regard to the principles of due process recognized by international law, whether one or more of the following exist, as applicable:
 - (a) The proceedings were or are being undertaken or the national decision was made for the purpose of shielding the person concerned from criminal responsibility for crimes within the jurisdiction of the Court referred to in article 5;
 - (b) There has been an unjustified delay in the proceedings which in the circumstances is inconsistent with an intent to bring the person concerned to justice;
 - (c) The proceedings were not or are not being conducted independently or impartially, and they were or are being conducted in a manner which, in the circumstances, is inconsistent with an intent to bring the person concerned to justice.
- 3. In order to determine inability in a particular case, the Court shall consider whether, due to a total or substantial collapse or unavailability of its national judicial system, the State is unable to obtain the accused or the necessary evidence and testimony or otherwise unable to carry out its proceedings.
- Under *Rome Statute of the International Criminal Court* Art 25, individuals can be held responsible and liable for the commission of crimes

Rome Statute of the International Criminal Court Article 25

Individual Criminal Responsibility

- 1. The Court shall have jurisdiction over natural persons pursuant to this Statute.
- 2. A person who commits a crime within the jurisdiction of the Court shall be individually responsible and liable for punishment in accordance with this Statute.
- 3. In accordance with this Statute, a person shall be criminally responsible and liable for punishment for a crime within the jurisdiction of the Court if that person:
 - (a) Commits such a crime, whether as an individual, jointly with another or through another person, regardless of whether that other person is criminally responsible;
 - (b) Orders, solicits or induces the commission of such a crime which in fact occurs or is attempted;
 - (c) For the purpose of facilitating the commission of such a crime, aids, abets or otherwise assists in its commission or its attempted commission, including providing the means for its commission;
 - (d) In any other way contributes to the commission or attempted commission of such a crime by a group of persons acting with a common purpose. Such contribution shall be intentional and shall either:
 - (i) Be made with the aim of furthering the criminal activity or criminal purpose of the group, where such activity or purpose involves the commission of a crime within the jurisdiction of the Court; or
 - (ii) Be made in the knowledge of the intention of the group to commit the crime;
 - (e) In respect of the crime of genocide, directly and publicly incites others to commit genocide;
 - (f) Attempts to commit such a crime by taking action that commences its execution by means of a substantial step, but the crime does not occur because of circumstances independent of the person's intentions. However, a person who abandons the effort to commit the crime or otherwise prevents the completion of the crime shall not be liable for punishment under this Statute for the attempt to commit that crime if that person completely and voluntarily gave up the criminal purpose.
- 3 *bis.* In respect of the crime of aggression, the provisions of this article shall apply only to persons in a position effectively to exercise control over or to direct the political or military action of a State.
 - 4. No provision in this Statute relating to individual criminal responsibility shall affect the responsibility of States under international law.
- Under *Rome Statute of the International Criminal Court* Art 27, the official capacity of a person shall not be a defence to the commission of a crime under the jurisdiction of the ICC (i.e., a cleaner and a head of state are equally liable for the commission of a crime)

If the ICC has assumed jurisdiction over an individual who has committed a crime in a
territory party to the Rome Statute, or of a national of a state party to the Rome Statute,
immunity cannot be raised; individuals will be treated as the same, and cannot invoke
their official status to escape individual criminal responsibility

Rome Statute of the International Criminal Court Article 27

Irrelevance of official capacity

- 1. This Statute shall apply equally to all persons without any distinction based on official capacity. In particular, official capacity as a Head of State or Government, a member of a Government or parliament, an elected representative or a government official shall in no case exempt a person from criminal responsibility under this Statute, nor shall it, in and of itself, constitute a ground for reduction of sentence.
- 2. Immunities or special procedural rules which may attach to the official capacity of a person, whether under national or international law, shall not bar the Court from exercising its jurisdiction over such a person.

7.3.1 Relevance of Illegally Obtained Custody

- Sometimes, an individual may have been brought into custody in breach of the law of one or more jurisdictions
- There is a divergence of views as to whether illegally obtained custody renders the exercise of criminal jurisdiction by a domestic or international criminal court unlawful; there is moreover no consensus on this point, as various courts have taken different approaches

7.3.1.1 Domestic Courts

- A-G v Eichmann (Dist Ct of Jerusalem, 1961)
 - This case is a common law authority for the proposition that the illegality of arrest irrelevant, and in any event Argentina waived all claims to assert jurisdiction over Eichmann
 - Whilst this ordinarily would have comprised a breach of Argentine sovereignty, it
 was not an impediment to the Court exercising jurisdiction, as Argentina had later
 waived any claim concerning the violation of its sovereignty
- State v Ebrahim (SupCTSA, 1992)
 - In this case, a member of the ANC was abducted by South Africa from Swaziland
 - The SA court was held to have no jurisdiction over this member, serving to protect the rights of the individual and also to respect state sovereignty
- Moti v R (2011, HCA)
 - In this case, the HCA permanently stayed the prosecution of the former Attorney-General of the Solomon Islands, who had been removed unlawfully from Solomon Islands to Australia to face charges for child sex offences

- The former Attorney-General successfully raised illegality obtained custody
- He was now an Australian citizen, but had conducted sex offences in Vanuatu
- He had been removed to Australia in 2007, but this removal was unlawful under Solomon Islands law
- The HCA held that after stating that the end of criminal prosecution does not justify securing the presence of the accused, his prosecution had to be permanently stayed

7.3.1.2 International Criminal Courts

- 'Universally condemned offences are a matter of concern to the international community as a whole. ... There is a legitimate expectation that those accused of these crimes will be brought to justice swiftly. Accountability for these crimes is a necessary condition for the achievement of international justice, which plays a critical role in the reconciliation and rebuilding based on the rule of law of countries and societies torn apart by international and internecine conflicts ... This legitimate expectation needs to be weighed against the principle of State sovereignty and the fundamental human rights of the accused.' Prosecutor v Nikolić (CITY Appeals Chamber, 2003)
 - This case involved unlawful prosecution in Bosnia, as the ICC had custody of an offender that was acquired unlawfully
 - The defendant challenged the ICC by claiming that his unlawful detention made the proceedings unlawful
 - This case holds that for more serious charges, the more likely that any irregularities in jurisdiction (in terms of custody of the offender) would be overlooked, in pursuit of justice

Topic 8

Immunity from Jurisdiction I

- Whilst states enjoy complete and exclusive jurisdiction within their own territories, foreign states (including foreign state officials and diplomatic representatives) enjoy a range of immunities from the jurisdiction in the forum
- The foreign state and diplomatic immunities operate as a procedural bar to the exercise of jurisdiction (i.e., there is still jurisdiction, but it cannot be imposed)
 - This immunity can be waived by the foreign agent or their state
- Foreign state immunity is less extensive than it once was, with the predominant mode of
 operation having shifted to 'restrictive immunity', where states can be sued in relation to
 commercial transactions (although diplomatic immunity remains largely unchanged over
 the years)

8.1 Foreign State Immunity

- The principle of foreign state immunity is that one sovereign state (the forum state) may not adjudicate on the conduct of a foreign state (e.g., in an Australian court, foreign states would have immunity from proceedings)
 - It is no longer the case that foreign states enjoy complete immunity; there are now a
 variety of circumstances in which a foreign state may be subject to the jurisdiction of
 a court that is not protected by an immunity
- Subject to certain exceptions, the foreign state and its officials enjoy procedural immunity from criminal and civil proceedings in the forum state (i.e., foreign states, their officials and representatives (e.g., head of state, head of government, ministers, etc.) can enjoy immunity from proceedings within the forum), following Lord Brown-Wilkinson in *Pinochet (No 3)* [1999] 2 All ER 97 (see Page 112)
- This is derived from the idea that all sovereign states are equal, and that one state does not have power over another (par in partem non habet imperium)
 - This has been held to be "one of the fundamental principles of the international legal order" in *Jurisdictional Immunities Case* [2012] ICJ Rep 99
- There are two approaches/theories to foreign state immunity: 'absolute immunity' and
 'restrictive immunity'

8.1.1 Absolute Immunity Principle

- The absolute immunity principle holds that state are completely immune from the jurisdiction of another state; i.e., they are immune from any and all proceedings in the forum state
- · Whilst this has now been eroded, it was the classical position
 - "'[T]he perfect equality and absolute independence of sovereigns' mean no state can be made subject to the jurisdiction of another against its will" - The Schooner Exchange v McFaddon (US Supreme Court, 1812)
 - In the modern day, only a few developing states tend to adhere to this absolute view of state immunity

The Schooner Exchange v McFaddon (US Supreme Court, 1812)

In a notable maritime case, a private vessel that sailed from Baltimore to Spain was seized by Napoleon en route and pressed into service for the French navy. The vessel later docked in Philadelphia, where its original American owners sought to reclaim it. The U.S. Supreme Court, in addressing the case, articulated the principle of absolute immunity for foreign naval vessels. The Court ruled that, regardless of the original ownership, the vessel was now a French naval ship and thus entitled to immunity, depriving the plaintiffs of jurisdiction to pursue their claim. This principle of sovereign immunity for naval vessels remains applicable today, shielding such ships from legal actions in foreign courts.

- In recent years, China abandoned this principle in favour of the restrictive immunity principle by adopting the *Foreign States Immunity Law 2024*, which largely follows the *UN Convention on Jurisdictional Immunities of States and Their Property* (this is noteworthy as the Convention has not yet entered into force, but is still influential as a statement of general principle)
 - Prior to this, China's adherence to the absolute immunity principle was evident in DRC v F C Hemisphere [2011] HKFCA 43, which applied absolute immunity in commercial proceedings against the government of the Democratic Republic of Congo

8.1.2 Restrictive Immunity Principle

- The restrictive immunity principle holds that foreign states are afforded immunity only with respect to acts of a sovereign or governmental character (*acta jure imperii*), not for acts of a commercial character (*acta jure gestionis*) (or any other non-sovereign acts); this is the prevailing approach across the world
- The restrictive immunity principle has been deemed necessary in the interests of justice to
 allow individuals to bring commercial transactions before the courts, thereby resolving the
 unfairness in commercial disputes between states and individuals as it does not impede the
 sovereignty of the foreign state
- This principle has been rationalised on the basis of not infringing on state sovereignty, as it only affects acts which have a commercial aspect to them and does not prevent states from undertaking sovereign acts

I Congresso del Partido (1983) HoL

A dispute arose when ships owned by the Cuban government failed to deliver a sugar cargo to Chile, prompting the cargo owners to initiate legal action against the ships and the Cuban government in the United Kingdom. The case stemmed from a contract between a Cuban state trading company and a Chilean company for the sale and delivery of sugar. Following a coup in Chile that brought Augusto Pinochet to power, Cuba directed its vessels to withhold the cargo, leading to proceedings in the UK courts. The Cuban government claimed sovereign immunity to shield itself from the lawsuit. However, the House of Lords, led by Lord Wilberforce and with the agreement of the other Law Lords, rejected this claim. The court applied a restrictive immunity approach, focusing on the nature of the act rather than its purpose. Despite the political motivation behind Cuba's decision to halt the sugar delivery, the transaction was deemed a commercial one, rooted in a trading relationship. Consequently, the court held that Cuba was not entitled to immunity, allowing the legal action to proceed against the Cuban vessel, and upholding the restrictive immunity principle.

- The majority of states have adopted the restrictive immunity principle
- This approach was moreover adopted in the 2004 Convention on Jurisdictional Immunities of States and Their Property
 - This Convention had, as of 14/04/2025, 24 parties, falling short of the 30 required for it to enter into force
 - As such, it acts as a partial codification of customary international law, especially in relation to the provisions around restrictive immunity
- In Australia, the relevant legislation is the *Foreign States Immunities Act 1985 (Cth)*, which was enacted following an ALRC inquiry on Foreign State Immunity in 1984
 - The ALRC stated that "In the interests of avoiding possible foreign relations problems, Australia should articulate to foreign states more precise rules governing their liability to the jurisdiction of the Australian courts."
 - This Act adopts the restrictive immunity principle in Australia

8.2 Foreign States Immunities Act 1985 (Cth)

8.2.1 Section 9 - Immunity from Jurisdiction

Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 9

General immunity from jurisdiction

Except as provided by or under this Act, a foreign State is immune from the jurisdiction of the courts of Australia in a proceeding.

• Under s 3(1), a proceeding means a civil proceeding, not a prosecution for an offence (i.e., not a criminal proceeding)

 It was held in PT Garuda v ACCC [2012] HCA 33 that a proceeding includes a proceeding commenced by the ACCC against a defendant seeking penalties for anti-competitive conduct

Pt Garuda v ACCC [2012] HCA 33

Garuda was an Indonesia state-owned airline. The ACCC brought proceedings against them, alleging that Garuda had entered into anti-competitive conduct in relation to air-freight services into Australia. The Court held that a proceeding under *Foreign States Immunities Act 1985 (Cth)* s 3 did extend to include not just proceedings in matters such as tort, but also proceedings brought by a regulator (including the ACCC seeking civil penalties for breaches of the Australian consumer law). From this case, it is established that there is a general immunity of foreign states from the jurisdiction of a state, subject to certain identified immunities.

- Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) ss 10-21 establish exceptions to the general immunity afforded under s 9
- The general immunity afforded under s 9 applies to foreign states (including organs of foreign states), and also 'separate entities' of foreign states (agencies/instrumentalities of state)
 - This applies to all parts of a foreign state's government and organs of that government
 - This serves to capture the case where states have established statutory organisations to carry out activities usually done by the government
- The classic example of this is foreign airlines, such as in the case of *PT Garuda v ACCC* [2011] FCFCA 52 (this is the Federal Court, not the High Court version on Page 48)
 - The key question in the case was whether Garuda was to be considered a separate entity of Indonesia?
 - * If it was, it was entitled to immunity unless there was an exception enlivened
 - Lander and Greenwood JJ held that "[t]he most relevant factor in determining whether a natural person or a corporation is an agency or instrumentality is whether that body is carrying out the foreign State's functions or purposes ... regard will be had to ownership, control, the functions which the natural person or corporation perform, the foreign State's purposes in supporting the [alleged separate entity] and the manner in which the [separate entity] conducts itself or its business."
 - * It is imperative to look at the ownership of the entity and the functions that are being executed, as well as the overriding functional purpose
 - * A company with some association with the State may fall under this, depending on how close it is to the state
- Under ss 30-32, unless there has been a waiver, only the commercial property of a state
 may be the subject of execution of a judgement (commercial property is property in use by
 the foreign state substantially for commercial purposes, and does not include diplomatic
 or military property)
 - Judgement cannot be enforced against sovereign property

Firebird Global Master Fund II Ltd v Nauru (2015) 326 ALR 396

Firebird sought to register and enforce in Australia a Japanese judgment obtained against Nauru, related to bearer bonds guaranteed by Nauru. The High Court of Australia determined that the commercial transaction exception applied, as the Japanese judgment pertained to a commercial transaction. However, Nauru's bank accounts in Australia were deemed immune from any legal process or order, as they were used exclusively for governmental purposes rather than commercial activities. Consequently, the cash held in these accounts could not be subjected to a garnishing order or used to enforce the judgment.

Although Firebird successfully had the foreign judgment recognised in Australia and overcame the initial hurdle of *Foreign States Immunities Act 1985 (Cth)* Section 9, which governs immunity from jurisdiction, the enforcement effort ultimately failed due to the absence of available assets. The immunity of Nauru's bank accounts, reserved for governmental functions, presented an insurmountable barrier, leaving Firebird unable to execute the judgment. This case highlights the challenges of enforcing foreign judgments against sovereign states when their assets are protected for non-commercial purposes.

8.2.2 Section 10 - Submission to Jurisdiction

Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 10

Submission to jurisdiction

- (1) A foreign State is not immune in a proceeding in which it has submitted to the jurisdiction in accordance with this section.
- (2) A foreign State may submit to the jurisdiction at any time, whether by agreement or otherwise, but a foreign State shall not be taken to have so submitted by reason only that it is a party to an agreement the proper law of which is the law of Australia.
- (3) A submission under subsection (2) may be subject to a specified limitation, condition or exclusion (whether in respect of remedies or otherwise).
- (4) Without limiting any other power of a court to dismiss, stay or otherwise decline to hear and determine a proceeding, the court may dismiss, stay or otherwise decline to hear and determine a proceeding if it is satisfied that, by reason of the nature of a limitation, condition or exclusion to which a submission is subject (not being a limitation, condition or exclusion in respect of remedies), it is appropriate to do so.
- (5) An agreement by a foreign State to waive its immunity under this Part has effect to waive that immunity and the waiver may not be withdrawn except in accordance with the terms of the agreement.
- (6) Subject to subsections (7), (8) and (9), a foreign State may submit to the jurisdiction in a proceeding by:
 - (a) instituting the proceeding; or

- (b) intervening in, or taking a step as a party to, the proceeding.
- (7) A foreign State shall not be taken to have submitted to the jurisdiction in a proceeding by reason only that:
 - (a) it has made an application for costs; or
 - (b) it has intervened, or has taken a step, in the proceeding for the purpose or in the course of asserting immunity.
- (8) Where the foreign State is not a party to a proceeding, it shall not be taken to have submitted to the jurisdiction by reason only that it has intervened in the proceeding for the purpose or in the course of asserting an interest in property involved in or affected by the proceeding.
- (9) Where:
 - (a) the intervention or step was taken by a person who did not know and could not reasonably have been expected to know of the immunity; and
 - (b) the immunity is asserted without unreasonable delay;
 - the foreign State shall not be taken to have submitted to the jurisdiction in the proceeding by reason only of that intervention or step.
- (10) Where a foreign State has submitted to the jurisdiction in a proceeding, then, subject to the operation of subsection (3), it is not immune in relation to a claim made in the proceeding by some other party against it (whether by way of set off, counter claim or otherwise), being a claim that arises out of and relates to the transactions or events to which the proceeding relates.
- (11) In addition to any other person who has authority to submit, on behalf of a foreign State, to the jurisdiction:
 - (a) the person for the time being performing the functions of the head of the State's diplomatic mission in Australia has that authority; and
 - (b) a person who has entered into a contract on behalf of and with the authority of the State has authority to submit in that contract, on behalf of the State, to the jurisdiction in respect of a proceeding arising out of the contract.
- s 10 provides an exception to immunity where the foreign state has expressly submitted to the jurisdiction of the forum state (i.e., they've waived their immunity at their will)
- At times, foreign states will appeal in proceedings, but will be appearing only to contest
 jurisdiction; at times, they may just submit to the jurisdiction of the court

Kingdom of Spain v Infrastructure Services Luxembourg S.à.r.l. [2023] HCA 11

A company was awarded €101 million against Spain in an arbitration under the *ICSID* Convention and sought to enforce this award in Australia under the *International Arbitration* Act 1974 (Cth). The *ICSID Convention* allows enforcement of arbitral awards in any member

state's jurisdiction, including Australia. Spain invoked immunity under the Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) to block the enforcement. The High Court of Australia (HCA) considered Article 54 of the *ICSID Convention*, which requires member states to recognize ICSID awards as binding and enforce them as if they were final domestic court judgments. The HCA interpreted section 10(2) of the Foreign States Immunities Act in accordance with international law, which mandates that any waiver of immunity must be express.

The court held that such a waiver must be explicitly derived from the terms of international agreements, either as an express provision or as a term implied by necessity, as noted in paragraph [25] of the judgment. The HCA determined that Spain's agreement to Articles 53, 54, and 55 of the *ICSID Convention* constituted an express waiver of immunity from Australian court jurisdiction for the recognition and enforcement of the award, but not for its execution against Spanish sovereign property. As a result, the company could proceed with recognition and enforcement proceedings, but Spain's immunity from execution rendered the victory pyrrhic, as the award could not be executed against Spanish assets.

Republic of India v CCDM Holdings, LLC [2025] FCAFC 2

A US\$111 million arbitral award was issued in favour of Mauritian investors in an Indian company under the India-Mauritius Bilateral Investment Treaty (BIT). The investors sought to enforce this award in Australia, relying on the 1958 New York Convention on the Recognition and Enforcement of Arbitration Awards, to which both Australia and India are parties. India had made a reservation to the Convention, limiting its application to disputes arising from legal relationships, contractual or otherwise, deemed commercial under Indian law. The investors initiated proceedings in Australia against India to enforce the award.

The Federal Court of Australia (FCA) overturned the decision of Jackman J, ruling that India's reservation applied reciprocally, affecting the obligations of both Australia and India. The FCA held that Australia was not obligated to enforce awards related to disputes not considered commercial under Indian law. The court found that the award did not stem from a commercial legal relationship, as the BIT created a relationship under public international law, and the underlying dispute arose from the cancellation of a contract on public interest grounds.

Furthermore, the FCA determined that India's ratification of the New York Convention did not constitute a waiver of foreign state immunity under the "unmistakable" test established in *Kingdom of Spain v Infrastructure Services Luxembourg S.d.r.l.* [2023] HCA 11, which requires a clear and explicit waiver of immunity. Consequently, the enforcement proceedings against India could not proceed in Australia.

- This Act comprehensively examines immunity issues, and there are no implied exceptions to immunity, as seen in the following cases:
 - Zhang v Zemin [2010] NSWCA 255, which was a damages proceeding against Chinese officials regarding torture

- * This case held that there was no implied exception to foreign state immunity based on the *jus cogens* prohibition of torture
- * Spigelman J stated that there was no additional justification for exceptions, even in such a grave case
- Young v A-G (NZ) and Ministry of Defence (UK) [2019] NZSC 23, which was a claim in tort in respect of sexual assault during a posting of the Royal Navy in the UK
 - * In this case, there was no exception to immunity arising from the duty of a state to provide the human right of a right to an effective remedy
 - * The plaintiff claimed to be the victim of assault whilst in the UK, working for the Royal Navy

8.2.3 Section 11 - Commercial Transactions

Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 11

Commercial Transactions

- (1) A foreign State is not immune in a proceeding in so far as the proceeding concerns a commercial transaction.
- (2) Subsection (1) does not apply:
 - (a) if all the parties to the proceeding:
 - (i) are foreign States or are the Commonwealth and one or more foreign States; or
 - (ii) have otherwise agreed in writing; or
 - (b) in so far as the proceeding concerns a payment in respect of a grant, a scholarship, a pension or a payment of a like kind.
- (3) In this section, *commercial transaction* means a commercial, trading, business, professional or industrial or like transaction into which the foreign State has entered or a like activity in which the State has engaged and, without limiting the generality of the foregoing, includes:
 - (a) a contract for the supply of goods or services;
 - (b) an agreement for a loan or some other transaction for or in respect of the provision of finance; and
 - (c) a guarantee or indemnity in respect of a financial obligation; but does not include a contract of employment or a bill of exchange.
- This section states that a foreign sate is not immune in a proceeding which concerns a commercial transaction, clearly expressing the restrictive immunity principle
- This is the most important section of the Act, and is invoked the most frequently
- 'The definition of "commercial transaction" fixes upon entry and engagement by the foreign State. It does not have any limiting terms which would restrict the immunity...to a proceeding instituted against the foreign State by a party to the commercial transaction

in question ... The arrangements and understandings into which the ACCC alleges Garuda entered were dealings of a commercial, trading and business character, respecting the conduct of airline freight services to Australia.', following *PT Garuda v ACCC* [2012] HCA 33 per French CJ, Gummow, Hayne and Crennan JJ

- In this case, it was held that for proceedings to continue, there needed to be established some exception to immunity
- In this case, the Court held that the commercial transaction exception applies, as the whole character of the proceedings at hand related to commercial dealings, even though the commercial dealings were not between the ACCC and Garuda
- Thus, it is irrelevant if the parties were directly engaged in a commercial relationship; the exception applies if the underlying character of the case is commercial in nature

Australian International Islamic College Board Inc v Saudi Arabia [2013] QCA 129

The government of Saudi Arabia promised to cover the costs of educating students at a college in Australia, a commitment that constituted a commercial transaction for the recipients of these scholarships. However, the Saudi government failed to fulfill this financial obligation. When legal proceedings were initiated in Queensland, Saudi Arabia invoked sovereign immunity to avoid liability. In the resulting case, Holmes JA delivered the leading judgment, with the other justices in agreement, characterising the relationship as one centred on the payment for educational services. The court determined that this was indeed a commercial transaction, and thus, section 11 of the relevant legislation applied, rendering the immunity claim inapplicable.

Holmes JA further elaborated on the rationale behind the commercial transactions exception, providing clarity on its purpose and justification. As stated in the judgment: "The relevant exception... appears to have two main foundations: (a) It is necessary in the interest of justice to individuals having such transactions with states to allow them to bring such transactions before the courts. (b) To require a state to answer a claim based upon such transactions does not involve a challenge to or inquiry into any act of sovereignty or governmental act of that state. It is ... neither a threat to the dignity of that state, nor any interference with its sovereign functions." (Holmes JA at [24]). This reasoning underscores the balance between ensuring justice for individuals and respecting state sovereignty, emphasising that commercial dealings do not infringe upon a state's governmental authority or dignity.

8.2.4 Section 12 - Employment Proceedings

Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 12

Contracts of employment

- (1) A foreign State, as employer, is not immune in a proceeding in so far as the proceeding concerns the employment of a person under a contract of employment that was made in Australia or was to be performed wholly or partly in Australia.
- (2) A reference in subsection (1) to a proceeding includes a reference to a proceeding

concerning

- (a) a right or obligation conferred or imposed by a law of Australia on a person as employer or employee; or
- (b) a payment the entitlement to which arises under a contract of employment.
- (3) Where, at the time when the contract of employment was made, the person employed was:
 - (a) a national of the foreign State but not a permanent resident of Australia; or
 - (b) an habitual resident of the foreign State;

subsection (1) does not apply.

- (4) Subsection (1) does not apply where:
 - (a) an inconsistent provision is included in the contract of employment; and
 - (b) a law of Australia does not avoid the operation of, or prohibit or render unlawful the inclusion of, the provision.
- (5) Subsection (1) does not apply in relation to the employment of:
 - (a) a member of the diplomatic staff of a mission as defined by the Vienna Convention on Diplomatic Relations, being the Convention the English text of which is set out in the Schedule to the Diplomatic Privileges and Immunities Act 1967; or
 - (b) a consular officer as defined by the Vienna Convention on Consular Relations, being the Convention the English text of which is set out in the Schedule to the Consular Privileges and Immunities Act 1972.
- (6) Subsection (1) does not apply in relation to the employment of:
 - (a) a member of the administrative and technical staff of a mission as defined by the Convention referred to in paragraph (5)(a); or
 - (b) a consular employee as defined by the Convention referred to in paragraph (5)(b);

unless the member or employee was, at the time when the contract of employment was made, a permanent resident of Australia.

- (7) In this section, permanent resident of Australia means:
 - (a) an Australian citizen; or
 - (b) a person resident in Australia whose continued presence in Australia is not subject to a limitation as to time imposed by or under a law of Australia.
- This section states that a foreign state is not immune in a proceeding which concerns the employment of a person under a contract of employment made in Australia or performed in Australia (i.e., if you are a foreign state and employ Australians, you cannot claim immunity in this area)

8.2.5 Section 13 - Injury and Damage to Property

Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 13

Personal injury and damage to property

A foreign State is not immune in a proceeding in so far as the proceeding concerns:

- (a) the death of, or personal injury to, a person; or
- (b) loss of or damage to tangible property;

caused by an act or omission done or omitted to be done in Australia.

• This section states that a foreign state is not immune in a proceeding concerning death, personal injury, or loss or damage of tangible property, caused by an act or omission in Australia (the 'local torts' exception)

Tokic v Government of Yugoslavia (1999) NSWSC Unreported

The plaintiff sustained injuries after being struck by a bullet fired from within the Yugoslav Consulate in Sydney during a protest outside the building. In subsequent civil proceedings seeking damages for personal injury, the Supreme Court of New South Wales ruled that the Government of Yugoslavia could not claim immunity. The court determined that the case fell under Section 13, which applies to proceedings concerning personal injury caused by an act committed in Australia. The evidence established that the plaintiff was shot as a result of a weapon being fired from the consulate, leading the judge to award \$50,000 in damages in favour of the plaintiff against the foreign state of Yugoslavia.

Despite the court's ruling, the victory was pyrrhic, as there was no commercial property available against which the judgement could be enforced. It is possible that the Commonwealth made an *ex-gratia* payment to the plaintiff, though this is secondary to the case's significance. This case serves as a clear illustration of the local tort exception under Australian law, which encompasses both personal injury and property damage, demonstrating how such exceptions apply when a foreign state's actions cause harm within Australia.

8.2.6 Section 14 - Ownership, Possession and Use of Property

Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 14

Ownership, possession and use of property etc.

- 1. A foreign State is not immune in a proceeding in so far as the proceeding concerns:
 - (a) an interest of the State in, or the possession or use by the State of, immovable property in Australia; or
 - (b) an obligation of the State that arises out of its interest in, or its possession or use of, property of that kind.

- 2. A foreign State is not immune in a proceeding in so far as the proceeding concerns an interest of the State in property that arose by way of gift made in Australia or by succession.
- 3. A foreign State is not immune in a proceeding in so far as the proceeding concerns:
 - (a) bankruptcy, insolvency or the winding up of a body corporate; or
 - (b) the administration of a trust, of the estate of a deceased person or of the estate of a person of unsound mind.
- This section states that a foreign state is not immune in a proceeding concerning:
 - 1. The interest in or possession or use by a state of immovable property
 - 2. The interest in property that arose by way of gift or by succession
 - 3. Bankruptcy, insolvency or winding up of a body corporate, or the administration of a trust, the estate of a deceased person or estate of a person of unsound mind

8.2.7 Section 15 - Intellectual Property

Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 15

Copyright, patents, trade marks etc.

- (1) A foreign State is not immune in a proceeding in so far as the proceeding concerns:
 - (a) the ownership of a copyright or the ownership, or the registration or protection in Australia, of an invention, a design or a trade mark;
 - (b) an alleged infringement by the foreign State in Australia of copyright, a patent for an invention, a registered trade mark or a registered design; or
 - (c) the use in Australia of a trade name or a business name.
- (2) Subsection (1) does not apply in relation to the importation into Australia, or the use in Australia, of property otherwise than in the course of or for the purposes of a commercial transaction as defined by subsection 11(3).
- This section states that a foreign state is not immune in a proceeding concerning copyright, invention, design or trademark in Australia, or use in Australia of a trade name or business name

8.2.8 Section 16 - Membership of Bodies Corporate

Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 16

Membership of bodies corporate etc.

1. A foreign State is not immune in a proceeding in so far as the proceeding concerns its membership, or a right or obligation that relates to its membership, of a body corporate, an unincorporated body or a partnership that:

- (a) has a member that is not a foreign State or the Commonwealth; and
- (b) is incorporated or has been established under the law of Australia or is controlled from, or has its principal place of business in, Australia;

being a proceeding arising between the foreign State and the body or other members of the body or between the foreign State and one or more of the other partners.

- 2. Where a provision included in:
 - (a) the constitution or other instrument establishing or regulating the body or partnership; or
 - (b) an agreement between the parties to the proceeding;

is inconsistent with subsection (1), that subsection has effect subject to that provision.

• This section states that a foreign state is not immune in certain proceedings concerning its membership of a body corporate or unincorporated body or partnership established under the law of Australia or operating in Australia

8.2.9 Section 17 - Arbitrations

Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 17

Arbitrations

- 1. Where a foreign State is a party to an agreement to submit a dispute to arbitration, then, subject to any inconsistent provision in the agreement, the foreign State is not immune in a proceeding for the exercise of the supervisory jurisdiction of a court in respect of the arbitration, including a proceeding:
 - (a) by way of a case stated for the opinion of a court;
 - (b) to determine a question as to the validity or operation of the agreement or as to the arbitration procedure; or
 - (c) to set aside the award.

2. Where:

- (a) part from the operation of subparagraph 11(2)(a)(ii), subsection 12(4) or subsection 16(2), a foreign State would not be immune in a proceeding concerning a transaction or event; and
- (b) the foreign State is a party to an agreement to submit to arbitration a dispute about the transaction or event;

then, subject to any inconsistent provision in the agreement, the foreign State is not immune in a proceeding concerning the recognition as binding for any purpose, or for the enforcement, of an award made pursuant to the arbitration, wherever the award was made.

- 3. Subsection (1) does not apply where the only parties to the agreement are any 2 or more of the following:
 - (a) a foreign State;
 - (b) the Commonwealth;
 - (c) an organisation the members of which are only foreign States or the Commonwealth and one or more foreign States.
- This section states that a foreign state is not immune in proceedings concerning an arbitration agreement to which foreign state is a party

8.2.10 Section 18 - Actions in rem

Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 18

Actions in rem

- (1) A foreign State is not immune in a proceeding commenced as an action in rem against a ship concerning a claim in connection with the ship if, at the time when the cause of action arose, the ship was in use for commercial purposes.
- (2) A foreign State is not immune in a proceeding commenced as an action in rem against a ship concerning a claim against another ship if:
 - (a) at the time when the proceeding was instituted, the ship that is the subject of the action in rem was in use for commercial purposes; and
 - (b) at the time when the cause of action arose, the other ship was in use for commercial purposes.
- (3) A foreign State is not immune in a proceeding commenced as an action in rem against cargo that was, at the time when the cause of action arose, a commercial cargo.
- (4) The preceding provisions of this section do not apply in relation to the arrest, detention or sale of a ship or cargo.
- (5) A reference in this section to a ship in use for commercial purposes or to a commercial cargo is a reference to a ship or a cargo that is commercial property as defined by subsection 32(3).
- This section states that a foreign state is not immune in proceedings concerning actions in rem against a ship in connection with a ship in use for commercial purposes

8.2.11 Section 19 - Bills of Exchange

Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 19

Bills of exchange

Where:

- (a) a *bill of exchange* has been drawn, made, issued or indorsed by a foreign State in connection with a transaction or event; and
- (b) the foreign State would not be immune in a proceeding in so far as the proceeding concerns the transaction or event;

the foreign State is not immune in a proceeding in so far as the proceeding concerns the bill of exchange.

8.2.12 Section 20 - Taxes

Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) Section 20

Taxes

A foreign State is not immune in a proceeding in so far as the proceeding concerns an obligation imposed on it by or under a provision of a law of Australia with respect to taxation, being a provision that is prescribed, or is included in a class of provisions that is prescribed, for the purposes of this section.

• This section states that a foreign state is not immune in a proceeding concerning a taxation obligation under Australian law (i.e., a foreign state cannot escape Australian tax law)

8.3 Immunity of Foreign State Officials

- Heads of state, government and foreign affairs ministers are generally afforded immunity, alongside other officials
- This immunity is not for their individual benefit, but for the benefit of the state that they are employed by or represent
- Generally, the immunity of individuals as representatives of a state is confined to acts performed in their official capacity (immunity *ratione materiae*)
 - This refers to immunity by reference to whether or not an individual is acting in an official capacity
 - Officials of a state generally enjoy functional immunity in relation to their functional acts, as it protects the state
- However, some high-ranking individuals are entitled to immunity by virtue of their
 position (immunity ratione personae), on the rationale that such immunity is essential for
 the performance of their official functions representing a state

Unlike immunity ratione materiae, this immunity is far broader, and covers these
individuals for all acts that they commit, on the basis that it is essential for the
performance of their official functions

8.3.1 Incumbent Heads of State

8.3.1.1 Civil Proceedings in Representative Capacity

- The ordinary principles of state immunity apply (e.g., *Foreign States Immunities Act 1985* (Cth) s 3(3)(b), which holds that a reference to a foreign state includes a reference to the head of that state in their public capacity)
- The Australian principle, as stated in *Foreign States Immunities Act 1985 (Cth)*, mostly reflects international law

8.3.1.2 Civil or Criminal Proceedings in Personal Capacity

- If they are acting in their personal capacity, the foreign head of state is entitled to the same immunity as the head of a diplomatic mission, which grants them complete personal immunity for criminal proceedings, and the same immunity as heads of diplomatic missions for civil proceedings, as outlined in *Foreign States Immunities Act 1985 (Cth)* s 36
- It is not possible to have a criminal proceeding against a foreign head of state at all, and there are only very limited circumstances in which a civil proceeding can be brought against them

Thor Shipping A/S v 'Al Duhail' (2008) 252 ALR 20

The Amir purchased a fishing boat constructed in New Zealand and entered into a contract with a company to transport the vessel from New Zealand to an island destination. However, the company was not paid for the carriage of the vessel. Instead of being transported by a cargo vessel, the fishing boat travelled under its own power to Queensland, Australia, where it was arrested by the company, which initiated legal proceedings against the vessel in an Australian court.

The Amir claimed immunity from the proceedings, and the Federal Court of Australia (FCA) agreed. The court determined that the Amir was acting in a private, personal capacity, not as the head of state, when he purchased and arranged for the transport of the boat. Consequently, the FCA ruled that the Amir possessed the same immunity as the head of a diplomatic mission, and none of the relevant exceptions to immunity applied. As a result, the court ordered the release of the vessel.

Tatchell v Mugabe (2004) 136 ILR 572

This case was heard in the Bow Street Magistrates' Court.

As a matter of customary international law, common law, and the State Immunity Act 1978 (UK), President Mugabe of Zimbabwe was entitled to immunity in the United Kingdom and could not be arrested or detained, including in relation to allegations of torture. At the time the proceedings were brought against him, he was the serving

President of Zimbabwe. The UK court applied the State Immunity Act, which is similar to equivalent legislation in Australia, and ruled that, as a serving head of state, President Mugabe enjoyed complete immunity from legal proceedings in the UK.

Gaddafi (2001) 125 ILR 490

This case was heard in the Court of Cassation in France.

As the incumbent head of state of Libya, Colonel Gaddafi was entitled to immunity from French criminal jurisdiction in relation to a terrorist bombing of a French airliner. When criminal proceedings were initiated by the victims of the terrorist bombing, the French court held that, as a serving head of state, Colonel Gaddafi enjoyed immunity *ratione personae*. Consequently, the court ruled that the case could not proceed against him due to his immunity.

- Jus cogens norms do not override immunity
- The *Jurisdictional Immunities of State Case* (ICJ) held that immunity rules and *jus cogens* exist on two different levels, and that there is no direct conflict between them
- There are certain rules around immunity that go to core questions around sovereign
 equality such that if immunity disappears then judgement will be forthcoming, relatively
 quickly

8.3.2 Former Heads of State

- A lot of the protections afforded to incumbent individuals is lost when they give up office
- They no longer possess immunity *ratione personi* (this only exists when they are in office), but they still continue to possess immunity *ratione materiae* for acts performed in their official capacity when they were in office
- This position is reflected in Australia under *Foreign States Immunities Act 1985 (Cth)* s 36, which affords a broad immunity *ratione materiae*
- Following Harb v Prince Abdul Aziz Bin Fahd Bin Abdul Aziz [2015] EWCA Div 481, a former head of state or the estate of a deceased head of foreign state is not entitled to jurisdictional immunity in civil proceedings in respect of a private act done whilst in office as head of a foreign state

Harb v Prince Abdul Aziz Bin Fahd Bin Abdul Aziz [2015] EWCA Div 481

A former head of state, or the estate of a deceased head of state, does not enjoy jurisdictional immunity in civil proceedings for private acts committed while in office. This principle was central to a case involving the estate of a deceased Saudi king, who died while serving as head of state. The claimant, who had married a prince of the Saudi royal family before he ascended to the throne, entered into a contract with the king. Under this agreement, the king promised to provide financial support for her in London, including the purchase of two properties.

Following the king's death, the claimant initiated legal proceedings against his estate to enforce the contract. The estate argued that it was entitled to immunity from such claims. However, the Court of Appeal (CoA) ruled that no immunity applied. The court determined that the contract constituted a private act, distinct from official governmental functions. As a result, the estate could not claim immunity ratione personae, which applies to personal acts rather than official ones. Had the act been an official governmental function, the estate might have been protected by immunity for such acts. Consequently, the estate was subject to the proceedings and had no legal protection in this context.

- In respect of torture and other serious international crimes, former heads of foreign states have no immunity, even in respect of official acts
 - This is dependent on what the crime is
- R v Bow Street Stipendary Magistrate; ex parte Pinochet (No 3) [1992] 2 All ER 97 held that "international law could not without absurdity require criminal jurisdiction to he assumed and exercised where the Torture Convention conditions were satisfied and, at the same time, require immunity to be granted to those properly charged" (in respect of torture; this was explained by Lord Bingham in Jones v Saudi Arabia [2007] AC 270)
 - See the facts of *Pinochet* [1992] 2 All ER 97 on Page 112
 - This case held that as torture at the hands of a state are acts of an official character, which means that they would be protected by a functional immunity
- Draft Article 7 of the *ILC Draft Articles* (2022) considers what are *jus cogens* crimes, and whether immunity applies
- It was stated in *Pinochet* [1992] 2 All ER 97 that if a serious international crime was committed, then a former head of state, even if they committed that crime whilst in office as part of their official functions, would not be protected by an immunity

8.3.3 Incumbent Foreign Affairs Ministers

Arrest Warrant Case [2002] ICJ Rep 3

On 17 October 2000, the Democratic Republic of the Congo (DRC) initiated proceedings against Belgium at the International Court of Justice (ICJ) over an international arrest warrant issued by Belgium on 11 April 2000 against the DRC's acting Foreign Minister, Abdoulaye Yerodia Ndombasi, for alleged war crimes and crimes against humanity. The DRC argued that the warrant, circulated globally, violated customary international law granting immunity and inviolability to incumbent foreign ministers, and sought its cancellation and reparations. Belgium contested the Court's jurisdiction, mootness, and admissibility. On 14 February 2002, the ICJ rejected Belgium's objections, affirming its jurisdiction and ruling that incumbent foreign ministers enjoy full immunity from criminal jurisdiction under customary international law to ensure their effective functioning, regardless of whether acts were official or private, or committed before or during their tenure. The Court found that the issuance and circulation of the warrant violated Belgium's obligations to respect Yerodia's immunity, constituting a breach of

international law. While immunity does not equate to impunity, as criminal responsibility remains, the Court ordered Belgium to cancel the warrant and notify relevant authorities, deeming this and the judgment itself sufficient to address the DRC's moral injury.

The International Court of Justice (ICJ) ruled that the serving Minister for Foreign Affairs of the Democratic Republic of the Congo was immune from criminal proceedings in Belgium. The allegations against the Minister involved inciting war crimes and crimes against humanity in the Congo. Belgium sought to arrest him, but the Congo claimed immunity on behalf of its Foreign Affairs Minister. The ICJ's judgement addressed the broader issue of immunity for foreign state representatives, clarifying that such immunity is granted for the benefit of the state, not the individual. This immunity is essential to enable the Minister for Foreign Affairs to effectively perform their functions without interference.

The ruling further clarified several key aspects of this immunity. It does not distinguish between acts performed in an official or personal capacity, as the immunity is a broad personal one, eliminating the need to examine the nature of the acts. Additionally, it is irrelevant whether the Minister was in the arresting state on an official or private visit, and there is no exception for serious international crimes. However, immunity does not equate to impunity, as it is a procedural protection rather than a substantive one. The Minister could still face prosecution in their home state if the home state waives immunity, though this is highly unlikely. Furthermore, once the Minister is no longer in office, a more limited residual immunity applies, and there is no immunity before international criminal courts.

- Under this case, immunity is granted for the benefit of the state, not the individual
- Immunity is essential for the Minister for Foreign Affairs to effectively perform their functions without interference
- There was no distinction between acts performed in an official or personal capacity, as the immunity is a broad personal one
- It is not relevant whether the Minister is in the arresting state on an official or a private visit
- There is no exception in relation to serious international crimes (jus cogens)

8.3.4 The Troika

- The "Troika" refers to the Head of State, Head of Government, and Minister for Foreign Affairs
- The concept of the 'troika' has been codified in ILC Draft Article 3; this concept found its
 footing in state practice and in the Arrest Warrant Case [2002] ICJ Rep 3
- Immunity may be extended to the Minister for Defence, following Re Mofaz (UK, 2004)
 - In this case, there was an application made for an arrest warrant against the Israeli Defence Minister for alleged war crimes committed in the West Bank

- The application was refused by the Bow Street Magistrates' Court, which held that the Minister for Defence was entitled to immunity, by drawing analogy to the Foreign Affairs Minister
- Immunity may be extended to the Minister for International Trade, following Re Bo Xilai (UK, 2005)
 - In this case, the Bow Street Magistrates' Court held refused an application for an arrest warrant against the Chinese Minister for International Trade, who was accused of torture
 - The Court found that the Trade Minister had functions equivalent to those of a Foreign Affairs Minister, and therefore was entitled to immunity

8.3.5 Proceedings Concerning State Torture

8.3.5.1 Civil Proceedings in the United Kingdom

Al Adsani v Kuwait (1995) 103 ILR 420 (QBD and CA)

In a civil case brought by a UK national in UK courts against Kuwait for alleged torture in a Kuwaiti state prison, the court ruled that the local tort exception did not apply, as the alleged torture occurred in Kuwait. Furthermore, the court found no implied exception to the general rule of state immunity, even when the proceedings involve conduct constituting an offence under public international law for which the state may be responsible.

Jones v Saudi Arabia [2007] AC 270

In civil claims for damages for personal injury brought by UK plaintiffs alleging torture while imprisoned in Saudi Arabia, the defendants included Saudi Arabia and named Saudi public officials. The court held that while UK legislation did not specifically address civil proceedings against foreign public officials acting in their official capacity, "there is ... a wealth of authority to show that in such case the foreign state is entitled to claim immunity for its servants as it could if sued itself. The foreign state's right to immunity cannot be circumvented by suing its servants or agents", as stated by Lord Bingham.

8.3.5.2 Australia

Zhang v Zemin [2010] NSWCA 255

In a case similar to *Jones v Saudi Arabia*, involving a claim for damages for the tort of trespass due to alleged torture in China, the defendants included the former President of the People's Republic of China, the Falun Gong Control Office, and Luo Gan, a senior member of the Chinese Communist Party. The court, with Spigelman CJ delivering the judgment and Allsop P and McClellan CJ at CL agreeing, held that the former President was entitled to immunity under the Foreign States Immunities Act 1985 (Cth). The court determined that whether a person or entity qualifies as a foreign state, as defined under s 3(3)(b) of the Act, is assessed at the time of the impugned conduct. Additionally, s 3(3)(c) includes individuals acting as public or government officials within the definition of a

139

foreign state, as excluding them would render the Act "virtually devoid of practical significance". Consequently, Luo Gan was immune for conduct performed in his official capacity. The court further ruled that there was no implied exception to immunity, as s 9 of the Act is clear, rendering the *Polites* interpretive principle inapplicable.

Topic 9

Immunity from Jurisdiction II

9.1 Immunity and International Criminal Courts

- One of the core principles of international law is that the official capacity of an individual is irrelevant in proceedings before an international criminal court
- This is stated in *Rome Statute of the International Criminal Court* Art 27, with similar provisions stated in the statutes of the ICTY, ICTR, the Extraordinary Chambers in the Courts of Cambodia, etc.

Rome Statute of the International Criminal Court Article 27

Irrelevance of official capacity

- 1. This Statute shall apply equally to all persons without any distinction based on official capacity. In particular, official capacity as a Head of State or Government, a member of a Government or parliament, an elected representative or a government official shall in no case exempt a person from criminal responsibility under this Statute, nor shall it, in and of itself, constitute a ground for reduction of sentence.
- 2. Immunities or special procedural rules which may attach to the official capacity of a person, whether under national or international law, shall not bar the Court from exercising its jurisdiction over such a person.
- This principle becomes hard to apply when it clashes with the immunity that some individuals may enjoy in the jurisdiction of a particular country
- This was exemplified in a dispute between the ICC and Sudan (alongside other African states) over arrest warrants for Sudan's former President al-Bashir, and the meaning of Articles 27 and 28 of the Rome Statute of the International Criminal Court
 - This case was complicated by Sudan not being a party to the *Rome Statute*
 - There were several ICC decisions regarding the failure by states party to the Rome Statute to surrender al-Bashir to the ICC, including the 2019 Appeals Chamber Judgement (which concerned the failure of Jordan to surrender al-Bashir)
 - "The absence of a rule of customary international law recognising Head of State immunity vis-à-vis international courts is relevant [...] also for the horizontal

- relationship between States when a State is requested by an international court to arrest and surrender the Head of State of another State."
- This case explained that the basis of the former President's immunity arose as a matter of international law and as a matter between states
- Dapo Akande has held that "The issue of the immunity of heads of state before international criminal courts is not what is at issue in these cases. What was is at issue is the immunity of heads of states from arrest by other states acting at the request of an international criminal court. That the head of state may not have immunity before the international criminal court does not, without more, say anything about whether he or she may have immunity before a foreign state.", illuminating the pitfalls of the ICC's decision in this area
- There are other, less controversial routes to jurisdiction
 - An example is the UN Security Council, which has the capacity to issue binding resolutions, and moreover has the ability to make direct referrals to the ICC under Rome Statute Art 13(b) if this is done, then immunity can be overridden

Rome Statute of the International Criminal Court Article 13

Exercise of Jurisdiction

The Court may exercise its jurisdiction with respect to a crime referred to in article 5 in accordance with the provisions of this Statute if:

- (a) A situation in which one or more of such crimes appears to have been committed is referred to the Prosecutor by a State Party in accordance with article 14;
- (b) A situation in which one or more of such crimes appears to have been committed is referred to the Prosecutor by the Security Council acting under Chapter VII of the Charter of the United Nations; or
- (c) The Prosecutor has initiated an investigation in respect of such a crime in accordance with article 15.

9.2 Foreign State Immunity and Jus Cogens

Jurisdictional Immunities of the State (Germany v Italy) [2012] ICJ Rep 99

This case concerned damages proceedings in the Italian courts, and arose out of multiple distinct fact patters, as outlined in the table below:

- From 1943, when Italy surrendered to the Allies, to the end of WW2 in 1945, the armed forces of the German Reich were in belligerent occupation of much of Italy (especially Northern Italy from 1943-1945). During their occupation, German forces committed war crimes and crimes against humanity, including the murder of civilians and the forced deportation of civilians for use as slave labour in Germany. In 1998, Luigi Ferrini, an Italian national forcibly deported to Germany in 1944 and forced to work in a munitions factory, instituted compensation proceedings in Italy against Germany. In 2004, the Corte Suprema di Cassazione (Italian Supreme Court) held that the Italian courts had jurisdiction in respect to the claim, and that Germany was not entitled to foreign state immunity as the mistreatment of Mr Ferrini was a crime under international law. Following this decision, hundreds of similar claims were brought in Italian courts.
- The relatives of Greek civilians murdered by German forces in the Greek village of Distomo in 1944 brought a claim for compensation against Germany in the Greek courts in 1997. The Greek claimants in this case sought to enforce the judgement of the Greek Court of First Instance of Livadia in Italy, and this was allowed by a decision of 2006 of the Court of Appeal of Florence. In 2007, the Greek claimants registered a charge over a German state-owned property in Italy, the Villa Vigoni, near Lake Como; Germany owned and operated this property to promote cross-cultural initiatives.

In both cases, Germany objected to Italy's assertion of jurisdiction, and took Italy to the ICJ.

The ICJ held that Italy had violated foreign state immunity, and as such had violated its obligation to respect the jurisdictional immunity of Germany under customary international law. The court very neatly explained the rationale and the origins of the immunity afforded to Germany.

- [51] ... the rule of State immunity ... derives from the principle of sovereign equality of States, which, as Article 2, paragraph 1, of the Charter of the United Nations makes clear, is one of the fundamental principles of the international legal order.
- [65] Court is not called upon... to resolve the question whether there is in customary international law a "tort exception" to State immunity applicable to acta *jure imperii* ... The issue before the Court is confined to acts committed ... by the armed forces of a foreign State.
- State practice in the form of judicial decisions supports the proposition that State immunity for acta jure imperii continues to extend to civil proceedings for [torts] committed by the armed forces ... of a State in the conduct of armed conflict.
- [91] A State is not deprived of immunity by ... the fact that it is accused of serious violations of international human rights law or the international law of armed conflict ... the Court must emphasize that ... the question of whether ... immunity might apply in criminal proceedings against an official of the State is not in issue. [Pinochet (No 3) distinguished].

| [92] | [Italy's argument concerning violation of jus cogens] rests on the premise that |
|-------|---|
| | there is a conflict between jus cogens and according immunity to |
| | Germany. |
| [93] | however, no such conflict exists The rules of State immunity are |
| | procedural in character and are confined to determining whether or not |
| | the courts of one State may exercise jurisdiction in respect of another State. |
| | They do not bear upon whether or not the conduct in respect of which the |
| | proceedings are brought was lawful or unlawful. [Arrest Warrant compared] |
| [101] | [T]he Court cannot accept Italy's contention that the alleged |
| | shortcomings in Germany's provisions for reparation to Italian victims, |
| | entitled the Italian courts to deprive Germany of jurisdictional immunity. |
| | The Court can find no basis in the State practice from which customary |
| | international law is derived that makes the entitlement of a State to |
| | immunity dependent upon the existence of effective alternative means of |
| | redress. |

- At [65], it was accepted that acts committed by the armed forces of a foreign state, regardless of where they are committed, are subject to immunity
- At [77], the court did not examine the local torts exception at all
- At [91], the central question of the case was considered; the court rejected taking the approach of denying a state civil immunity, distinguishing *Pinochet* as this case was for civil damages, not criminal damages; the approach of denial was rooted in the desire to uphold the peremptory norms of international law/prohibitions of on the commissions of the most serious crimes
- At [93], the court held that state immunity does not go to the underlying character of the acts subject to jurisdiction; in *Arrest Warrant*, the ICJ held that immunity is not equivalent to impunity the mere presence of immunity does not absolve or erase the underlying jurisdiction over a crime, but only acts as a procedural bar to the exercise of jurisdiction
- Italy held that another exception to immunity could be derived from a failure of a plaintiff to receive appropriate compensation
- Here, the victims received some compensation from the government of Germany, but Italy argued that this was insufficient (this is a last-resort avenue)
- The case of *Jones et al v UK* (14 January 2014, ECtHR) (European Court of Human Rights) is also relevant
 - "The Court is satisfied that the grant of immunity to the State officials in this case reflected generally recognised rules of public international law. The application of the provisions of the 1978 Act to grant immunity to the State officials in the applicants' civil cases did not therefore amount to an unjustified restriction on the applicants' access to a court."
 - This is the sequel to Jones v Saudi Arabia [2007] AC 270; after losing in the House of Lords, the plaintiff went to the European Court of Human Rights, arguing that their

right to a fair trial had been denied as the UK courts had recognised immunity

- The right to a fair trial/remedy is an internationally recognised right under the UCHR, and the International Covenant on Civil and Political Rights
- The ECtHR, in a similar manner to the ICJ, had to recognise the immunity rules and
 the protection of human rights, and held that the UK's grant of immunity under the
 State Immunity Act did not amount to an unjustified prescription on the applicant's
 access to the Court

9.3 Foreign Act of State Doctrine

- This refers to when proceedings against a private person or entity, or the Australian government, may raise issues concerning the actions of a foreign state
- This is a distinct principle of common law and of judicial restraint, but is not really a principle of public international law
- The proceedings are somewhat related to the actions of a foreign state, but are not related to the foreign state itself

Spycatcher Case (1988) 165 CLR 30

This case related to a former MI5 officer who wanted to publish a book revealing the secrets of MI5 and MI6. The author was banned from publishing in the UK, but was able to be published in Australia after the High Court ruled that the book could not be withheld in Australia.

"In general, courts will not adjudicate upon the validity of acts and transactions of a foreign sovereign state within that sovereign's own territory." This quote summarises the foreign act of state doctrine.

- The foreign act of state doctrine does not apply where the relevant conduct of a foreign state involves a breach of an established principle of international law, as determined in *Hicks v Ruddock* (2007) 156 FCR 574 and *Habib v Commonwealth* (2010) 183 FCR 62
- In recent years, this doctrine has contracted in scope in jurisdictions around the world

Hicks v Ruddock (2007) 156 FCR 574

In this case, David Hicks, an Australian citizen, initiated legal proceedings against the Australian Attorney-General, challenging the government's failure to request his release from Guantanamo Bay. Hicks had been captured by United States forces during the Afghanistan war in 2001 and detained at Guantanamo Bay for five years without being formally charged. His claims were based on habeas corpus and administrative law, seeking judicial review of the Australian government's inaction in advocating for his release from US custody. Hicks argued that the government had a legal obligation to protect its citizen, particularly given the prolonged detention without a lawful trial.

The Australian government moved for a summary dismissal of the proceedings, asserting

that the case engaged the foreign act of state doctrine. This doctrine generally prevents domestic courts from adjudicating on the lawfulness of a foreign government's actions conducted outside the court's jurisdiction—in this case, the US detention of Hicks at Guantanamo Bay. The government argued that allowing the case to proceed would require the Australian court to improperly sit in judgement on the actions of the United States, which occurred extraterritorially, and thus the matter was non-justiciable.

The Federal Court, presided over by Tamberlin J, rejected the government's application for summary dismissal. The judge ruled that the foreign act of state doctrine did not apply when the conduct of the foreign state constituted a breach of an international convention. The court found that Hicks' detention for an extended period without a lawful trial amounted to a war crime, violating international legal standards. This determination permitted the case to advance, as the court was willing to scrutinise the lawfulness of Hicks' detention, notwithstanding the involvement of a foreign state's actions.

Ultimately, Hicks was released from Guantanamo Bay in 2007 before the case could fully progress through the judicial system, rendering further litigation moot. His release followed significant domestic and international advocacy, as well as diplomatic efforts. The Hicks v Ruddock case remains notable for its examination of the Australian government's responsibilities towards citizens detained abroad, the limits of the foreign act of state doctrine, and the intersection of domestic judicial review with international law obligations.

Habib v Commonwealth (2010) 183 FCR 62

In this case, Mamdouh Habib, an Australian citizen, sought damages from the Commonwealth of Australia for alleged torts of misfeasance in public office and intentional infliction of harm. Habib claimed he suffered acts of torture while detained in multiple locations, including Pakistan, Egypt, Afghanistan, and Guantanamo Bay, between 2001 and 2005. His proceedings targeted the Commonwealth, alleging that Australian officials were complicit in or failed to prevent the torture he endured during his detention by foreign authorities, asserting that such conduct caused him significant physical and psychological harm.

The Australian government argued that the court lacked jurisdiction to hear the case and that the claim was non-justiciable, invoking the foreign act of state doctrine and the Foreign States Immunities Act 1985 (Cth). The government contended that adjudicating the case would require the court to scrutinise the actions of foreign states on their own territory, which was impermissible under the doctrine, as it would involve sitting in judgement on the legality of foreign sovereign acts. The Commonwealth sought to have the proceedings dismissed on these grounds, asserting that the court could not lawfully examine the conduct of foreign agents.

The Full Court of the Federal Court of Australia, with Jagot J delivering the judgement, rejected the Commonwealth's arguments. The court held that the foreign act of state doctrine does not preclude judicial scrutiny by an Australian court of the conduct of a foreign state's agents within their own territory when the alleged conduct involves acts of

torture. Such acts are illegal under both international law and domestic Australian law, rendering the doctrine inapplicable in these circumstances. The court emphasised that torture constitutes a serious violation of fundamental legal norms, allowing Australian courts to exercise jurisdiction over claims involving such conduct, even if perpetrated abroad.

Furthermore, the court ruled that the foreign act of state doctrine has no application as a matter of Australian constitutional law when it is alleged that Commonwealth officials acted beyond the scope of their authority under Commonwealth law. The court identified constitutional reasons for not applying the doctrine, particularly where the actions of Australian officials are alleged to contravene legal limits on their power. This finding reinforced the justiciability of Habib's claims, as it permitted the court to examine whether Commonwealth officials had acted unlawfully, irrespective of the involvement of foreign states. The decision allowed Habib's case to proceed, marking a significant precedent regarding the accountability of Australian officials in cases involving extraterritorial torture.

9.4 Diplomatic Immunity and Inviolability

- The law on diplomatic immunity is one of the oldest and most settled areas of
 international law, and is now codified in the 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations
 (VCDR) (there are similar rules for consular immunity under 1963 Vienna Convention on
 Consular Relations, but they are not entirely identical and thus cannot be conflated)
- There is a strong history of compliance with the rules of diplomatic immunity, given the strong reciprocal benefits available to nations in respecting immunity
- The VCDR is given effect in Australia by the Diplomatic Privileges and Immunities Act 1967 (Cth)
- Immunities are accorded to diplomatic agents sent by the 'sending state' and received by the 'receiving state'
 - The receiving state is under obligations to respect the immunity of diplomatic agents
- The *VCDR* establishes a graduated regime of jurisdictional immunity, as opposed to a uniform set of rules for all diplomats
- As mentioned in the preamble of the VCDR, diplomatic immunity is "not to benefit
 individuals, but to ensure the efficient performance of the functions of diplomatic
 missions"
 - This point has been explored by Rosalyn Higgins in a journal article [(1985) 79 American Journal of International Law 641], where she held that "diplomatic law governs the conduct of relations between representative organs of a state operating within the territory of another state, and the receiving state. Its purpose is to facilitate international diplomacy, balancing the pursuit of the foreign policy interests of the sending state with respect for the territorial sovereignty of the receiving state. Diplomatic immunity is an exception to the general rule of territorial

jurisdiction. It allows diplomats to be able to carry out their functions within the framework of necessary security and confidentiality."

- VCDR Art 1 defines several key terms in the area of diplomatic immunity, including those
 of 'diplomatic agent' and 'premises of the mission'
 - Commonwealth countries have High Commissions between each other (which are akin to embassies), and High Commissioners as the top-level diplomatic agents (which are akin to ambassadors); there is no distinction drawn between the two sets of terms for the purposes of the VCDR

1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 1

For the purpose of the present Convention, the following expressions shall have the meanings hereunder assigned to them:

- (a) The "head of the mission" is the person charged by the sending State with the duty of acting in that capacity;
- (b) The "members of the mission" are the head of the mission and the members of the staff of the mission
- (c) The "members of the staff of the mission" are the members of the diplomatic staff, of the administrative and technical staff and of the service staff of the mission;
- (d) The "members of the diplomatic staff" are the members of the staff of the mission having diplomatic rank;
- (e) A "diplomatic agent" is the head of the mission or a member of the diplomatic staff of the mission;
- (f) The "members of the administrative and technical staff" are the members of the staff of the mission employed in the administrative and technical service of the mission;
- (g) The "members of the service staff" are the members of the staff of the mission in the domestic service of the mission;
- (h) A "private servant" is a person who is in the domestic service of a member of the mission and who is not an employee of the sending State;
- (i) The "premises of the mission" are the buildings or parts of buildings and the land ancillary thereto, irrespective of ownership, used for the purposes of the mission including the residence of the head of the mission.
- VCDR Article 3 sets out the primary functions of a diplomatic mission, which includes:
 - Representing the sending state
 - Protecting the interests of the sending state
 - Negotiating with the receiving state
 - Ascertaining and reporting to the sending state the conditions and developments in the receiving state

- Promoting friendly relations between the sending state and the receiving state

1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 3

- 1. The functions of a diplomatic mission consist, inter alia, in:
 - (a) Representing the sending State in the receiving State;
 - (b) Protecting in the receiving State the interests of the sending State and of its nationals, within the limits permitted by international law;
 - (c) Negotiating with the Government of the receiving State;
 - (d) Ascertaining by all lawful means conditions and developments in the receiving State, and reporting thereon to the Government of the sending State;
 - (e) Promoting friendly relations between the sending State and the receiving State, and developing their economic, cultural and scientific relations.
- 2. Nothing in the present Convention shall be construed as preventing the performance of consular functions by a diplomatic mission.
- VCDR Art 4-19 address several mostly procedural matters, such as the appointment and
 accreditation of diplomatic agents (note that the consent of the receiving state is required
 for the appointment of a head of a mission, but not for the appointment of other
 diplomatic agents)
 - If a state is seeking to appoint an ambassador to a receiving state, it must first receive
 the consent of the foreign state before any such posting can be made

1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 4

- 1. The sending State must make certain that the *agrément* of the receiving State has been given for the person it proposes to accredit as head of the mission to that State.
- 2. The receiving State is not obliged to give reasons to the sending State for a refusal of *agrément*.

- 1. The sending State may, after it has given due notification to the receiving States concerned, accredit a head of mission or assign any member of the diplomatic staff, as the case may be, to more than one State, unless there is express objection by any of the receiving States.
- 2. If the sending State accredits a head of mission to one or more other States it may establish a diplomatic mission headed by a chargé d'affaires ad interim in each State where the head of mission has not his permanent seat.
- 3. A head of mission or any member of the diplomatic staff of the mission may act as representative of the sending State to any international organization.

Two or more States may accredit the same person as head of mission to another State, unless objection is offered by the receiving State.

1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 7

Subject to the provisions of articles 5, 8, 9 and 11, the sending State may freely appoint the members of the staff of the mission. In the case of military, naval or air attachés, the receiving State may require their names to be submitted beforehand, for its approval.

1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 8

- 1. Members of the diplomatic staff of the mission should in principle be of the nationality of the sending State.
- 2. Members of the diplomatic staff of the mission may not be appointed from among persons having the nationality of the receiving State, except with the consent of that State which may be withdrawn at any time.
- 3. The receiving State may reserve the same right with regard to nationals of a third State who are not also nationals of the sending State.

1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 9

- 1. The receiving State may at any time and without having to explain its decision, notify the sending State that the head of the mission or any member of the diplomatic staff of the mission is persona non grata or that any other member of the staff of the mission is not acceptable. In any such case, the sending State shall, as appropriate, either recall the person concerned or terminate his functions with the mission. A person may be declared non grata or not acceptable before arriving in the territory of the receiving State.
- 2. If the sending State refuses or fails within a reasonable period to carry out its obligations under paragraph 1 of this article, the receiving State may refuse to recognize the person concerned as a member of the mission.

- 1. The Ministry for Foreign Affairs of the receiving State, or such other ministry as may be agreed, shall be notified of:
 - (a) The appointment of members of the mission, their arrival and their final departure or the termination of their functions with the mission;
 - (b) The arrival and final departure of a person belonging to the family of a member of the mission and, where appropriate, the fact that a person becomes or ceases to be a member of the family of a member of the mission;
 - (c) The arrival and final departure of private servants in the employ of persons

- referred to in subparagraph (a) of this paragraph and, where appropriate, the fact that they are leaving the employ of such persons;
- (d) The engagement and discharge of persons resident in the receiving State as members of the mission or private servants entitled to privileges and immunities.
- 2. Where possible, prior notification of arrival and final departure shall also be given.

- 1. In the absence of specific agreement as to the size of the mission, the receiving State may require that the size of a mission be kept within limits considered by it to be reasonable and normal, having regard to circumstances and conditions in the receiving State and to the needs of the particular mission.
- 2. The receiving State may equally, within similar bounds and on a non-discriminatory basis, refuse to accept officials of a particular category.

1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 12

The sending State may not, without the prior express consent of the receiving State, establish offices forming part of the mission in localities other than those in which the mission itself is established.

1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 13

- 1. The head of the mission is considered as having taken up his functions in the receiving State either when he has presented his credentials or when he has notified his arrival and a true copy of his credentials has been presented to the Ministry for Foreign Affairs of the receiving State, or such other ministry as may be agreed, in accordance with the practice prevailing in the receiving State which shall be applied in a uniform manner.
- 2. The order of presentation of credentials or of a true copy thereof will be determined by the date and time of the arrival of the head of the mission.

- 1. Heads of mission are divided into three classes, namely:
 - (a) That of ambassadors or nuncios accredited to Heads of State, and other heads of mission of equivalent rank;
 - (b) That of envoys, ministers and internuncios accredited to Heads of State;
 - (c) That of charges d'affaires accredited to Ministers for Foreign Affairs.
- 2. Except as concerns precedence and etiquette, there shall be no differentiation between heads of mission by reason of their class.

The class to which the heads of their missions are to be assigned shall be agreed between States.

1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 16

- 1. Heads of mission shall take precedence in their respective classes in the order of the date and time of taking up their functions in accordance with article 13.
- 2. Alterations in the credentials of a head of mission not involving any change of class shall not affect his precedence.
- 3. This article is without prejudice to any practice accepted by the receiving State regarding the precedence of the representative of the Holy See.

1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 17

The precedence of the members of the diplomatic staff of the mission shall be notified by the head of the mission to the Ministry for Foreign Affairs or such other ministry as may be agreed.

1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 18

The procedure to be observed in each State for the reception of heads of mission shall be uniform in respect of each class.

1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 19

- 1. If the post of head of the mission is vacant, or if the head of the mission is unable to perform his functions a chargé d'affaires ad interim shall act provisionally as head of the mission. The name of the chargé d'affaires ad interim shall be notified, either by the head of the mission or, in case he is unable to do so, by the Ministry for Foreign Affairs of the sending State to the Ministry for Foreign Affairs of the receiving State or such other ministry as may be agreed.
- 2. In cases where no member of the diplomatic staff of the mission is present in the receiving State, a member of the administrative and technical staff may, with the consent of the receiving State, be designated by the sending State to be in charge of the current administrative affairs of the mission.

9.4.1 Diplomatic Inviolability

- 1. The premises of the mission shall be inviolable. The agents of the receiving State may not enter them, except with the consent of the head of the mission.
- 2. The receiving State is under a special duty to take all appropriate steps to protect

the premises of the mission against any intrusion or damage and to prevent any disturbance of the peace of the mission or impairment of its dignity.

- 3. The premises of the mission, their furnishings and other property thereon and the means of transport of the mission shall be immune from search, requisition, attachment or execution.
- Under *VCDR* Article 22(1), the premises of the diplomatic mission are inviolable and may not be entered without the consent of the head of the mission
- This obligation has been strictly adhered to (e.g., the 1984 St James Square incident, where
 the UK police were unable to enter the Iranian embassy in London to arrest a suspect
 following the murder of WPC Fletcher, and Julian Assange seeking refuge in the
 Ecuadorian embassy in London)
- It was held in *Saudi Arabian Cultural Mission v Alramadi* [2024] FCA 1060 that serving proceedings on a diplomatic mission without the consent of the head of the mission breaches the inviolability of the mission

Saudi Arabian Cultural Mission v Alramadi [2024] FCA 1060

In this case, 17 former employees initiated legal proceedings against the Saudi Arabian Cultural Mission (SACM) in South Australia, alleging violations of the Fair Work Act 2009 (Cth). The employees claimed that the SACM had failed to pay their entitlements, giving rise to an employment dispute. The case centred on the proper procedure for serving legal proceedings on a foreign state entity and the implications of failing to adhere to diplomatic protocols under international law.

Under section 24 of the Foreign States Immunities Act 1985 (Cth), when suing a foreign state, the originating process must be sent to the Commonwealth Attorney-General, who is then responsible for forwarding it to the foreign state's relevant ministry of foreign affairs. In this instance, the Attorney-General did not transmit the originating process as required. Instead, the legal documents were served directly on the deputy head of the Saudi embassy, bypassing the formal channels outlined in the legislation and raising questions about the propriety of the service method.

Raper J of the Federal Court of Australia ruled that the direct service on the Saudi embassy was invalid. The court held that, under section 24 of the Foreign States Immunities Act, service on a diplomatic mission can only be effected if the foreign state itself authorises such service. Without explicit consent from the head of the mission, serving the deputy head breached the inviolability of the diplomatic mission, as protected by Article 22 of the Vienna Convention on Diplomatic Relations 1961 (VCDR). This article ensures that diplomatic missions are immune from intrusion, including the service of legal processes, unless consented to by the mission.

This decision underscored the importance of adhering to statutory and international legal frameworks when initiating proceedings against foreign state entities. The court found that the failure to follow the prescribed process under section 24, combined with the lack of consent from the Saudi mission, rendered the service invalid. This ruling highlighted

the intersection of domestic law and diplomatic immunity, affirming the protections afforded to diplomatic missions under the VCDR and the procedural requirements for engaging foreign states in Australian courts.

- Under *VCDR* Article 22(2), the receiving state is under a special duty to take all appropriate steps to protect the premises of the mission against any intrusion or damage and to prevent any disturbance of the peace of the mission or impairment of its dignity
- This is a strict obligation on the receiving state, and it is not a matter of discretion, or of claiming that they had tried their best (e.g., in the attacks on the Iranian Embassy in Canberra by protestors is 1992, the Australian government had failed to protect the embassy, and so assumed liability and compensated the Iranian government for the damage caused)
- Tehran Hostages [1980] ICJ Rep 3 exemplifies the importance of protecting the premises of a diplomatic mission from damage, but Minister for Foreign Affairs & Trade v Magno (1992) 37 FCR 298 holds that merely peaceful protests outside a diplomatic mission do not amount to a breach of the inviolability of the mission, so long as it does not interfere with the functions of the mission

Tehran Hostages [1980] ICJ Rep 3

This case arose during the 1979 Iranian Revolution, when Iranian students overthrew the government and targeted foreign entities, including the US. On 4 November 1979, protestors stormed the US embassy in Tehran, taking 52 staff members hostage for 444 days. The US brought the matter before the International Court of Justice (ICJ), alleging Iran violated its obligations under international law.

The ICJ ruled that Iran breached Article 22 of the 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations 1961 (VCDR), which requires host states to protect diplomatic missions. The court found Iran failed to prevent the embassy takeover and even supported the protestors, exacerbating the violation. The ICJ stressed the stringent nature of Article 22, holding that host states must proactively ensure the safety of diplomatic premises, regardless of internal unrest.

This landmark decision reinforced the inviolability of diplomatic missions and the absolute duty of host states under the *VCDR*, highlighting that domestic instability does not excuse failures to uphold international legal standards.

Minister for Foreign Affairs & Trade v Magno (1992) 37 FCR 298

Here, the Full Court of the Federal Court of Australia addressed a peaceful protest outside the Indonesian embassy in Canberra. The demonstration, held in 1992, was organised by groups protesting a massacre that had occurred days earlier. Protestors placed approximately 120 small white crosses on the grass outside the embassy as a symbolic gesture but refused to remove them when requested. The Australian government responded by adopting a new regulation, empowering the Minister for Foreign Affairs to order the removal of such symbols if deemed offensive to the peace and dignity of the

diplomatic mission.

The protestors challenged the validity of the regulation in the Federal Court, arguing it infringed on their rights to free expression. The court upheld the regulation, finding it a lawful exercise of governmental authority to balance diplomatic obligations with public expression. However, French J provided significant observations on the application of 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations (VCDR) Article 22, which requires receiving states to protect the peace and dignity of diplomatic missions. He noted that not all activities outside a mission necessarily breach Article 22, particularly peaceful protests.

French J elaborated on what might impair a mission's dignity, stating at page 326: "However, the dignity of the mission may be impaired by activity that would not amount to a disturbance of its peace. Offensive or insulting behaviour in the vicinity of and directed to the mission may fall into this category. The burning of the flag of the sending State or the mock execution of its leader in effigy if committed in the immediate vicinity of the mission could well be construed as attacks upon its dignity. So too might the depositing of some offensive substance and perhaps also the dumping of farm commodities outside mission premises in protest against subsidy policies of the sending State. Any such incident would have to be assessed in the light of the surrounding circumstances. But subject to protection against those classes of conduct, the sending State takes the receiving State as it finds it. If it finds it with a well established tradition of free expression, including public comment on matters of domestic and international politics, it cannot invoke either Article 22(2) or 29 against manifestations of that tradition." This highlighted that acts like burning flags or staging mock executions could violate a mission's dignity, but peaceful protests generally do not.

French J concluded that a mere peaceful protest, such as the lawful placement of a reproachful and dignified symbol like the crosses, does not impair the dignity of the mission or breach its peace. The decision affirmed Australia's tradition of free expression, noting that sending states must accept the receiving state's cultural and legal norms, including the right to peaceful protest, unless the conduct explicitly undermines the mission's dignity or peace as outlined in Article 22.

- Article 29 holds that the person of a diplomatic agent is inviolable, and they cannot be arrested or detained
- Article 30 holds that the private residence of a diplomatic agent is inviolable, and their papers and correspondence are also inviolable
- All diplomatic agents, not just the heads of mission, are entitled to the protections outlined in Articles 29 and 30

1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 29

The person of a diplomatic agent shall be inviolable. He shall not be liable to any form of arrest or detention. The receiving State shall treat him with due respect and shall take all appropriate steps to prevent any attack on his person, freedom or dignity.

- 1. The private residence of a diplomatic agent shall enjoy the same inviolability and protection as the premises of the mission.
- 2. His papers, correspondence and, except as provided in paragraph 3 of article 31, his property, shall likewise enjoy inviolability.

9.4.2 Diplomatic Agents

- 1. A diplomatic agent shall enjoy immunity from the criminal jurisdiction of the receiving State. He shall also enjoy immunity from its civil and administrative jurisdiction, except in the case of:
 - (a) A real action relating to private immovable property situated in the territory of the receiving State, unless he holds it on behalf of the sending State for the purposes of the mission;
 - (b) An action relating to succession in which the diplomatic agent is involved as executor, administrator, heir or legatee as a private person and not on behalf of the sending State;
 - (c) An action relating to any professional or commercial activity exercised by the diplomatic agent in the receiving State outside his official functions.
- 2. A diplomatic agent is not obliged to give evidence as a witness.
- 3. No measures of execution may be taken in respect of a diplomatic agent except in the cases coming under subparagraphs (a), (b) and (c) of paragraph 1 of this article, and provided that the measures concerned can be taken without infringing the inviolability of his person or of his residence.
- 4. The immunity of a diplomatic agent from the jurisdiction of the receiving State does not exempt him from the jurisdiction of the sending State.
- Article 31 deals with immunity from civil and criminal jurisdictions as applied to diplomatic agents
- Under Article 31(1), diplomatic agents enjoy absolute immunity ratione personae (immunity that derives from their status as diplomats, not from the nature of their activities) from the criminal jurisdiction of the receiving state
- They also enjoy a broad immunity from the receiving state's civil and administrative jurisdiction, with three key exceptions
 - 1. A real action relating to private immovable property situated in the receiving state (unless property held for purposes of mission)
 - 2. An action relating to succession (where agent is executor, administrator, heir, or legatee, as a private person)

- 3. An action relating to any professional or commercial activity exercised by the diplomatic agent in the receiving state outside his or her official functions
- E.g., if a diplomatic agent is running a side business, they will not be immune in civil proceedings in relation to the business
- Under *Diplomatic Immunity Case* (1973) Family Court of Australia, the exceptions made to diplomatic agents under under Article 31 do not extend to family law disputes
- The Article 31 exceptions also do not extend to employment that is a form of modern slavery, following Basfar v Wong [2022] UKSC 20 (and also Reyes v Al-Malki [2017] UKSC 61; [2019] AC 735)
 - The employment relationship is between the diplomatic agent and another individual
 - Modern slavery includes forced labour, servitude, trafficking, etc., so long as it amounts to commercial activity

Basfar v Wong [2022] UKSC 20

In this case, Josephine Wong, a domestic worker employed by a member of the diplomatic staff at the Saudi embassy in the UK, brought a claim against her employer, Mr Basfar. Wong alleged that she was subjected to exploitative conditions amounting to modern slavery. She was confined to the mission premises, unable to leave, and received no payment for her work. These conditions were deemed to constitute modern slavery under both UK and international law, prompting Wong to seek compensation for her mistreatment.

The case raised questions about diplomatic immunity under 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations (VCDR) Article 31, which generally grants diplomats immunity from civil jurisdiction in the receiving state. Basfar argued that this immunity barred Wong's claim. However, Wong contended that her treatment fell outside the scope of diplomatic functions, invoking an exception to immunity. The dispute centred on whether employing a domestic worker under conditions of modern slavery could be considered a "commercial activity" under Article 31(1)(c) of the VCDR, which excludes immunity for such activities.

The UK Supreme Court (UKSC) ruled in Wong's favour, holding that her employment under conditions of modern slavery constituted a commercial activity beyond the ordinary operation of a diplomatic mission. The court found that the exploitation of Wong for domestic labour, in a manner amounting to slavery, was not incidental to the diplomatic functions of the mission but rather a form of commercial exploitation. Consequently, the exception to immunity under Article 31(1)(c) applied, as the activity was not part of the official duties of the diplomat.

This decision clarified that diplomatic immunity does not extend to egregious violations like modern slavery, even when occurring within a mission. The UKSC's ruling ensured that diplomats cannot rely on immunity to shield exploitative practices that contravene fundamental human rights, allowing Wong to pursue her claim for compensation and setting limits for diplomatic immunity in cases of serious misconduct.

- 1. The members of the family of a diplomatic agent forming part of his household shall, if they are not nationals of the receiving State, enjoy the privileges and immunities specified in articles 29 to 36.
- 2. Members of the administrative and technical staff of the mission, together with members of their families forming part of their respective households, shall, if they are not nationals of or permanently resident in the receiving State, enjoy the privileges and immunities specified in articles 29 to 35, except that the immunity from civil and administrative jurisdiction of the receiving State specified in paragraph 1 of article 31 shall not extend to acts performed outside the course of their duties. They shall also enjoy the privileges specified in article 36, paragraph 1, in respect of articles imported at the time of first installation.
- 3. Members of the service staff of the mission who are not nationals of or permanently resident in the receiving State shall enjoy immunity in respect of acts performed in the course of their duties, exemption from dues and taxes on the emoluments they receive by reason of their employment and the exemption contained in article 33.
- 4. Private servants of members of the mission shall, if they are not nationals of or permanently resident in the receiving State, be exempt from dues and taxes on the emoluments they receive by reason of their employment. In other respects, they may enjoy privileges and immunities only to the extent admitted by the receiving State. However, the receiving State must exercise its jurisdiction over those persons in such a manner as not to interfere unduly with the performance of the functions of the mission.
- For members of the diplomatic agent's family, if they are not nationals of the receiving state, and are part of the agent's household, they enjoy the same privileges and immunities as the diplomatic agent, under VCDR Art 37(1)
- For members of the administrative and technical staff of the mission, if they are not nationals or permanent residents of the receiving state, they enjoy the same immunities as the diplomatic agent, except that the immunity from civil and administrative jurisdiction under *VCDR* Art 31(1) does not extend to acts performed outside the course of their duties, under *VCDR* Art 37(2)
 - These are important staff members in a mission
- For members of the service staff of the mission, if they are not nationals or permanent
 residents of the receiving state, they enjoy immunity in respect of acts performed in the
 course of their duties, and exemption from dues and taxes on the emoluments they receive
 by reason of their employment, and the exemption contained in VCDR Art 33, under
 VCDR Art 37(3)
 - These generally include staff members such as the kitchen staff, cleaners, and other support staff
- For private servants in the mission, if they are not nationals or permanent residents of the receiving state, they are exempt from dues and taxes on their wages, under VCDR Art 37(4)

- Examples of private servants include butlers

1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Article 33

- 1. Subject to the provisions of paragraph 3 of this article, a diplomatic agent shall with respect to services rendered for the sending State be exempt from social security provisions which may be in force in the receiving State.
- 2. The exemption provided for in paragraph 1 of this article shall also apply to private servants who are in the sole employ of a diplomatic agent, on condition:
 - (a) That they are not nationals of or permanently resident in the receiving State;
 - (b) That they are covered by the social security provisions which may be in force in the sending State or a third State.
- 3. A diplomatic agent who employs persons to whom the exemption provided for in paragraph 2 of this article does not apply shall observe the obligations which the social security provisions of the receiving State impose upon employers.
- 4. The exemption provided for in paragraphs 1 and 2 of this article shall not preclude voluntary participation in the social security system of the receiving State provided that such participation is permitted by that State.
- 5. The provisions of this article shall not affect bilateral or multilateral agreements concerning social security concluded previously and shall not prevent the conclusion of such agreements in the future.

9.4.3 Abuse of Diplomatic Immunities

- Under *VCDR* Art 9, if a diplomat abuses their privileges and immunities, the receiving state may, at any time, declare that the head of the mission or any other member of the mission is *persona non grata*
 - The sending state must then recall the person, or terminate their functions (if this is not completed in a reasonable period of time, then the receiving state may treat the person may treat the person as no longer enjoying diplomatic privileges and immunities) (reasons do not have to be given)
 - The sending state is under an obligation to recall the person from the mission before they are forcibly removed by the receiving state after a reasonable period of time

- 1. The immunity from jurisdiction of diplomatic agents and of persons enjoying immunity under article 37 may be waived by the sending State.
- 2. Waiver must always be express.
- 3. The initiation of proceedings by a diplomatic agent or by a person enjoying immunity from jurisdiction under article 37 shall preclude him from invoking

immunity from jurisdiction in respect of any counterclaim directly connected with the principal claim.

- 4. Waiver of immunity from jurisdiction in respect of civil or administrative proceedings shall not be held to imply waiver of immunity in respect of the execution of the judgement, for which a separate waiver shall be necessary.
- Under *VCDR* Art 32, the sending state may waive the immunity of a diplomatic agent, but this must be express
 - A waiver relating to civil and administrative jurisdiction does not imply a waiver of immunity in respect of the execution of the judgement, for which a separate waiver is necessary, and vice versa
- Waiver can sometimes be waived with respect to car accidents; e.g., Dickinson v Del Solar [1930] 1 KB 376 (a waiver of immunity in relation to civil proceedings), and Georgian Diplomat in Washington D.C. (1998) (a waiver of immunity in relation to criminal proceedings)

Dickinson v Del Solar [1930] 1 KB 376

This case involved a Peruvian diplomat running over and subsequently injuring Mr Dickinson in his car. Ordinarily in civil proceedings, the diplomat would have civil immunity. However, the Peruvian government waived the diplomat's immunity in relation to civil proceedings, allowing Mr Dickinson to sue the diplomat for damages. The court held that the waiver of immunity was valid and that Mr Dickinson could proceed with his claim against the diplomat, as it was a sovereign privilege that the Peruvian government was exercising.

Georgian Diplomat in Washington D.C. (1998)

In this case, a diplomat was intoxicated and speeding whilst driving, subsequently crashing his car and killing a young person. The US Department of State requested Georgia waive criminal immunity, and as such, Georgia invoked Art 32 and waived criminal immunity. However, as there had been no waiver of civil immunity, the plaintiff's relatives were unsuccessful in claiming damages against the diplomat in civil proceedings.

- 1. Every person entitled to privileges and immunities shall enjoy them from the moment he enters the territory of the receiving State on proceeding to take up his post or, if already in its territory, from the moment when his appointment is notified to the Ministry for Foreign Affairs or such other ministry as may be agreed.
- 2. When the functions of a person enjoying privileges and immunities have come to an end, such privileges and immunities shall normally cease at the moment when he leaves the country, or on expiry of a reasonable period in which to do so, but shall subsist until that time, even in case of armed conflict. However, with respect to acts performed by such a person in the exercise of his functions as a member of the

mission, immunity shall continue to subsist.

- 3. In case of the death of a member of the mission, the members of his family shall continue to enjoy the privileges and immunities to which they are entitled until the expiry of a reasonable period in which to leave the country.
- 4. In the event of the death of a member of the mission not a national of or permanently resident in the receiving State or a member of his family forming part of his household, the receiving State shall permit the withdrawal of the movable property of the deceased, with the exception of any property acquired in the country the export of which was prohibited at the time of his death. Estate, succession and inheritance duties shall not be levied on movable property the presence of which in the receiving State was due solely to the presence there of the deceased as a member of the mission or as a member of the family of a member of the mission.
- Under *VCDR* Art 39(1), diplomatic agents enjoy privileges and immunities from the moment they enter the territory of the receiving state
- Under *VCDR* Art 39(2), when the functions of a person enjoying immunities come to an end, the immunities cease the moment he or she leaves the country
 - However, immunity ratione materiae continues to subsist with respect to acts performed by the person in the exercise of his or her functions as a member of the mission
 - When the diplomat leaves the country, they are no longer protected by a personal immunity, and are instead only protected by a residual functional immunity for the acts that they had performed in the exercise of their functions as a member of the mission
 - This immunity applies both with respect to civil and criminal proceedings
 - To escape civil/criminal prosecution, a diplomat must characterise their actions as within the scope of their functions as a member of the mission

Topic 10

State Responsibility I

- The law of state responsibility is a system of rules in international rule that addresses the consequences of wrongdoing by states
- · These are secondary rules of liability, to accompany primary rules of obligation
 - Primary rules are those that determine whether a state has acted wrongfully
 - Secondary rules are those that determine the consequences of wrongful acts
- The laws of state responsibility have largely been codified in the 2001 Articles on State Responsibility for Internationally Wrongful Acts (ARSIWA/Articles on State Responsibility (ASR))
 - These articles are without prejudice to international criminal jurisdiction
 - Whilst they are not set out in a convention like the Vienna Convention on the Law of Treaties, they are still mostly a codification, with some articles now being considered customary international law
 - ARSIWA is also without prejudice to individual criminal responsibility, and the responsibility of international organisations

10.1 General Principles of State Responsibility

- State responsibility is a general regime of liability that applies to any breach of international law
 - However, if a source of primary law (e.g., a treaty) provides for a specific regime of liability, that regime will apply instead with the effect of displacing the laws of state responsibility under ARSIWA Art 55
- ARSIWA is agnostic as to the nature of the obligation breached or the context in which it
 is being applied, as it merely provides guidance on what happens after a breach occurs

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 55

Lex specialis

These articles do not apply where and to the extent that the conditions for the existence

of an internationally wrongful act or the content or implementation of the international responsibility of a State are governed by special rules of international law.

- The responsibility of a state may arise if: (all of these elements must be established)
 - An act or omission is attributed to a state (noting that states often conduct their affairs through organs)
 - * It must be determined whether the actions of an entity are attributable to the state
 - The act or omission breaches international law
 - * This refers to the breach of a primary obligation (e.g., custom, treaty, etc.; and the applicable standard of conduct)
 - * These obligations are additionally obligations of result (i.e., obligations that are made under a treaty)
 - The state is not able to raise any defence for the wrongful act/omission
 - * There is no excuse in 'circumstances precluding wrongfulness' (e.g., self-defence, necessity, etc.)
 - Another state invokes the responsibility of the wrongful state
 - * Usually, only states that are injured by the acts of another state are able to invoke standing

10.2 Attribution

- Since states conduct their affairs through individuals, rules of attribution are necessary to determine which actors and what conduct will give rise to state responsibility
- However, there are situations where states can be directly responsible (e.g., where a state
 fails to take certain actions); in these cases, the rules of attribution are not necessary and
 thus do not apply

Corfu Channel [1949] ICJ Rep 4

This case related to Syria's damage of UK naval vessels as they passed through the Corfu channel and the international strait in Albanian territorial waters. The ICJ held that Albania was responsible for failing to warn of the presence of the sea mines that the UK naval vessels had struck and were subsequently damaged by. Additionally, it was not necessary to consider why the mines had not been removed nor why they were there in the first place, as it was sufficient to note that they were there and had not been removed, and that no warning had been given.

"Every State's obligation not to allow knowingly its territory to be used for acts contrary to the rights of other States" (i.e., if a state is aware of the presence of danger, they must warn other states).

10.2. ATTRIBUTION 165

Trail Smelter (1938/1941) III RIAA 1905

This was a dispute between Canada and the US. Canada was held responsible for failing to prevent pollution from a metals smelter in British Columbia, causing damage to farms in Washington State (within the US). The smelter belched out sulphur dioxide, which reacted with water to form sulfuric acid, which fell as acid rain, thereby damaging farms. Canada and the US agreed to resolve the dispute through international arbitration, which found that Canada was responsible for the wrongful act, as they had failed to prevent the occurrence of that wrongful act.

This case demonstrates that states have the responsibility to ensure that activities within their jurisdiction or control do not cause damage to the environment of other States or to areas beyond the limits of their natural jurisdiction.

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 4

Conduct of organs of a State

- 1. The conduct of any State organ shall be considered an act of that State under international law, whether the organ exercises legislative, executive, judicial or any other functions, whatever position it holds in the organization of the State, and whatever its character as an organ of the central Government or of a territorial unit of the State.
- 2. An organ includes any person or entity which has that status in accordance with the internal law of the State.
- Under ARSIWA Article 4, the conduct can be measured at any level of government (e.g., local, state, federal, etc.), but will be attributable to the national government if an entity is part of the state, its actions will constitute the actions of the state

Immunity from Legal Process Advisory Opinion [1999] ICJ Rep 62

In this case, the UN Special Rapporteur's immunity was not upheld by the Malaysian courts in relation to a statement made in the International Commercial Arbitration. The special rapporteur was a former Malaysian judge. "According to a well-established rule of international law, the conduct of any organ of a state [including the courts of the state] must be regarded as an act of that State." The Court held that there was a breach of international law by Malaysia, and that the wrongful conduct was attributable to Malaysia as it was the conduct of their courts, which are organs of the Malaysian state.

Kalgoorlie Riots Incident (1934)

This is an example of Australian state practice. There were attacks on foreign nationals on the Kalgoorlie goldfields in Western Australia. As the attacks were not prevented by the WA government, the Commonwealth government was held responsible by means of being responsible for the actions of the WA government. The WA government, as the executive of a state of Australia, was held to be an organ of the Australian State.

10.2.1 Excess of Authority or Contravention of Instructions

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 7

Excess of authority or contravention of instructions

The conduct of an organ of a State or of a person or entity empowered to exercise elements of the governmental authority shall be considered an act of the State under international law if the organ, person or entity acts in that capacity, even if it exceeds its authority or contravenes instructions.

- Under ARSIWA Article 7, states are still responsible/attributable for the actions of their
 organs if the organs exceed their authority or contravene instructions
- ARSIWA Article 7 has been interpreted as considering whether an organ was acting with
 'apparent authority' (i.e., whether the conduct was unauthorised but still official, or
 whether it was private conduct removed from the scope of official functions)
- If a conduct is purely private, and the state is not involved at all, then the act cannot be attributed to the state (e.g., a uniformed police officer who is off duty and commits a crime will be attributable to a state as they can be considered as acting with apparent authority, even if they were not); the courts have erred towards almost always attributing the conduct to the state, except when it is glaringly not

Youmans v Mexico (1926) IV RIAA 110

Youmans was a US national who was working in Mexico and helping to build a tunnel. A large number of Mexican nationals had been engaged to work on the project, and disputes arose over the wages paid to the workers, resulting in a riot breaking out. Over 1,000 people attacked the house Youmans was at, and caused his death when the local troops, who had been called to restore order, had opened fire on the rioters. The US claimed \$50,000 in damages from Mexico, as the perpetrators were not sufficiently punished.

The Mexican soldiers had been acting in excess of their authority and their instructions, but the claims tribunal held this did not matter. "Soldiers inflicting personal injuries or committing wanton destruction or looting always act in disobedience of some rules laid down by superior authority. There could be no liability whatever for such misdeeds if... acts committed by soldiers in contravention of instructions must always be considered as personal acts." As such, this case holds that it is sufficient to establish attribution even if entities of a state are acting beyond their authority.

Caire Claim (1929) 5 ADPIL Cases 146

A French national was killed in an attempted extortion by two Mexican military officers who had been acting *ultra vires*, as they had attempted to extort money from the French national. The *ultra vires* actions of the officers was held to be irrelevant by the tribunal in determining attribution. "The two officers, even if they are deemed to have acted outside their competence…and even if their superiors countermanded an order, have involved the responsibility of the State, since they acted under cover of their status as officers and used

10.2. ATTRIBUTION 167

means placed at their disposal on account of that status." Here, the officers had been wearing their official uniforms, had taken Caire to an army barracks, and had used their military weapons, supporting the argument for attribution and the notion of apparent authority (i.e., it is irrelevant that they were acting beyond their authority, if it appeared that they were acting within the bounds of their authority).

10.2.2 Actions of Non-Organs

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 5

Conduct of persons or entities exercising elements of governmental authority

The conduct of a person or entity which is not an organ of the State under article 4 but which is empowered by the law of that State to exercise elements of the governmental authority shall be considered an act of the State under international law, provided the person or entity is acting in that capacity in the particular instance.

- If a non-organ of a state has been empowered by the state to exercise government functions, attribution will be established (this reflects the notion that states are increasingly outsourcing governmental functions to non-state groups)
- This provision accounts for the para-statal (not really part of the state; quasi-state) entities that exercise governmental authority rather than state organs, such as statutory corporations and even some private companies entitled by law to exercise functions of a public character (e.g., corporations contracted to provide prison or immigration detention services that are empowered under law)
- However, there must be a statute expressly authorising this
- Usually, the conduct of private persons is not attributable to a state, but there are several situations in which this can occur (as individuals or companies that are not organs are not, under ARSIWA Article 5 authorised to exercise elements of governmental authority)

10.2.3 Conduct Directed or Controlled by a State

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 8

Conduct directed or controlled by a State

The conduct of a person or group of persons shall be considered an act of a State under international law if the person or group of persons is in fact acting on the instructions of, or under the direction or control of, that State in carrying out the conduct.

- ARSIWA Article 8 holds that if a state directs or controls the conduct of a person or group
 of persons, then the conduct will be attributed to the state
- It generally addresses situations where individuals or groups are given instructions by a state to perform certain tasks (e.g., auxiliaries, mercenaries, private military contractors, etc.)

- Conduct will be attributable to the state only if the state directed or controlled the specific operation in question, and the conduct complained of was an integral part of that operation, as set out in the *ILC Commentary on Article 8*
 - This follows the test of 'effective control' in Nicaragua v US [1986] ICJ Rep 14, as opposed to the 'overall control' test in Tadić (1999) ICTY

Military and Paramilitary Activities in and against Nicaragua [1986] ICJ Rep 14

See Page 6 for further details on the facts of this case. The US had provided planning, direction and support for certain operation carried out by Contra rebels against the Nicaraguan government. However, US financing, organising, training, supplying and equipping of the Contra rebels, selection of its targets, and the planning of the whole of its operation was not sufficient to attribute the acts of the Contras to the US, and as such, Contra could not be equated, for legal purposes, with an organ of the US government.

There was "no effective control of the operations in the course of which the alleged violations were committed"; as such, general dependence and support of a state was not sufficient. However, the US was still responsible for its own wrongful acts, e.g., violating the principle of non-intervention and the obligation not to use force.

Genocide Case (Bosnia/Herzegovina v Serbia/Montenegro) [2007] ICJ Rep 43

This case affirms the test of effective control as set out in *Military and Paramilitary Activities in and against Nicaragua* [1986] ICJ Rep 14. It concerned a series of massacres committed by the Army of Republika Srpska (VRS) in the Srebrenica area (Republika Srpska was a breakaway Serbian entity in Bosnia and Herzegovina). The key question in this case was whether Serbia and Montenegro (FRY) were internationally responsible for the acts of VRS?

The ICJ answered in the negative, as there was no direct FRY participation, VRS did not have the status of an organ of the government of FRY, nor was it equated with an organ of the state because of its dependence on the state, and as such, there was no 'complete dependence'.

The words 'no effective control' demonstrate that *Military and Paramilitary Activities in and against Nicaragua* [1986] ICJ Rep 14 was followed in considering *ARSIWA* Article 8, as as looking at the evidence, it could not be established that FRY was involved in each of the relevant operations which involved the violations of international law. It therefore isn't sufficient that there was a general relationship between FRY and VRS, and that the court must look specifically at each operation and see if the effective control test is satisfied. Control must be 'in respect of each operation in which the alleged violations occurred, not generally in respect of the overall actions taken by the persons or groups of persons having committed the violations'.

10.2. ATTRIBUTION 169

10.2.4 Absence of Official Authorities

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 9

Conduct carried out in the absence or default of the official authorities

The conduct of a person or group of persons shall be considered an act of a State under international law if the person or group of persons is in fact exercising elements of the governmental authority in the absence or default of the official authorities and in circumstances such as to call for the exercise of those elements of authority.

- Under ARSIWA Article 9, an absence of official authorities, such as in a situation of unrest
 or revolution, the wrongful acts of people or groups who have stepped in to provide
 elements of governmental authority will be attributed to the state
- An example is the 1978/9 Islamic revolution in Iran, where the government was overthrown; Revolutionary Guards continued to perform official functions (e.g., migration, customs, immigration, etc. at Tehran airport), and the actions of these guards were attributed to the state

10.2.5 Insurrectional Movements

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 10

Conduct of an insurrectional or other movement

- 1. The conduct of an insurrectional movement which becomes the new Government of a State shall be considered an act of that State under international law.
- 2. The conduct of a movement, insurrectional or other, which succeeds in establishing a new State in part of the territory of a pre-existing State or in a territory under its administration shall be considered an act of the new State under international law.
- 3. This article is without prejudice to the attribution to a State of any conduct, however related to that of the movement concerned, which is to be considered an act of that State by virtue of articles 4 to 9.
- As a general principle under ARSIWA Article 10, the conduct of an insurrectional or other movement is not attributable to the state, unless the movement becomes the new government of a state
 - If a revolutionary is unsuccessful, then its actions cannot ever be attributed to the state
 - If the revolutionary is successful and forms a new government, then international law will attribute the actions of the revolutionary to the state from the instance that the revolutionary movement began

Bolivar Railways Company Case (1903) IX RIAA 445

Venezuela was held responsible for services supplied by a company to a successful revolutionary regime. "The nation is responsible for the obligations of a successful revolution from its beginning, because in theory, it represented ab initio a changing national will, crystallizing in the finally successful result ..."

Short v Iran (1987) Iran-USCTR 76 (Iran/US Claims Tribunal)

Mr Short was a US national forced to leave Iran as a result of unrest in Iran following the Islamic revolution of 1978/9, contrary to international law. This case considered an issue of attribution; here, Mr Short was unable to identify any agent of the movement that had forced him to leave. "The acts of supporters of a revolution cannot be attributed to the [new] government following the success of the revolution just as the acts of supporters of an existing government are not attributable to the government."

10.2.6 Conduct Acknowledged and Adopted by a State

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 11

Conduct acknowledged and adopted by a State as its own

Conduct which is not attributable to a State under the preceding articles shall nevertheless be considered an act of that State under international law if and to the extent that the State acknowledges and adopts the conduct in question as its own.

- The text of ARSIWA Article 11 uses 'acknowledges and adopts', which is distinguished from mere 'support and encouragement'
- Whilst the acts of private individuals or entities may not be attributable to a state, the state may nonetheless be directly responsible for failing to meet its obligations if there is injury to foreign nationals or foreign national interests

US Diplomatic and Consular Staff in Tehran [1980] ICJ Rep 3

This case involved the seizure of the US embassy in Tehran by Iranian students, who took the diplomatic staff as hostages. The Iranian government did not intervene to stop the seizure, nor did it condemn the actions of the students. The ICJ held that Iran was responsible for the wrongful acts of the students, as it had acknowledged and adopted their conduct as its own (had Iran not done so, it is likely that they would not have been considered as acts of the state).

"The approval given [to the occupation of the US Embassy by militants] by the Ayatollah Khomeini and other organs of the Iranian State, and the decision to perpetuate them, translated continuing occupation of the Embassy and detention of the hostages into acts of that State."

Home Missionary Society Claim (1921) VI RIAA 42

This case was a claim by the US against Britain on behalf of a religious group for losses in the British Colony of Sierra Leone in 1898 from a rebellion prompted by the imposition of a 'hut tax'. A number of missionaries were the victims of attacks in Sierra Leone that flowed from the British government's imposition of a poll tax (which was highly regressionary).

The tribunal held that a government can't be liable as the insurer of lives and property under these particular circumstances, and as such, it could not be found that Britain was in breach of any good faith, any negligence in suppressing the rebelling, and thus Britain was not therefore responsible itself for failing to meet the obligations.

"It is a well-established principle of international law that no government can be held responsible for the acts of rebellious bodies of men committed in violation of its authority, where it is guilty of no breach of good faith, or of no negligence in suppressing insurrection."

Asian Agricultural Products (1991) CSID Case No. ARB/87/3

In this case, Sri Lanka was held responsible for damage to a seafood factor in Sri Lanka owned by a Hong Kong company. Whilst it was unclear whether the government or LTTE had attacked the factor, Sri Lanka had failed to exercise due diligence to protect the foreign owned property. The Sri Lankan military had conducted counterinsurgency measures against the Tamil Tigers (LTTE), damaging the factory. At the time, the factory was under the exclusive control of the Sri Lankan forces, and so they had failed to exercise due diligence (by failing to take best efforts to protect foreign owned property).

"It is a generally accepted rule of international law ... that ... [a] state on whose territory an insurrection occurs is not responsible for loss or damage sustained by foreign investors unless it can be shown that the government of that state failed to provide the standard of protection required, either by treaty, or under customary law" (or if it can be shown that the government itself was responsible).

10.3 Circumstances Precluding Wrongfulness (Defences)

- Under ARSIWA Article 20, a state may consent (in advance) to an act that would otherwise be illegal
- Under ARSIWA Article 21, acts undertaken in self-defence are not wrongful if they are taken in conformity with the UN Charter
- Under ARSIWA Article 22, if they meet certain requirements, countermeasures will be regarded as a lawful exercise of self-help

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 20

Consent

Valid consent by a State to the commission of a given act by another State precludes the wrongfulness of that act in relation to the former State to the extent that the act remains within the limits of that consent.

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 21

Self-defence

The wrongfulness of an act of a State is precluded if the act constitutes a lawful measure of self-defence taken in conformity with the Charter of the United Nations.

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 22

Countermeasures in respect of an internationally wrongful act

The wrongfulness of an act of a State not in conformity with an international obligation towards another State is precluded if and to the extent that the act constitutes a countermeasure taken against the latter State in accordance with chapter II of part three.

 Since all states are regarded as equal under public international law (there is no central authority), a proportionate countermeasure as allowed under ARSIWA Article 22 is a means of bringing a wrongful act to an end

Law Debenture Trust Corpn plc v. Ukraine [2023] UKSC 11

"If the availability of countermeasures at the level of international law were accepted as giving rise to a defence in domestic law, national courts would become the arbiter of inter-state disputes governed by international law which is not their function."

This case involved a US\$3 bn. loan to Ukraine from Russia in 2013. Following the annexation of Crimea, Ukraine refused to pay the loan. The UK Supreme Court held that the defence of countermeasures was not available in domestic law, as it would be contrary to the principle of state immunity. They also held that courts cannot sit in judgement of the acts of sovereign states, as this would be contrary to the principle of state sovereignty.

- Under ARSIWA Article 23, force majeure holds that a state will not be responsible where it
 is not able to comply with an international obligation for reasons entirely beyond its
 control
- Under ARSIWA Article 24, distress holds that a state will not be responsible where it is not able to comply with an international obligation in order to save the lives of persons or to protect property in imminent peril
- Under ARSIWA Article 25, necessity holds that a state will not be responsible where it is not able to comply with an international obligation in order to safeguard an essential interest against a grave and imminent peril

· All of the above defences are complete defences, and are not partial defences

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 23

Force majeure

- 1. The wrongfulness of an act of a State not in conformity with an international obligation of that State is precluded if the act is due to force majeure, that is the occurrence of an irresistible force or of an unforeseen event, beyond the control of the State, making it materially impossible in the circumstances to perform the obligation.
- 2. Paragraph 1 does not apply if:
 - (a) the situation of force majeure is due, either alone or in combination with other factors, to the conduct of the State invoking it; or
 - (b) the State has assumed the risk of that situation occurring.

Rainbow Warrior Ruling (1986) XIX RIAA 199

This was a dispute between France and New Zealand over the sinking of the *Rainbow Warrior* ship, which was a Greenpeace vessel, in Auckland as a result of explosive devices placed on board by French agents. A Dutch citizen was drowned in the attack. Two French agents (Major Mafart and Captain Prieur) were arrested, and plead guilty to manslaughter in the New Zealand courts, for which they were sentenced to 10 years' imprisonment each. This gave rise to a dispute between France and New Zealand; France insisted that the punishment was too harsh, noting that at the time Greenpeace was protesting against French nuclear testing in the Pacific Ocean.

The dispute went to the UN Secretary General, who issued a ruling in his function as a conciliator (not as a judge). He held that France was to convey an apology to New Zealand for the attack that was contrary to international law, and that France was to pay compensation of US\$7m. Additionally, the French agents in New Zealand detention were to be transferred to an isolated island outside of Europe for a period of 3 years, before their subsequent release. Any differences that arose were to be referred to binding arbitration.

Rainbow Warrior Arbitration (1990) XX RIAA 215

This is the sequel to the *Rainbow Warrior Ruling*. Before the three years' detention was completed, Mafart was evacuated to France for medical treatment (without the consent of New Zealand or an examination by New Zealand doctors). Prieur was also repatriated to France as she was expecting her first child. New Zealand held that these were breaches of the ruling, but France held that it was not and invoked a range of defences.

France cast force majeure here as a defence in absolute terms, but this was rejected by the tribunal as force majeure does not apply in circumstances such as this where compliance was more difficult or burdensome. The tribunal also held that distress had to be distinguished from necessity, stating that "[w]hat was involved in distress was a choice

between a departure from an international obligation and a serious threat to the life or physical integrity of a State organ or of persons entrusted to its care. Necessity, on the other hand, was concerned with departure from international obligations on the ground of vital interests of the State" (France had raised this defence on the grounds that they had to protect the wellbeing of the individuals). The tribunal held that the removal of Mafart was not wrongful, as he required medical treatment that was not available on the island, but the failure to return him was wrongful. The tribunal also held that the removal of Prieur was wrongful, as no medical complications had arisen in her pregnancy. From these cases, the defences are hard to establish, and tend to apply in relatively extreme circumstances.

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 24

Distress

- 1. The wrongfulness of an act of a State not in conformity with an international obligation of that State is precluded if the author of the act in question has no other reasonable way, in a situation of distress, of saving the author's life or the lives of other persons entrusted to the author's care.
- 2. Paragraph 1 does not apply if:
 - (a) the situation of distress is due, either alone or in combination with other factors, to the conduct of the State invoking it; or
 - (b) the act in question is likely to create a comparable or greater peril.

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 25

Necessity

- Necessity may not be invoked by a State as a ground for precluding the wrongfulness of an act not in conformity with an international obligation of that State unless the act:
 - (a) is the only way for the State to safeguard an essential interest against a grave and imminent peril; and
 - (b) does not seriously impair an essential interest of the State or States towards which the obligation exists, or of the international community as a whole.
- 2. In any case, necessity may not be invoked by a State as a ground for precluding wrongfulness if:
 - (a) the international obligation in question excludes the possibility of invoking necessity; or
 - (b) the State has contributed to the situation of necessity.

10.4 Invocation, Standing and Implementation

• ARSIWA Article 42 holds that a state may invoke the responsibility of another state if the obligation is owed to (a) that state individually (i.e., the breach of a bilateral treaty), or (b) a group of states including the state, or the international community as a whole, and the breach specially affects the invoking state or radically changes the position of all states with respect to the further performance of the obligation

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 42

Invocation of responsibility by an injured State

A State is entitled as an injured State to invoke the responsibility of another State if the obligation breached is owed to:

- (a) that State individually; or
- (b) a group of States including that State, or the international community as a whole, and the breach of the obligation:
 - (i) specially affects that State; or
 - (ii) is of such a character as radically to change the position of all the other States to which the obligation is owed with respect to the further performance of the obligation.
- ARSIWA Article 48 outlines some exceptions to the rules of invocation set out in Article
 42
- A state other than an injured state is entitled to invoke the responsibility of another state
 if (a) the obligation is owed to a group of states, including that state, and is established for
 the protection of a collective interest or (b) the obligation is owed to the international
 community as a whole

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 48

Invocation of responsibility by a State other than an injured State

- 1. Any State other than an injured State is entitled to invoke the responsibility of another State in accordance with paragraph 2 if:
 - (a) the obligation breached is owed to a group of States including that State, and is established for the protection of a collective interest of the group; or
 - (b) the obligation breached is owed to the international community as a whole.
- 2. Any State entitled to invoke responsibility under paragraph 1 may claim from the responsible State:
 - (a) cessation of the internationally wrongful act, and assurances and guarantees of non-repetition in accordance with article 30; and

- (b) performance of the obligation of reparation in accordance with the preceding articles, in the interest of the injured State or of the beneficiaries of the obligation breached.
- 3. The requirements for the invocation of responsibility by an injured State under articles 43, 44 and 45 apply to an invocation of responsibility by a State entitled to do so under paragraph 1.

Belgium v Senegal

"The common interest in compliance with the relevant obligations under the Convention against Torture implies the entitlement of each State party to the Convention to make a claim concerning the cessation of an alleged breach by another State party."

Whilst Belgium had nothing to do with the alleged torture being carried out by Senegal, but was still able to invoke state responsibility on the grounds that Senegal owed an obligation to the international community as a whole.

Whaling in the Antarctic Case [2014]

Australia was successful in arguing that Japan had breached international conventions that regulated whaling in the high seas. Australia mounted a case not on the basis that Japan's whaling had any effect on Australia, but instead on Japan's breach of the convention in general, which was sufficient to allow any party state to take action against Japan. Whilst the issue was not heard before the ICJ as the parties resolved the dispute, this case is not evidence supporting *ARSIWA* Article 48, and moreover demonstrates its wide acceptance as customary international law.

- ARSIWA Article 46 holds that when there are several states injured by the same internationally wrongful act, each injured State may separately invoke the responsibility of the State which has committed the internationally wrongful act
- ARSIWA Article 47 holds that when several states are responsible for the same internationally wrongful act, the responsibility of each State may be invoked in relation to that act

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 46

Plurality of injured States

Where several States are injured by the same internationally wrongful act, each injured State may separately invoke the responsibility of the State which has committed the internationally wrongful act.

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 47

Plurality of responsible States

1. Where several States are responsible for the same internationally wrongful act, the

responsibility of each State may be invoked in relation to that act.

2. Paragraph 1:

- (a) does not permit any injured State to recover, by way of compensation, more than the damage it has suffered;
- (b) is without prejudice to any right of recourse against the other responsible States.

10.5 Consequences of Wrongful Acts (Remedies)

Chorzow Factory Case (1928) PCIJ (Ser. A) No. 17

This case states that a wrongful state must make reparation.

""... reparation must, as far as possible, wipe out all the consequences of the illegal act and re-establish the situation which would, in all probability, have existed if that act had not been committed. Restitution in kind, or, if this is not possible, payment of a sum corresponding to the value which a restitution in kind would bear; the award, if need be, of damages for loss sustained which would not be covered by restitution in kind or payment in place of it — such are the principles which should serve to determine the amount of compensation due for an act contrary to international law'

- Reparation refers to the overriding concept to capture the various remedies available to a state that has suffered a wrongful act
- Restitution is the primary obligation of a state; if restitution is not possible, the state may be entitled to compensation
- The general principles of reparation have now been broken down in *ARSIWA* Arts 31, 34-37
- Article 31 holds that the responsible state is under an obligation to make full reparation for the injury caused by the internationally wrongful act

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 31

Reparation

- 1. The responsible State is under an obligation to make full reparation for the injury caused by the internationally wrongful act.
- 2. Injury includes any damage, whether material or moral, caused by the internationally wrongful act of a State.
- Article 34 holds that full reparation for the injury caused by the internationally wrongful
 act shall take the form of restitution, compensation and satisfaction, either singly or in
 combination

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 34

Forms of reparation

Full reparation for the injury caused by the internationally wrongful act shall take the form of restitution, compensation and satisfaction, either singly or in combination, in accordance with the provisions of this chapter.

Article 35 holds that restitution is the primary obligation of a state, where a state
responsible for an internationally wrongful act is under an obligation to make restitution;
i.e., to re-establish the situation which existed before the wrongful act was committed
provided that restitution is not materially impossible

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 35

Restitution

A State responsible for an internationally wrongful act is under an obligation to make restitution, that is, to re-establish the situation which existed before the wrongful act was committed, provided and to the extent that restitution:

- (a) is not materially impossible;
- (b) does not involve a burden out of all proportion to the benefit deriving from restitution instead of compensation
- Article 36 provides for compensation, for damage that is not made good by restitution

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 36

Compensation

- The State responsible for an internationally wrongful act is under an obligation to compensate for the damage caused thereby, insofar as such damage is not made good by restitution.
- 2. The compensation shall cover any financially assessable damage including loss of profits insofar as it is established.
- Article 37 provides for satisfaction, which is a form of reparation that is not restitution or compensation
 - This may include an acknowledgement of the breach, an expression of regret, a formal apology or another appropriate modality
 - Whilst it is more symbolic, it generally also entails a declaration of wrongdoing by a state
 - Satisfaction shall not be out of proportion to the injury and may not take a form humiliating to the responsible state
 - This is generally the most common form of remedy (it is rare that compensation is paid, and when it is paid, it is not large in terms of quantum)

2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 37

Satisfaction

- 1. The State responsible for an internationally wrongful act is under an obligation to give satisfaction for the injury caused by that act insofar as it cannot be made good by restitution or compensation.
- 2. Satisfaction may consist in an acknowledgement of the breach, an expression of regret, a formal apology or another appropriate modality.
- 3. Satisfaction shall not be out of proportion to the injury and may not take a form humiliating to the responsible State.

Topic 11

State Responsibility II

This section of the State Responsibility topic is concerned with diplomatic protections.

- The theory of responsibility refers to the mistreatment of a foreign national being an injury to the national state, which is regarded as the protector of its citizens on the plane of public international law and thus may exercise diplomatic protection
- It was mentioned in *Panevezys-Saldutiskis Railway Case* (1938) PCIJ (ser A/B) No 76 that "by resorting to diplomatic action or international judicial proceedings on his behalf, a State is in reality asserting its own right, the right to ensure in the person of its nationals respect for the rules of international law"
- International law does not regulate the treatment of foreign nationals in all areas (e.g., lawful discrimination in relation to voting, employment in the public service and ownership of property are not mistreatments of foreign nationals)
- This area tends to have primary relevance to the treatment of foreign nationals in connection with criminal prosecution and custody, admission and expulsion, and expropriation of property
- John Dugard held that "Diplomatic protection provides a potential remedy for the
 protection of millions of aliens who have no access to remedies before international bodies
 and a more effective remedy to those who have access to the often ineffectual remedies
 contained in international human rights instruments."
- Ultimately, diplomatic protection is based on the theory that states are injured when their nationals are injured, and so the states are entitled to complain about this if they wish to

11.1 Discretionary Nature of Diplomatic Protection

- Diplomatic protection refers to measures that resort to diplomatic action or another
 means of peaceful settlement by a state adopting in its own right the cause of its national
 in respect of an injury to that national caused by an intentionally wrongful act of another
 state
- This is distinct from the immunity granted to diplomats

- States can resort to any form of diplomatic action, which can range from a simple diplomatic communication to the commencement of proceedings in an international court or tribunal if there is jurisdiction and the invoking state has standing
- If a national is harmed by a foreign state, their home state may elect to take up a claim if they wish to do so, but they are not obliged to do so
- The laws on diplomatic protection are largely governed by the 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection
 - The term 'Draft' is used to indicate that the articles are complete but may not have the binding force of a treaty or another instrument of international law
- A core principle of international law is that states are not obliged to exercise diplomatic
 protection, and they may choose to do so or not, following the approach taken in *Barcelona Traction* [1970] ICJ Rep 3

Barcelona Traction [1970] ICJ Rep 3

The State must be viewed as the sole judge to decide whether its protection will be granted, to what extent it is granted, and when it will cease. It remains in this respect a discretionary power the exercise of which may be determined by considerations of a political or other nature, unrelated to the particular case. Since the claim of the State is not identical with that of the individual or corporate person whose cause is espoused, the State enjoys complete freedom of action.

 Whilst under international law states are not obliged to exercise diplomatic protection, they may be compelled to do so by their own domestic law, as seen in the cases of Abbasi v Secretary of State [2002] EWCA Civ 1598 and Hicks v Ruddock (2007) 156 FCR 574

Abbasi v Secretary of State [2002] EWCA Civ 1598

This case concerned the detention of a British citizen, Mr. Abbasi, in Guantanamo Bay. The Court of Appeal held that whilst the UK government had no obligation under international law or domestic law to protect their national generally, they had a duty to take steps to secure his release under administrative law, as it was an expectation that the UK government would at least *consider* making representations on his behalf to the US. By characterising this as an issue of administrative law, the court held that it was expected that the government would make those representations. In this case, it was determined on the evidence that the UK had satisfied the requirements under administrative law, and so Abbasi's claim was unsuccessful.

Hicks v Ruddock (2007) 156 FCR 574

In this case, David Hicks sought an order of judicial review of a decision made by the Australian government not to request for his release and return by the US from Guantanamo Bay. Hicks sought for *habeas corpus* and for a judicial review, which raise a similar question of administrative law as in *Abbasi v Secretary of State* [2002] EWCA Civ 1598.

Whilst these proceedings were commencing, a deal was reached, and Hicks was repatriated to Australia. In the early stages of the proceedings, the government submitted a motion seeking to dismiss the proceedings on the grounds that Hicks had no reasonable prospects of success, including by Tamberlin J holding that the Foreign Act of State doctrine (Section 9.3 on Page 145) should not apply in cases of a breach of a fundamental rule of international law, such as what occurred in this case.

The court was not able to consider the judicial review point due to the deal made that saw Hicks released, and so the argument made in the UK in *Abbasi v Secretary of State* [2002] EWCA Civ 1598 was not able to be evaluated in the context of Australian law. As such, there is no conclusive determination in Australian law on whether a similar argument of an exception to a state's choice to exercise diplomatic protection exists under administrative law and its expectation of due consideration.

11.2 Mistreatment of Foreign Nationals

11.2.1 Standard of Treatment

- This section broadly considers how bad the treatment of a foreign national must be before it can be considered a mistreatment that is actionable by the home state
- There are two prevailing standards of treatment: national treatment (preferred by developing states) and international minimum standard (preferred by developed states)
 - National Treatment refers to the notion that there is no mistreatment of a foreign national if they are treated the same as a local citizen of that nation
 - International Minimum Standard refers to the notion that irrespective of the laws of
 a nation, there is a certain minimum standard of treatment that foreign nationals
 can expect when in the territory of another state
- The international minimum standard is described in the following cases

Neer v Mexico (1926) 4 RIAA 60

This case concerned the killing of a US national, Paul Neer, by a group of armed men in Mexico, with attempts to prosecute the culprits being unsuccessful. The Commission held that:

[It] recognises the difficulty of devising a general formula for determining the boundary between an international delinquency of this type and an unsatisfactory use of power included in national sovereignty. It is ... possible to hold first that the propriety of governmental acts should be put to the test of international standards and second that the treatment of an alien in order to constitute an international delinquency should amount to an outrage to bad faith to wilful neglect of duty or to an insufficiency of governmental action so far short of international standards that every reasonable and impartial person would readily recognise its insufficiency.

In this case, a question arose as to whether there was mistreatment on account of the

failure of the Mexican authorities to take appropriate action to prosecute the culprits of the offence. Whilst this was difficult to enunciate, the Commission held that the answer to this question should be held to an international standard, which is a relatively undemanding standard.

Quintanilla (1926) 4 RIAA 60

This case concerned a Mexican national, Francisco Quintanilla, who had been taken into custody by US authorities following an alleged assault and was later found dead beside the road. However, the US authorities had no records of what had happened to him.

The government can be held liable if it is proven that it has treated him [the foreign national] cruelly, harshly, unlawfully; so much more it is liable if it can say only that it took him into custody...and that it ignores what happened to him.

From this case, it is seen that a state must account for the safety and whereabouts of a foreign national.

Loewen Group v US (2006) NAFTA Arbitration Tribunal

This case surrounded a Canadian company who was standing trial in the US for claims made in tort, and for other claims. They were a company that purchased funeral homes in the US at a price that was far below market value.

The legal basis of the US' argument was never clear (it was both contractual and tortious, for example), but Loewen Group nonetheless lost very badly in the US courts, and was subject to damages at \$500 million. Loewen Group then took the US to an arbitral tribunal under NAFTA, where there were protections for investments made by foreign nationals.

The tribunal considered the international minimum standard of treatment, as stated in Art 1105 of the NAFTA treaty. It held that the international minimum standards had been violated, as the US trials were a mess and were clearly biased against the Loewen group, rendering the verdict improper and discreditable.

The trial court permitted the jury to be influenced by persistent appeals to local favouritism as against a foreign litigant...the whole trial and its resultant verdict were clearly improper and discreditable and cannot be squared with minimum standards of treatment and fair and equitable treatment.

11.3 Admissibility Requirements

2001 Articles on State Responsibility for Internationally Wrongful Acts Article 44

Admissibility of claims

The responsibility of a State may not be invoked if:

- (a) the claim is not brought in accordance with any applicable rule relating to the nationality of claims;
- (b) the claim is one to which the rule of exhaustion of local remedies applies and any available and effective local remedy has not been exhausted.
- ARSIWA Art 44(a) sets out the requirement that an injured person must be a national of the claiming state
- ARSIWA Art 44(b) holds that before a state takes up a claim on behalf of a national, that
 national must have exhausted all local remedies available to them in the state that they
 were injured in

11.4 Nationality of Claims Requirement

 States may only exercise a right of diplomatic protection in relation to their nationals (natural persons, or legal persons such as corporations)

Re (Al Rawi and Others) Secretary of State [2006] EWCA Civ 1279

This case concerned an initial refusal of the UK to intervene with regard to British non-citizen residents detained by the US in Guantanamo Bay.

It is the long-standing policy of the UK Government not to offer consular or similar assistance to non-British Nationals...It should also be noted that the UK does not have the right to exercise diplomatic protection [in respect of non-nationals].

- Generally, it is a matter for states to determine the conditions for the grant of nationality, whether it's by place of birth (*jus soli*), by descent (*jus sanguinis*), or by naturalisation, with international law taking a hands-off approach to this
- Corporations generally have the nationality of the place of incorporation

2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 4

State of nationality of a natural person

For the purposes of the diplomatic protection of a natural person, a State of nationality means a State whose nationality that person has acquired, in accordance with the law of that State, by birth, descent, naturalization, succession of States or in any other manner,

not inconsistent with international law.

2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 8

Stateless persons and refugees

- 1. A State may exercise diplomatic protection in respect of a stateless person who, at the date of injury and at the date of the official presentation of the claim, is lawfully and habitually resident in that State.
- 2. A State may exercise diplomatic protection in respect of a person who is recognized as a refugee by that State, in accordance with internationally accepted standards, when that person, at the date of injury and at the date of the official presentation of the claim, is lawfully and habitually resident in that State.
- 3. Paragraph 2 does not apply in respect of an injury caused by an internationally wrongful act of the State of nationality of the refugee.
- 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Art 4 holds that it is a matter for states to determine the conditions for the grant of nationality
 - However, issues can arise as to the closest nationality if an individual has multiple nationalities, or if they are stateless or a refugee; otherwise, international law takes a hands-off approach
- 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Art 8 enables the state of habitual residence of a stateless person or refugee to take up a claim on their behalf, thereby plugging the gap that otherwise arises with respect to stateless people, and ensuring they are not exempted from the law on diplomatic protection

Nottebohm Case (Liechtenstein v Guatemala) [1955] ICJ Rep 4

This case concerned a German national, Friedrich Nottebohm, who had been living in Guatemala for many years and had established a successful business, and had acquired Liechtenstein's citizenship, despite only having a brother who was a resident of Lichtenstein with no other links to the country. Nottebohm subsequently returned to Guatemala, and in 1943, his property was seized as part of war measures, and he was arrested and delivered to US authorities. At the end of World War II, Nottebohm was refused re-entry to Guatemala, and Liechtenstein took up his case under diplomatic protection, on the basis of mistreat.

The ICJ held by 13:1 that the claim was inadmissible, as the nationality of claims requirement had not been satisfied. Whilst it was indeed for Liechtenstein to determine its rules relating to the acquisition of nationality, the ICJ held that it was not necessary to determine whether international law in general imposes any restrictions on states conferring nationality. It is international law which determines whether a state is entitled to exercise diplomatic protection, and to determine the jurisdiction of the court.

According to the practice of states, to arbitral and judicial decisions and to the opinion of writers, nationality is a legal bond having as its basis a social fact of attachment, a genuine connection of existence, interests and sentiments, together with the existence of reciprocal rights and duties.

Nottebohm's connection with Liechtenstein was tenuous at best, and the facts establish an absence of any bond of attachment with Liechtenstein, but on the contrary also demonstrate a long-standing and close connection with Guatemala. Generally, a genuine/effective link does not need to be established, but the law surrounding nationality is instead a relative one.

• In a postscript to Nottebohm Case (Liechtenstein v Guatemala) [1955] ICJ Rep 4, the ILC Commentary to 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection held that

Article 4 does not require a State to prove an effective or genuine link between itself and its national, along the lines suggested in the Nottebohm case, as an additional factor for the exercise of diplomatic protection, even where the national possesses only one nationality ... the Court did not intend to expound a general rule applicable to all states but only a relative rule according to which a state in Liechtenstein's position was required to show a genuine link between itself and Mr Nottebohm in order to permit it to claim on his behalf against Guatemala with whom he had extremely close ties.

11.4.1 Multiple Nationalities

- There are three situations that can arise with respect to individuals with multiple nationalities, as set out in 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Articles 6-7:
 - If they are a dual national, then both states can exercise diplomatic protection over an individual, following 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 6
 - If they are a dual national, if one of those states injures the individual then the other state can exercise diplomatic protection, following 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 7
 - * However, an exception applies if a nationality is predominant both at the date of the injury and of the claim, with the state of predominant connection then being able to make the claim, following 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 7

2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 6

Multiple nationality and claim against a third State

- 1. Any State of which a dual or multiple national is a national may exercise diplomatic protection in respect of that national against a State of which that person is not a national.
- 2. Two or more States of nationality may jointly exercise diplomatic protection in respect of a dual or multiple national.

2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 7

Multiple nationality and claim against a State of nationality

A State of nationality may not exercise diplomatic protection in respect of a person against a State of which that person is also a national unless the nationality of the former State is predominant, both at the date of injury and at the date of the official presentation of the claim.

11.5 Diplomatic Protection of Corporations

2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 9

State of nationality of a corporation

For the purposes of the diplomatic protection of a corporation, the State of nationality means the State under whose law the corporation was incorporated. However, when the corporation is controlled by nationals of another State or States and has no substantial business activities in the State of incorporation, and the seat of management and the financial control of the corporation are both located in another State, that State shall be regarded as the State of nationality.

• The test in 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 9 is a test of substance

Barcelona Traction Case (Belgium v Spain) [1970] ICJ Rep 3

Barcelona Traction was incorporated under Canadian law in 1911, whilst its main business was developing electricity supplies in Spain. The company was declared bankrupt by a Spanish court in 1948, resulting in financial losses for the company's shareholders, as well as damaging the company and entailing significant financial losses for the company. 88% of the shareholders of Barcelona Traction were Belgian nations, and so Belgium sought to exercise diplomatic protection on behalf of the shareholders and the company, after Canada declined to take up such a claim. Spain objected that Belgium did not have standing, and that the claim was inadmissible because of a failure to meet the nationality of claims requirement. Belgium argued that they had standing as the majority of the shareholders were of Belgian nationality.

When a state admits foreign investments or foreign nationals to its territory, whether natural or legal persons, it is bound to extend to them the protection of the law and assumes obligations concerning the treatment to be afforded to them. However, these obligations to the nationals of other states are not *erga omnes* obligations.

In this case, it is essential to establish whether the losses by the Belgian shareholders were suffered as a result of a breach of an obligation of which Belgium is a beneficiary. In deciding this, the court must consider the international legal significance of a domestic legal institution (i.e., the company). Here, the concept and structure of a limited liability company is based on the legal distinction between the company and the shareholder.

Despite this separate legal personality, a wrong done to a company often causes damage to shareholders.

However, the mere fact that damage is sustained by both the company and the shareholders does not mean that both are entitled to claim compensation; if a shareholder's interests are harmed by an injury to the company then the shareholder must look to the company to institute proceedings. However, the situation is different if the act complained of is aimed at the direct rights of the shareholders *qua* shareholders, such as the right to a dividend, the right to attend company meetings, the right to a share of the assets upon liquidation, etc.

The lifting of the corporate veil is an exceptional event in domestic and international law, but there are two situations in which the shareholder state could act:

- 1. Where the company ceases to exist (in which case shareholders can act) but in this case, while the company has lost all of its assets in Spain, and has been placed into receivership in Canada, it is not been liquidated and does have the capacity to take corporate action
- 2. The company's national state lacks capacity to take action; allocating corporate entities to states for purposes of diplomatic protection analogous with rules for nationality of individuals, however no absolute test of genuine connection has been found
 - In this case, the company had been incorporated in Canada for over 50 years, and Canada did make numerous representations to Spain, remembering that diplomatic protection is entirely discretionary
 - The codification of this second principle is harder to apply, and hasn't been codified in 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Arts 11-12
- It is worth noting that the adoption of the theory of diplomatic protection of shareholders, by opening the door of competing diplomatic claims, could create an atmosphere of confusion and insecurity in international economic relations
- The principles enunciated in *Barcelona Traction Case (Belgium v Spain)* [1970] ICJ Rep 3 have been codified in 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Articles 11-12

2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 11

Protection of shareholders

A State of nationality of shareholders in a corporation shall not be entitled to exercise diplomatic protection in respect of such shareholders in the case of an injury to the corporation unless:

- (a) the corporation has ceased to exist according to the law of the State of incorporation for a reason unrelated to the injury; or
- (b) the corporation had, at the date of injury, the nationality of the State alleged to be

responsible for causing the injury, and incorporation in that State was required by it as a precondition for doing business there.

2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 12

Direct injury to shareholders

To the extent that an internationally wrongful act of a State causes direct injury to the rights of shareholders as such, as distinct from those of the corporation itself, the State of nationality of any such shareholders is entitled to exercise diplomatic protection in respect of its nationals.

• 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 12 (which applies with direct injury to shareholders) is different from 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 11 in that injuring a corporation will result in the law where the corporation was incorporated being applied, but direct injury to the shareholder (i.e., not by proxy, e.g., loss of value of share) will see the law where the shareholder is a national being applied (e.g., taking dividends, preventing a shareholder from participating in the governance of the company, etc.)

Diallo Case (Guinea v DRC) [2007] ICJ Rep 582

Diallo was a national of Guinea who had settled in the Democratic Republic of the Congo (DRC, which was then known as Zaire) in 1964 when he was 17 years old. he was a resident ever since, and had established two companies under DRC law. He was arrested in 1995 and was detained and then deported to Guinea on 'public order' grounds. Guinea exercised diplomatic protection relating to the treatment of Diallo as an individual (he was still a Guinea national), as an *associe* (shareholder) of the two companies, and in relation to the companies themselves.

Because of the development of international law in respect of the rights accorded to individuals, the scope of diplomatic protection, which was originally limited to violations of the minimum standard of treatment of aliens, has widened to include violations of internationally guaranteed human rights (i.e., the international minimum standard can be informed by international human rights law).

It was not disputed that Diallo was a national of Guinea, so that the claim can be brought in relation to direct injury to him (his expulsion was a clear injury to Diallo as a person). In relation to Diallo's rights as an associe (shareholder), Barcelona Traction Case (Belgium v Spain) [1970] ICJ Rep 3 was applied, which held that only the state of nationality of a corporation may exercise diplomatic protection on behalf of the corporation when its rights are injured. This "remains the fundamental rule"; what amounts to an internationally wrongful act in the case of associes is not to be regarded as an exception to the general legal regime of diplomatic protection. Guinea does have standing here in relation to allegedly unlawful acts directed at Diallo qua associe (i.e., as a shareholder of the company because of the injury to those interests directly caused by the DRC's expulsion of him).

In relation to Guinea's contention that it could exercise diplomatic protection of Diallo in 'substitution' for the two companies, the ICJ held that state practice does not reveal an exception in customary international law allowing for protection by substitution, especially as shareholders are normally governed by bilateral or multilateral agreements for the protection of foreign affairs. The situation enunciated in the 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 11 is not present here, as the companies were not incorporated in Guinea, and so Guinea could not exercise diplomatic protection on behalf of the companies. Moreover, incorporation was not required by the DRC for the two companies to operate in the economic sectors that it did, and so Article 11 did not apply.

- There are a number of bases that must be systematically examined:
 - State of nationality
 - If there is an injury to the corporation
 - If there is a direct injury to shareholders, go to the state of the shareholder
 - It might then be possible for another state to exercise diplomatic protection

11.6 Exhaustion of Local Remedies

- For a claim in diplomatic protection to be admissible, the injured party must have exhausted all local remedies available to them in the state that they were injured in, as set out in ARSIWA Article 44(b)
- E.g., in Australia, a case must be taken all the way to the High Court before it is eligible to be considered for state protection

Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Article 44

Admissibility of claims

The responsibility of a State may not be invoked if:

- (a) the claim is not brought in accordance with any applicable rule relating to the nationality of claims;
- (b) the claim is one to which the rule of exhaustion of local remedies applies and any available and effective local remedy has not been exhausted.

2006 Draft Articles on Diplomatic Protections Article 14

Exhaustion of local remedies

- 1. A State may not present an international claim in respect of an injury to a national or other person referred to in draft article 8 before the injured person has, subject to draft article 15, exhausted all local remedies.
- 2. "Local remedies" means legal remedies which are open to an injured person before the judicial or administrative courts or bodies, whether ordinary or special, of the

State alleged to be responsible for causing the injury.

3. Local remedies shall be exhausted where an international claim, or request for a declaratory judgement related to the claim, is brought preponderantly on the basis of an injury to a national or other person referred to in draft article 8.

2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 15

Exceptions to the local remedies rule

Local remedies do not need to be exhausted where:

- (a) there are no reasonably available local remedies to provide effective redress, or the local remedies provide no reasonable possibility of such redress;
- (b) there is undue delay in the remedial process which is attributable to the State alleged to be responsible;
- (c) there was no relevant connection between the injured person and the State alleged to be responsible at the date of injury;
- (d) the injured person is manifestly precluded from pursuing local remedies; or
- (e) the State alleged to be responsible has waived the requirement that local remedies be exhausted.
- This area contains a variety of case law that works in tandem with Draft Articles 14 and 15
- This rule is based on the principle that 'the foreign state should, first of all, be given the opportunity of redressing the wrong alleged', per *Finnish Shipowners Arbitration* (1934) 3 RIAA 1479
- The local remedies rule does not apply when nationals are injured in situations of direct
 injury to the state (e.g., one state shoots down another state's aircraft, there is an
 infringement of diplomatic immunity or inviolability, etc.)
- It is for the plaintiff state to prove that there are no effective remedies (however, no such proof is needed if there is legislation which on its face deprives the claimants of a remedy), such as in the *Norwegian Loans Case* [1957] ICJ Rep 9
- When seeking to establish that there are 'no reasonably available remedies', it is not
 enough to show that the chances of success are low, or that further appeals are difficult or
 costly, but rather it must be shown that it is definite that no remedies are available
- A national must exhaust all available judicial remedies, including any avenues of appeal (and if there are no rights of appeal, but leave is required to gain access to those rights, then leave must be sought)
- A national must also exhaust all available administrative remedies entailing a binding decision, but there is no requirement to approach the executive for a discretionary 'pardon', for their 'clemency', etc.

- The basic arguments and evidence that were raised in domestic proceedings must also be raised in the international proceedings:
 - "It is sufficient if the essence of the claim has been brought before the competent tribunals and pursed as far as permitted by local law and procedures, and without success", following *Electronica Sicula SpA (ELSI) Case* [1989] ICJ Rep 15 (which concerned an Italian government's requisition of property owned by ELSI, which was an Italian company owned by US companies)
 - "It is the whole system of legal protection, as provided by municipal law, which must have been put to the test before a State, as the protector of its nationals, can prosecute the claim on the international plane", following *Ambatielos Arbitration* (Greece v UK) (1956) 12 RIAA 83
 - * This case concerned the failure to call a witness in the UK proceedings
 - * These proceedings failed as the claim involved the failure of the injured person to call a relevant witness in the proceedings in the injuring state
 - * Such an oversight (or deliberate act) can be fatal to proceedings in diplomatic protection
- This rule examines the quality of the case that is being made; the case must first be taken to a local tribunal, and then pursued as far as it can be taken

Topic 12

Use of Force

- This topic refers to the use of force between states
- It is not a straightforward area of international law, but there are developed rules around how to regulate force, and how to deal with defensive force when force happens to be used
- International law imposes prohibitions and/or restrictions on the use of force, subject to certain exceptions

12.1 Use of Armed Force in International Law

- There are two 'areas' of international law that deal with the use of armed force:
 - Jus ad bellum, which is the law relating to whether there is a right to use force
 - * This domain has a very long history, and seeks to minimise the use of force to only those situations where it is absolutely necessary
 - Jus in bello, which refers to the law governing the rules of combat
 - * This set of rules refers to what can be done once hostilities have commenced
 - * It is agnostic as to why a conflict started, but instead civilises an existing conflict by regulating what objects can be targeted, what weapons can be used, etc.
- The 'Just War' tradition has influenced the development of international law relating to the use of force
 - There are seven just war criteria:
 - 1. Just cause
 - 2. Right authority
 - 3. Right intention
 - 4. Proportionality
 - 5. Last resort
 - 6. Hope of success
 - 7. Aim of peace
 - These criteria must be satisfied before a state can wage war upon another state, and have all influenced contemporary international law relating to armed force

 This also connects with 'humanitarian intervention' and the 'responsibility to protect', which is a notion that has been adopted by the UN to describe situations where states may be authorised by the UN to intervene in another state to prevent an overwhelming humanitarian crisis

12.2 Prohibition on the Use of Force

12.2.1 Historical Development of the Law on the Use of Force

- At the beginning of the 20th century, the use of force was regarded as lawful, irrespective of the purpose for which it was used (e.g., conquest of territory, repayment of debts, etc.)
- Over the 20th century, the law around state force was developed, slowly restricting
- In 1919, the League of Nations sought to moderate the use of force
 - 'Rupture' was coded language for a 'hot war'
 - This convention sought to hold off on physical conflict until three months after arbitration had been attempted, thereby acting as a cooling-off period, but not prohibiting war altogether

1919 Covenant of the League of Nations Article 12

The Members of the League agree that, if there should arise between them any dispute likely to lead to a rupture they will submit the matter either to arbitration or judicial settlement or to enquiry by the Council, and they agree in no case to resort to war until three months after the award by the arbitrators or the judicial decision, or the report by the Council.

- The 1928 General Treaty for the Renunciation of War (Kellogg-Briand Pact) was a clear statement in the law that war should no longer be used as a means for undertaking conflict resolution
 - Article 1 held that "[t]he High Contracting Parties solemnly declare...that they
 condemn recourse to war for the solution of international controversies, and
 renounce it as an instrument of national policy in their relations with one another."
 - However, it is not clear if this amounts to a prohibition on the use of force in general (including 'armed reprisals'), or only if it outlawed full-scale war
 - * The use of the term 'war' suggests that it only prohibits full-scale war, and not lesser uses of force, such as armed reprisals (e.g., retaliation)
- The 1945 Charter of the United Nations is the most important source of law on the use of force, and encapsulates an all-encompassing prohibition on the use of force, with only a few exceptions
 - The central purpose of the Charter is to prevent armed conflict, by establishing a system of collective security in the aftermath of WWII and the Holocaust

12.2.2 Charter of the United Nations, and the Present Law

1945 Charter of the United Nations Preamble (First Recital)

To save succeeding generations from the scourge of war, which twice in our lifetime has brought untold sorrow to mankind.

1945 Charter of the United Nations Article 2(4)

All Members shall refrain in their international relations from the threat or use of force against the territorial integrity or political independence of any state, or in any other manner inconsistent with the Purposes of the United Nations.

- Art 2(4) is the central provision relating to the use of force in the UN Charter
- The Charter is a treaty, and therefore binding on all states that have ratified it
- It is also now a customary norm of international law (and hence is also binding on non-UN members), as well as being a *jus cogens* norm, per *Nicaragua* (1968)
 - Since the *UN Charter* prevails over other treaties, it is regarded as having 'quasi-statal' status
 - Article 2(4) has also been regarded as a 'cornerstone of the United Nations Charter' in Armed Activities (DRC v Uganda) (2005)
- There are two recognised exceptions to Article 2(4):
 - Self-defence, as set out in UN Charter Article 51, which is the inherent right of a state
 that can be exercised in response to an armed attack (which upholds the unilateral
 right of a state's independence)
 - Collective security, as set out in *UN Charter* Chapter VII, which refers to the right of the UN Security Council to authorise the use of force in response to threats to international peace and security in the interests of collective security
- There is relatively little state practice on the meaning of Article 2(4), but since it refers to the 'threat or use of force' rather than 'war', it has been interpreted to cover all threats or uses of armed force, and also covers uses of force that fall short of full-scaled armed conflict
- However, Article 2(4) only applies to inter-state force ('in their international relations'; i.e., not intra-state force), and as such, does not prohibit civil war within a country (although other areas of international law may do so)
- Article 2(4) moreover prohibits the threat or use of force 'against the territorial integrity or political independence of any state', and applies to 'any state' (not just UN members)
 - The prevailing view, supported by the travaux préparatoires, is that these are specific examples that elaborate and illuminate what falls within the prohibition on the use of force
- Relevant aspects of the UN Charter use different terms:

- Article 2(4) prohibition of 'the use of force'
- Article 51 self-defence against 'in armed attack'
- Article 39 Security Council may determine there has been a 'threat to the peace, breach of the peace, or act of aggression'
- However, none of these terms are defined in the UN Charter
- As such, there are several resolutions of the UN General Assembly that are aimed at clarifying the scope of the prohibition:
 - Declaration on Friendly Relations 1970 (Resolution 2625)
 - Definition of Aggression 1974 (Res 3314)
 - Declaration on the Non-Use of Force 1987 (Res 42/22)

12.2.2.1 Declaration on Friendly Relations 1970

This is a declaration that reaffirms the core of the UN Charter; Principle 1 of the
declaration reaffirms the prohibition on the threat or use of force against any state as set
out in the UN Charter

Declaration on Friendly Relations 1970 (Res 2625) Principle 1

States shall refrain in their international relations from the threat or use of force against the territorial integrity or political independence of any State, or in any other manner inconsistent with the purposes of the United Nations.

. . .

... organising or encouraging the organisation of irregular forces or armed bands, including mercenaries, for incursion into the territory of another State.

. . .

organising, instigating, assisting or participating in acts of civil strife or terrorist acts in another State or acquiescing in organised activities within its directed towards the commission of such acts, when the acts ... involve a threat or use of force.

- The second aspect of Principle 1 above holds that the prohibition on the use of force encompasses acts conducted by paramilitary or irregular forces (mercenaries)
- This is not present in the *UN Charter*, and so the Declaration serves to flesh out the meaning of the charter
- Moreover, the Declaration clarifies that state-sanctioned terrorism isn't permitted under *UN Charter* Art 2(4)
- The Declaration has been held to reflect customary international law, under *Nicaragua* (1986) [188], [191] and *Armed Activities* (2005) [162], [300]
- Note that whilst resolutions of the UN General Assembly are generally not binding, this
 one is as it has evolved into being a reflection of customary international law

12.2.2.2 Resolution on Definition of Aggression 1974

Resolution on Definition of Aggression 1974 Article 1

Aggression is the use of armed force by a State against the sovereignty, territorial integrity or political independence of another State, or in any other manner inconsistent with the Charter of the United Nations, as set out in this Definition.

- This resolution picks up most of the acts prohibited under UN Charter Article 2(4)
- Article 3 outlines a non-exhaustive list of acts that constitute aggression

Resolution on Definition of Aggression 1974 Article 3

Any of the following acts, regardless of a declaration of war, shall, subject to and in accordance with the provisions of article 2, qualify as an act of aggression:

- (a) The invasion or attack by the armed forces of a State of the territory of another State, or any military occupation, however temporary, resulting from such invasion or attack, or any annexation by the use of force of the territory of an- other State or part thereof;
- (b) Bombardment by the armed forces of a State against the territory of another State or the use of any weapons by a State against the territory of another State;
- (c) The blockade of the ports or coasts of a State by the armed forces of another State;
- (d) An attack by the armed forces of a State on the land, sea or air forces, or marine and air fleets of another State;
- (e) The use of armed forces of one State which are within the territory of another State with the agreement of the receiving State, in contravention of the conditions provided for in the agreement or any extension of their presence in such territory beyond the termination of the agreement;
- (f) The action of a State in allowing its territory, which it has placed at the disposal of another State, 10 be used by that other State for perpetrating an act of aggression against a third State;
- (g) The sending by or on behalf of a State of armed bands, groups, irregulars or mercenaries, which carry out acts of armed force against another State of such gravity as to amount to the acts listed above, or its substantial involvement therein.
- The Resolution reflects customary international law, as per *Nicaragua* (1986) [195] and *Armed Activities* (2005), [146]

12.2.3 Use of Force

• A use of force, prohibited under *UN Charter* Article 2(4), refers to the use, by one state against another, of armed force (not political or economic pressure)

- Whilst this force is generally kinetic (e.g., firing weapons), it is possible that non-kinetic forces (e.g., cyber-attacks) can also amount to the use of force under the Charter, although this is currently unclear
- Political and/or economic pressure will be prohibited under the Charter if it rises to a very serious level such that it constitutes an unlawful intervention in another country, but is otherwise not an issue
- Examples of direct armed force include invasion, missile attacks, the laying of mines, etc.
- Examples of indirect armed force include:
 - Sending 'armed bands' (irregular forces) into another state's territory, following Nicaragua (1986), [195], [247]
 - 'Actively extending military, logistic, economic and financial support to irregular forces' (so long as it is directed to the war-fighting capacity of a state), following *Armed Activities* (2005), [161]-[165]
 - Providing weapons, logistical and/or other support to armed insurgents, following Nicaragua (1986), [195], [205], [247], [251]
- The 'mere supply of funds' to irregular forces does *not* constitute a use of force, following *Nicaragua* (1986), [228]

12.2.4 Threat of Force

- A threat of force is a threat to use armed force against another state, and is also prohibited under *UN Charter* Article 2(4)
- It was held in *Nuclear Weapons Advisory Opinion* (1996), [47] that where the use of force would be illegal, the threat to use such force is also unlawful
- An example of an unlawful threat of force is an ultimatum to attack a state if it does not comply
- *Nicaragua* (1986), [227] held that US military manoeuvres near the Nicaraguan border did not constitute a threat of force
- The UK has argued that the aiming of Iraqi artillery and tanks at Kuwait did constitute a threat of force, but this was rejected by the ICJ in *Nicaragua* (1986)
- *Nicaragua* (1986) has held that an accumulation of forces can constitute a threat of force, depending on its accompaniments, such as statement of intent, relevant exercises, etc.

12.3 Self-Defence

UN Charter Article 51

Nothing in the present Charter shall impair the inherent right of individual or collective self-defence if an armed attack occurs against a Member of the United Nations, until the Security Council has taken measures necessary to maintain international peace and security. Measures taken by Members in the exercise of this right of self-defence shall be

12.3. SELF-DEFENCE 201

immediately reported to the Security Council and shall not in any way affect the authority and responsibility of the Security Council under the present Charter to take at any time such action as it deems necessary in order to maintain or restore international peace and security.

- 'Inherent right' is a reference to and codification of the right of self-defence at customary international law
- 'Armed attack' does not have a clear definition, but it has been taken to mean a grave use of force beyond the ordinary use of force
- 'Until the Security Council has taken measures' acts to preserve the right of self-defence on a temporary basis until the UN Security Council is able to take action

12.3.1 Armed Attack

- An armed attack concerns the 'most grave forms of the use of force', which is distinguished from 'other less grave forms', in *Nicaragua* (1986), [191] (approved in *Oil Platforms* (1984), [51])
- Unless the force is grave, there will be no right to self-defence; this does have the effect of a state possibly having to endure an unlawful use of force whilst being deprived of the right to respond by way of self-defence until it becomes grave enough to amount to an armed attack (international law seeks to restrain the use of force where it can, and so this is a policy reason)
- Whether an action will be an 'armed attack' will depend on the 'scale and effects' of the operation, as per Nicaragua (1986), [195]
- As such, an operation can be a use of force contrary to Article 2(4) of the *UN Charter*, but not an armed attack, and hence not a use of force that can be responded to by way of self-defence, per *Nicaragua* (1986), [191] and *Oil Platforms* (2003), [51], [61]
- The ICJ has stated that the placing of mines on a single military vessel might be sufficient to amount to an armed attack, per *Oil Platforms* (2003), [72]
 - Whilst it wasn't an armed attack in that case, the ICJ held that on the scales and effects test, it theoretically could constitute an armed attack
 - As such, even an isolated incident using force can amount to an armed attack if it is serious enough (for this reason, targeting military vessels is more serious than targeting civilian vessels, as the former is more likely to be an armed attack and the latter is not)
- Ugandan military assaults that resulted in the taking of several towns near the DRC/Ugandan border constituted an 'armed attack', per *Armed Activities* (2005), [110], [147], as a result of the excessive scale and effects of the attacks
- An armed attack can be conducted by armed bands, irregulars, mercenaries, etc. sent by on behalf of a state onto another state (i.e., a state sends proxies rather than its own army), per *Nicaragua* (1986), [195], citing the *Resolution on Definition of Aggression 1974* Article 3(g) as customary international law

- An armed attack does not include:
 - 'A mere frontier incident', per *Nicaragua* (1986), [195]
 - * This is likely a minor dispute about the border by the armed forces of the two states (the conflict only lasts a few hours or days)
 - Armed incursions where the victim states did not raise any complaints, per Nicaragua (1986), [231]-[234]
 - * Here, Nicaragua had undertaken armed incursions into Costa Rica and Honduras, but as neither state complained about these incursions, it was presumed they were not serious enough to amount to an armed attack
 - Providing assistance to rebels or insurgents in the form of weapons, logistical, or other support, per *Nicaragua* (1986), [195], [230] (the second paragraph concerns Nicaragua's support of rebels in El Salvador)
 - * Whilst this is a use of force, it is not an armed attack as it directly was not the most grave use of force
 - Even if taken cumulatively, a missile attack, the laying of mines on a ship and then firing on a US ship by Iran did not amount to an armed attack, as there was no evidence that the attacks were aimed specifically at the US, per *Oil Platforms* (2003), [64]

Oil Platforms (Iran v US) (2003)

This case related to a series of incidents between the two states whereby several US flag vessels, one a civilian vessel and one a military vessel, were the victim of (i) a missile attack and (ii) a collision with a sea mine. The issue before the Court was whether or not Iran had engaged in an armed attack on the US which justified the US's response of bombing Iranian oil rigs, with the Court being asked whether there was an armed attack.

An argument made by the US was that all acts had to be observed cumulatively as violations of US interests, which would therefore cumulatively amount to an armed attack (even if one wasn't enough, the combination of them was sufficient). The Court accepted the possibility that an armed attack could be satisfied if there were accumulations of uses of force, but held on these facts that such an accumulation could not be made out. This is because it wasn't clear on the totality of the evidence that Iran's actions were *directed* at the US, especially as Iran was indiscriminately shooting at all vessels.

From this case, it can be inferred that an armed attack generally needs to be targeted at a state, but this requirement is not strict and can be waived if the scale and effects of the attack are severe enough (e.g., nuclear weapons are indiscriminate, and the scale and effects of their use would be so severe that they would amount to an armed attack even if they were not directed at a state).

12.3.2 Timing of an Armed Attack

• An armed attack does not begin until a state's territory is affected, but it is possible for it to begin when an irreversible course of action has begun (e.g., the launch of missiles)

12.3. SELF-DEFENCE 203

- An exception may lie in the 'accumulation of events' theory
 - It is often the case that there is not a singular armed attack, but that there is instead a number of armed attacks
 - This series of attacks should be viewed as a whole, so that action to prevent future attacks in the series is not anticipatory self-defence but is rather self-defence against an ongoing attack, and moreover is not retaliation for past attacks (i.e., the state is not unlawfully retaliating for past attacks but rather is lawfully responding for an accumulation of attacks)
- This argument has been implicitly accepted by the ICJ, in *Nicaragua* (1986), [231], where it held that it was "difficult to decide whether [incursions by Nicaragua] may be treated for legal purposes as amounting, singly or collectively, to an armed attack"; this position was supported in *Oil Platforms* (2003), [64], and *Armed Activities* (2005), [146]

12.3.2.1 Anticipatory Self-Defence

- The ICJ in *Nicaragua* (1986), [194] and *Armed Activities* (*DRC v Uganda*) (2005), [143], has expressly reserved its opinion around **anticipatory self-defence**, and as such this question has never been addressed by the ICJ
- There is some state practice and some scholarly commentary around the concept that states do not have to wait to be the subject of an attack, but can take action when the attack is imminent so as to protect themselves

12.3.2.2 Pre-Emptive Self-Defence

- Following 9/11, the 2002 US National Security Strategy brought "pre-emptive self-defence back into global discussion"
- This is generally done in cases of terrorism
- Pre-emptive self-defence is based on the idea that armed attacks are not imminent, but it
 is known that they are coming, and so as an insurance strategy, pre-emptive self-defence is
 used to disable or reduce the threatening military capacity of the other state before an
 attack occurs
- Arguments in favour of pre-emptive self-defence include the changed nature of threats since 1945 (the rise of weapons of mass destruction and terrorism), the impractical requirement of making states wait for an attack, and the lack of a guarantee that the UN Security Council would respond (the US was in favour of these arguments)
- Arguments against pre-emptive self-defence include that it was too vague and arbitrary, there was ambiguity on how to assess necessity and proportionality, and that it may also erode the prohibition on the use of force (this is the view accepted by most states and scholars)
- It is generally accepted in state practice that there must be at least an actual or imminent threat of attack to enliven the right of self-defence (i.e., it is not pre-emptive)

12.3.3 Necessity and Proportionality

- Measures taken in self-defence must be 'proportional to the armed attack and necessary to respond to it', per *Nicaragua* (1986), [176], with these requirements applying to self-defence under both *UN Charter* Article 51 and customary international law
- · Necessity requires that there are no alternative means of repelling the attack
- Proportionality requires that the response is not excessive in relation to the armed attack
 - This is measured against what is required to stop the attack, although it has been argued that proportionality relates to the scale and effects of the attack
 - A state must ascertain what is necessary to stop the attack, and do nothing more than that
 - This is a superior idea that the response can bear proportionality to the original attack, but simply because the state has been attacked particularly badly does not give it the right in self-defence to respond in a 'tit-for-tat' manner; rather, self-defence authorises what is necessary for self-defence and to repel the attack only, not undertake countermeasures or a retaliatory act (i.e., it is not punitive or for revenge)

Caroline Case (1841/1842)

This case never went to court, and so it is just an incident, but nonetheless involved a Canadian rebellion against Great Britain. Canadian rebels, with the support of US nationals, were attacking British ships in US waters, and some of these rebels used the *Caroline* (a US flag ship) to transport supplies and personnel from a base to an island in the middle of the Hudson river, from which they were launching attacks on the British. The British untied the *Caroline*, set it on fire, and allowed it to fly over the Niagara falls, resulting in the death of 2 people (including a US citizen). The question that arose was whether the British had lawfully/legitimately exercised the right of self-defence.

This case did not go before a court/tribunal, and so there is no decision of any judge/arbitrator, but there is the exchange of diplomatic correspondence between the US and the British as to what the right of self-defence entailed. The states agreed that the relevant test for self-defence is in the paragraph below; that necessity is reflexive, but has to be limited by what is absolutely required.

It will be for the British Government to show a necessity of self-defence, instant, overwhelming, leaving no choice of means, and no moment of deliberation ... the act, justified by the necessity of self-defence, must be limited by that necessity, and kept clearly within it.

Oil Platforms (Iran v US) (2003)

The ICJ determined that the United States was not subject to an armed attack when Iran launched a missile attack on a US-flagged civilian vessel, as the attack did not meet the required scale and effects threshold to qualify as an armed attack, though it constituted a use of force. The ICJ further ruled that the US response, which involved attacking Iranian

12.3. SELF-DEFENCE 205

oil platforms several days later, did not meet the criteria of necessity or proportionality. The US actions were not aimed at preventing future attacks but instead exhibited characteristics of retaliation, targeting Iranian state infrastructure in a manner that suggested a punitive lashing out rather than a defensive measure.

Armed Activities Case (DRC v Uganda) (2005)

The ICJ held that since there was no armed attack, there was no right to self-defence, rendering the consideration of necessity and proportionality of the response unnecessary. However, in *obiter dicta*, the ICJ noted that the US actions of capturing airports and towns hundreds of kilometres inside Uganda's territory would not appear proportionate or necessary in response to the series of transient, cross-border attacks that the US claimed justified self-defence. These actions lacked a reasonable relationship to the seriousness of the initial attacks and were not necessary to address them.

Nicaragua (Nicaragua v US) (1986)

This is a canonical case on this area.

Background

In 1979, the right-wing Somoza Government in Nicaragua was overthrown by the left-wing Sandinista Government, prompting the United States, starting in 1981, to implement measures against the new regime, including supporting the Contra rebels aiming to overthrow the Sandinistas. The ICJ found it had jurisdiction over the case, despite the US reservation under Article 36(2) of the *ICJ Statute* regarding multilateral treaties, by determining that the relevant legal principles were rooted in customary international law, which the parties accepted as reflected in the UN Charters rules on the use of force.

Applicable Law

The parties took the view that the principles on the use of force in the UN Charter correspond, in essentials, to those found in custom. They found that the general rule prohibiting force allows for certain exceptions, and held that the inherent right of self-defence under *UN Charter* Article 51 covered both collective and individual self-defence.

Use of Force and Self-Defence

The ICJ did not express a view on the concept of anticipatory self-defence in situations where an armed attack has not yet occurred but an imminent threat exists, leaving the issue of anticipatory self-defence unaddressed. The Court clarified that for a state to exercise individual self-defence, it must be the victim of an armed attack. An armed attack, as defined by the ICJ, encompasses not only actions by regular armed forces crossing an international border but also the deployment by or on behalf of a state of armed bands, groups, irregulars, or mercenaries. Such actions constitute an armed attack if their scale and effects would qualify as an armed attack had they been carried out by regular forces. Specifically, if a state employs irregular forces instead of its own military, the operation's scale and effects determine whether it qualifies as an armed attack,

equivalent to one conducted by regular forces.

The ICJ found that certain US actions, such as laying mines in Nicaraguan ports and conducting attacks on those ports, constituted infringements of the prohibition on the use of force. However, US military manoeuvres near Nicaraguan borders were not deemed a threat or use of force in violation of this prohibition, as they did not amount to direct uses of force. Additionally, the US breached the prohibition on the use of force by providing assistance to the Contra rebels in Nicaragua through arming and training them. However, not all forms of support to the Contras were considered a use of force; for instance, the mere supply of funds, while an unlawful act of intervention, did not constitute a use of force. The US argued that these actions were justified as exercises of self-defence.

Regarding the US claim of exercising collective self-defence in support of El Salvador, Honduras, or Costa Rica, the ICJ ruled that these states were not subject to armed attacks, nor did they declare themselves attacked or request assistance at the relevant time. Consequently, the US actions could not be justified as collective self-defence. Even if an armed attack against these states could be established, the US response was neither necessary nor proportionate, failing to meet the legal requirements for self-defence. The ICJ further noted that the US itself was not the subject of an armed attack, precluding individual self-defence. Moreover, there was no evidence that El Salvador, Honduras, or Costa Rica complained about Nicaraguan actions or sought US assistance. Even if such complaints or requests existed, the US response was deemed disproportionate and unnecessary. The Court also clarified that an unlawful use of force that does not rise to the level of an armed attack may still invoke state responsibility, but it does not justify self-defence, as it lacks the proportionality required to constitute a breach of international law permitting such a response.

12.3.4 Terrorist Attacks

- Terrorist attacks may be armed attacks, depending on their scale and effects, and their cumulative effect
- A question arises as to whether the attack must be by a 'state':
 - In Israel Wall (2004), the ICJ said yes
 - In Armed Activities (2005), [147], the ICJ expressly reserved its opinion
 - An alternative view was implicit in the separate opinions of Kooijmans and Simma JJ in Armed Activities (2005), where self-defence against non-state actors might be permitted, especially where no real governmental authority exists in a target state and so there is no attribution of state responsibility possible (this is a limited, failed-state exception)
- Following 9/11, the UNSC passed Resolutions 1368 and 1373, which both referred to "the
 inherent right of individual or collective self-defence" in respect to the terrorist attacks on
 the US, possibly indicating an implied authority by the UNSC

• Where a state is unwilling or unable to prevent its territory from being used to harbour terrorist groups or from being used to launch cross-border attacks against other states, this gives the victim state the right to use force within the territory of that unwilling/unable state against the non-state group, and justify that *prima facie* unlawful use of force (however, state practice on this area is divided)

12.4 Collective Security

- Under UN Charter Chapter VII, the UN Security Council is empowered to take actions
 necessary in response to threats of the peace, breaches of the peace, and acts of aggression
 - This creates an agency relationship, where the UNSC authorises member states to use specific instances of force/power on its behalf
- UN Charter Article 39 outlines the threshold that has to be met; if it is met, turn to Article 41

UN Charter Article 39

The Security Council shall determine the existence of any threat to the peace, breach of the peace, or act of aggression and shall make recommendations, or decide what measures shall be taken in accordance with Articles 41 and 42, to maintain or restore international peace and security.

UN Charter Article 41

The Security Council may decide what measures not involving the use of armed force are to be employed to give effect to its decisions, and it may call upon the Members of the United Nations to apply such measures. These may include complete or partial interruption of economic relations and of rail, sea, air, postal, telegraphic, radio, and other means of communication, and the severance of diplomatic relations.

UN Charter Article 42

Should the Security Council consider that measures provided for in Article 41 would be inadequate or have proved to be inadequate, it may take such action by air, sea, or land forces as may be necessary to maintain or restore international peace and security. Such action may include demonstrations, blockade, and other operations by air, sea, or land forces of Members of the United Nations.

- Under *UN Charter* Article 42, the Security Council can authorise the use of force by UN member states, and this is a collective security measure, with this arising from the fact that the UN itself does not have its own army, air force or navy
- The UN Security Council has taken an increasingly broad approach to determining threats and breaches of the peace under Article 39, to include serious internal conflicts (e.g., Rwanda, Libya, Syria) and acts of terrorism (e.g., 9/11) (as such, this goes beyond just classical interstate conflict, and can include purely internal, humanitarian disasters)
- The UNSC can take action so long the veto is not exercised by at least one of its five permanent members against threats to international peace and security

12.5 Humanitarian Intervention and the Responsibility to Protect

12.5.1 Humanitarian Intervention

- This is a purported exception to the prohibition on the use of force to allow forcible intervention in another state to protect that state's own nationals from extreme cruelty or persecution
- It has been argued by some states for a third exception to the prohibition to allow one or more states to intervene in another state to protect that state's nationals (thus adopting a humanitarian angle)
- There has been preponderance of practice and commentary against its legality (it may be legitimate, but unlawful this is yet to be determined)
- Practice in this area is scant: in 1990, NATO intervened in Kosovo to prevent genocide by
 means of a bombing campaign, despite the lack of UN Security Council authorisation, and
 more recently, military action was taken against the former Syrian regime for its use of
 chemical weapons
- The UK's position was enunciated in 2013 in the following material by its Foreign Office, but the majority of governments do not accept intervention on the rights of humanitarian issues, on the grounds that it is an unacceptable violation of sovereignty:

If action in Security Council is blocked, the UK would still be permitted... to take exceptional measures in order to alleviate the scale of the overwhelming humanitarian catastrophe in Syria by deterring and disrupting the further use of chemical weapons by the Syrian regime. Such a legal basis is available, under the doctrine of humanitarian intervention...[if] (i) there is convincing evidence... of extreme humanitarian distress on a large scale, requiring immediate and urgent relief; (ii) it must be objectively clear that there is no practicable alternative to the use of force ... and (iii) proposed use of force must be necessary and proportionate to the aim of relief of humanitarian need and strictly limited in time and scope to this aim.

12.5.2 Responsibility to Protect

- The 2001 International Commission on Intervention and State Responsibility report held that force should be used only as a very last resort, and that 'there is no better or more appropriate authority than the United Nations Security Council to authorise military intervention for humanitarian protection purposes'
- The Responsibility to Protect (R2P) doctrine seeks to achieve objectives of humanitarian intervention, but within the legal framework of the *UN Charter*
- It was endorsed and adopted in UNGA Resolution 61/1 (2005 World Summit Outcome)
- It is referred to obliquely in UNSC resolutions (e.g., the UNSC Resolution in 1973 concerning Libya's responsibility to protect its own nationals)

Topic 13

International Dispute Settlement

UN Charter Article 2(3)

All Members shall settle their international disputes by peaceful means in such a manner that international peace and security, and justice, are not endangered.

UN Charter Article 33

- 1. The parties to any dispute, the continuance of which is likely to endanger the maintenance of international peace and security, shall, first of all, seek a solution by negotiation, enquiry, mediation, conciliation, arbitration, judicial settlement, resort to regional agencies or arrangements, or other peaceful means of their own choice.
- 2. The Security Council shall, when it deems necessary, call upon the parties to settle their dispute by such means.

- *UN Charter* Article 33 lists the various options made available for states to peacefully resolve their disputes
- "A dispute may be defined as a specific disagreement concerning a matter of fact, law or policy in which a claim or assertion of one party is met with refusal, counter-claim or denial by another" (John Merrills); from this, it is important for any set of facts of be exactly clear, and for the nature of the dispute to be defined, as without this, parties are unable to utilise dispute resolution methods

| Negotiation | Mediation | Conciliation | Inquiry | Arbitration ¹ | Judicial |
|--|---------------------------------|--------------|---------------------------|---|--------------|
| | | | | | Settlement |
| Informal | More formal (more structured) | | | Formal (highly struc- | |
| (unstruc- | | | | tured) | |
| tured) | | | | | |
| Resolution | Resort to third party for guid- | | | Resort to third party for determination | |
| by the par- | ance | | | | |
| ties them- | | | | | |
| selves | | | | | |
| Flexible (high degree of control by the parties) | | | | | Fixed (less |
| | | | | | control by |
| | | | | | the parties) |
| Non-binding (advisory) | | | | Binding (mandatory) | |
| Resolution of dispute according to | | | Resolution of dispute ac- | | |
| the criteria agreed to by the parties | | | | cording to the law ('legal | |
| ('diplomatic method of dispute settle- | | | | method of dispute settle- | |
| ment') | | | | ment') | |
| Most com- | Much less co | mmon | | Historically uncom- | |
| mon | | | | mon; recently more | |
| | | | | common | |

Table 13.1: Summary of dispute resolution methods in international law

13.1 Negotiation

- This is used more frequently than any other method of dispute resolution in international
- A state will negotiate with another state to resolve a dispute, and this is often done through diplomatic channels
- Parties themselves retain maximum control over the process and outcome
- Negotiation may be used prior to, during, or after a dispute arises, and may be used once a
 dispute is resolved (in order to agree what the meaning of the court's decision is and how
 it should be implemented)
- Modes of negotiation include through normal diplomatic channels, through high-level officials, through international forums/organisations, etc.
- Negotiation may sometimes be a procedural precondition for jurisdiction of an international court (i.e., some treaties will require negotiation as a precondition to formal dispute settlement by a court or tribunal)

Ukraine v Russia [2019] ICJ Rep 558

This case concerned alleged violations by Russia of the 1999 International Convention for the Suppression of the Financing of Terrorism and the 2003 International Convention on the Elimination of All Forms of Racial Discrimination, following events in eastern Ukraine and

13.1. NEGOTIATION 211

the invasion of Crimea. There were objections set out in the preliminary issues stage of dispute resolution.

Judgement on Preliminary Objections in 2019

Under CERD, Art. 22, "a State [must] make a genuine attempt to settle through negotiation the dispute in question with the other State". As such, a court will not have jurisdiction until it can be established that the parties have sought to negotiate the dispute. The Court then described what was required under Art. 22:

Negotiations are distinct from mere protests or disputations. Negotiations entail more than the plain opposition of legal views or interests between two parties, or the existence of a series of accusations and rebuttals, or even the exchange of claims and directly opposed counter-claims.

[Negotiation] requires — at the very least — a genuine attempt by one of the disputing parties to engage in discussions with the other disputing party, with a view to resolving the dispute.

The precondition of negotiation is met only when there has been a failure of negotiations [tried and don't get anywhere], or when negotiations have become futile or deadlocked.

Under the last paragraph, if a state attempts to negotiate but is met by resistance from the other state, then the precondition of negotiation is met, and the court can exercise jurisdiction. In this case, the Court held that the exchanges of *notes verbales* (diplomatic notes) between the parties which included specific mentions of the CERD, negotiations over two years (including face to face meetings), and the breakdown/deadlocking of those negotiations by the time that Ukraine had filed its application meant that the ICJ had jurisdiction here.

Judgement on Merits (January 2024)

The Russian Federation was found to have violated its obligations under both the 1999 Convention and the CERD as a result of its failure to maintain Ukrainian language education in Crimea.

South West Africa [1962] ICJ 319

South West Africa (which was a German colony) was placed under the mandate of South Africa by the League of Nations from 1915 (this became Namibia in 1990). Ethiopia and Liberia brought a case against South Africa in the ICJ, alleging that South Africa's racist policy of apartheid violated its obligations under the League of Nations mandate to manage and protect South West Africa.

This case held that it was sufficient for parties to hold discussions at international organisations, and that this was sufficient to satisfy the requirement of negotiation. South Africa held that any dispute with Ethiopia and Liberia was outside the scope of the ICJ's jurisdiction, because of the supposed lack of direct negotiation. On the basis that there

had been extensive discussions on this issue within the UN on the topic of South West Africa, the ICJ rejected South Africa's argument.

In the second phase of these proceedings, the ICJ in [1966] ICJ Rep 6 found that (by the casting vote), the applicants did not have any standing, and in an Advisory Opinion ([1971] ICJ Rep 16), found that the continued presence of South Africa in Namibia was illegal.

Hence, to determine if negotiation is a precondition, look at the instrument conferring jurisdiction on the court (e.g., a relevant treaty, or a treaty, or something entailing compulsory acceptance of a jurisdiction).

13.2 Mediation

- Mediation is a process that involves a third party (the mediator) who assists in reaching a settlement (the parties remain in control over the process)
- Mediators might be invited by the parties to propose a solution, or otherwise might take a more engaged role in the process
- Third parties may perform various functions, from mere 'good offices' (communication channels between the parties) to proposing a solution (i.e., conciliation)
- Mediators can include other governments, international organisations (e.g., the UN), private individuals (e.g., Pope John Paul II in the Beagle Channel dispute), NGOs (e.g., the International Committee of the Red Cross), or other parties
- Parties can choose anyone to be a mediator, depending on their agreement

13.3 Inquiry

- Inquiry is a process that involves an objective, disinterested assessment of the evidence and finding of facts (i.e., it is a factually focused method of dispute settlement)
 - It is not necessarily concerned with the legal characteristics of the dispute, but rather resolves differences between facts held by the parties
- Sometimes, it can be a precursor to other forms of dispute settlement, but at other times
 can be standalone; in either case, the parties retain control of the parameters of how the
 process is conducted
- Inquiry is governed by the 1899 Hague Convention for the Pacific Settlement of International Disputes, which were concluded in response to the Spanish-American War
 - Articles 9-14 hold that inquiry requires special agreement between the parties, its
 procedure is determined by the parties, it is limited to statements of fact, and it is
 left to the parties to determine the effect of the proceedings and how its results are
 to be used

13.3. INQUIRY 213

1899 Hague Convention for the Pacific Settlement of International Disputes Article 9

In differences of an international nature involving neither honour nor vital interests, and arising from a difference of opinion on points of fact, the Signatory Powers recommend that the parties, who have not been able to come to an agreement by means of diplomacy, should, as far as circumstances allow, institute an International Commission of Inquiry, to facilitate a solution of these differences by elucidating the facts by means of an impartial and conscientious investigation.

1899 Hague Convention for the Pacific Settlement of International Disputes Article 10

The International Commissions of Inquiry are constituted by special agreement between the parties in conflict.

The Convention for an inquiry defines the facts to be examined and the extent of the Commissioners' powers.

It settles the procedure.

On the inquiry both sides must be heard.

The form and the periods to be observed, if not stated in the Inquiry Convention, are decided by the Commission itself.

1899 Hague Convention for the Pacific Settlement of International Disputes Article 11

The International Commissions of Inquiry are formed, unless otherwise stipulated, in the manner fixed by Article 32 of the present Convention.

1899 Hague Convention for the Pacific Settlement of International Disputes Article 12

The Powers in dispute engage to supply the International Commission of Inquiry, as fully as they may think possible, with all means and facilities necessary to enable it to be completely acquainted with and to accurately understand the facts in question.

1899 Hague Convention for the Pacific Settlement of International Disputes Article 13

The International Commission of Inquiry communicates its Report to the conflicting Powers, signed by all the members of the Commission.

1899 Hague Convention for the Pacific Settlement of International Disputes Article 14

The Report of the International Commission of Inquiry is limited to a statement of facts, and has in no way the character of an Arbitral Award. It leaves the conflicting Powers entire freedom as to the effect to be given to this statement.

Dogger Bank Inquiry (1904)

This case involved Russian warships steaming from the Baltic to the Russo-Japanese War. It encountered British fishing vessels, and attacked and sank them, believing to be Japanese torpedo boats. France persuaded Britain and Russia to establish a Commission of Inquiry under the 1899 Hague Convention, which found that the Russian Admiral had fired in error, but not "of a nature to cast any discredit on [his] military qualities ... or humanity".

This case, and the broader time period it was in, is symbolic of the prominence of dispute settlement entities (e.g., mediators) trying to find a quasi-settlement resolution to disputes, as opposed to the modern tendency to turn to international courts.

13.4 Conciliation

- Conciliation is a process that involves a third party (the conciliator) who investigates the
 dispute and proposes a solution to the parties
- The involvement of a third party makes it more formal, and gives conciliation an institutional role
- Its functions are to investigate the dispute and recommend terms of settlement (i.e., it is investigatory and recommendatory)
- It is usually a confidential process, and the recommendations of the conciliator are
 provided as a draft report to which parties can respond to; a statement of reasons is also
 issued by the conciliator to the parties
- Conciliation may consider non-legal factors (i.e., it is not confined only to applying international law)
- 1928 General Act for the Pacific Settlement of International Disputes Articles 1-15 holds that there must be compulsory conciliation for all disputes between parties to the Convention if the issue is not resolved by diplomacy
- The 1948 Pact of Botogá Articles XV-XXX holds that conciliation is one method of dispute settlement, as well as setting out the requirements for a panel of conciliators, the rules of procedure, and the publication of the report or summary thereof of the conciliatory proceedings
- The 1928 UN Convention on the Law of the Sea (UNCLOS) contains provisions around conciliation, as explored in Australia-Timor Leste Conciliation (2016)

Australia-Timor Leste Conciliation (2016)

See Horta v Commonwealth (1994) 181 CLR 183 on Page 56 for the background to this case.

Once Timor Leste had gained independence from Indonesia, they had to resolve their maritime boundary in the Timor Sea. Initially, they agreed to continue the Timor Gap treaty that had been enforced between Australia and Indonesia (which was the subject of

13.5. ARBITRATION 215

Horta v Commonwealth (1994) 181 CLR 183). However, in 2016, Timor Leste argued that Australia was in breach of several conventions in the treaty, and that Australia was under an obligation to enter into a negotiated agreement on the maritime boundaries.

Australia tried to avoid dispute settlement in a number of ways. It first submitted an adjusted declaration accepting the jurisdiction of the ICJ to exclude maritime boundary disputes (as this was done prior to the crystallisation of the dispute, it prevented Timor Leste from taking action in the ICJ). Additionally, Australia submitted a reservation under *UNCLOS* opting out of *UNCLOS*'s compulsory dispute resolution processes. *UNCLOS* provides for optional (Article 284) and compulsory (Article 298) conciliation. Under *UNCLOS* Article 298, a party can opt out of Part XV compulsory settlement for certain disputes, including maritime boundary disputes, but compulsory conciliation was preserved, and as such, Timor Leste could go to compulsory conciliation, which they did in 2016.

This was the first-ever conciliation held under *UNCLOS* Article 298 and Annex V. Annex V and the Rules of Procedure adopted by the commission held that the parties are largely in control of the process. Moreover, they agreed on the constitution of the commission, and that among other things, the commission would deal with issues of jurisdiction in an adversarial and adjudicative manner. The substantive phase of the proceedings was more flexible, informal and agile (if jurisdiction could be established, then a diplomatic means of dispute resolution could be used), thereby ensuring the confidentiality of proceedings (subject to certain exceptions in the interest of transparency).

Australia unsuccessfully challenged the competence of the Commission. As such, the Commission then engaged with all of the issues, including the political and economic factors at stake, and not only the issues of maritime boundary delineation. Australia then engaged and determined a Maritime Boundary treaty in 2018.

13.5 Arbitration

- This is tending towards a more formalised method of dispute settlement
- It involves a third party, it is a legal form of dispute settlement (i.e., the arbitrators (generally an odd number of them to prevent deadlocks) will apply international law to create awards (which are binding decisions on the parties))
- Arbitration can be pursued in many different ways, and there are two key types of it:
 - Inter-state (i.e., government vs government)
 - * This is a legal form of dispute settlement (there are independent arbitrators, who apply international law and make a legally binding decision)
 - * This may be ad-hoc (i.e., to resolve a specific dispute, and so the arbitration tribunal is established only when there is a specific issue), or institutional (i.e., arbitration is established as a standing, go-to system of dispute resolution)
 - * An example includes the South China Sea Arbitration (2016)
 - Individual/corporation vs state (e.g., investment arbitration)

- * Bilateral investment treaties (BITs) often provide for arbitration between an individual/corporation and a state, which is a legal form of dispute settlement
- * An example is the *Philip Morris v Australia* (2015) case under the Hong Kong-Australia BIT, which concerned Australia's plain packaging laws for tobacco products; Philip Morris challenged this but was ultimately unsuccessful

13.6 Judicial Settlement

- Judicial settlement is the most formal process of dispute settlement
- It is institutionalised (i.e., consists of permanent courts and tribunals) by definition, and
 as opposed to arbitration (where the parties can choose the arbitrators as they want),
 turning to judicial settlement means accepting the current compositions of the courts as
 they stand at that point in time
- Judicial settlement consists of fair and impartial judges who render a decision according to law (i.e., a legal situation)
- This is an open process, and the decisions are binding upon the parties
- However, the decisions are not binding on non-parties of that case, and so there is no system of precedent
- From *ICJ Statute* Article 38(1)(d), judgements of international courts and tribunals may influence the development of international law
- There are a range of international courts and tribunals, including:
 - The International Court of Justice (ICJ)
 - The International Criminal Court (ICC)
 - The International Tribunal for the Law of the Sea (ITLOS)
 - World Trade Organization (WTO) Dispute Settlement Body
 - Regional courts (e.g., the European Court of Human Rights, the European Court of Justice)
 - International criminal tribunals
 - Human rights courts

13.7 International Court of Justice

- The ICJ is governed by the Statute of the International Court of Justice, and the Rules of Court
- It is composed of 15 judges elected by the UN General Assembly for 9-year terms; whilst
 their election is a political process, once they are elected they are operate impartially and
 independently of their state

13.7.1 Jurisdiction

- The ICJ has **contentious jurisdiction**, which enables it to hear cases between two or more states (this is jurisdiction *ratione personae*)
- Under ICJ Statute Article 34(1), only states may be parties to ICJ proceedings
- Under *ICJ Statute* Article 59, the decisions of the ICJ are only binding on the parties to the case, and not on third parties (i.e., there is no system of precedent)

Statute of the ICJ Article 34

- 1. Only states may be parties in cases before the Court.
- 2. The Court, subject to and in conformity with its Rules, may request of public international organizations information relevant to cases before it, and shall receive such information presented by such organizations on their own initiative.
- 3. Whenever the construction of the constituent instrument of a public international organization or of an international convention adopted thereunder is in question in a case before the Court, the Registrar shall so notify the public international organization concerned and shall communicate to it copies of all the written proceedings.

Statute of the ICJ Article 59

The decision of the Court has no binding force except between the parties and in respect of that particular case.

Statute of the ICJ Article 36

- 1. The jurisdiction of the Court comprises all cases which the parties refer to it and all matters specially provided for in the Charter of the United Nations or in treaties and conventions in force.
- 2. The states parties to the present Statute may at any time declare that they recognize as compulsory *ipso facto* and without special agreement, in relation to any other state accepting the same obligation, the jurisdiction of the Court in all legal disputes concerning:
 - (a) the interpretation of a treaty;
 - (b) any question of international law;
 - (c) the existence of any fact which, if established, would constitute a breach of an international obligation;
 - (d) the nature or extent of the reparation to be made for the breach of an international obligation.
- 3. The declarations referred to above may be made unconditionally or on condition of reciprocity on the part of several or certain states, or for a certain time.

- 4. Such declarations shall be deposited with the Secretary-General of the United Nations, who shall transmit copies thereof to the parties to the Statute and to the Registrar of the Court.
- 5. Declarations made under Article 36 of the Statute of the Permanent Court of International Justice and which are still in force shall be deemed, as between the parties to the present Statute, to be acceptances of the compulsory jurisdiction of the International Court of Justice for the period which they still have to run and in accordance with their terms.
- 6. In the event of a dispute as to whether the Court has jurisdiction, the matter shall be settled by the decision of the Court.
- The ICJ's contentious jurisdiction is based on state consent (this is a core tenet), which can be expressed in a number of ways:
 - Special agreement (compromis), per *ICJ Statute* Article 36(1)
 - Jurisdictional clause in a treaty (compromissory clause), per ICJ Statute Article 36(1)
 (this is a provision that allows the parties to refer a dispute to the ICJ, but the
 general treaty is not a compromis as it is not completely about dispute resolution,
 but rather contains some clauses which enable disputes to be resolved in the ICJ)
 - Jurisdiction under the optional clause (compulsory jurisdiction), per ICJ Statute
 Article 36(2) (this is a declaration deposited by a state that it accepts the ICJ's
 jurisdiction in all disputes with other states that have deposited the same declaration
 or similar declarations)
 - Forum prorogatum (i.e., the parties agree to submit a dispute to the ICJ after the dispute has arisen, per ICJ Rules Article 38(5))
- 74 states have accepted the ICJ's compulsory jurisdiction under *ICJ Statute* Article 36(2), but many include reservations, and so the ICJ's compulsory jurisdiction is not all-encompassing
- Australia's 2002 declaration holds as follows (noting that (b) precluded Timor Leste from bringing a case against Australia in the ICJ, but didn't halt conciliation):
 - Australia "declares that it recognises as compulsory ipso facto and without special agreement, in relation to any other State accepting the same obligation, the jurisdiction of the [ICJ] ... This declaration does not apply to: (a) any dispute in regard to which the parties thereto have agreed or shall agree to have recourse to some other method of peaceful settlement; (b) any dispute concerning or relating to the delimitation of maritime zones ... (c) any dispute in respect of which any other party to the dispute has accepted the compulsory jurisdiction of the Court only in relation to or for the purpose of the dispute ..."
- The Whaling in the Antarctic Case [2014] ICJ Rep 226 briefly considered Australia's reservation (in that case, it was held that (b) of Australia's reservation did not apply as the dispute was not about the delimitation of maritime borders; moreover, the ICJ held that

Australia's and Japan's declarations and reservations combined comprised the parameters of jurisdiction)

| | When consent is | The scope of the | How proceedings |
|-------------------|--------------------|---------------------|-----------------|
| | given | consent given | are commenced |
| Special Agreement | After the dispute | A specific dispute | Bilaterally |
| (compromis) | has arisen | | |
| Forum Prorogatum | After the dispute | A specific dispute | Unilaterally |
| | has arisen | | |
| Compromissory | Before the dispute | Usually a category | Unilaterally |
| Clause | has arisen | of disputes | |
| Optional Clause | Before the dispute | Disputes generally, | Unilaterally |
| | has arisen | subject to reserva- | |
| | | tions | |

Table 13.2: Types of Jurisdiction of the ICJ

- Under compromissory jurisdiction, states cannot take disputes over different categories (e.g., if a compromissory clause is made over technology rights, then one cannot be made over human rights, as it is a different category)
- Under optional jurisdiction, the subject matter jurisdiction/jurisdiction *ratione materiae* is broad

13.7.1.1 Reciprocity of Jurisdiction

- Reservations to the ICJ's jurisdiction have a reciprocal nature; the ICJ will always look at the declarations of both countries, and determine the overlap between them (i.e., which set of parameters satisfies both declarations)
- E.g., if Country A accepts 100% of the ICJ's jurisdiction, and Country B accepts 50% of the ICJ's jurisdiction, then the ICJ will only have jurisdiction over the 50% that both countries accept

Nicaragua v United States [1984] ICJ Rep 392

"Declarations of acceptance of the compulsory jurisdiction of the Court are facultative, unilateral engagements, that States are absolutely free to make or not to make. In making the declaration a State is equally free either to do so unconditionally and without limit of time for its duration, or to qualify it with conditions or reservations."

This case affirmed that declarations and reservations can be done in terms of subject matter and other issues (e.g., time); it is completely up to the state to determine the parameters of its acceptance of the ICJ's jurisdiction, and the ICJ will not question the validity of those reservations or declarations unless it is fundamentally incompatible with the purpose of the ICJ.

Norwegian Loans Case (France v Norway) [1957] ICJ Rep 9

"The French Declaration accepts the Court's jurisdiction within narrower limits than the Norwegian Declaration; consequently the common will of the Parties, which is the basis of the Court's jurisdiction, exists within these narrower limits indicated by the French reservation."

The ICJ noted here that the French reservation accepts the ICJ's jurisdiction in a narrower manner than the Norwegian declaration, and so the common will of the parties is found through the narrower French reservation.

Interhandel Case (Switzerland v United States) [1959] ICJ Rep 6

In this case, a Swiss company was caught up in war measures in the US, and the Swiss government sued the US in a diplomatic protection's claim. The US sought to rely on certain reservations in the Swiss acceptance of the ICJ's jurisdiction.

Reciprocity enables the State which has made the wider acceptance of the jurisdiction of the Court to rely upon the reservations to the acceptance laid down by the other Party. There the effect of reciprocity ends. It cannot justify a State, in this instance the United States, in relying upon a restriction which the other Party, Switzerland, has not included in its own Declaration.

13.7.1.2 Existence of a Dispute

Marshall Islands Case [2016] ICJ Rep 833

Here, the ICJ held that even if the existence of jurisdiction is satisfied, the existence of a dispute must also be satisfied.

Here, the Marshall Islands contended that the UK and other states were in breach of their nuclear disarmament obligations. The Marshall Islands was the subject of substantial nuclear testing with long-standing effects. The UK contended that the Marshall Islands had brought the case before it could even be established that there was a dispute or what the parameters of the dispute were.

The existence of a dispute is a condition of the ICJ's jurisdiction, and it must be showed that the claim of a party is positively opposed by the other. Prior negotiations were not required where jurisdiction was established under *ICJ Statute* Article 36(2) (unless one of the relevant declarations required it). However, whether a dispute exists is a matter for objective determination, with the ICJ considering any bilateral or multilateral exchanges between parties (without this, jurisdiction cannot be positively established).

Here, the ICJ found that there was no evidence that the Marshall Islands had made a concrete claim such that it crystallised a dispute between the parties; whilst they had for a period of time raised general concerns, they had never raised their case prior to the submission of their application. On the President's casting vote (the ICJ was otherwise

tied 8-8), the ICJ held that there was no dispute present, and hence they did not have jurisdiction to hear the case.

Dissenting Opinion of Crawford J

In his dissenting opinion, Crawford J held that there was no basis for an objective awareness test for the existence of a dispute, and that the ICJ has traditionally exercised flexibility in determining the existence of a dispute. He held that the dispute here should have been characterised as a multilateral dispute, relying on *South West Africa (Preliminary Objections)* as authority that disputes may crystallise in multilateral fora. From this, he held that there was an incident dispute between the Marshall Islands and the respondent, given that the Marshall Islands had associated itself with one side of a multilateral disagreement with nuclear weapons states.

13.7.2 Admissibility

- Even when the ICJ has jurisdiction, it may still be unable to hear a case if it is inadmissible, which can arise for a number of reasons:
 - An indispensable third party is not present
 - The dispute is moot or hypothetical
 - The dispute is non-justiciable (i.e., it is a political question, rather than a legal dispute - this is very rare)
 - The applicant does not have standing (i.e., there is no injury, the nationality of claims rule is breached, the rule on exhaustion of local remedies is breached, etc.)

13.7.2.1 Indispensable Third Party

- A claim may be inadmissible as a third party integral to the proceeding of a case is not present
- This doctrine was set out in *Monetary Gold (Italy v France; UK and US)* [1954] ICJ Rep 19, and as such, this doctrine is known as the *Monetary Gold principle*

Monetary Gold (Italy v France; UK and US) [1954] ICJ Rep 19

This case was set out to recover gold that was said to be owned by Albania to Italy, and had been recovered in Germany at the end of World War II. It was a complex dispute, as Italy wanted access to the gold in satisfaction of the reparations it was owed by Albania, the UK wanted access by way of reparations for interests suffered in the *Corfu Channel Case* [1949] ICJ Rep 4 (where UK ships struck mines in Albanian waters).

The Court held that whilst the claims were not invalid, Albania was missing from the proceedings. Since the ICJ's jurisdiction operates on a consensual basis, it could not decide on a case involving Albania if Albania was missing from the proceedings and had not consented to jurisdiction otherwise, as Albania was a central party of this case. The Court also stated that:

"Where ... the vital issue to be settled concerns ... a third State, the Court

cannot, without the consent of that third State, give a decision."

East Timor (Portugal v Australia) [1955] ICJ Rep 6

This case, which can be described as the equivalent of *Horta v Commonwealth* (1994) 181 CLR 183 (Page 56), saw Portugal seeking to take action against Australia, holding that the treaty that had been negotiated between Australia and Indonesia regarding the Timor Gap was invalid. The ICJ held that Portugal and Australia had accepted the jurisdiction of the ICJ, but Indonesia had not, and as such, the validity of the treaty could not be determined as it would then require the ICJ to determine the lawfulness of Indonesia's 1975 invasion of East Timor, which was a matter that could not be determined without Indonesia's consent. As such, the ICJ held that it could not hear the case, as Indonesia was an indispensable third party given its interests would constitute the core of the dispute.

In this case, the effects of the judgment ... would amount to a determination that Indonesia's entry into and continued presence in East Timor are unlawful ... Indonesia's rights and obligations would thus constitute the very subject-matter of such a judgment made in the absence of that State's consent.

Nauru v Australia [1992] ICJ Rep 240

Nauru initiated legal proceedings against Australia at the International Court of Justice (ICJ), seeking reparations for environmental damage caused by phosphate mining on its territory. Australia objected to the court's jurisdiction, arguing that the United Kingdom and New Zealand, two other administering authorities of Nauru, were not parties to the case due to their reservations about the court's jurisdiction. The ICJ ultimately determined that it had jurisdiction, as the resolution of the dispute did not require passing judgment on the rights or obligations of the UK or New Zealand, which were not vital to the case. While a decision might have implications for the legal situation of these two states, their interests were not central to the subject matter of Nauru's application, allowing the court to proceed without their involvement.

13.7.2.2 Non-Justiciable Dispute

Legal Consequences of the Construction of a Wall in Occupied Palestinian Territory [2004] ICJ

"Given its responsibilities as the "principal judicial organ of the UN" (Article 92 of the *UN Charter*), the Court should in principle not decline to give an advisory opinion. In accordance with its consistent jurisprudence, only "compelling reasons" should lead the Court to refuse its opinion [citations omitted]."

Here, the ICJ has interpreted its role as the principal judicial organ of the UN to mean that it should not decline to give a judgement/advisory opinion on the basis that a dispute has some political aspects; so long as there is a legal question to be answered, the ICJ will answer it, and set aside the political aspect of it.

13.7.3 Provisional Measures

Statute of the ICJ Article 41

- 1. The Court shall have the power to indicate, if it considers that circumstances so require, any provisional measures which ought to be taken to preserve the respective rights of either party.
- 2. Pending the final decision, notice of the measures suggested shall forthwith be given to the parties and to the Security Council.
- Provisional measures are akin to interim/interlocutory relief to protect the rights of the
 parties prior to the final determination of the substance of the case (they are generally
 granted to prevent irreparable harm to the parties)
- Provisional measures are governed under ICJ Statute Article 41
- Provisional measures orders are legally binding, per La Grand (Germany v United States)
 [2001] ICJ Rep 466

La Grand (Germany v United States) [2001] ICJ Rep 466

This case reinforced that provisional measures are legally binding and that states must comply, as opposed to a case of states being encouraged to comply. This case related to the *Vienna Convention on Consular Relations*, which includes a compromissory clause, where disputes on this convention can be referred to the ICJ. The US withdrew its acceptance of the ICJ's jurisdiction halfway through the *Nicaragua case*. *La Grand* did not involve an optional clause, but instead involved a compromissory clause.

A lot of foreign nationals had been executed in the US; in this instance, there were two German nationals (who were born in Germany but had moved to the US when they were little) who were involved in a bank robbery that had gone very wrong. They were sentenced to death, and Germany took up a diplomatic protection claim against the US, claiming that it had violated its obligation under the *Vienna Convention on Consular Relations* to allow Germany to provide consular assistance (and hence, they had not been provided proper legal representation). Pending their execution, Germany sought provisional measures before the ICJ to prevent the executions, and the ICJ granted this. The US executive claimed they could not enforce this, as they were unable to order the state of Arizona (which was holding the German nationals).

- Key preconditions that give rise to the ICJ issuing provisional measures include:
 - Prima facie jurisdiction (i.e., it is not conclusively satisfied that the ICJ has
 jurisdiction, but there is a reasonable basis to believe that it does; if the court later
 holds that it does not have jurisdiction, the provisional measures will immediately
 cease to have effect, but will continue to hold until that time)
 - Existence of a dispute
 - Applicant must have standing
 - The rights to be protected are plausible and are linked to the requested measures

- Risk of irreparable damage (i.e., there is the chance that any damage that occurs before the ICJ can hear the case will not be reparable)
- Urgency (i.e., there is a real and imminent risk that irreparable prejudice will be caused to the rights claimed)
 - * Provisional measures can only be granted where there is a real and imminent risk that rights will be violated

Application of the Convention on the Prevention and Punismnent of Crime of Genocide in the Gaza Strip (South Africa v Israel) [2024] ICJ Rep 1

The ICJ has now issued three sets of provisional measures

Provisional Measures 26 January 2024

In 2024, the court determined that it possessed prima facie jurisdiction over the case, recognising the existence of a dispute under the Genocide Convention. The court further established that South Africa had standing to bring the case, as all states share an erga omnes obligation to uphold the provisions of the Geneva Convention. This obligation underscores the collective responsibility of all states to ensure compliance with the Genocide Convention, reflecting a common interest in its enforcement.

The court also addressed the issue of provisional measures, which may be ordered to preserve the rights in question, provided those rights are plausible. South Africa sought to protect the plausible rights of Palestinians in Gaza to be safeguarded from acts of genocide. While the court found no plausible proof of genocide occurring, it held that South Africa had plausible rights to seek protection for the affected population, thereby satisfying the requirement of plausible rights for the imposition of provisional measures.

Furthermore, the court considered the risk of irreparable prejudice to the claimed rights, determining that there was a real and imminent risk that such prejudice would occur. This assessment was based on the catastrophic humanitarian situation in the Gaza Strip, which the court noted was at serious risk of deteriorating further before a final judgment could be rendered.

Provisional Measures 28 March 2024

South Africa requested a modification of the provisional measures, citing a change in the situation regarding Israel's conduct in Gaza. The court determined that a modification of provisional measures requires a demonstrated change in the situation, a condition that was met due to the deterioration of conditions in Gaza.

The court expressed regret, observing that "the catastrophic living conditions of the Palestinians in the Gaza Strip have deteriorated further, in particular in view of the prolonged and widespread deprivation of food and other basic necessities to which the Palestinians in the Gaza Strip have been subjected". In light of this, the court indicated the need for additional provisional measures to address the worsening circumstances.

Provisional Measures 24 May 2024

South Africa requested a modification of the provisional measures on the basis of changes

in the situation. They held that "the humanitarian situation is now to be characterised as disastrous ..." The ICJ stated that:

The Court considers that, in conformity with its obligations under the Genocide Convention, Israel must immediately halt its military offensive, and any other action in the Rafah Governorate, which may inflict on the Palestinian group in Gaza conditions of life that could bring about its physical destruction in whole or in part

13.7.4 Advisory Jurisdiction

- Usually, the ICJ does not have jurisdiction to issue opinions on issues, which are known as advisory opinions
- However, the ICJ can provide an advisory opinion on any legal question at the request of authorised UN bodies (e.g., the UNGA, UNSC, and some other UN bodies)
- Advisory opinions are not binding, but they tend to be extremely influential
- Subjects of advisory opinions include:
 - Questions regarding UN law, per Certain Expenses of the United Nations [1962] ICJ Rep 151
 - Decolonisation, per Chagos Islands [2019] ICJ Rep 95
 - Unlawful occupation, per Legal Consequences Arising from the Policies and Practices of Israel in the Occupied Palestinian Territory [2024]
 - Climate change, per Obligations of States in Respect of Climate Change [pending]

Appendix A

Scaffolds

How to Answer a Problem Question

- 1. Read the question
 - (a) Read the question in one go (no notes, no highlighter, just a straight reading)
 - (b) Read the question again, making notes of the potential issues in the margins and why specific words/provisions are being used
 - (c) Read the question a third time to ensure nothing has been missed, and whether any issues interact with each other
- 2. Identify how the question will be answered (generally in sequential order)
- 3. Make sure to cover IRAC:
 - (a) Issue
 - (b) Rule
 - (c) Analysis
 - (d) Conclusion
- 4. Unless the question is direct, use vague terminology and argue both sides (e.g., 'it appears', 'it might be the case that', etc.)
- 5. It is good to refute arguments where possible and then point to a secondary argument, as this shows depth
- 6. If there are facts that distinguish this case from precedent, make sure to engage in a brief but nuanced analysis
- 7. Use subheadings to distinguish issues! Look at obligations both under a treaty and under general international law!

A.1 Development, Nature and Scope of Public International Law

A.2 Sources of Public International Law

- 1. Is the document a source of public international law?
 - (a) The ICJ is the principal judicial organ of the UN
 - (b) Under Art 38(1) of the *Statute of the International Court of Justice* (Page 3), the sources of public international law are:
 - i. Treaties
 - ii. Custom
 - iii. General principles of law
 - iv. Judicial decisions and the teachings of publicists
 - (c) Art 38(1) is 'generally regarded as a complete statement of the sources of international law' *Ure v Commonwealth* (2016) 329 ALR 452 at [15] (Perram, Robertson and Moshinsky []) (Page 4)
 - (d) Did the state consent to be bound to the jurisdiction of the ICJ/to the terms of the source?
- 2. Was the source a treaty?
 - (a) Under Art 38(1)(a) of the ICJ Statute, treaties are a source of international law
 - (b) Was the document a bilateral and/or multilateral convention between two or more states?
 - (c) See Topic 3 scaffolds (A.3 on Page 231) for a detailed analysis
 - (d) Note that if there are a number of instances of states contravening a treaty, it is not necessary for the states to provide consistently correct conduct and that some variations in practice are acceptable, and they do not form a new rule *Military and Paramilitary Activities in and against Nicaragua* [1986] ICJ Rep 14 [186]
- 3. Was there international custom involved?
 - (a) Under Art 38(1)(b) of the *ICJ Statute*, custom is a source of international law, and requires two elements: *North Sea Continental Shelf Cases (Germany v Denmark; Germany v Netherlands)* [1969] ICJ Rep 3 (Page 6)
 - i. State practice objective evidence that the custom is practiced widely
 - ii. Opinio juris the belief that the practice is legally required
 - (b) Unless they are persistent objectors, all states are bound to customary international law
 - (c) Certain customary norms are *jus cogens*, which are peremptory norms from which no derogation is permitted
 - (d) Was there state practice?
 - i. State practice can be evidenced by materials that demonstrate the activities and views of states and state officials

- ii. State practice can generate custom if the following requirements are met: *North Sea Continental Shelf Cases* (1969) ICJ Rep 3
 - A. The practice was consistent over time (but not necessarily entirely uniform)

 Military and Paramilitary Activities in and against Nicaragua [1986] ICJ Rep
 14 (Page 6)
 - B. The practice was widespread
 - C. The practice was representative of multiple states (especially those who are most likely affected by it)
 - D. The practice was developed over a lengthy period of time (this is not a steadfast requirement; customary norms may still emerge rapidly if there is an overwhelming practice of it)
- iii. State practice can be shown through government legal opinions, treaty provisions and conduct in connection with resolutions that the country makes UN Draft conclusions on identification of customary international law Conclusion 10(2)
- iv. Under Conclusion 10(3), failure to react over time to a practice may serve as evidence of acceptance provided that the State was in a position to react and the circumstances called for some reaction
- (e) Was there opinio juris?
 - i. Opinio juris refers to the belief that the practice is legally required
 - ii. Opinio juris is hard to show, and generally can be shown through statements made by countries (North Sea Continental Shelf Cases (Germany v Denmark; Germany v Netherlands) [1969] ICJ Rep 3 at [77]), although it can also be shown through an omission of a state, which evinces a belief that the said State is obligated by law to refrain from acting in a particular way (The Lotus Case (France v Turkey) (1927) PCIJ Series A No 10 at page 28)
 - iii. If there is extensive state practice, then *opinio juris* tends to be less important, and vice-versa
- (f) It is possible for treaty norms to become custom, and for treaty provisions to become customary international law *North Sea Continental Shelf Cases* (1969) ICJ Rep 3 at [72]
 - i. However, the custom exists independently of the treaty *Military and Paramilitary Activities in and against Nicaragua* [1986] ICJ Rep 14 at [25]-[30] and [40]
- 4. Was there regional custom involved?
 - (a) The ICJ has recognised that it is possible for regional custom to exist, but invoking it requires a higher standard than general international custom *Asylum Case (Colombia v Peru)* [1950] ICJ Rep 226
 - Regional custom must have a higher degree of stability and continuity to apply as international law in that area – Asylum Case (Colombia v Peru) [1950] ICJ Rep 226
 - Such an example was made out in the English Court of Appeal in R (app.
 Al-Saadoon v Sec. of Defence) [2010] 1 All ER 271, where rules of regional custom
 were found to exist, but had not met the high threshold to be invoked (Page 9)

- 5. If there was custom involved, was the party a persistent objector?
 - (a) The doctrine of a persistent objector is fairly narrow, and enunciates that states which consistently object to the emergence of a rule from its earliest point of gestation will not be bound by it *Anglo Norwegian Fisheries Case (UK v Norway)* [1951] ICJ Rep 116
 - (b) A state cannot be a persistent objector to a *jus cogens* principle *International Law Commission 2019 Report* Chapter V Conclusion 14 (Page 9)
- 6. Was the source a general principle of international law?
 - (a) Under Art 38(1)(c) of the *ICJ Statute*, general principles of law recognised by civilised nations form a source of PIL, with the objective of avoiding the *non liquet* (the situation where 'it is not clear' by enabling the ICJ to look at different legal systems for inspiration)
 - (b) General principles of international law and municipal law are included in this provision
 - (c) General principles of law may be implicitly adopted in judicial decisions to enable a conclusion to be made *Bay of Bengal (Bangladesh/Myanmar)* [2012] ILTOS 12 (Page 10)
 - (d) For example, various domestic legal systems were examined in relation to the issue of estoppel to aid the Tribunal in its decision *Chagos Marine Protected Area Arbitration* (Mauritius v United Kingdom) (2015) XXXI RIAA 359
- 7. Was there a judicial decision and/or the teachings of a publicist?
 - (a) Whilst Art 38(1)(d) of the *ICJ Statute* enables judicial decisions and the work of publicists to be considered as sources of PIL, they are subsidiary means for the determinations of the rules of law, and are treated as having lesser significance than other sources
 - (b) Decisions taken by the ICJ do not constitute binding precedent in future decisions, but remain merely persuasive *Statute of the International Court of Justice* Art 59
 - i. These sources are "resorted to by judicial tribunals not for the speculations of their authors concerning what the law ought to be, but for trustworthy evidence of what the law really is" *The Paquete Habana* 175 US 677 (1900)
 - (c) Was this a UN General Assembly Resolution?
 - i. The UN General Assembly (UNGA) is the plenary body of the UN, and as all UN members have a seat, it has become a great forum for state practice and *opinio juris*
 - ii. Decisions of the UNGA are not binding, except in the key areas of (without these areas, the UN could not function):
 - A. Admission of member states
 - B. Suspension of member states
 - C. Matters related to the UN budget
 - iii. Resolutions of the UNGA can provide evidence for state practice
 - iv. UNGA resolutions can influence international law in three key ways

- A. Interpreting the Charter of the United Nations
- B. Affirming recognised customary norms (through passing a resolution)
- C. Influencing the creation of new customary norms
- v. UNGA resolutions, whilst normally not binding, may have normative value, and can provide "evidence important for the establishing the existence of a rule or the emergence of a *opinion juris*" *Legality of the Threat or Use of Nuclear Weapons* [1996] ICJ Rep 254 at [70] [73] (Page 14); such evidence can include:
 - A. The voting records of the UNGA
 - B. Transcripts of what was said on the floor of the UNGA
 - C. Margins of the votes undertaken in the UNGA
- (d) Was this a UN Security Council Resolution?
 - i. The UN Security Council (UNSC) has limited law-making capacity, but can adopt certain binding resolutions
 - ii. UNSC resolutions are binding only on the members of the UN *Charter of the United Nations* Art 25 (Page 15)
- 8. Was there a measure of soft law involved?
 - Soft law refers to rules that are binding but vague, and/or 'rules' that are clear but are not binding
 - They can articulate standards/norms that will, over time, become binding, and can also be used to interpret other sources of international law

A.3 The Law of Treaties

- 1. Was there a treaty involved?
 - (a) "Treaty" means an international agreement concluded between States in written form and governed by international law, whether embodies in a single instrument or in two or more related instruments and whatever its particular designation VCLT Art 2(1)(a) (Page 17)
 - (b) It has been accepted that a treaty may be written across multiple documents Maritime Delimitation and Territorial Questions (Qatar v Bahrain) (1994) ICJ Rep 112 at [23] (Page 19)
 - (c) 'Agreed Minutes' (or another document evincing agreement between two or more states) can constitute a treaty Maritime Delimitation and Territorial Questions (Qatar v Bahrain) (1994) ICJ Rep 112 (Page 19); Bay of Bengal (Bangladesh/Myanmar) [2012] ILTOS 12 (Page 10)
 - (d) A unilateral declaration can be considered to have binding effect *Nuclear Test Cases* (Australia v France) (1974) ICJ Rep 253 at [43]
 - i. "An undertaking ... if given publicly with an intent to be bound, even though not made within the context of international negotiations, is binding"
 - ii. This case outlines four key characteristics for a unilateral declaration to be binding:
 - A. The undertaking is made publicly with an intention to be bound

- B. It must be clear and specific
- C. It can be oral or written
- D. It must be made by someone who is authorised by the state to make a binding conclusion
- 2. Does the 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties (VCLT) apply?
 - (a) Was the treaty between two or more states? VCLT Art 3 (Page 18)
 - i. Under Article 3, the VCLT does not influence agreements between states and other subjects or between other subjects of international law
 - (b) Was the treaty in writing? VCLT Art 3 (Page 18)
 - The VCLT applies to written treaties only, but as many of its provisions are now customary law, those provisions may still apply to non-written treaties (see Table 3.4 on Page 38)
 - (c) Had the treaty commenced after 1980 (when the *VCLT* entered into force)?
 - As the *VCLT* entered into force in 1980, it only applies to treaties concluded after 1980, but many of its provisions can apply to treaties concluded before 1980 as provisions of general international law (see Table 3.4 on Page 38)
- 3. Was the treaty registered with the United Nations?
 - A treaty must be registered with the UN in order to be used as a binding instrument in proceedings before the UN – Charter of the United Nations Art 102; VCLT Art 80 (Page 23)
 - This is not a requirement for a treaty to be binding in general, but is a requirement for the treaty to be recognised before the UN
 - Registration only needs to be completed by one party
 - "Non-registration or late registration, on the other hand, does not have any consequence for the actual validity of the agreement, which remains no less binding upon the parties." Maritime Delimitation and Territorial Questions (Qatar v Bahrain) (1994) ICJ Rep 112 at [29] (Page 19)
- 4. Was the treaty signed by an appropriate authority/representative?
 - (a) Was the party entering into the treaty a state, an international organisation or an international entity with capacity to enter into the treaty?
 - i. Every state possesses capacity to conclude treaties VCLT Art 6 (Page 21)
 - (b) Has the individual representing the party produced full powers evincing their authority to enter into the treaty? VCLT Art 7(1)(a) (Page 17)
 - i. "Full powers" refers to a document emanating from the competent authority of a State designating a person or persons to represent the State for negotiating, adopting or authenticating the text of a treaty, for expressing the consent of the State to be bound by a treaty, or for accomplishing any other act with respect to a treaty VCLT Art 2(1)(d) (Page 17)
 - ii. Heads of State, Heads of Government and Ministers of Foreign Affairs are taken to have the capacity to conclude treaties without producing full powers – VCLT Art 7(2)(a) (Page 17)

- iii. Heads of diplomatic missions will likewise not need to produce full powers if they are accredited to adopt treaties in that area *VCLT* Art 7(2)(b) (Page 17)
- iv. A representative of a state will not need to produce full powers if they have been sent to a conference/organisation with the purpose of adopting the text of a treaty at that conference/organisation *VCLT* Art 7(2)(c) (Page 17)
- (c) If the individual has not produced full powers, is it evident from the practice of the States concerned or from other circumstances that the person is representing the State? VCLT Art 7(1)(b) (Page 17)
- 5. Did the state enter into the treaty?
 - (a) Signing is a two step process, entailing signature, and either ratification or accession
 - (b) Upon **signing** a treaty, the state expresses a willingness to continue the treaty-making process, and agrees with the treaty in principle
 - i. However, the state is not bound by the treaty at this point
 - (c) If the treaty is a new one, was it ratified by the party?
 - i. Upon ratification, the party indicates that it has consented to be bound by the treaty once it enters into force
 - (d) If the treaty is an existing one, was it **accessioned** by the party?
 - i. This only applies if a state is becoming party to a treat that is already negotiated and signed by other states
 - ii. This has the same legal effect as ratification
- 6. Was the treaty in force at the time of contention?
 - (a) A treaty enters into force in accordance with the relevant provisions in the treaty *VCLT* Art 24(1) (Page 22)
 - (b) If the treaty is silent on this point, it will enter into force when all parties have consented to being bound by it *VCLT* Art 24(2) (Page 22)
 - (c) If a party signs a treaty after its formation, it will be binding upon that state on the day that consent to being bound is established *VCLT* Art 24(3) (Page 22)
- 7. Does the treaty apply to the present scenario?
 - (a) The principle of *pacta sunt servanda* requires that "every treaty in force is binding upon the parties to it, and must be performed by them in good faith" *VCLT* Art 26 (Page 23)
 - (b) A party may not invoke the provisions of its internal law as justification for failing to perform its obligations *VCLT* Art 27 (Page 23)
 - i. However, they may do so if the other party was aware of that law, and the law was not contrary to the treaty *VCLT* Art 46 (Page 32)
 - (c) If the treaty has been signed but not ratified/approved/accepted, a state is obliged to not undermine the spirit of the treaty, and moreover is required to refrain from acts that would defeat the object and purpose of the treaty *VCLT* Art 18(a) (Page 24)

- The same principle also applies where a state has expressed its consent to be bound by the treaty, pending the entry into force of the treaty – VCLT Art 18(b) (Page 24)
- (d) Treaties do not impose obligations or create rights for third states in the absence of their consent (pacta tertiss nex nocent nec prosunt) VCLT Art 34 (Page 24)
- 8. Was there any reservation to the treaty?
 - (a) Was there a reservation or an interpretive declaration?
 - i. A reservation is a unilateral statement, however phrased or named, made by a State, when signing, ratifying, accepting, approving or acceding to a treaty, whereby it purports to exclude or to modify the legal effect of certain provisions of the treaty in their application to that State *VCLT* Art 2(1)(d) (Page 17)
 - ii. Interpretive declarations are statements made by a state to clarify its understanding of a treaty; it does not affect the legal effect of a treaty
 - (b) Was the reservation permissible?
 - i. By default, a reservation is permissible, unless: VCLT Art 19 (Page 25)
 - A. The reservation is prohibited by the treaty VCLT Art 19(a) (Page 25)
 - B. The treaty provides that only specified reservations may be made and the reservation in question is not in that list *VCLT* Art 19(b) (Page 25)
 - C. The reservation is otherwise incompatible with the object and purpose of the treaty *VCLT* Art 19(c) (Page 25)
 - ii. Incompatibility hinges on whether it "affects an essential element of the treaty that is necessary to its general tenor, in such a way that the reservation impairs the raison d'être [the most important reason] of the treaty" ILC Guide to Practice on Reservations Art 3.1.5
 - iii. If a reservation is impermissible:

 Briefly mention both points in discussion, and then note the first point is the predominant view.
 - A. Traditionally, this vitiates the consent of the state to the treaty as a whole and results in the state not being a party to the treaty (this is the predominant view) *Reservations to Genocide Convention* [1951] ICJ Rep 15 at page 18
 - B. More recently, the offending reservation will be held void, with the state being bound without the protection of the reservation (i.e., it is cut out), unless consent is conditional on reservation, in which case they are not bound to the treaty at all
 - (c) Was the reservation accepted or objected to? VCLT Art 20 (Page 26)
 - i. If a treaty expressly allows for reservations, then no acceptance of a reservation is required by other parties *VCLT* Art 20(1) (Page 26)
 - ii. If a treaty has a small number of parties and the application of the treaty in its entirety is an essential condition of signing, acceptance by all parties is required *VCLT* Art 20(2) (Page 26)
 - iii. If a treaty is a constituent instrument of an international organisation, and unless it otherwise provides, a reservation requires the acceptance of the competent organ of that organisation *VCLT* Art 20(3) (Page 26)

- iv. Acceptance by the other contracting state(s) of the reservation results in the reserving state being bound by the treaty (with the reservation incorporated) *VCLT* Art 20(4)(a) (Page 26)
- v. Objection to a reservation does not prevent entry into force of a treaty between the objecting state and the reserving state, unless the objecting state says otherwise *VCLT* Art 20(4)(b) (Page 26)
- vi. An act indicating consent to being bound by the treaty that contains a reservation is effective as soon as at least one other state has accepted the reservation *VCLT* Art 20(4)(c) (Page 26)
- vii. Unless the treaty provides otherwise, a reservation is considered to have been accepted if no objections are raised within 12 months of notification of the reservation, or by the date on which it consented to be bound to the treaty, whichever is the later *VCLT* Art 20(5) (Page 26)
- (d) What is the legal effect of the reservation?
 - i. If State A accepts State R's reservation, then the treaty is modified only between States A and R, to the the extent of the reservation VCLT Art 21(1) and (2) (Page 27); Republic of India v CCDM Holdings, LLC [2025] FCAFC 2 at [63] (Page 27)
 - A. However, other states will not be bound by this reservation; it acts as a side agreement between State A and State R *VCLT* Art 21(2) (Page 27)
 - ii. If State B objects to State R's reservation, and says the treaty is not to apply, then there is no treaty between them at all *VCLT* Art 20(4)(b) (Page 26)
 - iii. If State C objects to State R's reservation but does not say that the treaty is not to apply, then the treaty applies, but "the provisions to which the reservation applies do not apply ... to the extent of the reservation" *VCLT* Art 21(3) (Page 27)
- (e) Was the state a persistent objector?
 - i. States which consistently object to the emergence of a rule of custom from its earliest point of gestation will not be bound by it Anglo Norwegian Fisheries
 Case (UK v Norway) [1951] ICJ Rep 116 (Page 10)
 - ii. A state cannot be a persistent objector to a *jus cogens* principle *International Law Commission 2019 Report* Chapter V Conclusion 14 (Page 9)
- 9. How was the treaty interpreted by the state?
 - (a) There are a number of different approaches to treaty interpretation:
 - i. Formalist/Textual (formal adherence to the terms of the treaty)
 - ii. Restrictive (deference to state sovereignty)
 - iii. Teleological (to give effect to the object and purpose of the treaty)
 - iv. Effectiveness (to ensure the treaty regime remains as effective as possible)
 - v. Originalist (to focus on the original purpose of the treaty)
 - (b) The Australian courts will apply the VCLT when interpreting a treaty that has been incorporated into Australian law *DHI22 v Qatar Airways* [2024] FCA 348 at [30] (Halley J), citing *Povey v Qantas Airways Ltd* (2005) 233 CLR 189 at [24] (Gleeson CJ, Gummow, Hayne and Heydon JJ) (see Section 3.5 on Page 28)

- (c) The VCLT contains rules on how to interpret treaties VCLT Art 31 (Page 28)
- (d) Under the VCLT, instruments used in treaty interpretation must have been adopted by all states *Whaling in the Antarctic Case* [2014] ICJ Rep 226 at [83] (Page 29)
- (e) As a last resort, supplementary means of interpretation can be used to interpret the provisions of a treaty under Art 31 *VCLT* Art 32 (Page 30)
- 10. Is the treaty void or otherwise invalidated?
 - (a) Is the treaty void?
 - i. If the State's representative had been coerced into entering the treaty, or there were acts or threats directed against the representative, a State's consent will not be made out and so the treaty will be void *VCLT* Art 51 (Page 31)
 - ii. If a State's consent was obtained through a threat or the use of force, it is void *VCLT* Art 51 (Page 31)
 - iii. If a treaty conflicts with a *jus cogens* norm, it is void *VCLT* Art 51 (Page 31)
 - iv. If a new *jus cogens* norm has emerged since the ratification of a treaty and the treaty conflicts with that *jus cogens* norm, the treaty is void *VCLT* Art 51 (Page 31)
 - (b) Is the treaty invalid?
 - i. Did the state's consent to a treaty involve a violation of an internal law of fundamental importance? *VCLT* Art 46(1) (Page 32)
 - A. A state may not invoke inconsistent internal law as a basis on which it could not sign a treaty, unless that rule is of manifest importance
 - ii. If a representative of a state had gone beyond what he was authorised to do so in signing the treaty, their omission to observe their limitations will not constitute an invalidation of the treaty, unless the restriction was notified to other states prior to the expression of consent *VCLT* Art 47 (Page 32)
 - (c) Was there an error of fact that formed the essential basis of consent? VCLT Art 48 (Page 32)
 - i. Consent may be validated by means of an error if the error relates to a fact or situation assumed by the state that existed at the time when the treaty was concluded, and forms an essential basis of its consent to be bound by the treaty VCLT Art 48(1) (Page 32)
 - ii. An error of fact cannot be plead by a party if they contributed to it, could have avoided it, or were otherwise put on notice of a possible error *VCLT* Art 48(2) (Page 32); *Temple of Preah Vihear (Cambodia v Thailand)* [1962] ICJ Rep 6 at Page 17
 - iii. If there is an error relating to only the wording of the treaty's text, its validity is not affected, and Art 79 is enlivened *VCLT* Art 48(3) (Page 32)
 - (d) Had the state been induced to conclude the treaty by the fraudulent conduct of another state? *VCLT* Art 49 (Page 32)
- 11. Are there grounds to terminate, withdraw or suspend the treaty?
 - The following constitute internal grounds of termination, withdrawal or suspension.

- (a) Was the treaty terminated or withdrawn from under:
 - i. Its provisions? VCLT Art 54(a) (Page 34)
 - ii. By consent of all of the parties after consultation with the other contracting states? *VCLT* Art 54(b) (Page 34)
- (b) Was the treaty suspended under:
 - i. Its provisions? VCLT Art 57(a) (Page 34)
 - ii. By consent of all of the parties after consultation with the other contracting states? *VCLT* Art 57(b) (Page 34)

The following constitute external grounds of termination, withdrawal or suspension.

- (c) Was there a denunciation or withdrawal from the treaty when there is no provision to do so? *VCLT* Art 56 (Page 34)
 - i. There is generally no right of denunciation, except where: *VCLT* Art 56(1) (Page 34)
 - A. It is established that the parties intended to admit the possibility of denunciation or withdrawal *VCLT* Art 56(1)(a) (Page 34)
 - B. A right of denunciation or withdrawal may be implied by the nature of the treaty *VCLT* Art 56(1)(b) (Page 34)
 - ii. Under this provision, a party must give at least 12 months' notice of its intention to denounce/withdrawal from the treaty VCLT Art 56(2) (Page 34)
- (d) Was there a material breach? VCLT Art 60 (Page 35)
 - i. A material breach involves a wrongful act being intentionally committed by a party *Gabčíkovo-Nagymaros Case* [1997] ICJ Rep 7 at [72]-[81] (Page 37)
 - ii. In a bilateral treaty, this entitles the other party to terminate the treaty or suspend its operation, in whole or in part *VCLT* Art 60(1) (Page 35)
 - iii. If there was a breach in a multilateral treaty: VCLT Art 60(2) (Page 35)
 - A. The other parties can unanimously opt to suspend or terminate the treaty either (i) between themselves and the defaulting state, or (ii) between all parties *VCLT* Art 60(2)(a) (Page 35)
 - B. A party who has been especially affected has grounds to suspend the treaty in whole or in part between itself and the defaulting state *VCLT* Art 60(2)(b) (Page 35)
 - C. Any party other than the defaulting party may suspend the treaty in whole or in part if the breach is such that it radically changes the position of every party with respect to the further performance of its obligations under the treaty VCLT Art 60(2)(c) (Page 35)
 - iv. Moreover, a material breach entails:
 - A. A repudiation of the treaty not sanctioned by the present Convention *VCLT* Art 60(3)(a) (Page 35)
 - B. The violation of a provision essential to the accomplishment of the object or purpose of this treaty *VCLT* Art 60(3)(b) (Page 35)
 - v. A party cannot claim material breach if they themselves had committed the wrongful act *Gabčíkovo-Nagymaros Case* [1997] ICJ Rep 7 at [92]-[94] (Page 37)

- (e) Did the performance of the treaty become impossible? VCLT Art 61 (Page 36)
 - i. A state may terminate or withdraw from a treaty if its performance has become impossible because 'an object indispensable for the execution of the treaty' has permanently disappeared or been destroyed *VCLT* Art 61(1) (Page 36)
 - ii. However, impossibility of performance may not be invoked if the impossibility is the result of a breach by that party either of an obligation under that treaty or any other international obligations owed to any other party of the treaty VCLT Art 61(2) (Page 36)
- (f) Was there a fundamental change of circumstances that precluded the operation of the treaty? *VCLT* Art 62 (Page 37)
 - i. Under the principle of *pacta sunt servanda* (VCLT Art 26 on Page 23), the party must have exhausted all possible avenues before claiming a fundamental change of circumstances
 - ii. A fundamental change of circumstances entails: *Gabčíkovo-Nagymaros Case* [1997] ICJ Rep 7 at [104] (Page 37)
 - A. The circumstances at the conclusion of the treaty must have been an essential basis of consent
 - B. The change must not have been foreseen
 - C. The change must radically transform the extent of the obligations still to be made performed
 - iii. A fundamental change of circumstances may not be invoked as a grounds for termination/withdrawal unless: *VCLT* Art 62(1) (Page 37)
 - A. The existence of those circumstances constituted an essential basis of the consent of the parties to be bound by the treaty; and *VCLT* Art 62(1)(a) (Page 37)
 - B. The effect of the change is radically to transform the extent of the obligations still to be performed under the treaty *VCLT* Art 61(1)(b) (Page 37)
 - iv. A fundamental change of circumstances may not be invoked as a ground for terminating or withdrawing from a treaty: *VCLT* Art 62(2) (Page 37)
 - A. If the treaty establishes a boundary VCLT Art 62(2)(a) (Page 37)
 - B. If the fundamental change is the result of a breach by the party invoking it *VCLT* Art 62(2)(b) (Page 37)
 - v. If a party invokes a fundamental change of circumstances as a ground for terminating or withdrawing from a treaty, it may also invoke the change as a ground for suspending the operation of the treaty VCLT Art 62(3) (Page 37)
 - vi. International courts are very reluctant to find that impossibility and/or fundamental change of circumstances have been made out (i.e., they have a very high threshold and thus a very limited scope, as suggested by the negative wording of the Articles) Gabčíkovo-Nagymaros Case [1997] ICJ Rep 7 at [104] (Page 37)
 - vii. Art 62 has generally been accepted as a codification of the existing customary law on termination by fundamental change of circumstances *Fisheries Jurisdiction (United Kingdom v Iceland)* ICJ Reports 1973, pg. 63, para. 36

A.4 International Law and Australian Law

- 1. Was this a matter involving Australia, or a state which follows the Australian approach to adopting international law?
- 2. How does international law influence Australian law?
 - (a) International law applies between states, but may also recognise institutions of domestic law that have an extensive/important role in international law (e.g., corporations) *Barcelona Traction (Belgium v Spain)* [1970] ICJ Rep 3 (Page 44) [where corporations could be recognised within international law]
 - (b) Absent/inconsistent domestic law is not excuse for failing to meet international obligations Alabama Claims Arbitration (US/Britain) (1872); Sandline Arbitration (1998)
 - (c) Expert evidence cannot be adduced to prove or explain statements of international law ACCC v PT Garuda (No 9) [2013] FCA 23 at [31] (Perram J) (Page 48)
 - (d) Common law can be developed with regard to international law, where it is not inconsistent with domestic law *Chow Hung Ching v R* (1949) 77 CLR 449, 471 (Starke J) (Page 50)
 - i. However, international law is not incorporated as part of Australian law, but rather is a **source** Latham CJ at page 462; Dixon J at page 477
 - (e) International law cannot automatically be imported/included in Australian law, but remains a "legitimate and important influence on the development of the law" Mabo v Queensland (No 2) (1992) 175 CLR 1, 42 (Brennan J) (Page 51)
 - i. This is especially the case when referring to aspects of international law that touch on universal human values (e.g., human rights)
 - (f) However, in cases such as a civil claim for torture (or any other serious crime forbidden under international law), the common law of state doctrine should reflect universal norms *Habib v Commonwealth* (2010) 183 CLR 62 at [7] (Black CJ) (Page 51)
- 3. Has customary international law been implemented in Australian law? Always explore monism and dualism for a nuanced discussion, and describe how this results in Australia's hard transformation approach.
 - (a) Whilst there is no clear authority, the automatic incorporation of customary international law in Australia has been rejected
 - (b) Australia has rejected the monism approach (where states and international law form one entity), and has adopted a hard transformation approach that tends towards dualism (where states and international law form two separate entities) (Section 4.2 on Page 48)
 - i. Under the **hard transformation approach**, only legislation may implement the provisions of international law into domestic law; otherwise, international law does not apply (this is the approach favoured in Australia, following *Chow Hung Ching v R* (1949) 77 CLR 449 (Latham CJ at 462; Dixon J at 477) (Page 50))

- ii. The soft transformation approach holds that legislation or court decisions may implement the provisions of international law (discussed by Latham CJ in *Chow Hung Ching v R* (1949) 77 CLR 449 (Page 50)), but so far has been rejected *Dietrich v R* [1992] HCA 57 (Page 54)
 - A. "International law is not as such part of the law of Australia, but a universally recognized principle of international law would be applied by our courts" *Chow Hung Ching v R* (1949) 77 CLR 449, 462 (Latham CJ) (Page 50)
- (c) If the country is instead following the UK's approach, see Section 4.3 on Page 49
- 4. Was this a matter involving international criminal law?
 - (a) Customary/international criminal law can never be a part of the Australian common law/transformed or implemented by the courts (it can only be imported by statute) *Nulyarimanna v Thompson* (1999) 165 ALR 621 (Page 52)
 - i. At [20], Wilcox J held that if domestic criminal law could be influenced by customary/international criminal law, it would lead to the position where international obligations have greater obligations than domestic consequences, sidelining domestic law and thus a state's independence to make its own criminal laws
 - ii. This is moreover a position adopted in the UK *R v Jones* [2006] 2 All ER 741 (Lords Bingham, Mance and Hoffman) (Page 53)
 - (b) *Jus cogens* principles of international law are not automatically part of Australian common law, and criminal offences must be created by statute, not by the courts *Nulyarimanna v Thompson* (1999) 165 ALR 621 at [17], [20], [32], [57] (Wilcox and Whitlam JJ) (Page 52)
 - For example, the jus cogens prohibition of genocide was not automatically part of Australian common law, and had to be created by statute (see the above paragraphs for context)
 - ii. Merkel J dissented, and held that the approach that should be taken was the 'common law adoption approach', which is that a rule of international law is to be adopted by a court so long as it is not inconsistent with legislation or public policy
- 5. Does the matter involve a treaty being implemented into Australian law?
 - (a) The power to enter into treaties is exclusively an Executive prerogative power *Constitution* s 61 (Page 54)
 - i. In interpreting the external affairs power, the HCA has held that they only need to look at whether the law applies geographically externally to Australia, not whether the international law was void by virtue of the underlying treaty being void *Horta v Commonwealth* (1994) 181 CLR 183, 191
 - ii. "The federal executive, through the Crown's representative, possessed exclusive and unfettered treaty-making power" *Koowarta v Bjelke-Petersen* (1982) 153 CLR 168 at [215] (Stephen J) (Page 57)
 - (b) The power to implement the provisions of a treaty is a legislative power *Constitution* s 51(xxix) [the 'external affairs' power]

- Treaty provisions do not form a part of Australia law until they have been implemented by statute – *Dietrich v R* [1992] HCA 57 (Brennan CJ, Mason and McHugh JJ) (Page 54)
- ii. Resolutions of international organisations (e.g., the UN Security Council) do not form a part of Australian law until they have been implemented by statute Bradley v Commonwealth (1973) 128 CLR 557, 582 (Barwick CJ and Gibbs J) (Page 54)
 - A. If Parliament 'approves' a treaty, it is not binding
 - B. The mere approval of Parliament does not give a treaty the force of law (this practice has since lapsed)
- iii. Under *Constitution* s 51(xxix), the law must carry into effect treaty obligations, and be reasonably considered to be appropriate and adapted to achieving this objective *Commonwealth v Tasmania* (1983) 158 CLR 1, 40 (Deane J) (Page 57)
- iv. Ratification only occurs after a treaty has been implemented into internal legislative provisions/given the force of law (the legislative approach is the preferred one, as it the most common and avoids uncertainty)
- 6. Does the matter involve Australia entering into/making a treaty?
 - (a) Australia can enter into two types of treaties:
 - i. Bilateral treaties, which enter into force for Australia after
 - A. Signature
 - B. Subsequent exchange of notes stating that the constitutional process is completed
 - ii. Multilateral treaties, which enter into force for Australia after
 - A. Signature
 - B. Subsequent ratification (or accession if there was no previous signature)
 - (b) Whilst there is no constitutional requirement for the Parliament to be involved in the treaty-making process, since 1996, Parliament has been consulted on the treaty-making process (without a veto) *Trick or Treaty?* (1995 Report of the Senate Legal and Constitutional References Committee)
 - i. The present convention is that all proposed treaty conventions are tabled in Parliament at least 15 sitting days prior to any binding action being undertake (with exemptions for urgent or sensitive treaties)
 - ii. A National Interest Analysis (NIA) is also prepared, which is akin to an explanatory memorandum for a treaty
 - iii. The treaty should also be reviewed by the Joint Standing Committee on Treaties
- 7. Should international law be used to interpret Australian statute?
 - (a) International law can be used as extrinsic material when interpreting legislation which refers to a treaty *Acts Interpretation Act 1901* (Cth) ss 15AB(1) and (2)(d) (Page 58)
 - (b) International law can be used to interpret a legislative provision that incorporates a treaty provision; in this instance, the rules of treaty interpretation apply rather than statutory interpretation

- (c) Is the *Polites* principle enlivened?
 - i. The *Polites* principle refers to the presumption that the Parliament intends to give effect to Australia's obligations under international law, in the absence of express words/intention to the contrary *Polites v Commonwealth* (1945) 70 CLR 60, 77 (Dixon J) (Page 60)
 - A. It is a general rule of statutory interpretation that, in the absence of express words to the contrary, it is presumed that legislation is intended to be in conformity with the treaty-based rules of international law
 - ii. Once a treaty is ratified and implemented into domestic law, statutory interpretation requires courts to presume that legislation is intended to be in conformity with international law (*Polites* principle) because Parliament, *prima facie*, intends to give effect to Australia's international obligations
 - iii. The *Polites* principle does not apply to constitutional interpretation, as it would violate the requirement for a referendum to modify the *Constitution* under s 128 *Al-Kateb v Godwin* (2004) 208 ALR 124 (Page 60)
 - A. At [66], McHugh J outlined that it was never the case that the *Constitution* should have been interpreted to conform with the rules of international law
 - B. At [175], Kirby J (in dissent) held that the *Constitution* should be interpreted in a way that is generally harmonious with the basic principles of international law, including as that law states human rights and fundamental freedoms
- 8. How is treaty law implemented into Australian law?
 - (a) Signing of the treaty
 - i. The Commonwealth Executive has the exclusive power to sign treaties (see 5a)
 - ii. Parliamentary approval is not necessary, but as a matter of convention, it has been sought (see 5b)
 - (b) Implementation of the treaty
 - i. Parliament will generally be consulted about the treaty, but constitutionally, its approval is not required to sign the treaty (see 5b)
 - ii. Following the *Trick or Treaty* report (see 6b), the Executive will consult Parliament before signing treaties
 - iii. All proposed treaty actions are tabled in Parliament at least 15 sitting days prior to a binding action
 - iv. Parliament can provide recommendations and scrutinise the treaty, but ultimately the Executive has the final say
 - (c) Ratification of the treaty
 - i. The treaty is ratified by the executive once domestic legislation is present to incorporate the terms of the treaty
 - ii. Under VCLT Art 2(1)(b) (Page 17), ratification is the intentional act whereby a state indicates its consent to be bound to a treaty if the parties intended to show their consent (generally, the depositary will collect the ratifications of all states)

A.5 Personality, Statehood and Self-Determination

- 1. Does the entity have an international legal personality?
 - (a) International legal personality gives an actor rights, duties and powers on the international plane, with international legal personality being a spectrum incurring different obligations and rights Reparations for Injuries Suffered in the Service of the United Nations Advisory Opinion [1949]
 - i. With international legal personality, an entity can:
 - A. Make claims before international committees, courts and tribunals
 - B. Be subject to some or all international legal obligations
 - C. Be empowered to enter into treaties
 - D. Enjoy the jurisdiction of some national courts
 - (b) States have the largest international legal personality, with the most rights and obligations
 - i. This is contingent on whether an entity has statehood
 - (c) A non-territorialised entity can still have international personality (e.g., the Holy See, which is the government of the Vatican City State, has international legal personality, but is not a state in the traditional sense)
 - (d) By default, a corporation does not possess international legal personality
 - i. Thus, corporations cannot be parties to a treaty
 - ii. Corporations may be parties to contracts governed by international law ('internationalised' contracts) – Texaco Overseas Petroleum Company v Libya (1977) 53 ILR 389
 - (e) Individuals have a limited degree of international legal personality
 - i. They cannot enter into treaties, and only have standing before international courts in limited circumstances
 - ii. Individuals are subject to international and criminal human rights laws *ICC*Statute (1998) Art 25; Nuremberg Trial Judgement (1947); R v Bow Streets Magistrate, ex Parte Pinochet (No 3) [1999] 2 All ER 97
 - (f) International organisations do not possess general competence, but are instead governed by the principle of 'specialty' (i.e., they can only act within the limits of their powers as defined by their constitutive treaties) WHO Advisory Opinion [1996] ICJ Rep 66
 - i. International organisations may enter into treaties
 - ii. International organisations may be responsible for wrongful acts *ILC Draft Articles on the Responsibility of International Organisations (2011)*
 - iii. International organisations can seek compensation against states where their interests have been harmed *Reparation for Injuries Case* [1949] ICJ Rep 174
 - (g) Corporations and individuals cannot go to international courts as only states can be parties to a dispute *ICJ Statute* Art 34(1)
 - Instead, other modes, such as arbitration (ICJ Statute Art 33(1)) are used to resolve the dispute peacefully – ICJ Statute Art 2(3) (See Scaffold A.13 on Page 289)

Points 2-4 concern whether an entity is a state.

- 2. Does the entity meet the criteria for statehood?
 - (a) Does the entity have a permanent population? Montevideo Convention on the Rights and Duties of States (1933) Art 1(a)
 - i. There is no requirement as to the size of the population (e.g., Nauru has less than 10,000 people but is still a state), but the population must be permanent
 - (b) Does the entity have a defined territory? Montevideo Convention on the Rights and Duties of States (1933) Art 1(b)
 - i. Whilst the boundaries do not need to be fixed/undisputed, there must be a reasonably coherent territory that is effectively governed by the state
 - ii. E.g., the Vatican City is a microstate, and Nauru has an area of 21 km², but both are recognised as states
 - (c) Does the entity have a functioning government? Montevideo Convention on the Rights and Duties of States (1933) Art 1(c)
 - i. The form or quality of the government is irrelevant, so long as it can effectively control the area
 - (d) Does the entity have the capacity to enter into relations with other states? *Montevideo Convention on the Rights and Duties of States* (1933) Art 1(d)
 - i. A state cannot be subject to the control of another state
 - ii. So long as it is not placed under the legal authority of another state, it remains an independent state *Customs Union Between Germany and Austria* (1931) PCIJ Series A/B No 41, 57-8 (Judge Anzilotti)
- 3. Has the entity been recognised as a state by other states?
 - (a) Recognition may be required to enjoy the benefits of statehood
 - If other states refuse to recognise to engage with the state, the state will have no partners to make treaties or exchange diplomatic representations and will not be welcomed into international organisations – Thomas Grant, Praeger 1999, 24
 - (b) There are two theories on the effects of recognition:
 - i. Constitutive theory recognition by other states is a precondition to statehood (i.e., a condition precedent)
 - ii. Declaratory theory (the predominant view) recognition by other states does not create an entity's statehood, but merely acknowledges that the entity is a state (i.e., a condition subsequent) *Great Britain v Costa Rica* (1923)
 - A. Under this theory, international law contains no prohibitions on declarations of independence (*Kosovo Advisory Opinion* [2010] ICJ Rep 403), but this does not meant that other states would give recognition
 - (c) Recognition of a state will often be accompanied by a statement that addresses some of the Montevideo criteria
 - (d) International law contains no prohibition of declarations of independence, but other states should not recognise a unilateral seceding entity before it has acquired statehood – Kosovo Advisory Opinion [2010] ICJ Rep 403

- (e) Recognition of a state may not be extended when a state is created as a result of unlawful use of force/aggression Stimson Doctrine
 - i. Puppet states will not be recognised as states (e.g., Manchukuo, a Japanese puppet state in China from 1932-1945)
- (f) If a state is created through the breach of peremptory norms of international law, it will not be recognised as a state *Kosovo Advisory Opinion* [2010] ICJ Rep 403
- 4. Has the entity's government or a foreign corporation been recognised as legitimate?
 - (a) Does this concern a foreign government?
 - i. It is usually the case that a new government is given recognition, especially if the government has changed in the normal manner for that entity
 - ii. Australia will otherwise examine the constitutionality of the new government, the control of the government over the territory, the inter-governmental dealings, and the extent of international recognition, among other factors
 - (b) Does this concern a foreign corporation?
 - i. To see if a foreign body or person is legitimate, that body or person needs to be validly incorporated in a place outside Australia, by reference to the law of that place *Foreign Corporations (Application of Laws) Act 1989* (Cth) s 7(2)
 - ii. The application of (i) is not affected by the recognition or non-recognition at any time:
 - A. Of a foreign state or place Foreign Corporations (Application of Laws) Act 1989 (Cth) s 9(1)(a)
 - B. Of the government of a foreign place or state Foreign Corporations (Application of Laws) Act 1989 (Cth) s 9(1)(b)
 - C. That a place forms part of a foreign state Foreign Corporations (Application of Laws) Act 1989 (Cth) s 9(1)(c)
 - D. Of the entities created, organised or operating under the law applied by the people in a foreign state or place *Foreign Corporations (Application of Laws)*Act 1989 (Cth) s 9(1)(d)
- 5. Do the people of the entity have a right to self-determination?
 - (a) The right to self-determination refers to the rights of all people to freely determine their political status and to pursue their economic, social and cultural development 1966 ICCPR and 1966 ICECSR Common Art 1
 - i. Self-determination is "the need to pay regard to the freely expressed will of peoples" – Western Sahara Advisory Opinion [1975] ICJ Rep 12 at [59]
 - ii. The right to self-determination is an *erga omnes* customary rule of international law, with all states possessing an interest to protect that right *UNGA Resolution* 1514XV (1960); Chagos Islands Advisory Opinion [2019] ICJ Rep 95; Construction of a Wall in Occupied Palestinian Territory [2005] at [155]
 - (b) The right to self-determination is subject to the principle of *uti possidetis juris* (respect for existing frontiers) *Burkina Faso/Mali* [1986] ICJ Rep 554
 - i. If a new state has emerged from an area granted independence, the new entity will possess the same borders/frontiers as it did prior to independence – Burkina Faso/Mali [1986] ICJ Rep 554

- ii. This principle generally applies to colonies achieving independence
- (c) Is there an external right of self-determination?
 - i. Generally, people cannot choose to become independent unless they are in one
 of three scenarios: Reference Re Secession of Quebec (1988) 2 SCR 217; Declaration
 of Granting Independence to Colonial Countries and Peoples (GA Res 1514 (XV)
 1960)
 - A. They are under colonial rule or are a non-self-governing territory
 - B. They are subject to alien subjugation, domination or exploitation
 - C. Possibly they are under oppression and are blocked from meaningful self-determination ('remedial secession')
 - ii. Where there is an external right of self-determination, the people have three choices (though there is no automatic or default choice): Chagos Islands
 Advisory Opinion [2019] ICJ Rep 95
 - A. Emerge as a sovereign independent state
 - B. Freely associate with an independent state (e.g., the Cook Islands' free association with New Zealand)
 - C. Integrate with an independent state
 - iii. "The recognised sources of international law established the right to self-determination of a people is normally fulfilled through internal self-determination" *Reference Re Secession of Quebec* (1998) 2 SCR 217 at [126]
- (d) Is there an internal right of self-determination?
 - i. The internal right to self-determination refers to the ability of the peoples of a state to choose independence for themselves
- (e) Are there Indigenous people seeking self-determination?
 - i. This is an example of internal self-determination
 - ii. Indigenous people have the right to self-determination 2007 UN Declaration on the Rights of Indigenous People Art 3
 - iii. Indigenous people have the right to autonomy or self-government in matters relating to their internal and local affairs 2007 UN Declaration on the Rights of Indigenous People Art 4

A.6 Title to Territory

- 1. Was there territory involved?
 - (a) Once an entity has territory, it can attach statehood to
 - (b) Only states can acquire territory, not individuals *Ure v Commonwealth* (1949) 79 CLR 1, 6 (Latham CJ)
 - (c) Territory does not equate sovereignty, but sovereignty does imply ownership of territory
 - i. Sovereignty in relation to territory is 'the right to exercise therein, to the exclusion of any other State, the functions of a State' *Island of Palmas* (1928)
 - ii. Territorial sovereignty refers to a state's right to exercise exclusive jurisdiction within its territory

- (d) Sovereignty encompasses a state's authority within territorial boundaries, jurisdiction refers to the specific legal powers and rights exercised by a state over certain activities under international law
- 2. Was there the occupation of territory?
 - (a) The territory must have been:
 - i. Unoccupied (not under the sovereignty of another state); or
 - ii. Terra nullius (abandoned, or otherwise no population) Western Sahara Advisory Opinion [1975] ICJ Rep 162
 - A. Occupation is the exercise of sovereignty over territory that has been deemed as terra nullius Western Sahara Advisory Opinion ICJ Rep 162; Clipperton Island Arbitration (France v Mexico) 1932
 - B. "Territories inhabited by tribes or peoples having a social and political organization [are] not regarded as terrae nullius" Western Sahara Advisory Opinion [1975] ICJ Rep 162 at [80]
 - C. Territories inhabited by tribes or people having a social and political organisation are not regarded as terra nullius Western Sahara Advisory Opinion [1975] ICJ Rep 162; Mabo v Queensland (No. 2) (1992) 175 CLR 1
 - D. International law has never regarded occupied territory as terra nullius *Mabo v Queensland (No. 2)* (1992) 175 CLR 1 at [41], [47] (Brennan J)
 - (b) Occupation is "an original means of peaceably acquiring sovereignty over territory" Western Sahara Advisory Opinion [1975] ICJ Rep 162
 - (c) Whether territory was lawfully occupied or otherwise lawfully acquired is solely within the domain of international law, and cannot be questioned by Australian domestic law *Mabo v Queensland (No. 2)* (1992) 175 CLR 1 at [3] (Deane and Gaudron JJ)
 - (d) Was there an intention to occupy?
 - i. Was there an expression of formal intent to claim possession of the land (*animus occupandi*; e.g., the planting of a flag)?
 - ii. Was there a demonstration of effective control/occupation? Clipperton Island Arbitration (France v Mexico) 1932
 - A. Was there a continuous and peaceful display of state authority?
 - B. Was there a responsible authority that exercises governmental functions (effectivités)?
 - C. Was the occupation's spatial extent, duration, continuity and peacefulness all of a sufficient degree?
 - iii. Did the claimant show that there was the exercise of a continuous and peaceful display of state authority over the territory?
 - A. This includes the presence of a responsible authority that exercises governmental functions
 - iv. Was the claimant a state actor or a private actor acting on behalf of a state organ?
 - A. Individuals may not acquire title in unoccupied land not claimed by a state *Ure v Commonwealth* [2016] FCAFC 8

- 3. Was there the prescription of territory?
 - (a) Prescription refers to the acquisition of the title to territory formerly occupied by another state through a peaceful exercise of sovereignty for a period of time *Island of Palmas Case (Netherlands v US)* (1928); *Malaysia v Singapore* [2008] ICJ Rep 12
 - (b) Discovery alone is insufficient; a positive intention to claim the territory must be shown *Island of Palmas Case (Netherlands v US)* (1928)
 - (c) Are the criteria/elements for prescription met? Kasikili/Sesdudu Island (Botswana v Namibia) [1999] ICJ Rep 1045
 - i. À titre de souverain (the possession has to be under state authority, and not by a private actor)
 - ii. Peaceful possession
 - A. The possession is not peaceful if it is challenged by another state, and hence no prescription can be found *US v Mexico* (1911)
 - iii. The possession must be made public
 - iv. Uninterrupted
 - v. Endure for a length of time
 - vi. Acquiescence by another state (meek protests by the original title holder or a failure to assert their time evinces an intention to surrender their title to the territory) *Malaysia v Singapore* [2008] ICJ Rep 12
 - (d) Whether prescription has occurred takes into account two key factors:
 - i. Intention and will to act
 - A. An absence of reaction may well amount to acquiescence *Malaysia v Singapore* 2008 (e.g., no statement of rejection tends towards acceptance)
 - ii. Actual exercise
 - A. Sovereignty can be shown through a display of state authority being open, public, continuous and peaceful (i.e., that the state has the intention to acquire that territory) *Island of Palmas Case (Netherlands v US)* (1928)
 - B. There is a high threshold *Land and Maritime Boundary between Cameroon and Nigeria (Cameroon v Nigeria)* [2002] ICJ Rep 303 (in this case, even though Cameroon (the initial territory holder) had engaged in only occasional direct acts of administration, having limited material resource to devote to this distant area and hence could not 'be viewed as an acquiescence in the loss' of the territory of Nigeria)
 - (e) To determine if prescription has occurred, the critical date must be decided, which is the the date 'falling at the end of a period within which material facts a dispute is said to have occurred', and 'after which the actions of the parties to a dispute can no longer affect the issue'
 - (f) El Salvador v Honduras [1992] ICJ Rep 351 provides some examples of the critical date:
 - i. When a new state emerged with boundaries determined by the *uti possidetis* principle
 - ii. Arises from a tribunal decision
 - iii. Arises from a boundary treaty, from 'acquiescence or recognition'

- 4. Was there the cession, accretion, avulsion or conquest of the territory?
 - (a) Cession is the voluntary transfer of sovereignty over territory from one state to another, whether by treaty or by consent
 - i. International law does not impose upon the parties any particular form of cession, but instead places an emphasis on the consent of the parties – Malaysia v Singapore [2008]
 - ii. Consent can either be through tacit agreement or through conduct *Malaysia v* Singapore [2008]
 - iii. Consent by the state can be given through tacit or active recognition of a state's authority *Temple of Preah Vihear (Cambodia v Thailand)* [1962] ICJ Rep 6
 - iv. There are two developments that restrict the availability of cession:
 - A. The VCLT now prevents the formation of treaties (including treaties of cession) that have been procured under force or by threat
 - B. Cession may go against the principle of self-determination, as it may not reflect the will of the people in the territory ("any detachment by administering Power of Part of a non-self-governing territory, unless based on freely expressed and genuine will of people of the territory concerned is contrary to the right of self-determination") Legal Consequences of the Separation of the Chagos Archipelago from Mauritius in 1965 [2019] ICJ Rep 95
 - (b) Accretion is the gain of physical territory through natural processes
 - (c) Avulsion is the loss of physical territory through natural processes
 - (d) Conquest is the forceful and unlawful acquisition of territory, and is illegal under international law *UN Charter* Art 2(4)
- 5. Is there a dispute over territorial sovereignty?
 - (a) Sovereignty is binary a state either can or cannot have sovereignty over territory at a given point in time
 - (b) There is a presumption that the original claimer, by default, has a superior claim to title *Legal Status of Eastern Greenland (Norway v Denmark)* (1933) PCIJ
 - (c) The ICJ will only take into account activities by the states that occurred before the dispute crystallised (the critical date) Case Concerning Sovereignty over Pulau Ligitan and Pulau Spiadan (Indonesia v Malaysia) [2002] ICJ Rep 625; Case Concerning Sovereignty Over Pedra Branca/Pulau Batu Puteh, Middle Rocks and South Ledge (Malaysia/Singapore) [2008] ICJ Rep 12
- 6. Are maritime zones involved?
 - (a) Maritime zones are governed by 1982 UN Convention on the Law of the Seas (UNCLOS)
 - (b) UNCLOS prevails over any territorial sovereignty claims in respect of maritime zones which are inconsistent with its provisions to the extent of inconsistency South China Sea Arbitration (Philippines v China) [2016] PCA
 - (c) Upon becoming a signatory to *UNCLOS*, any pre-existing claims are extinguished *South China Sea Arbitration (Philippines v China)* [2016] PCA
 - (d) Is there a dispute over baselines?

- i. Normal baselines follow the contours of the coast, and are the default baseline used *UNCLOS* Art 5
- (e) Is there a dispute over internal waters?
 - i. A state has full sovereignty over its internal waters, and there is no right of innocent passage through internal waters *UNCLOS* Art 8
- (f) Is there a dispute over the territorial sea?
 - i. The territorial sea extends 12 nautical miles from the baseline UNCLOS Art 3
 - ii. The state has territorial sovereignty in this area (and as such, it is inherently unclaimable), with very few exceptions (the most prevalent of which is the right of innocent passage through the territorial sea)
- (g) Is there a dispute over rocks, islands or artificial islands?
 - i. UNCLOS is used to determine what constitutes as territory South China Sea Arbitration (Philippines v China) [2016] PCA
 - ii. The normal baseline for measuring the breadth of the territorial sea is the low-water line along the coast *UNCLOS* Art 5
 - iii. In the case of islands situated on atolls or of islands that have fringing reefs, the baseline for measuring the breadth of the territorial sea is the seaward low-water line of the reef *UNCLOS* Art 6
 - iv. Rocks can be considered as islands if they can sustain human habitation or economic life of their own *UNCLOS* Art 121
 - v. Rocks must remain unsubmerged at high tide to be considered as islands *UNCLOS* Art 121
- (h) Is there a dispute over the contiguous zone?
 - i. The contiguous zone is the 12-24 nautical mile zone immediately following the territorial sea *UNCLOS* Art 33(2)
 - ii. In this zone, coastal states may only enforce the law against vessels in the matters of customs, tax, immigration and quarantine *UNCLOS* Art 33(1)
 - A. It is therefore not a zone of sovereignty, but rather a zone of enforcement jurisdiction
- (i) Is there a dispute over the exclusive economic zone (EEZ)?
 - i. The EEZ extends up to 200 nautical miles from the baseline of a coastal state UNCLOS Art 57; South China Sea Arbitration (Philippines v China) [2016] PCA
 - ii. A state can assert rights to all of the living and non-living resources (including everything in the soil, subsoil, water column, etc.), and everything on the surface (e.g., renewable energy resources) *UNCLOS* Art 56(1)
 - iii. A coastal state does not have sovereignty over the EEZ, but merely has rights over the resources and the ability to regulate them *UNCLOS* Art 56
 - A. Other states still have the rights of navigation; they just cannot use those resources *UNCLOS* Art 58(1)
- (j) Is there a dispute over the continental shelf?
 - i. The continental shelf is an inherent seabed resources zone, with states having inherent ownership of everything on the seabed and the subsoil, as well a anything living on the seabed *UNCLOS* Art 76(1)

- ii. The continental shelf extends to either 200 nautical miles from the baseline or 100 nautical miles from the 2500m isobath *UNCLOS* Art 76(5)
- iii. The state must have applied for it, it is not automatically granted
- iv. In the continental shelf, the sovereign state may explore and exploit its natural resources *UNCLOS* Art 77(1)
- (k) Is there a dispute over the high seas?
 - i. The high seas are non-appropriable areas of the sea not subject of the jurisdiction of any nation, and remain open *UNCLOS* Art 87; *UNCLOS* Art 89
 - ii. The high seas may only be used for peaceful purposes UNCLOS Art 88
 - iii. All states may sail their ships in the high seas, whether coastal or land-locked *UNCLOS* Art 90
- (l) Is this a dispute over the archipelagic waters?
 - i. These refer to waters within an archipelago (a group of islands) *UNCLOS* Art 46
 - ii. Archipelagic baselines are drawn such that they encompass the outermost points of the outermost islands, up to a limit of 100 nautical miles *UNCLOS* Art 47
 - iii. These waters are held to be similar to the territorial sea, and states have sovereignty over the archipelagic waters *UNCLOSA*rt 49
- (m) Is there a dispute over the deep seabed (the Area)?
 - i. This cannot be appropriated by any state, and is managed by the International Seabed Authority (as established under *UNCLOS* Art 156-157)
- 7. Is Antarctica, airspace or outer space involved?
 - (a) Is Antarctica involved?
 - i. No new claims to territory in Antarctica can be made, but existing claims are not renounced and are instead 'frozen' 1959 Antarctic Treaty Art 4
 - ii. There are 7 claimants to territory in Antarctica: Argentina, Australia, Chile, France, New Zealand, Norway, and the UK
 - (b) Is airspace involved?
 - i. A state has sovereignty over the airspace above its territory and territorial sea
 - ii. Other states have the freedom of overflight over the contiguous zone, the EEZ and the high seas
 - iii. The boundary between national airspace and outer space is not clearly defined
 - (c) Is outer space involved?
 - i. Outer space (including the moon and other celestial bodies) remains the province of mankind, and any exploration/use shall be carried out for the benefit of all countries 1967 Outer Space Treaty Art 1
 - A. There are 113 parties to this treaty
 - ii. Outer space is not subject to national appropriation or claims of sovereignty by any means 1967 Outer Space Treaty Art 2
 - (d) Is the moon or another celestial body involved?

- i. The moon and other celestial bodies are the common heritage of mankind 1979
 Moon Agreement Art 11(1)
 - A. There are only 18 parties to this treaty, and aside from the 1967 Outer Space Treaty, no other forms of state practice exist in this area
- ii. No state can make a claim in sovereignty over the moon or a celestial body 1979 Moon Agreement Art 11(2)
- iii. States may explore and use the moon in a manner that doesn't prejudice the rights of other states 1979 Moon Agreement Art 11(4)

A.7 State Jurisdiction

- 1. What type of state jurisdiction is being exercised?
 - (a) Prescriptive jurisdiction, which is the power to enact laws/assert jurisdiction by legislation (legislative power)
 - (b) Adjudicative jurisdiction, which is the power to apply laws and decide disputes (judicial power)
 - (c) Enforcement jurisdiction, which is the ability to enforce laws within a state's territory (executive power)
- 2. Does the state have a claim in civil jurisdiction?
 - (a) This is the exercise by states of power (both prescriptive and adjudicative) over persons, matters or things in private disputes, with international law taking a very hands-off approach on this front
 - (b) An example of this is the Alien Torts Claims Act 1789 (US), which conferred jurisdiction on US federal courts in civil actions by non-nationals for violations of international law, although this is now interpreted in a more restrictive manner
 - i. The injury of Nigerian plaintiffs by Royal Dutch Petroleum *Kiobel v Royal Dutch Petroleum* (SCOTUS, 2013)
 - ii. A Mexican national kidnapped by US agents in Mexico and then brought to the US for trial *Sosa v Alvare-Machain* (SCOTUS, 2014)

For criminal jurisdiction, if there is an overlap in jurisdiction or jurisdiction is otherwise concurrent, the state with the most significant connection to the crime will have the first opportunity to prosecute (to prosecute, a state must have custody of the offender).

- 3. Does the state have a claim in criminal jurisdiction under the territorial principle?
 - (a) The territorial principle holds that states may exercise criminal jurisdiction over nationals or non-nationals where the elements of a criminal offence take place within its territory
 - (b) Did the offence take place within a geographical nexus of the state?
 - i. If there is a collision in the high seas between two different nationalities, the victim vessel and thus state has no jurisdiction over the perpetrator vessel – UNCLOS Art 97

- ii. The grounds of an embassy remain the territory of the host state for the purposes of jurisdiction (but enforcement of that jurisdiction is a separate issue due to diplomatic inviolability) *R v Turnbull; ex parte Petroff* (ACTSC, 1971)
- iii. The territory of a state includes its territorial seas *R v Disun; R v Nardin* (WASC, 2003)
- (c) Did the offence take place within several states?
 - i. There are two approaches to this:
 - A. **Subjective territorial jurisdiction** the exercise of prescriptive jurisdiction by the state in which the criminal offence originated, but was completed outside its territory (i.e., the start place of the offence)
 - B. **Objective territorial jurisdiction** the exercise of prescriptive jurisdiction by the state in which the criminal offence is completed, even if it was initiated outside its territory (i.e., the end place of the offence)
 - ii. States can exercise jurisdiction "if one of the constituent elements of the offence, and more especially its effects, have taken place there. A state may, in certain circumstances, exercise prescriptive and adjudicative jurisdiction beyond their territory" SS Lotus Case (1927) PCIJ at 18
 - iii. Victoria follows the objective territorial jurisdiction approach *Ward v R* (1980) 142 CLR 308
 - iv. NSW follows the objective territorial jurisdiction approach *Crimes Act 1900* ss 10A, 10C(1)
 - v. A geographic nexus in NSW exists if:
 - A. The offence was committed wholly or partly in NSW (irrespective of whether there were any effects in NSW) *Crimes Act 1900* s 10C(2)(a)
 - B. The offence is committed wholly outside NSW, but the offence has an effect in NSW *Crimes Act 1900* s 10C(2)(b)
 - vi. The objective territorial jurisdiction approach is also internationally:
 - A. *SS Lotus Case* (1927) PCIJ held that because the "effect" of the alleged crime was felt on the Turkish ship, and since the court had assimilated the Turkish ship to Turkish territory, the effects had been felt in Turkey's territory and hence Turkey had jurisdiction
 - B. *US v Neil* (2002), where the victim of sexual assault was an American citizen, and even though the sexual misconduct had taken place in Mexican waters, the US had jurisdiction over the issue
- (d) Does the legislation in question apply the 'effects doctrine'?
 - This doctrine holds that the legislation is not intended to have an extra-territorial effect unless it says so expressly or by implication – Dennis Pearce, Statutory Interpretation in Australia
 - ii. It applies only if the provision in question expressly states that it applies extraterritorially (e.g., "this legislation applies in the state and including any place outside of the state"); in Australia, *Crimes Act 1900* (NSW) s 10C(2) applies extra-territorially
- (e) Does the legislation have extended objective territoriality?

- Legislation can have a very broad/'extended' scope, where it can apply to acts
 that have been committed outside of the state, or have an effect or results on the
 state
- ii. The effect can also be physical or intangible (e.g., a threat to the peace, order, or good government of the state)
- (f) There are three categories/situations of offence that a state can exercise this power:
 - i. Offences committed wholly or partly on the territory of the prosecuting state
 - ii. Offences committed wholly outside the state, but which have an actual effect in the state
 - iii. Offences committed wholly outside the state, but which may have an effect on the state
- 4. Does the state have a claim in criminal jurisdiction under the nationality principle?
 - (a) The nationality principle holds that states may exercise criminal jurisdiction over their nationals, regardless of where the offence was committed XYZ v Commonwealth (2006) 227 CLR 532 at [130]
 - (b) Determining the nationality of a person is left to municipal law
 - (c) Were there child sex offences committed outside Australia by an Australian national?

 Criminal Code 1995 (Cth) Div 272 (unsuccessfully challenged in XYZ v

 Commonwealth (2006) 227 CLR 532)
 - (d) It has been contended that the nationality principle also applies to citizens and residents of states XYZ v Commonwealth (2006) 227 CLR 532 (Gleeson CJ)
 - (e) If an individual has renounced their nationality, such a renunciation must be accepted by the state and given effect before the nationality principle ceases to apply; otherwise, a unilateral renunciation of nationality is not effective and will not extinguish jurisdiction under the nationality principle
 - (f) In the case of terrorism, if the terrorists are 'foreign fighters' (i.e., citizens of countries which are party to the *Rome Statute*), the nationality principle can be used by the ICJ to prosecute these individuals *Statement of the Prosecutor of the ICC on Alleged Crimes Committed by ISIS*
 - (g) A state must have legislation enacting the ability to convict their nationals extra-territorially; e.g.,:
 - i. Crimes (Child Sex Tourism) Amendment Act 1994 (Cth) holds that "if the offence is committed outside Australia, a person can only be charged if at the time of the offence they were an Australian citizen or were ordinarily resident in Australia"
- 5. Does the state have a claim in criminal jurisdiction under the protective (security) principle?
 - (a) The protective (security) principle allows states to take actions against individuals that impaired a fundamental/vital state security interest, even if it occurred outside of the state by non-nationals (this is more concerned with the nature of the offence, rather than the nature of the offence)
 - (b) For a state to exercise criminal jurisdiction under the protective principle, a recognised linking point must be established between the state and the accused, and the state and the victim:

- i. Crimes against a group of people itself are sufficient *A-G v Eichmann* (1961) 36 ILR 5
- (c) Was there a genocide of a people? A-G v Eichmann (Dist. Ct. of Jerusalem, 1961)
- (d) Was there the attempted murder of government agents? *US v Benitez* (US Ct. of Appeal for 11th Cir, 1984)
- (e) Was there an instance of propaganda against the state that fundamentally undermined the safety of the state? *Joyce v DPP* (HoL, 1946)
 - Since Joyce had fraudulently acquired his British passport, this case raised questions over nationality, with Jallett LJ holding an alternate basis of jurisdiction being that no state should ignore a crime of treason committed against it
- (f) Was there an instance of treason? R v Casement (1917) Eng Ct. of Crim. A
- (g) It is irrelevant as to how the defendant's custody was secured; a violation of international law in securing the defendant may not prevent the exercise of state criminal jurisdiction *A-G v Eichmann* (1961) 36 ILR 5
- (h) A state can exercise criminal jurisdiction over persons, including non-nationals, who have committed acts abroad which are prejudicial to the security of the state A-G v Eichmann (1961) 36 ILR 5
- 6. Does the state have a claim in criminal jurisdiction under the passive personality principle?
 - (a) Under this principle, criminal jurisdiction can be asserted anywhere in the world to citizens of a state, enabling the national state of the victim to assert jurisdiction over the offender *US v Yunis* (US Ct. of A for 11th Cir., 1991)
 - (b) The question of whether this is a valid basis for jurisdiction has been expressly reserved *SS Lotus Case* (1927) PCIJ
 - i. This principle was controversial in the past, and was not universally accepted due to its concern about the "bubble effect" (where a foreign national is surrounded by a protective and invisible bubble from their own national laws)
 - ii. However, it is now more increasingly accepted, and is often now used to
 establish jurisdiction International Convention Against the Taking of Hostages Art
 - (c) This principle is especially recognised when applying it against serious and universally condemned crimes *US v Yunis* (US Ct. of A for 11th Cir., 1991) (where the crime in question was for the taking of hostages after hijacking an aircraft and for piracy)
 - (d) Examples of this principle include:
 - i. Taking hostages during the hijacking of an aircraft *US v Yunis* (US Ct. of A for 11th Cir., 1991)
 - ii. Harming Australians abroad Criminal Code 1995 (Cth) Div 115
 - A. Was there the murder of an Australian citizen or resident after 1 October 2002? Div 115.1
 - B. Was there the manslaughter of an Australian citizen or resident after 1 October 2002? Div 115.2

- C. Was there serious harm to an Australian citizen or resident that was intentionally caused? Div 115.3
- D. Was there serious harm to an Australian citizen or resident that was recklessly caused? – Div 115.4
- 7. Does the state have a claim in criminal jurisdiction under the universality principle?
 - (a) This is the exercise of jurisdiction due to their international seriousness (e.g., genocide), or since they might otherwise go unpunished
 - (b) There is no need to establish a link/nexus between the offender/offence and the prosecuting state, **other than custody**, as the main goal is to punish the offender for what they have done
 - i. A state can still exercise universal jurisdiction in absentia (i.e., no custody of the offender) for the most heinous crimes *Arrest Warrant* (2002) ICJ (Judges Higgings, Kooijmans and Buergenthal)
 - A. Judge Guillame expressed a more restrictive view on this, highlighting the nuance of discussion on this front
 - ii. States are not mandated to exercise universal jurisdiction, even though it is permissive in nature *Criminal Complaint against Donald Rumsfeld* (2007) German Prosecutor General
 - iii. Generally, the universality principle applies only when other states have not done anything to prosecute the offender, or when the offender is not in the custody of a state that has jurisdiction over them
 - (c) Was this a case of piracy (an attack on a vessel on the high seas for private ends)?
 - i. Piracy is any illegal acts of violence or detention committed for private ends in the high seas *UNCLOS* Art 101(a) (in Australia, it is prohibited in *Crimes Act* 1914 (Cth) Pt IV, covering piracy by aircraft or by ship)
 - A. If it were to occur in the territorial sea, it would not be piracy and would instead likely be subject to the national law of the sea
 - B. Attempted acts of piracy are sufficient (the *UNCLOS* definition is broad in this respect) *US v Dire* (Court of Appeal for the 4th Circuit, 2012)
 - C. Marine terrorism which aims to instil fear and achieve political objectives must be distinguished from piracy *ICR v Sea Shepherd*
 - D. Piracy requires that one vessel attack/harm another; piracy cannot apply to incidents that occur solely on board one vessel *Achille Lauro Incident* (1985)
 - E. Such incidents are classified under international criminal offences relating to the safety of maritime navigation 1988 Convention for the Suppression of Unlawful Acts Against the Safety of Maritime Navigation
 - ii. Acts committed privately but on behalf of a sovereign state cannot constitute piracy *ICR v Sea Shepherd*
 - iii. Marine terrorism is distinguished from piracy, as the former aims to instil fear and achieve political objectives; however, piracy cannot have any political objectives *ICR v Sea Shepherd*; examples of marine terrorism include:
 - A. Seizure of a cruise liner on the high seas by a Portuguese dissident *Santa Maria* (1961)

- B. The hijacking of an Italian cruise liner on the high seas with a political motive (note that there were attacks on board the cruise liner) *Achille Lauro Incidents* (1985)
- C. Since the attacks were on board the ship, this indicates that there is not a true universal terrorism, as jurisdiction may only be exercised over crimes committed over their territory or over nationals of parties to the treaties contra US v Yunis
- (d) Was this a case of slavery (the exercise of powers of ownership over persons)?
- (e) Was this a case of genocide?
 - i. Genocide is any of the following acts committed with intent to destroy, in whole or in part, a national, ethnical, racial or religious group: *Convention on the Prevention and Punishment of the Crime of Genocide* Art 2
 - A. Killing members of the group
 - B. Causing serious bodily or mental harm to members of the group;
 - C. Deliberately inflicting on the group conditions of life calculated to bring about its physical destruction in whole or in part
 - D. Imposing measures intended to prevent births within the group;
 - E. Forcibly transferring children of the group to another group.
 - ii. Genocide requires an additional fault element (dolus specialis) if there was an intention to destroy a group manifest through a single murder, that is sufficient, making it subject to universal jurisdiction
 - iii. Genocide is a basis for jurisdiction A-G v Eichmann (Dist Ct of Jerusalem, 1961); Nulyarimma v Thompson (1999) FCAFC
 - A. Universal jurisdiction conferred by international law is a component of sovereignty, and it is up to each state to determine how it is fits into their constitutional arrangements *Nulyarimma v Thompson* (1999) FCAFC (Wilcox J)
 - B. The Holocaust constituted genocide, which is a "grave offence against the law of nations itself" and that "the jurisdiction to try such crimes under international law is universal" A-G v Eichmann (1961)
 - C. The fact that a state may exercise universal jurisdiction over a crime does not necessarily mean that a domestic court would automatically be able to try such offences in the absence of statutory authorisation *Nulyarimma v Thompson* (1999) FCAFC
- (f) Was this a case of war crimes (serious breaches of the law of wars), or crimes against humanity?
 - i. Crimes against humanity, crimes against peace and war crimes are defined in 1945 Charter of the International Military Tribunal at Nuremberg
 - ii. Australia's retrospective legislation of crimes against humanity/war crimes is constitutionally valid, and that states have rights to exercise universal jurisdiction over war criminals *Polyukhovic v Commonwealth* (1991) HCA at [33] (Brennan J)
 - A. Codification of such laws is relevant as it ensures that states have the domestic legal framework to prosecute such crimes, and that the courts have jurisdiction to hear such cases

- (g) Was this a case of torture (state infliction of pain/suffering to obtain information)?
 - i. Torture includes any act by which severe pain or suffering (physical or mental) is inflicted intentionally on an individual 1984 Convention Against Torture Art 1(1)
 - ii. State torture requires it to be done by a public official acting in an official capacity
 - It is widely accepted that torture is subject to universal jurisdiction Pinochet (No. 3) [1999] 2 All ER 97
 - A. It is an *erga omnes* obligation: "the jus cogens nature of the international crime of torture justifies states in taking universal jurisdiction over torture wherever committed. International law provides that offence jus cogens may be punished by any state" *Pinochet (No 3)* (2000) (HoL)
 - iv. Torture is criminalised within Australia Criminal Code Act 1995 (Cth) Div 274
- 8. Does the state have a duty to prosecute or otherwise extradite?
 - (a) The adoption of permissive jurisdiction means that if a crime can be identified, a state can assert jurisdiction over an offender
 - (b) If a crime is subject to universal jurisdiction, a state must exercise jurisdiction; if they have custody of such a defendant, they must either prosecute them or extradite them to a state where they will face prosecution *Belgium v Senegal* (2012) ICJ
 - i. If there is a case of torture, this is arguably the case 1984 Convention Against Torture Art 7
 - (c) For a duty to extradite to arise, there must be an extradition treaty in place between the two states, or the state must have domestic legislation that provides for extradition; such a treaty would enable the state to prosecute the offender in their own courts with respect to certain serious crimes, or to extradite an offender to a jurisdiction to face trial *Belgium v Senegal* (2012) ICJ
 - (d) To extradite an offender, the crime for which an extradition is sought must be a crime in both states at the date of the commission of the offence $R\ v\ Bow\ Street$ Magistrates
 - (e) The Extradition Act 1988 (Cth) governs extradition in Australia
 - i. A request for extradition is sent to Australia through diplomatic channels, and then goes to the Attorney-General
 - ii. The Attorney-General "may, in his or her discretion", inform the Magistrate that the request has been received *Extradition Act 1988* (Cth) s 16
 - iii. The Attorney-General must not pass on the request to the Magistrate unless they are of the opinion that the person is an "extraditable person"
 - iv. The Magistrate will then conduct proceedings to determine whether the person is eligible for surrender; i.e., that: *Extradition Act 1988* (Cth) s 19
 - A. The double-criminality rule is satisfied
 - B. There are no "extradition objections"
 - C. The guilt or innocence of the person is irrelevant
 - v. If the Magistrate finds that the person is eligible for surrender, the Attorney-General then decides whether or not to extradite that person *Extradition Act 1988* (Cth) s 22

- 9. Does the ICC have jurisdiction?
 - (a) States need to be parties to the *Rome Statute of the International Criminal Court* (1998) for the ICC to have jurisdiction over them
 - (b) The ICC can only try cases that have occurred after 2002
 - (c) The subject matter jurisdiction of the ICC is limited to (a) genocide, (b)war crimes, (c)crimes against humanity and (d) the crime of aggression *Rome Statute of the International Criminal Court* Art 5
 - (d) Does the offender have personal jurisdiction? *Rome Statute of the International Criminal Court* Art 12 (the ICC can try a case when:)
 - i. The offender is a national of a party to the Rome Statute
 - ii. The offender is in the territory of a state that is party to the *Rome Statute* (in this instance, the offender does not need to be a national to the party of the treaty)
 - (e) Is a state refusing to prosecute a crime it otherwise has a duty to do so?
 - i. If the state refuses to prosecute such a crime, the ICC has jurisdiction to do so *Rome Statute of the International Criminal Court* Art 17
 - ii. The ICC can only step in where a state is 'unwilling or unable to genuinely carry out the investigation or prosecution' *Rome Statute of the International Criminal Court* Art 17
 - (f) Can an individual be held responsible and liable for the commission of crimes? Rome Statute of the International Criminal Court Art 25
 - (g) The official capacity of the person will not be a defence to the commission of a crime

 Rome Statute of the International Criminal Court Art 27
 - (h) Was custody of the offender illegally obtained?
 - i. In international law, if the charge is serious, this will be overlooked on the basis that justice is paramount *Prosecutor v Nikolić* (CITY Appeals Chamber, 2003)
 - ii. In domestic law, this depends on the state
 - A. In Australia, custody generally needs to be legally obtained *Moti v R* (2011, HCA)
 - B. In South africa, custody generally needs to be legally obtained *State v Ebrahim* (1992) (SupCTSA)
 - C. Argentina waived the claim that Israel had illegally obtained custody of Eichmann, as the charge was so serious that it was not a defence to the charge *A-G v Eichmann* (1961) 36 ILR 5

A.8 Immunity from Jurisdiction I (State Immunity)

- 1. Is this a situation involving the prosecution of a foreign state or an entity of a foreign state?
 - (a) Subject to certain exceptions, foreign states and their officials enjoy procedural immunity from civil and criminal proceedings in the forum state *Pinochet (No 3)* [1999] 2 All ER 97 (Lord Brown-Wilkinson)

- This is derived from the idea that all sovereign states are equal, which is one of the fundamental principles of international law – *Jurisdictional Immunities Case* [2012] ICJ Rep 99
- (b) Does the state follow the absolute or restrictive immunity principle?
 - i. The default/prevailing principle is the restrictive immunity principle
 - ii. The absolute immunity principle holds that states are completely immune from the jurisdiction of another state, and that this applies to all state acts, criminal and civil *Exchange v McFadden* (1812) (US Supreme Court)
 - iii. The restrictive immunity principle holds that foreign states are afforded immunity only with respect to acts of a sovereign or governmental character, not for acts of a commercial character *Holland v Lampen-Wolfe* (2000) HoL
 - A. This is partially codified in 2004 Convention on Jurisdictional Immunities of States and Their Properties (however, it only had 24 signatories, short of the 30 required to bring it into force)
 - B. Australia follows the restrictive immunity principle *Foreign State Immunities* Act 1985 (Cth)
- 2. Is this a situation involving the Australian approach to foreign state immunity?
 - (a) Is this a civil proceeding? Foreign State Immunities Act 1985 (Cth) s 3(1)
 - i. These provisions do not apply to criminal proceedings
 - ii. Proceedings can include a proceeding commenced by a regulator, not only the state (e.g., the ACCC seeking penalties for anti-competitive conduct) *PT Garuda v ACCC* [2012] HCA 33
 - iii. Immunity is generally afforded to foreign states, except for the exceptions listed
 Foreign State Immunities Act 1985 (Cth) s 9
 - A. They apply to all foreign states, and also to 'separate entities' of foreign states (i.e., organs of the government)
 - iv. Is an entity an organ/part of the state?
 - A. The most relevant factor in determining this is whether the entity was carrying out the foreign state's functions *PT Garuda v ACCC* [2011] FCFCA 52 (Lander and Greenwood JJ)
 - B. If an agency has governmental characteristics, it is likely to be granted immunity on this basis *PT Garuda v ACCC* [2012] HCA 33
 - C. Immunity is afforded to "agencies or instrumentalities of the state or other entities, to the extent that they are entitled to perform and are actually performing acts in the exercise of sovereign authority of the state" UN Convention Art 2(1)(b)(iii)
 - v. Judgement can only be enforced/executed on the commercial property of a state, not their sovereign (diplomatic or military) property, unless the other state has provided a waiver Foreign State Immunities Act 1985 (Cth) ss 30-32; Firebird Global Master Fund II Ltd v Nauru (2015) 326 ALR 396
 - (b) Has the foreign state submitted to Australia's jurisdiction? Foreign State Immunities Act 1985 (Cth) s 10

- i. A waiver of immunity via an international agreement must be explicitly derived from its terms (either as an express provision or as a term implied by necessity)
 Kingdom of Spain v Infrastructure Services Luxembourg S.å.r.l [2023] HCA 11 at [25]
- ii. There is no implied exception to foreign state immunity, even on the basis of the jus cogens prohibition of torture *Zhang v Zemin* [2010] NSWCA 255
- iii. The foreign state may not withdraw their waiver once they have made it Foreign State Immunities Act 1985 (Cth) s 10(5)
- iv. The foreign state will have been taken to submit to jurisdiction by:
 - A. Instituting the proceeding *Foreign State Immunities Act 1985* (Cth) s 10(6)(a)
 - B. Intervening in, or taking a step as a party to, the proceeding *Foreign State Immunities Act 1985* (Cth) s 10(6)(b)
- v. The foreign state will not have been taken to have submitted to jurisdiction if:
 - A. They have made an application for costs *Foreign State Immunities Act 1985* (Cth) s 10(7)(a)
 - B. They have intervened for the purpose of asserting immunity *Foreign State Immunities Act 1985* (Cth) s 10(7)(b)
 - C. If they are not a party to a proceeding, and have asserted an interest in property affected by that proceeding *Foreign State Immunities Act 1985* (Cth) s 10(8)
- (c) A foreign state does not have immunity in a commercial transaction *Foreign State Immunities Act 1985* (Cth) s 11
 - i. Arrangements between a state and its entity of a "commercial, trading and business character" are not afforded immunity PT Garuda v ACCC [2012] HCA 33 (French CJ, Gummow, Hayne and Crennan JJ)
 - A. The exception applies if the underlying character of the case is commercial in nature
 - B. In *PT Garuda v ACCC* [2012] HCA 33, while the court accepted that PT Garuda was an instrumentality that had state immunity, the alleged act was commercial in nature and hence could not be afforded state immunity
 - ii. Payment of services (e.g., education) constitutes a commercial transaction Australian International Islamic College Board Inc v Saudi Arabia [2013] QCA 129
 - iii. This exception is justified by neither threatening the dignity of the state nor interfering with its sovereign functions *Australian International Islamic College Board Inc v Saudi Arabia* [2013] QCA 129 at [24] (Holmes JA)
 - iv. To distinguish between a governmental act and a non-governmental act, consider whether the act is one that any private citizen can perform *Kuwait Airways v Iraqi Airlines* (1955) Supreme Court of Canada
 - v. It is insufficient that the entity acted on the directions of the state; to attract immunity, it must be considered that the acts done by the separate entity possessed a governmental character *Kuwait Airways v Iraqi Airlines* (1955) Supreme Court of Canada
- (d) A foreign state does not have immunity where they are acting as an employer Foreign State Immunities Act 1985 (Cth) s 12

- (e) A foreign state does not have immunity if they caused personal injury or damage to property *Foreign State Immunities Act 1985* (Cth) s 13
 - i. Causing in injury to a person or property (e.g., by shooting) results in immunity not applying *Tokic v Government of Yugoslavia* (1999) NSWSC Unreported
- (f) A foreign state does not have immunity if they own or had interest in immovable property *Foreign State Immunities Act 1985* (Cth) s 14
- (g) A foreign state does not have immunity where they are involved in a proceeding concerning intellectual property *Foreign State Immunities Act 1985* (Cth) s 15
- (h) A foreign state does not have immunity where they are a member of a body corporate or unincorporated body/partnership established or operating in Australia Foreign State Immunities Act 1985 (Cth) s 16
- (i) A foreign state does not have immunity where they are involved in arbitration proceedings *Foreign State Immunities Act 1985*(Cth) s 17
- (j) A foreign state does not have immunity where they are involved in proceedings in connection with a commercial ship *Foreign State Immunities Act 1985* (Cth) s 18
- (k) Is the foreign state involved in a proceeding involving a bill of exchange? Foreign State Immunities Act 1985 (Cth) s 19
- (l) A foreign state is not immune in proceedings concerning its taxation obligations in Australia *Foreign State Immunities Act 1985*(Cth) s 20
- 3. Is this a situation involving a foreign state official?
 - (a) Jus cogens norms do not override immunity Jurisdictional Immunities of State Case (ICJ)
 - (b) The immunity of individuals as representatives of a foreign state is generally confined to the acts that they perform in their official capacity, carrying out governmental functions *Holland v Lampen-Wolfe* (2000) HoL
 - i. Individuals cannot sue the state for personal injury, as the state can only act through servants and agents, with those official acts being acts of the state, and the state's immunity in respect of them is fundamental to the principle of state immunity – *Jones v Saudi Arabia* [2000] HoL; *Al-Adsani v UK* [2001] ECHR 657
 - (c) Is the official an incumbent head of state facing civil proceedings in their representative capacity?
 - i. The ordinary principles of state immunity apply *Foreign States Immunities Act* 1985 (Cth) s 3(3)(b)
 - (d) Is the official an incumbent head of state facing civil proceedings in their personal capacity?
 - A foreign head of state is entitled to the same immunity as a head of diplomatic mission, which grants them a wide immunity for civil proceedings – Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) s 36; Thor Shipping A/S v 'Al Duhail' (2008) 252 ALR 20
 - ii. An incumbent foreign head of state is granted immunity from *jus cogens* violations *Tatchell v Mugabe* (2004) 136 ILR 572

- (e) Is the official an incumbent head of state facing criminal proceedings in their personal capacity?
- (f) Is the official a former head of state?
 - i. Former heads of state lose their personal immunity once they leave office, but retain functional immunity for acts performed in their official capacity whilst they were in office (reflected in *Foreign States Immunities Act 1985* (Cth) s 36)
 - ii. A former head of state or the estate of a deceased head of state is not entitled to immunity in civil proceedings in respect of a private act done whilst in office as head of a foreign state – Harb v Prince Abdul Aziz Bin Fahd Bin Abdul Aziz [2013] EWCA Div 481
- (g) Is the official an incumbent foreign affairs minister?
 - i. An incumbent foreign affairs minister is immune from criminal proceedings Arrest Warrant Case [2002] ICJ Rep 3
 - A. This immunity does not distinguish between acts performed in an official or personal capacity
 - B. It is irrelevant if the Minister was in the arresting state on an official or private visit
 - C. There are no exceptions for *jus cogens* violations
 - D. The Minister can still face prosecution in their home state if the home state chooses to waive immunity (although this is rare)
 - ii. Once the Minister leaves office, a much more limited residual immunity applies for the acts they performed in their official capacity - Arrest Warrant Case [2002] ICJ Rep 3
 - iii. A foreign minister could still have individual criminal responsibility for acts committed before and after their time in office, and can be prosecuted as such – Arrest Warrant Case [2002] ICJ Rep 3
- (h) Is the official otherwise part of the 'troika', the minister for defence, or the minister for international trade?
 - The Troika consists of the Head of State, Head of Government and Minister for Foreign Affairs
 - ii. Prior to entering office, the troika is not afforded any immunity, and so they can be prosecuted for acts committed before they entered office
 - iii. The troika is afforded personal and material immunity by virtue of their position/status during their time in office for both civil and criminal proceedings *Arrest Warrant Case* [2002] ICJ Rep 3 at [51], [55]
 - iv. The personal immunity ceases when they leave office and only a residual functional immunity applies for acts performed in their official capacity thereafter *Arrest Warrant Case* [2002] ICJ Rep 3
 - v. Personal immunity during their time in office is afforded to ensure the effective performance of their functions, and to enable them to travel freely to perform those functions *Arrest Warrant Case* [2002] ICJ Rep 3 at [53]

- A. No case may be brought against a serving member of the troika for acts done before entering office; a state must wait until their time in office has ended to pursue such a case *Arrest Warrant Case* [2002] ICJ Rep 3
- vi. This principle was codified in *ILC Draft Article 3*, and has found footing in *Arrest Warrant Case* [2002] ICJ Rep 3
- vii. Immunity may be extended to the Minister for Defence *Re Mofaz* (UK, 2004)
- viii. Immunity may be extended to the Minister for International Trade *Re Bo Xilai* (UK, 2005)
- ix. Immunity may be waived by the minister's own state, and the home state could prosecute the acts *Arrest Warrant Case* [2002] ICJ Rep 3
- x. Immunity may otherwise be extended, depending on the nature of the diplomatic activities and whether there is a requirement of travel to fulfil those duties *Arrest Warrant Case* [2002] ICJ Rep 3 at [53]
- xi. However, the ILC has suggested to limit the scope of immunity only to the troika
- 4. Is there a violation of a jus cogens norm?
 - (a) A state or state organ is not derived of functional immunity by reason of a serious violation of international human rights law or even a *jus cogens* norm in the course of conducting a sovereign act *Jurisdictional Immunities (Germany v Italy; Greece Intervening)* [2012] ICJ Rep 99
 - i. The only exception to this is the violation against the prohibition of torture *Pinochet (No 3)* [1992] 2 All ER 97
 - ii. However, immunity is granted for civil claims, even if it is concerning torture Jones v Ministry of Interior of the Kingdom of Saudi Arabia [2006] UKHL 26
 - A. E.g., Kuwait was entitled to state immunity from a civil suit from a person alleging state torture *Al-Adsani v UK* [2001] ECHR 657
 - (b) Is this a situation concerning torture by a foreign state official?
 - Torture at the hands of a state are acts of an official character, and so heads of state are immune from prosecution for them Jones v Saudi Arabia [2007] AC 270; R v Bow Street Stipendary Magistrate; ex parte Pinochet (No 3) [1992] 2 All ER 97
 - A. However, such an immunity might not apply, even if the crime was serious, irrespective of whether the crime was committed whilst the head of state was in office or not *Pinochet* [1992] 2 All ER 97 (where immunity did not apply to torture)
 - ii. In Australia, torture by an official acting for a state is subject to immunity Zhang v Zemin [2010] NSWCA 255
 - A. This principle is reflected in the UK Al Adsani v Kuwait (1995) 103 ILR 420 (QBD and CA); Jones v Saudi Arabia [2007] AC 270

| Time | Before Office | During Office | After Office |
|--------------------|---------------|---------------|----------------------|
| Private & Criminal | No Immunity | Immune | No Immunity |
| Private & Civil | No Immunity | Immune | No Immunity |
| Official & | No Immunity | Immune | Residual Immunity |
| Criminal | | | (except for torture) |
| Official & Civil | No Immunity | Immune | Residual Immunity |

A.9 Immunity From Jurisdiction II (Diplomatic Immunity)

- 1. Does a foreign state official have immunity from proceedings in international criminal courts?
 - (a) The official capacity of an individual is irrelevant before an international criminal court *Rome Statute of the International Criminal Court* Art 27
 - (b) However, difficulties arise when states do not cooperate or are not part of the ICC *Al Bashir Case* (in this case, Sudan is not a member of the ICC, and moreover refuses to cooperate with the ICC's warrant for al-Bashir)
- 2. Does a foreign state official have immunity for *jus cogens* violations?
 - (a) The acts committed by the armed forces of a foreign state, regardless of where they are committed, are subject to immunity *Jurisdictional Immunities of the State* (*Germany v Italy*) [2012] ICJ Rep 99 at [65]
 - (b) Immunity is not available for cases involving torture R v Bow Street Stipendary Magistrate; ex parte Pinochet (No 3) [1992] 2 All ER 97
- 3. Is this a case involving the foreign act of state doctrine?
 - (a) The foreign act of state doctrine refers to the notion that "courts will not adjudicate on the validity of acts and transactions of a foreign sovereign state within that sovereign's own territory" *Spycatcher Case* (1988) 165 CLR 30
 - (b) This doctrine does not apply where the relevant conduct of a foreign state involves a breach of an established principle of international law *Hicks v Ruddock* (2007) 156 FCR 574; *Habib v Commonwealth* (2010) 183 FCR 62
- 4. Is this a case involving diplomatic immunity?
 - (a) The laws on diplomatic immunity are codified in the 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations, which is given effect in Australia by the Diplomatic Privileges and Immunities Act 1967 (Cth)
 - i. Article 1 defines a number of key terms in this area
 - ii. Article 3 sets out the functions of a diplomatic mission
 - iii. Articles 4-19 address several procedural matters
 - (b) A prerequisite for diplomatic immunity is that the two states must recognise each other as states to establish diplomatic relations
 - i. Whilst common, a physical presence, such as through an embassy, is not required to establish diplomatic relations *Kosovo Thanks You*

- (c) Diplomatic immunity is necessary to protect and facilitate the international diplomacy in so far as the state allows "not to benefit individuals but to ensure the efficient performance of the functions of diplomatic missions" 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Preamble
- (d) Was there a violation of a diplomat or a mission?
 - i. The premises of the diplomatic mission are inviolable and may not be entered without the consent of the head of the mission 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 22(1)
 - A. The private residence (Art 30(1)), papers and correspondence of a diplomatic agents are also inviolable, even if they have been used for illegal purposes (Art 30(2)) 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 30
 - B. Serving legal proceedings on a diplomatic mission without the consent of the head of the mission breaches the mission's inviolability *Saudi Arabian Cultural Mission v Alramadi* [2024] FCA 1060
 - ii. The receiving state is under a special duty to take all appropriate steps to protect the premises of the mission against any intrusion or damage and to prevent any disturbance of the peace of the mission or impairment of its dignity 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 22(2); Tehran Hostages [1980] ICJ Rep 3
 - A. This is a strict obligation; countries must protect the premises of diplomatic missions
 - B. A mere peaceful protest does not impair the dignity of the mission or breach its peace *Minister for Foreign Affairs & Trade v Magno* (1992) 37 FCR 298 (French J)
 - C. Such an incident would have to be assessed in the light of the surrounding circumstances and must take into account the particular circumstances of the domestic culture, with the application of this principle being that the sending State takes the receiving State as it finds it *Minister for Foreign Affairs & Trade v Magno* (1992) 37 FCR 298, 236 at [30] (French J)
 - iii. The person of a diplomatic agent is inviolable, and they cannot be arrested or detained 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 29
 - A. A "diplomatic agent" is the head of a mission or a member of the diplomatic staff of the mission 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 1(e)
- (e) Are there any limits to diplomatic immunity?
 - i. The sending state may not interfere with the internal affairs of the receiving state, nor use the mission premises in any manner incompatible with the functions of the mission or with international law generally (e.g., drug smuggling) 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 41
 - ii. If a diplomatic agent is declared *persona non grata*, they must be recalled or their functions terminated 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 9
 - iii. The immunity of a diplomat could be waived by the sending state 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 32
- (f) Is the individual a diplomatic agent?
 - Diplomatic agents enjoy administrative, civil and criminal immunity for their personal and official acts, except for: – 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 31(1)

- A. Real action relating to private immovable property in the territory of the receiving state 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 31(1)(a)
- B. Action relating to succession in which the diplomatic agent is involved in their private capacity 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 31(1)(b)
- C. Actions relating to any professional or commercial activity outside the scope of their duties (e.g., a side business; this does not apply to ordinary contracts that are incidental to the daily life of a diplomat) 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 31(1)(c)
- ii. The exceptions under Art 31 do not extend to family law disputes *Diplomatic Immunity Case* (1973) Family Court of Australia
- iii. The exceptions under Art 31 do not extend to employment relationships that are a form of modern slavery *Basfar v Wong* [2022] UKSC 20; *Reyes v Al-Malki* [2017] UKSC 61; [2019] AC 735
 - A. This is a "commercial activity" under 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 31(1)(c)
 - B. Basfar v Wong [2022] UKSC 20 affirmed that the commercial activities exception (as established in the equivalent UK legislation) did not apply to ordinary contracts, such as employment contracts, that are incidental to the daily life of a diplomat, at [37]; however, it was held at [56] that the exception did not apply as this was not an ordinary contract since the diplomat had derived financial benefit by not paying the worker
- iv. Other immunities available to diplomatic agents include:
 - A. They are not required to give evidence in court 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 31(2)
 - B. They are exempt from social security provisions for themselves or for private servants in the mission 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 33
 - C. They are immune from most taxes 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 34
 - D. They are exempt from all personal service, from all public service obligations, and military obligations 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 35
 - E. They are exempt from all customs duties and taxes and charges for articles for the official or personal use of the diplomatic agent, their family members, and the mission 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 36(1)
 - F. However, if the articles are strongly suspected to violate such protections, then such a protection does not apply 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 36(2)
- (g) A diplomatic agent's family members, if they are not nationals of the receiving state, enjoy the same privileges and immunities as the diplomatic agent 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 37(1)
- (h) Administrative/technical staff of the mission, if they are not nationals or permanent residents of the receiving state, enjoy the same immunities as the diplomatic agent, except that the immunity from civil and administrative jurisdiction does not extend

to acts performed outside the course of their duties – 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 37(2)

- i. The members of the administrative and technical staff are the members of the staff of the mission employed in the administrative and technical services of the mission 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 1(f)
- (i) Service staff of the mission, if they are not nationals or permanent residents of the receiving state, enjoy immunities in respect of acts performed in the course of their duties, and exemption from dues and taxes on their salary/wages they receive from their employment 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 37(3)
 - i. This generally includes members like the kitchen staff, cleaners and other support staff, and encompasses all staff who are members of the staff of the mission in the domestic service of the mission 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 1(g)
 - ii. They are also eligible to avail the exception under 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 33 exempting them from social security provisions
- (j) Private servants in the mission, if they are not nationals or permanent residents of the receiving state, are exempt from dues and taxes on their wages 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 37(4)
 - i. Private servants are those who are in the domestic service of a member of the mission and who are not an employee of the sending state 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 1(h)
- (k) Is there an abuse of diplomatic immunities?
 - i. If a diplomat abuses their immunities, the receiving state may declare them persona non grata, without needing to provide a reason 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 9(1)
 - A. The sending state must then recall the diplomat or terminate their functions with the mission 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 9(1)
 - B. If the sending state fails in their obligations, the receiving state can refuse to recognise them as a member of the mission 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 9(2)
 - ii. A sending state may waive the immunity of a diplomatic agent 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 32(1)
 - A. This waiver must be express 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 32(2)
 - B. If a diplomatic agent initiates proceedings they otherwise had immunity for, they are precluded from invoking immunity from jurisdiction in respect of any directly-connected counterclaim 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 32(3)
 - C. A waiver relating to civil and administrative jurisdiction does not imply a waiver of immunity in respect of the execution of the judgement, for which a separate waiver is required, and vice-versa -1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 32(4)
 - iii. Waiver can sometimes be waived by the sending state with respect to car accidents

- A. This applies to civil proceedings Dickson v Del Solar [1930] 1 KB 376
- B. This applies to criminal proceedings Georgian Diplomat in Washington D.C. (1998)
- iv. Diplomatic agents enjoy privileges and immunities from the moment they enter the territory of the receiving state 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 39(1)
- v. When the function of a person enjoying diplomatic immunities ends, their personal immunity ceases the moment they leave the country, but a residual functional immunity covers acts performed during their official functions 1961 Vienna Convention on Diplomatic Relations Art 39(2)
- At the international level, no diplomatic or state immunity can be afforded to any persons, and hence a diplomatic agent can be tried in an international criminal court – Rome Statute of the International Criminal Court Art 27
 - (a) However, this balances/respects the immunity provided at a diplomatic level (which is done for the convenience of the state to ensure its own diplomats are not targeted); "The Court may not proceed with a request for surrender or assistance which would require the requested state to act inconsistently with its obligations under international law with respect to the state or diplomatic immunity of a person or property of a third state, unless the Court can first obtain the cooperation of that third state for the waiver of the immunity" *Rome Statute of the International Criminal Court* Art 98(1)
 - (b) For states that are party to the *Rome Statute*, Art 27 will apply, but the situation gets more complex for states that are not party to the *Rome Statute*, as they may not recognise the ICC's jurisdiction

A.10 State Responsibility I (Wrongful Acts of State)

- 1. These rules do not apply in determining if there was a breach, but merely determine what happens following a breach *Articles on State Responsibility for Internationally Wrongful Acts* (2001) Art 55
 - (a) The responsibility of a state may arise if:
 - i. An act or omission is attributable to a state
 - ii. The act or omission breaches international law
 - iii. The state is not able to raise any defence for the wrongful act or omission
 - iv. Another state invokes the responsibility of the state
- 2. For these rules to apply, there must be a breach of a primary obligation or an internationally wrongful act 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 2
 - (a) If such a breach has occurred, then injured state may invoke the responsibility of the other state for the injury caused by the internationally wrongful act 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 1

- (b) If an act is considered unlawful under international law, it is irrelevant as to whether the act is lawful under domestic law 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 3
- (c) If a state did not breach a provision but was not acting in conformity, there is still a breach of an international obligation and the rules around state responsibility are enlivened, irrespective of the origin or character of the act 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 12
- (d) Was there a continuing breach from an initial first breach?
 - i. If the obligation is a continuing obligation, any further breaches from the first breach would also be considered as a continuing breach, so long as the state is not acting in conformity with the obligation 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 14
 - ii. The consequence of a continuing wrongful act will depend on the context as well as duration of the obligation breached, but will usually lead to a more onerous reparation (as the seriousness of the breach is merely increased if it is continued) *Rainbow Warrior Arbitration* (1990) XX RIAA 215
 - A. "It had practical consequences, since the seriousness of the breach and its prolongation in time cannot fail to have considerable bearing on the establishment of reparation which is adequate for a violation presenting these two features" *Rainbow Warrior Arbitration* (1990) XX RIAA 215 at [101]
- (e) If the treaty/convention has its own primary rules in respect to the consequence of a breach, the rules of state responsibility are not enlivened, and the primary rules will apply instead 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 55
 - The majority of these provisions are considered to be customary international law, and are considered authoritative by the ICJ, despite not being a formal convention
- (f) Breach of obligations under a treaty are still considered to be breaches of international law *Belgium v Senegal* [2012] ICJ Rep 422
- 3. Can a wrongful act be attributed to a state?
 - (a) The conduct of any state organ (irrespective of which level of government) will be attributed to that state 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 4(1)
 - i. An organ includes any person or entity which held has that status in accordance with the state's internal law – 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 4(2)
 - ii. Acts of a state government are attributable to the federal government of a state *Kalgoorlie Riots Incident* (1934)
 - iii. Acts of a court are attributable to the federal government of a state *Immunity* from Legal Process Advisory Opinions [1999] ICJ Rep 62
 - iv. Governments of states are internationally responsible for the actions of their courts *Immunity from Legal Process Advisory Opinions* [1999] ICJ Rep 62

- (b) The rules of attribution arise when it is not clear whether a state had directly been responsible
 - i. A state is taken to be responsible if they failed to take certain actions
 - A. "Every State's obligation not to allow knowingly its territory to be used for acts contrary to the rights of other States" (i.e., if a state is aware of the presence of danger, they must warn other states) Corfu Channel [1949] ICJ Rep 4, where Albania had a direct responsibility to not allow their territory to be used for unlawful purposes
 - ii. States have a responsibility to ensure that activities within their jurisdiction or control do not cause damage to the environment of other states or to areas beyond the limits of their jurisdiction *Trail Smelter* (1938/1941) III RIAA 1905, where the failure to prevent pollution from a metals smelter in British Columbia causing damage to farms in Washington amounted to a failure of an obligation
- (c) Did an entity act in excess of their authority from a state or otherwise contravened instructions?
 - i. If an organ of the state acts in excess of their authority or otherwise contravenes their instructions, states are still responsible/attributable for the actions of those organs 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 7; Youmans v Mexico (1926) IV RIAA 110
 - A. This article has been interpreted as including organs acting with 'apparent authority'; i.e., when the conduct appears to be state-authorised, even when it is not (e.g., wearing military uniforms, even for purely private acts) Caire Claim (1929) 5 ADPIL Cases 146
 - B. The test for ascertaining apparent authority is whether the officials were acting using official means at their disposal; if they were, then irrespective of whether the conduct was authorised by the state or not, the conduct is attributable to the state *Southern Pacific Properties v Egypt* (1933)
 - ii. If the conduct is purely private and there is no visible or apparent connection to the state, then there is no question of state responsibility, though courts have almost always erred towards attributing the conduct to the state except when it is glaringly obvious it is not
- (d) The conduct of a non-organ can be attributed to the state if it is empowered by the law of the state to exercise elements of the state's governmental authority 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 5
 - i. There must be statute expressly authorising this
 - ii. The entity must be acting in that capacity at that moment
 - iii. The term 'entities' enables parastatal entities that exercise governmental authority to serve the functions of a public character to be covered under the law of state responsibility *ILC Commentary on Article 5*
- (e) Conduct that is directed by or controlled by the state will be attributed to the state if they are acting on the instructions of, or under the direction or control of, the state that is carrying out the conduct 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 8

- i. Conduct will be attributable to the state only if the state directed or controlled the specific operation in question and the conduct complained of was an integral part of that operation – *ILC Commentary on Article 8*
 - A. This follows the test of 'effective control' (*Nicaragua v US* [1986] ICJ Rep 14), as opposed to the 'overall control' test ('*Tadić*' (1999) ICTY)
- ii. For conduct to be directed by or controlled by the state, the state must have "effective control of the operations in which the alleged violations were committed" - Nicaragua v US [1986] ICJ Rep 14 at [116]; Genocide Case [2007] ICJ Rep 43 (the Genocide Case affirms the 'effective control' test)
 - A. There must be effective control "in respect of each operation in which alleged violations incurred, not generally in respect of the overall actions taken by the persons or groups of persons having committed the violations" *Genocide Case* [2007] ICJ Rep 43
 - B. Not having control over the choice of targets tends towards not having an effective control over the operations *Nicaragua v US* [1986] ICJ Rep 14; *Genocide Case* [2007] ICJ Rep 43
 - C. Support given to actors, such as funding, training, etc., dp not amount to effective control if there is no conduct and state connection *Nicaragua v US* [1986] ICJ Rep 14; *Genocide Case* [2007] ICJ Rep 43
- (f) The conduct of a person or a group of persons will be considered to be acts of the state if they are stepping in to exercise authority in the absence of official authorities 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 9
 - i. E.g., in the 1978/79 Islamic revolution in Iran where the government was overthrown, Revolutionary Guards continued to perform official functions (e.g., customs duties at Tehran airport, with the actions of these Guards being attributed to the state)
- (g) Was there an insurrectional/revolutionary movement?
 - i. The conduct of an insurrectional movement is not attributable to a state unless
 that insurrection is successful and they supplant the government of the state –
 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art
 10(1)
 - A. If the revolution is unsuccessful, then its actions can never be attributed to
 - B. If the revolution is successful and forms a new government, then the actions of the insurrectional movement will be attributed to the state from the instance that the revolutionary movement began (not when the new government was formed) *Bolivar Railways Company Case* (1903) IX RIAA 445
 - ii. If a revolutionary movement forms a new state from part of the territory of a pre-existing state or from territory under its administration, their conduct will be attributed to the new state 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 10(2)
 - iii. The acts of supporters of a revolution cannot be attributed to the new government following the success of the revolution, just as the acts of supporters of an existing government are not attributable to the government *Short v Iran* (1987) Iran-USTCR 76

- (h) Was the conduct acknowledged and adopted by the state?
 - i. Irrespective of whether conduct is attributable or not, if a state acknowledges and adopts the conduct as its own, then it is attributed to the state to the extent they have declared as such - 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 11
 - A. 'Acknowledges and adopts' is a stronger threshold than mere 'support and encouragement'
 - B. Endorsing a situation and failing to prevent something amounts to "adopting the conduct in question as its own" –*US v Iran* (1980) 21 ILM 96
 - C. A state cannot be held responsible for the actions of its governments's supporters *Short v Iran* (1987) Iran-USTCR 76
 - ii. Whilst the acts of private individuals or entities may not be attributable to a state, the state may nonetheless be directly responsible for failing to meet its obligations if there is injury to foreign nationals or foreign national interests US Diplomatic and Consular Staff in Tehran [1980] ICJ Rep 3
 - A. If an insurrection happens, the state is not responsible for loss or damage sustained by foreign investors unless it can be shown that the government of that state failed to provide the standard of protection required, either by treaty or under customary law *Asian Agricultural Products* (1991) CSID Case No. ARB/87/3
 - B. Governments cannot be responsible for the acts of rebellious bodies where it is guilty of no breach of good faith or of no negligence in suppressing insurrection *Home Missionary Society Claim* (1921) VI RIAA 42
- 4. Were there any circumstances precluding wrongfulness (i.e., defences)?
 - (a) These are all complete defences, not partial defences
 - i. The defences are hard to establish, and tend to apply in relatively extreme circumstances *Rainbow Warrior Arbitration* (1990) XX RIAA 215
 - (b) Act consented to by a state cannot be wrongful, even if they are otherwise illegal 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 20
 - (c) If an act is taken in self-defence in conformity with the UN Charter, it is not wrongful 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 21
 - (d) If a countermeasure meets certain thresholds, it will be regarded as a lawful measure of self-help and not a wrongful act 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 22
 - i. This is founded on the notion that all states are equal under international law
 - ii. Domestic courts cannot adjudicate whether countermeasures were valid Law Debenture Trust Corpn plc v Ukraine [2023] UKSC 11
 - iii. The countermeasure must be proportional to the injury suffered, and must not breach peremptory norms or otherwise amount to an unlawful use of force
 - iv. There are also a series of procedural requirements that must be met before undertaking a countermeasure:

- A. Before a countermeasure is taken, the state must notify the breaching state to give the breaching state a chance to rectify its behaviour 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 52 (countermeasures cannot be taken if the wrongful act has ceased per Art 52(3)(a), or the dispute is before a tribunal or court per Art 52(3)(b))
- B. A state should, as a first resort, only resort to reversible countermeasures with the aim of permitting the resumption of the performance of obligations 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 49
- C. Countermeasures can only last so long as the violation persists 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 53
- (e) If an act occurs under force majeure (i.e., due to the occurrence of an irresistible force or of an unforeseen event, beyond the control of the State, making performance materially impossible), it will not be considered a wrongful act 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 23
 - i. Force majeure does not apply where the situation is due, either alone or in combination of other factors, to the conduct of the wrongful state (the state raising the defence) 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 23(2)(a)
 - ii. Force majeure does not apply where the wrongful state (the state raising the defence) has assumed the risk of that situation occurring 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 23(2)(b)
 - iii. Force majeure does not apply where compliance is difficult or burdensome *Rainbow Warrior Arbitration* (1990) XX RIAA 215
- (f) If an act is taken in violation of an international obligation due to a situation of distress, and the state has no other way to save the lives of people or protect property in imminent peril, there is no wrongful act 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 24(1) (here, the medical evacuation for treatment was precluded from wrongfulness under distress, but the failure to return him to the military facility was not precluded)
 - i. Distress entails "a choice between a departure from an international obligation and a serious threat to the life or physical integrity of a State organ or of persons entrusted to its care" *Rainbow Warrior Arbitration* (1990) XX RIAA 215
 - ii. Distress is not made out where it is, either alone or in party, caused by the wrongful state (the state invoking the defence) 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 24(2)(a)
 - iii. Distress is not made out where the act is likely to create a comparable or greater peril 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 24(2)(b)
- (g) A wrongful state will not be responsible if they are not able to comply with an international obligation in order to safeguard an essential interest against a grave and imminent peril (i.e., a situation of necessity) 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 25(1)
 - i. This must be the only way for the state to safeguard that essential interest 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 25(1)(a)

- A. Necessity is "concerned with departure from international obligations on the grounds of vital interests of the state" Rainbow Warrior Arbitration (1990) XX RIAA 215
- B. Necessity can only be invoked where the action taken is the 'only way' to safeguard the essential interest of the state *Gabčíkovo-Nagymaros Project* [1997] ICJ Rep 7
- C. Necessity may only preclude wrongfulness in circumstances where the departure from an international obligation is necessary to avoid a serious threat to the vital interest of the state
- ii. The act performed in necessity must not seriously impair an essential interest of the state/s towards which the obligation exists, or the international community as a whole 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 25(1)(b)
- iii. A state may not invoke necessity if the international obligation in question excludes the possibility of invoking necessity 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 25(2)(a)
- iv. A state may not invoke necessity if it has contributed to the situation which gave rise to the situation of necessity 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 25(2)(b)
- v. Necessity seems to only be arguable in very strict circumstances, such as where the very existence of the State and its people is threatened *ILC Commentary on Article 25*
- (h) These defences do not apply to jus cogens norms 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 26
- (i) A reliance by a state on the circumstances precluding wrongfulness does not affect the underlying obligations, and the state may yet have a duty to compensate if a material loss is suffered by another state 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 27
- 5. Can a state invoke responsibility against another state?
 - (a) Was the obligation breached owed to the state, or a group of states including that state? 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 42
 - i. The obligation can be owed to that state specifically 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 42(1)
 - ii. The obligation can be owed to a group of states, or the international community at whole, such that the breach of the obligation: 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 42(2)
 - A. Specifically affects that state 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 42(2)(a)
 - B. Is of a character to radically change the position of all other states in further performances of that obligation 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 42(2)(b)
 - (b) A state may be able to invoke responsibility even if they are not the injured state if: 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 48

- i. The obligation breached is owed to a group of states including that state and is established for the protection of a collective interest of the group 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 48(1)(a)
 - A. Breaches of international conventions can fall within this category *Whaling in the Antarctic Case* [2014]
- ii. The obligation breached is owed to the international community as a whole –
 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 48(1)(a)
 - A. There is a common interest to ensure torture is not carried out by a state, and this is something that can be invoked as an obligation owing to the international community *Belgium v Senegal* [2012] ICJ Rep 422
 - B. This includes *erga omnes* obligations, such as the right of self-determination Legal Consequences of the Construction of a Wall in the Occupied Palestinian Territory [2004] ICJ Rep 136 at [122], [155]
 - C. However, both states must consent to the ICJ's jurisdiction even in the case of erga omnes obligations DRC v Uganda [2005] ICJ Rep 168
- iii. If responsibility is invoked under this, the invoking stay may claim from the responsible state:
 - A. Cessation of the wrongful act 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 48(2)(a)
 - B. Performance of reparation to either the invoking state or the beneficiaries of the obligation breached 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 48(2)(b)
- iv. Are there several states injured due to the same wrongful act?
 - A. Each injured state may separately invoke the responsibility of the state that has committed the wrongful act 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 46
- v. Are there several states responsible for the same internationally wrongful act?
 - A. The responsibility of each state may be invoked in relation to that act 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 47(1)
 - B. An injured state may not recover, by way of compensation, more than the damage it has suffered 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 47(2)(a)
 - C. Making a claim against one wrongful state does not preclude the rights of the injured state to take recourse against any other wrongful state 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 47(2)(b)
- 6. What consequences/remedies will the state owe for their wrongful act?
 - (a) A wrongful state is under an obligation to make reparation for their wrongful acts/injury 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 31(1); Chorzow Factory Case (1928) PCIJ (Ser A) No 17
 - i. Injury includes moral and/or physical damage caused by the wrongful act of the state 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 31(2)

- A. The overarching aim of reparation is that it "must as far as possible, wipe out all the consequences of the illegal act and re-establish the situation which would not have existed if the act had not been committed" Chorzow Factory Case (1928) PCIJ (Ser A) No 17; affirmed in Eritea v Ethiopia Final Award [2009]
- B. In determining the remedies for stat responsibility, the financial ability of the state to pay compensation and the associated social and economic impacts upon the affected population are a relevant factor in assessing reparation *Eritea v Ethiopia Final Award* [2009]
- (b) Reparation can be in the form of restitution, compensation and/or satisfaction 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 34
- (c) **Restitution** is the primary obligation of the state 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 35
 - i. The damaging state is under an obligation to re-establish the situation which existed before the wrongful Act, provided that:
 - A. Restitution is not materially impossible 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 35(a)
 - B. Restitution does not involve a burden out of all proportion to the benefit deriving from restitution instead of compensation 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 35(b)
- (d) If restitution cannot be achieved, **compensation** is the next available option 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 36(1)
 - i. This covers any financially assessable damage, including loss of profits 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 36(2)
- (e) If restitution or compensation cannot be achieved, **satisfaction** is the next available option (and is the most common form of remedy) 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 37(1)
 - i. Satisfaction may include an acknowledgement of the breach, an expression of regret, a formal apology, or another appropriate modality – 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 37(2)
 - ii. Satisfaction will not be out of proportion to the injury, and may not take a form humiliating to the responsible state 2001 Articles on the Responsibility of States for Internationally Wrongful Acts Art 37(3)

A.11 State Responsibility II (Diplomatic Protection)

- 1. If a national was harmed by a foreign state, their home state may elect to take up a claim if they wish to do so 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Art 1
 - (a) However, they are not obliged to exercise diplomatic protection, and it is instead at their discretion *Barcelona Traction* [1970] ICJ Rep 3
 - (b) State may yet be compelled by their own domestic law (e.g., administrative law) to exercise diplomatic protection *Hicks v Ruddock* (2007) 156 FCR 574; *Abbasi v Secretary of State* [2002] EWCA Civ 1598

- i. It was held that there this is the case in Australia at [69]: "In Anglo-Australian law, the state is under no duty to exercise the right of diplomatic protection in respect of one of its nationals who has been mistreated by a foreign state."
- (c) States should exercise diplomatic protection when a significant event has occurred 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Art 19(a)
 - They might also, if feasible, consider the views of injured persons with regard to resort to diplomatic protection and the reparation to be sought – 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Art 19(b)
- (d) There is a shift in international law towards states being required to exercise diplomatic protection in certain circumstances:
 - i. Diplomatic protection might be required to be exercised when the national has been subjected to a serious violation of their human rights *ILC Commentary to 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 2* at [3]
 - ii. There is state practice to suggest that "although a state has discretion whether to exercise diplomatic protection or not, there is an obligation on that state, subject to judicial review, to do something to assist its nationals, which may include an obligation to give due consideration to the possibility of exercising diplomatic protection" *ILC Commentary to 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection*
 - iii. States may have a responsibility to ensure that citizens are not placed in a worse position, even though they are not obliged to exercise diplomatic protection *Hicks v Ruddock* (2007) 156 FCR 574
- 2. Was there the mistreatment of a foreign national by a state?
 - (a) What was the applicable standard of treatment?
 - The national treatment standard holds that there is no mistreatment of a foreign national if they are treated the same as a local citizen of that nation (favoured by developing nations)
 - ii. The **international minimum treatment** standard holds that irrespective of the laws of a nation, there is a certain minimum standard of treatment that foreign nationals can expect when in the territory of another state (favoured by developed nations) *Neer v Mexico* (1926) 4 RIAA 60; *Loewen Group v US* (2006) NAFTA Arbitration Tribunal
 - A. Over time, the scope of diplomatic protection has now expanded beyond violations of the minimum standard for the treatment of aliens to encompass "internationally guaranteed human rights" *Diallo (Preliminary Objections)* [2007] ICJ Rep 582 at [39]
 - (b) A state must account for the safety and whereabouts of a foreign national *Quintanilla* (1926) 4 RIAA 60
 - (c) Was there the expropriation of the property of foreign nationals?
 - i. Direct expropriation means that the foreign national has lost title of the property
 - ii. Indirect expropriation means the foreign national owns the property, but has lost the ability to use it, enjoy it, dispose of it, etc.

- iii. The expropriation of property can be lawful
 - A. "It is recognised in international law that measure stake by the state can interfere with property rights such an extent that these rights are rendered so useless that they must be deemed to have been expropriated" *Starrett Housing Corporation v Iran* (1987) 4 Iran-US CTR 122
- iv. However, expropriation must only be conducted where it is for a public purpose or non-discriminatory in nature, and compensation must be paid to the foreign national *Certain German Interest in Polish Upper Silesia*
- (d) Was there the breach of a treaty obligation to a foreign national?
 - i. An individual has a right to a fair trial *International Covenant on Civil and Political Rights* Art 7
 - ii. An individual has a right to not be tortured by a state *Convention Against Torture* Art 2
 - iii. If there was a biased jury or appeals process against the national in local proceedings, or the local defendant was otherwise favoured, this amounts to mistreatment *Loewen Group v US* (2006) NAFTA Arbitration Tribunal
- (e) A state has an obligation to provide physical protection to foreign nationals who are faced with threats by third parties Home Frontier and Foreign Missionary Society v Great Britain (1921) VI RIAA 42; Asian Agricultural Products Ltd v Sri Lanka (1991) CSID Case No. ARB/87/3
- (f) A state is responsible if an injury to an alien results from its failure to exercise due diligence to prevent or to punish the injury *Draft Convention on the International Responsibility of States for Injuries to Aliens* Art 10(1)
 - i. Injury can be direct Neer v Mexico (1926) 4 RIAA 60
 - ii. Injury can be indirect, such as the poor treatment of a foreign national in prison *Roberts v Mexico* (1926) 4 RIAA 60
 - iii. Under the international minimum standard, the test for direct injury should be "in accordance with the ordinary standards of civilisation", which is a stricter obligation than assessing merely whether the state had acted in a way *Roberts v* Mexico (1926) 4 RIAA 60
- (g) The neglect of a foreign national amounts to mistreatment (such treatment needs to amount to being cruel, harsh and unlawful) *Quintanilla* (1926) 4 RIAA 60 at [3]
- (h) It is irrelevant was to whether the state's laws empower the state to measure treatment against the international minimum standard or not *Neer v Mexico* (1926) 4 RIAA 60
 - i. However, it is sufficient to investigate the relevant case, even if it is concluded within the state that different actions could be undertaken *Neer v Mexico* (1926) 4 RIAA 60
- 3. Is a claim admissible for a state to take responsibility for it?
 - (a) The injured person must be a national of the claiming state 2001 Articles on State Responsibility for Internationally Wrongful Acts Art 44(a)
 - (b) Before a state takes up a claim on behalf of a national, that national must have exhausted all of the local remedies available to them in the state that they were

injured in – 2001 Articles on State Responsibility for Internationally Wrongful Acts Art 44(b)

- 4. Is the nationality of claims requirement met?
 - (a) States may only exercise a right of diplomatic protection in relation to their nationals (natural persons, or legal persons such as corporations) Re (Al Rawi and Others) v Secretary of State for Foreign and Commonwealth Affairs [2006] EWCA Civ 1279
 - (b) It is a matter for states to grant nationality, whether it is by place of birth (jus soli), by descent (jus sanguinis), by naturalisation, or by succession 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Art 4
 - i. A natural person is required to be a national of the state from the date of their injury to the date of the official presentation of the claim 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Art 5(1)
 - A. However, if a person has lost their previous nationality for a reason unrelated to the claim, they are only required to be a national of the state at the date of the official presentation of the claim 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Art 5(2)
 - ii. A state may exercise diplomatic protection in respect of a stateless person who, at the date of injury and at the date of presenting their claim, is lawfully and habitually resident in that State 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Art 8(1)
 - iii. A state may exercise diplomatic protection in respect of a refugee who, at the date of injury and at the date of presenting their claim, is lawfully and habitually resident in that State 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Art 8(2)
 - A. However, this does not apply in respect of an injury caused by an internationally wrongful act of the state of nationality of the refugee 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Art 8(3)
 - iv. If a state is asserting nationality and making a claim against a state which arguably has closer ties to the individual, the claiming state does not need to prove an effective or genuine link but only needs to show a genuine link such that it can take up a claim against a state with which the national has very close ties Nottebohm Case (Liechtenstein v Guatemala) [1955] ICJ Rep 4; ILC Commentary to 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection
 - (c) Does the individual hold multiple nationalities?
 - i. If the individual is a multiple national, all states can exercise diplomatic protection over them 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Art 6
 - ii. If one of the states injures the individual, then the other states are entitled to exercise diplomatic protection on behalf of the injured individual 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Art 7
 - A. However, an exception applies if the individual's predominant nationality is that of the injuring state at both the date of injury and the date of the official presentation of the claim 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Art 7

- iii. It is irrelevant at international law as to whether a state accepts a person as their national *Nottebohm Case (Liechtenstein v Guatemala)* [1955] ICJ Rep 4
- iv. To determine what the individual's predominant nationality is, look at factors such as their habitual residence, the state of their family ties, and the state of their economic interests *ILC Commentay to 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 7* at [5]
- v. Under the nationality of claims requirement, nationality was a legal bind which must show a genuine connection between a person and a state *Nottebohm Case* (*Liechtenstein v Guatemala*) [1955] ICJ Rep 4
 - A. However, this is no longer used *ILC Commentary to 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Article 4* at [5]
- 5. Does this involve the diplomatic protection of a corporation?
 - (a) The state of nationality of a corporation is the state under whose law the corporation was incorporated 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Art 9
 - i. However, this does not apply where: 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Art 9
 - A. The corporation is controlled by the nationals of another state
 - B. The corporation has no substantial business activities in the state of incorporation
 - C. The dealt of the management and financial control are located in another state
 - In this case, the corporation's nationality shall be regarded as the state in which it predominantly carries out its business activities
 - ii. Other states will not be able to exercise protection of corporations not incorporated under their laws *Diallo Case (Guinea v DRC)* [2007] ICJ Rep 582
 - iii. The diplomatic protection of corporations is available to the state of nationality of the corporation, and not the state of nationality of the shareholders of a corporation (this is a strict distinction) Barcelona Traction Case (Belgium v Spain) [1970] ICJ Rep 3
 - (b) States will not be entitled to exercise diplomatic protection in respect of shareholders unless: – 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Art 11 (codifying Barcelona Traction Case (Belgium v Spain) [1970] ICJ Rep 3 at [65]-[68], [92])
 - i. The corporation has ceased to exist for a reason unrelated to the injury 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Art 11(a)
 - ii. The corporation had, at the date of injury, the nationality of the state alleged to be responsible for causing the injury, and incorporation in that state was required as a precondition for doing business there 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Art 11(b)
 - iii. A state may only exercise diplomatic protection in respect of its national as a shareholder in a foreign company if losses were suffered from a breach of the direct rights of the national as a shareholder, the company ceases to exists, or the company's national state lacks the capacity to take action on its behalf Republic of Guinea v Democratic Republic of Congo [2007]

- (c) To the extent that an internationally wrongful act causes direct injury to the rights of shareholders (e.g., right to vote, right to dividend, etc.), the state of nationality of the shareholders is entitled to exercise diplomatic protections in respect of its individuals 2006 Draft Articles on Diplomatic Protection Art 12 (codifying Barcelona Traction Case (Belgium v Spain) [1970] ICJ Rep 3 at [47])
 - i. It remains a fundamental rule in this area that an internationally wrongful act against shareholders in their capacity as shareholders is not to be regarded as an exception to the general legal regime of diplomatic protection *Diallo Case* (*Guinea v DRC*) [2007] ICJ Rep 582
 - ii. Shareholders have an action only when the act has been aimed at the direct rights of shareholders, not the corporation – Barcelona Traction Case (Belgium v Spain) [1970] ICJ Rep 3; affirmed in Republic of Guinea v Democratic Republic of Congo [2007] ICJ Rep 582
- 6. Have all local remedies been exhausted?
 - (a) Before a state takes up a claim on behalf of a national, that national must have exhausted all of the local remedies available to them in the state that they were injured in 2001 Articles on State Responsibility for Internationally Wrongful Acts Art 44(b)
 - This rule is based on the principle that "the foreign state should, first of all, be given the opportunity of redressing the wrong alleged" – Finnish Shipowners Arbitration (1934) 3 RIAA 1479
 - (b) A state may not present a claim on behalf of their national until the national has exhausted all local remedies 2006 Draft Articles on Diplomatic Protections Art 14(1)
 - i. "Local remedies" means legal remedies which are open to an injured person before the judicial or administrative courts or bodies, whether ordinary or special, of the State alleged to be responsible for causing the injury 2006 Draft Articles on Diplomatic Protections Art 14(2)
 - ii. The plaintiff must prove that there are no reasonably available effective remedies, and that they are exhausted all judicial and administrative remedies that are of a binding nature *Norwegian Loans Case* [1957] ICJ Rep 9
 - A. However, the balance of proof shifts to the defendant state when the legislation on its face does not have any remedy
 - B. No such proof is needed if there is legislation which on its face deprives the claimants of a remedy and the defendant state must show that the existence of a remedy can be reasonably assumed
 - iii. All available judicial and administrative remedies, including avenues of appeal, must be exhausted (without the attempting of a settlement) Loewen Group v US (2006) NAFTA Arbitration Tribunal
 - A. However, there is no requirement to appeal a decision if the appeal would fail to change the outcome of the case *Finnish Shipowners Arbitration* (*Finland v UK*) (1934) 3 RIAA 1479
 - iv. "It is sufficient if the essence of the claim has been brought before the competent tribunals and pursued as far as permitted by local law and procedures, and without success" *Electronica Sicula SpA (ELSI) Case (US v Italy)* [1989] ICJ Rep 15

A.12. USE OF FORCE 283

v. All of the evidence to be raised in international proceedings must have been raised in domestic proceedings - *Ambatielos Arbitration (Greece v UK)* (1956) 12 RIAA 83

- A. Failing to raise a piece of evidence (even if by accident) can be fatal to proceedings in diplomatic protection
- B. "It is the whole system of legal protection, as provided by municipal law, which must have been put to the test before a State, as the protector of its nationals, can prosecute the claim on the international plane"
- vi. Local remedies shall be exhausted where an international claim, or request for a declaratory judgement related to the claim, is brought preponderantly on the basis of an injury to a national or other person referred to in Draft Article 8 2006 Draft Articles on Diplomatic Protections Art 14(3)
- (c) Local remedies do not need to be exhausted when: 2006 Draft Articles on Diplomatic Protections Art 15
 - i. There are no reasonably available local remedies to provide effective redress, or the local remedies provide no reasonable possibility of such redress 2006 Draft Articles on Diplomatic Protections Art 15(a)
 - ii. There is undue delay in the remedial process which is attributable to the State alleged to be responsible 2006 Draft Articles on Diplomatic Protections Art 15(b)
 - iii. There was no relevant connection between the injured person and the State alleged to be responsible at the date of injury 2006 Draft Articles on Diplomatic Protections Art 15(c)
 - iv. The injured person is manifestly precluded from pursuing local remedies 2006 Draft Articles on Diplomatic Protections Art 15(d)
 - v. The State alleged to be responsible has waived the requirement that local remedies be exhausted 2006 Draft Articles on Diplomatic Protections Art 15(e)

A.12 Use of Force

- 1. Was there a use of force?
 - (a) All member states of the UN must settle their disputes by peaceful means *UN Charter* Art 2(3)
 - i. This is customary international law, and so all states must abide by this provision *Nicaragua v US* [1986] ICJ Rep 14
 - (b) The use of force is prohibited under international law UN Charter Art 2(4)
 - This has the purpose of "saving succeeding generations from the scourge of war"
 UN Charter Preamble
 - ii. This is a customary norm of international law, and so is binding on parties even if they are not part of the UN *Nicaragua Case* (1968)
 - iii. This is moreover a 'cornerstone of the United Nations Charter' *Armed Activities* (DRC v Uganda) (2005)
 - iv. The prohibition includes the use of force by a state, or by paramilitary or irregular forces acting on behalf of a state Declaration on Friendly Relations 1970 (Res 2625) Principle 1

- A. This declaration reflects customary international law *Nicaragua Case* (1986) at [188], [191]; *Armed Activities* (2005) at [162], [300]
- B. The use of force includes the threat or use of force to violate the existing international boundaries of another state or as a means of solving international disputes, including territorial disputes and problems concerning frontiers of states
- C. The use of force includes organising or encouraging the organisation of irregular forces or armed bands, including mercenaries, for incursion into the territory of another state
- D. The use of force includes organising, instigating, assisting or participating in acts of civil strife or terrorist acts in another state or acquiescing in organised activities within its territory directed towards the commission of such acts that involve the use of force
- v. State-sanctioned terrorism is prohibited Declaration on Friendly Relations 1970 (Res 2625) Principle 1
- vi. Aggression, which is the use of armed force by a State against another state's sovereignty, territorial integrity or political independence, is prohibited Resolution on Definition of Aggression 1974 Art 1
 - A. A non-exhaustive list of acts that can constitute aggression is provided in *Resolution on Definition of Aggression 1974* Art 3, and includes the invasion, attack, occupation, annexation, bombardment, or blockade of another state by armed force; allowing territory to be used for perpetrating aggression against a third state; the sending by or behalf of a state of armed bands, groups, irregulars or mercenaries, which carry out acts of armed force against another state of such gravity listed above or its substantial involvement therein
 - B. This Declaration reflects customary international law *Nicaragua* (1986) at [195]; *Armed Activities* (2005) at [146]
- (c) The application of the use of force is not limited to matters concerning the "territorial integrity or political independence of any state", as these are just specific examples that elaborate on the general prohibition of the use of force Brownlie, International Law and the Use of Force by States (1963) at 366
 - i. However, it can be used as a limitation:
 - A. E.g., minesweeping operations in the waters of another state (1948, by the UK Navy within the Albanian Territorial Sea in the Corfu Channel)
 - B. Forcible invasion by a country to rescue their citizens (e.g., an Israeli intervention in the 1976 Entebbe incident to rescue Israeli citizens on a hijacked airliner)
- (d) Does one of the recognised exceptions to the use of force apply?
 - i. Self-defence *UN Charter* Art 51 (this must be permitted by the UN Security Council at the first available opportunity)
 - ii. Collective security UN Charter Chapter VII
 - iii. Governmental consent to the use of force in their territory
- (e) Even if the use of force cannot be established, there is at least an unlawful intervention in the sovereignty of another state *Nicaragua* (1986) at [224]

A.12. USE OF FORCE 285

- 2. Was there an armed attack?
 - (a) The unlawful use of force by one state against another constitutes armed force
 - (b) Was there a grave use of force? Nicaragua Case (1986) at [191]; Oil Platforms (1984) at [51]
 - (c) Were the scale and effects of the operation sufficient such as to constitute an armed attack? *Nicaragua* (1986) at [195]
 - (d) Examples of armed attacks include:
 - i. The placing of mines on a single military vessel may amount to an armed attack Oil Platforms (2003) at [72]
 - A. This is not the case for a consumer vessel, as military vessels are integral to the security of a country
 - ii. Capturing several towns near a country's border (given the massive scale and effects of this) *Armed Activities* (2005) at [110], [147]
 - iii. Cybersecurity attacks, as cyber force can amount to non-kinetic uses of force in certain situations, provided they meet six criteria:

 The Use of Cyber Force in International Law, Michael Schmitt
 - A. Severity
 - B. Immediacy
 - C. Directness
 - D. Invasiveness
 - E. Measurability of Effects
 - F. State involvement
 - G. Presumptive legality
 - (e) Armed attacks can be conducted by armed bands, irregulars, mercenaries, etc. acting on behalf of a state *Nicaragua* (1986) at [195]; *Resolution on Definition of Aggression* 1974 Art 3(g)
 - (f) Was there a use of direct armed force?
 - i. Invasion of a territory, missile attacks, the laying of mines, etc. all constitute a use of direct armed force *Declaration on Friendly Relations 1970* (GA Res 2625)
 - A. The laying of landmines constitutes direct armed force and an armed attack *Nicaragua* (1986) at [195]
 - (g) Was there a use of indirect armed force?
 - i. Did the state have effective control of the irregular band?
 - A. The conduct of private individuals will be attributable to a state "if the state directed or controlled the specific operation and conduct complained of was an integral part of the operation" *ILC RSIWA Draft Article 8 Commentary* at [3]; *Nicaragua* (1986) at [195]
 - B. Irregular bands includes mercenaries, private armies, third parties, etc.
 - ii. Sending 'armed bands' (irregular forces) into another state's territory *Nicaragua* (1986) at [195], [247]
 - iii. 'Actively extending military, logistic, economic and financial support to irregular forces' (so long as it is directed to the war-fighting capacity of a state)
 Armed Activities (2005) at [161]-[165]

- iv. Providing weapons, logistical and/or other support to armed insurgents *Nicaragua* (1986) at [195], [205], [247], [251]
- (h) The 'mere supply of funds' does not constitute a use of force *Nicaragua* (1986) at [228]
- (i) Armed attacks do not include:
 - i. Mere frontier incidents Nicaragua (1986) at [195]
 - A. These are minor disputes wherein the conflict only lasts for a few hours or days
 - ii. Armed incursions where the victim did not raise any complaints *Nicaragua* (1986) at [231]-[234]
 - A. Since the receiving state(s) did not complain about the incursion, it is presumed that they were not serious enough to amount to an armed attack
 - iii. Providing assistance to rebels or insurgents in the form of weapons, logistical or other support *Nicaragua* (1986) at [195], [230]
- (j) Armed attacks generally need to be directed at a state Oil Platforms (2003) at [64]
 - i. Here, even if taken cumulatively, a missile attack, the laying of mines on a ship and then firing on a US ship by Iran did not amount to an armed attack, as there was no evidence that the attacks were aimed specifically at the US
- (k) Localised border encounters between small infantry units, even those involving the loss of life, do not constitute armed attacks *Ethiopia v Eritrea* (2006) at [11]
- (l) An armed attack generally does not begin until a state's territory is affected, but it is possible for it to begin when an irreversible course of action (e.g., the launch of missiles) has begun
 - i. An exception may lie in the 'accumulation of events' theory, where an armed attack arises from a number of armed attacks viewed as a whole; this theory has been implicitly accepted by the ICJ *Nicaragua* (1986) at [231]; *Oil Platforms* (2003) at [64]; *Armed Activities* (2005) at [146]
- 3. Was there the threat of the use of force?
 - (a) Since the use of armed force is prohibited under *UN Charter* Art 2(4), the threat of the use of force is also prohibited *Nuclear Weapons Advisory Opinion* (1996) at [47]
 - (b) The threat must be specifically directed at a state to constitute a threat of force
 - Military manoeuvres (e.g., positioning troops, aiming artillery/weapons) near a country's border do not necessarily constitute a threat of the use of force –
 Nicaragua (1986) at [227]
 - ii. An accumulation of forces can possibly constitute a threat, depending on its accompaniments (statement of intent, relevant exercises, etc.) Nicaragua (1986)
- 4. Can a state raise self-defence?
 - (a) The right of self-defence is preserved only until the UN Security Council has taken the necessary measures to maintain international security and peace *UN Charter* Art 51

A.12. USE OF FORCE 287

(b) Measures taken in self-defence must be reported to the UN Security Council at the earliest possible moment – *UN Charter* Art 51

- (c) Is the act of a state in response to a continuing attack or a past attack?
 - i. A state cannot use self-defence in response to a past attack or an unlawful retaliation
 - ii. A state cannot use self-defence if the attacks have stopped, as self-defence is only available to respond to an ongoing attack
- (d) Was it anticipatory self-defence?
 - i. The ICJ has expressly reserved its opinion around anticipatory self-defence, and so there is not much jurisprudence to guide this notion *Nicaragua* (1986) at [194]; *Armed Activities* (2005) at [143]
 - ii. Anticipatory self-defence arises when self-defence is carried out on the basis that armed attacks are about to occur (e.g., a missile is coming)
 - iii. It is unclear as to whether states can practice self-defence against an imminent attack *Nicaragua* (1986) at [195]
- (e) Was it pre-emptive self-defence?
 - i. This notion has generally been denied in jurisprudence
 - ii. Pre-emptive self-defence operates on the basis that an armed attack will eventually occur, and so it is wise to reduce or disable the opposition's military strength
 - A. Arguments in favour of this approach include the changing nature of threats since 1945, that it is impractical to require states to wait until an armed attack has occurred, and that the UN Security Council is often unable to act in a timely manner, or act at all due to the veto of one of its five permanent members
 - B. Arguments against this approach include that it is too vague and arbitrary, that it is unable to assess necessity and proportionality, and it may erode the prohibition on the use of force
- (f) The attacked state must be a member of the UN Ethiopia v Eritrea (2006) at [11]
- (g) Was there an armed attack?
 - i. See the above; an armed attack is necessary to raise self-defence
 - ii. The 'scale and effects of the operation' of the attacking state must be grave enough to constitute an armed attack *Nicaragua* (1986) at [195] (e.g., a high degree of casualties, destruction of property, etc.)
 - iii. It is possible for an operation to be a use of force contrary to *UN Charter Art* 2(4), but not an armed attack and hence not something that can be responded to by way of self-defence *Nicaragua* (1986) at [191]; *Oil Platforms* (2003) at [51], [61]
 - iv. The right to self-defence is only enlivened by an armed attack, which is a most grave use of force assessed on the 'scale and effects' of the operation *Nicaragua* (1986) at [195]; *Armed Activities* (2005) at [146]
- (h) The response of the state must be "necessary and proportionate to the armed attack and necessary to respond to it" *Nicaragua* (1986) at [176]

- i. Necessity means that there are no alternative means of repelling the attack
 - A. An act done in necessity is an almost in instant response and which has been done instinctively *Caroline Case* (1841/1842)
- Proportionality means that the response must not be excessive in relation to the armed attack, and must only be for the purpose of repelling the attack (not counter-attacking)
 - A. Self-defence is only lawful if it is necessary and proportionate to the purpose of repelling an armed attack as a matter of customary international law *Legality of the Threat or Use of Nuclear Weapons Advisory Opinion* (1996) at [41]; *Nicaragua* (1986) at [194]
 - B. The response must repel the attack, not seek to root out the source of the attack
- (i) The capture of airports and towns of many hundreds of kilometres from the border is not proportionate or necessary, and cannot constitute self-defence *Armed Activities* (2005)
- (j) Attacking towns and cities near the border is not proportionate to a border attack and so cannot constitute self-defence *Armed Activities* (2005) at [147]
- (k) A missile attack on a civilian vessel does not meet the scales and effects for an armed attack, and so responding by attacking oil platforms (a government installation) is not self-defence, as it is neither necessary nor proportionate to the attack on the civilian vessel *Oil Platforms* (2003) at [64], [72]
- 5. Did the attacked state consent to the use of force?
 - (a) Did the state positively consent to give the other state a right to intervene, without coercion? *Armed Activities* (2005) (the DRC requested assistance from Uganda and Rwanda to help it quell rebel activity)
 - (b) Where there is an internal conflict that has reached the threshold of civil war, a state cannot consent to external intervention, and the attack will be unlawful
- 6. Was there a terrorist attack?
 - (a) Were the scales and effects of the terrorist attacks sufficient to constitute an armed attack? *Nicaragua* (1986) at [195]
 - (b) Can the acts be attributed to a state?
 - i. It is the majority view that the attack by the terrorist must be attributable to the state *Israeli Wall* (2004)
 - ii. The minority view is that no state attribution is possible, and self-defence against non-state actors might be permitted, especially when there is no real governmental authority in the state of the terrorist, and as such, no attribution is possible *Armed Activities* (2005) (Kooijmans and Simma JJ)
 - A. Moreover, where a state is unwilling or unable to prevent its territory from being used to harbour terrorist groups or from being used to launch cross-border attacks against other states, this gives the victim state the right to use force within the territory of that unwilling/unstable state against the non-state group *UNSC Resolutions 1368 and 1373* (passed post-9/11, but state practice on this area is largely undetermined)

7. Is there a need for collective security?

- (a) The UN Security Council has broad powers to take action necessary to respond to threats of the peace, breaches of the peace and acts of aggression
- (b) The UN Security Council needs to believe that there is such a threat to or breach of global peace *UN Charter* Art 39
- (c) The UNSC should first attempt measures that do not involve the used of armed force UN Charter Art 41
- (d) If the previous measures have failed, then the UNSC can authorise armed force by member states if it believes it is necessary *UN Charter* Art 42
- (e) The UNSC can take action so long as the veto is not exercised by at least one of its five permanent members

8. Is there a need for humanitarian intervention?

- (a) This is an exception to the prohibition on the use of force, and allows another state to protect the nationals of that state from extreme cruelty or persecution
- (b) Force should be used only as a very last resort, with there being 'no better or more appropriate authority than the United Nations Security Council to authorise military intervention for humanitarian protection purposes' 2001 International Commission on Intervention and State Responsibility
- (c) The UK's legal position on the application of humanitarian intervention is that if an action in the UNSC is blocked, the UK would still be permitted to take exceptional measures in order to alleviate the scale of the overwhelming humanitarian catastrophe (e.g., in Syria, by deterring and disrupting further use of chemical weapons by the Syrian regime)
 - i. A legal basis for justifying humanitarian intervention is:
 - A. There is convincing evidence of extreme humanitarian distress on a large scale, requiring immediate and urgent relief
 - B. It must be objectively clear that there is no practicable alternative to the use of force
 - C. The proposed use of force must be necessary and proportionate to the aim of relief of humanitarian needs and strictly limited in time and scope of this aim
 - Humanitarian intervention is a narrow and limited test, and there is not widespread state practice and support for this, so its persuasiveness is questionable

A.13 International Dispute Settlement

1. Is there a dispute?

- (a) A dispute is a disagreement on a point of law or fact; a conflict of legal views or interests between two persons *Movrommatis Palestine Concessions* [1924] at [11]
 - i. Whether there exists an international dispute is a matter for objective determination

- (b) The mere denial of a dispute does not prove non-existence of a dispute Interpretation of Peace Treaties with Bulgaria, Hungary and Romania [1950] at [74]
- 2. Is there a non-judicial means of dispute resolution available?
 - (a) Is negotiation available?
 - i. Negotiation is the lowest-stakes method of international dispute settlement, and is the most common form attempted by states
 - ii. Negotiation may sometimes be a procedural precondition for the jurisdiction of an international court (i.e., negotiation must take place before judicial settlement occurs) *Ukraine v Russia* [2019] ICJ Rep 558
 - A. Discussions at international organisations/fora are sufficient to satisfy this requirement South West Africa [1962] ICJ 319
 - (b) Is mediation available?
 - i. Mediation involves a third party (the mediator) who assists the parties in reaching a settlement
 - ii. The parties remain in control over the process, and set the scope for the mediator's involvement
 - (c) Is an inquiry available?
 - i. An inquiry involves an objective assessment of the evidence and the finding of facts 1899 Hague Convention for the Pacific Settlement of International Disputes Art 9; Dogger Bank Inquiry (1904)
 - ii. Inquiries are to be established by special agreement between the conflicting parties 1899 Hague Convention for the Pacific Settlement of International Disputes Art 10
 - iii. Inquiries are limited to statements of fact, and are to be provided with all resources as required – 1899 Hague Convention for the Pacific Settlement of International Disputes Art 11-14
 - (d) Is conciliation available?
 - i. Conciliation involves a third party who considers legal and non-legal factors to recommend terms of settlement, and is an option for dispute resolution – 1948 Pact of Botogá Articles XV-XXX
 - ii. For parties to the General Act for the Pacific Settlement of International Disputes,
 there must be compulsory conciliation if the dispute is not resolved by
 diplomacy 1928 General Act for the Pacific Settlement of International Disputes Art
 1-15
 - iii. If this is a matter involving *UNCLOS*, provisions for conciliation exist *Australia-Timor Leste Conciliation* (2016)
 - (e) Is arbitration available?
 - i. Arbitrations involve the application of international law to resolve deadlocks by creating binding awards
 - ii. Arbitration can either be:
 - A. Ad-hoc inter-state (i.e., established only when there is conflict between states) *South China Sea Arbitration* (2016)

- B. Institutional inter-state (i.e., it is a standing, go-to method of dispute resolution)
- C. Individual/corporation vs state (this is generally under bilateral investment treaties, where arbitration allows for disputes between corporations and states to be resolved *Philip Morris v Australia* (2015) (under the Hong-Kong Australia BIT))
- 3. Have the preconditions to the ICJ's jurisdiction been satisfied?
 - (a) States must use other methods of dispute settlement to attempt to resolve the dispute in a peaceful manner before raising the dispute to a judicial body *UN Charter* Art 2(3); *UN Charter* Art 33(1)
 - i. States must have refrained from the threat or use of force UN Charter Art 2(4)
 - ii. The UNSC will call upon the parties to settle their disputes by such means whenever necessary *UN Charter* Art 33(2)
 - (b) If negotiation has been attempted, is there a bar to jurisdiction?
 - The precondition of negotiation for the ICJ's jurisdiction is met only when there
 has been a failure of negotiations, or when negotiations have become futile or
 resulted in a deadlock Russia v Ukraine [2019] ICJ Rep 558
 - i. Discussions at international organisations/fora are sufficient to satisfy this requirement *South West Africa* [1962] ICJ 319
- 4. Does the ICJ have jurisdiction?
 - (a) Only member states of the UN can be in cases heard before the ICJ ICJ Statute Art 34(1)
 - i. All member states of the UN are automatically parties to the ICJ Statute, and thus can be parties to cases before the ICJ *ICJ Statute* Art 83(1)
 - (b) Judgements of the ICJ are binding only on the parties to the dispute *ICJ Statute* Art 59
 - i. However, judgements may influence the development of international law *ICJ* Statute Art 38(1)(d)
 - (c) There is a fundamental difference between a violation of international law and the jurisdiction of the ICJ; just because thee is a breach does not mean that the ICJ has jurisdiction over it *Democratic Republic of the Congo v Uganda* [2005] ICJ Rep 168
 - (d) Contentious jurisdiction of the ICJ is present either by *compromis*, compromissory clause, or compulsory jurisdiction, demonstrating state consent to be bound to the ICJ's jurisdiction, which is essential for its jurisdiction
 - i. Compromis jurisdiction is an agreement between the parties to submit a dispute to the ICJ for resolution – ICJ Statute Art 36(1)
 - A. The states will identify the issues they wish for the ICJ to decide upon
 - B. The states can specify the rules/parameters that the ICJ should apply in deciding the dispute
 - ii. A compromissory clause is a clause in a treaty that provides for the ICJ to have jurisdiction over disputes arising from the treaty, with this being very clear from the text of the treaty *ICJ Statute* Art 36(1)

- iii. The ICJ's compulsory jurisdiction arises on the basis of a state having accepted the ICJ's jurisdiction in advance; hence, it is known as jurisdiction under the optional clause (given that there is no requirement to submit to it) *ICJ Statute* Art 36(2)
 - A. States may give their consent through a declaration accepting the ICJ's jurisdiction
 - B. Declarations can be made with reservations/conditions *ICJ Statute* Art 36(3); *Nicaragua v US* [1984] ICJ Rep 392 at [59]
 - C. A party may rely on the reservation of the other party to dispute the ICJ's jurisdiction *Whaling in the Antarctic* [2014] ICJ Rep 226
 - D. A declaration of compulsory jurisdiction is only effective if both states have made such a declaration and both states accept the ICJ's jurisdiction over the present dispute
 - E. Reservations made by a state are reciprocal, and can be used against them, with the ICJ taking only the narrowest approach to jurisdiction (e.g., if a state accepts the ICJ's jurisdiction over X + Y, and another state accepts it over Y and Z, the ICJ's jurisdiction in a dispute between the parties would apply to Y ony) *Nicaragua v United States* [1984] ICJ Rep 392; *Norwegian Loans Case* [1957] ICJ Rep 9; *Interhandel Case* [1959] ICJ Rep 6
- iv. Jurisdiction of the ICJ may be established under *forum prorogatum*, which is the agreement of the parties to submit a dispute to the ICJ after the dispute has arisen, and thus is a form of *compromis* jurisdiction *ICJ Statute* Art 38(5)
- v. The PCIJ's jurisdiction can be transferred to the ICJ ICJ Statute Art 36(5)
- (e) Even if a state does not consent to the ICJ's jurisdiction, the parties still need to resolve their dispute by peaceful means – ICJ Statute Art 33; Federal Republic of Yugoslavia v NATO States [1999] ICJ Rep 124
- (f) The states must agree that there is a dispute for the ICJ to have jurisdiction *Marshall Islands Case* [2016] ICJ Rep 883 (note Crawford J's dissent, raise that this theory may be flawed, especially since this case was tied and decided on the President's casting vote)
 - i. The test for whether a dispute exists is a matter for objective determination by the court
- 5. Is the dispute admissible to the ICJ?
 - (a) A dispute is not admissible if it is moot or hypothetical (e.g., the nuclear tests case was not admissible as nuclear testing had ceased by them) *Legality of the Threat or Use of Nuclear Weapons* [1996] ICJ Rep 254
 - (b) A dispute is not admissible if it is not justiciable; it must contain some legal question and cannot be purely political Legal Consequences of the Construction of a Wall in Occupied Palestinian Territory [2004] ICJ 136
 - (c) Does the applicant have standing?
 - i. Was there an injury?
 - ii. Is the nationality of claims rule satisfied? (Topic 11)
 - iii. Is the rule on the exhaustion of local remedies satisfied? (Topic 11)

- iv. Is the dispute moot or hypothetical?
- (d) Is there an indispensable third party that is not present? *Monetary Gold* [1945] ICJ Rep 19; *East Timor* [1955] ICJ Rep 6
 - i. An indispensable third party is one whose rights would be affected by the judgment of the ICJ
 - ii. The third party might be a vital subject matter to the case *Monetary Gold* [1945] ICJ Rep 19
 - iii. A vital third party might have its rights and obligations significantly impacted by the subject matter and judgement of the dispute East Timor [1955] ICJ Rep
 - iv. However, it is insufficient that there are legal implications on a third party; a third party's legal interests must be impacted, or they must otherwise be vital to the court's decision *Nauru v Australia* [1992]
- 6. Can another party intervene into the dispute?
 - (a) A state can intervene into a case regarding their interest if: El Salvador v Honduras (Nicaragua Intervening) [1992] ICJ Rep 351 at [58]
 - i. It has an interest of a legal nature that *may* be affected by the decision in the case
 - ii. It can satisfy the burden of proof of proving their legal interest
 - iii. It can provide a clear identification that their legal interest will be affected by the decision in the case (an apprehension is not sufficient)
 - (b) A state that is party to a case cannot determine whether a third state can intervene into the dispute El Salvador v Honduras (Nicaragua Intervening) [1992] ICJ Rep 351 at [96]
 - i. Only the ICJ can determine whether a third party can intervene into the dispute
 - ii. Power has already been given to the court by consent if the existing parties have given the ICJ consent to hear the matter, the court then has the competence to permit an intervention even if it is opposed by one or both of the parties to the matter
- 7. Can the ICJ issue provisional measures?
 - (a) The competence of the ICJ to issue provisional measures is distinct from jurisdiction, and is not derived from the consent of the parties to the dispute
 - (b) The ICJ can issue provisional measures if there is the imminent risk of irreversible harm before a dispute can be heard ICJ Statute Article 41(1); Application of the Convention on the Prevention and Punishment of Crime of Genocide in the Gaza Strip [2024] ICJ Rep 1
 - (c) Provisional measures are legally binding, and give rise to an independent legal obligation *La Grand* [2001] ICJ Rep 466
 - i. Failure to comply with provisional measures constitutes grounds for a claim by an affected state (i.e., it is a wrongful state act) *La Grand* [2001] ICJ Rep 466

- (d) It is currently unsettled whether the ICJ is empowered to judicially review decisions of the UNSC *Libya v US*; *Libya v UK* [1992] 44
- (e) Requirements for the invocation of provisional measures are:
 - i. *Prima facie* jurisdiction, which indicates that the condition of jurisdiction needs not be fully satisfied, so long as it is apparent that the ICJ has jurisdiction over the dispute *South Africa v Israel* [2024] ICJ Rep 1
 - ii. There must be a plausible claim of rights that needs to be protected *South Africa v Israel* [2024] ICJ Rep 1
 - iii. The claim must be urgent Georgia v Russia [2011] at [143]
 - iv. Failure to grant the provisional measure would cause irreparable harm to the rights of the applicant if provisional measures are not granted South Africa v Israel [2024] ICJ Rep 1
- 8. Is the ICJ operating in its advisory capacity?
 - (a) The ICJ can provide an advisory opinion on any question at the request of authorised UN bodies
 - (b) Advisory opinions are not binding
 - (c) The court must have compelling reasons for refusing to give an advisory opinion, not merely because the legal question is difficult or unsettled *Kosovo Advisory Opinion* [2010] ICJ Rep 403 at [39]-[40]; *Legal Consequences of the Construction of a Wall in the Occupied Palestinian Territory Advisory Opinion* [2004] ICJ Rep 136
 - i. The fact that a legal question has political aspects is not a compelling reason to decline a request for an advisory opinion *Legal Consequences of the Construction of a Wall in the occupied Palestinian Territory Advisory Opinion* [2004] ICJ Rep 136
 - ii. Whether a separate UN organ is a more appropriate body to request the advisory opinion is not a compelling reason to decline a request for an advisory opinion *Kosovo Advisory Opinion* [2010] ICJ Rep 403 at [39]-[40]
 - (d) Subjects of advisory opinions include:
 - i. Questions of UN law Certain Expenses of the United Nations [1962] ICJ Rep 151
 - ii. Questions around decolonisation Chagos Islands [2019] ICJ Rep 95
 - iii. Questions around unlawful occupation Legal Consequences of the Construction of a Wall in the occupied Palestinian Territory Advisory Opinion [2004] ICJ Rep 136
 - iv. Questions around climate change *Obligations of States in Respect of Climate Change* [pending]

Appendix B

Tutorial Problems

There was no tutorial problem for Topic 1, and the tutorial problem for Topic 2 consisted of source evaluation only.

B.3 Treaties

Astra, Benthos and Ceres are neighbouring states on Torrent Island. Astra is located in the eastern and mountainous part of Torrent Island and is highly industrialised. Benthos and Ceres are developing states located on the western and low-lying part of Torrent Island.

The River Delta flows from Astra into Benthos and then on to Ceres. In 1977 Astra, Benthos and Ceres concluded the River Delta Treaty ('RDT'). Article 1 of the RDT commits the parties to 'cooperate to achieve the reasonable and equitable use of the River Delta'. In Article 10 of the RDT, Benthos and Ceres are guaranteed defined minimum volumes of water per annum. On signing the RDT, Astra lodged the following declaration:

'The Government of the Astra Republic, in approving the Treaty, declares that reference to the concept of reasonable and equitable use of transboundary waters does not constitute recognition of a principle of customary law, but illustrates a general principle of cooperation between Parties to the Treaty.'

In 2024, due to an ongoing drought exacerbated by climate change, Astra announced that it was unable to supply any water to Benthos. Benthos in turn was unable to comply with its obligations under Article 10 to supply a required volume of water to Ceres.

In January 2025, Astra announced that the RDT was 'hereby terminated with immediate effect'. In doing so Astra referred to the persistent drought conditions, and the record of negotiations for the RDT during which former President of Benthos commented that 'of course whatever the treaty says must be subject to the vagaries of nature and we may have to put the treaty on hold if the river dries up.' The RDT includes no provision relating to suspension or termination.

Benthos and Ceres contend that the RDT remains in force and that Astra is also bound by

a customary law obligation to provide reasonable and equitable access to a shared freshwater resource.

Astra, Benthos and Ceres are parties to the 1997 United Nations Convention on the Law of the Non-Navigational uses of International Watercourses (the UN Watercourses Convention) which provides, in Article 3, that 'In the absence of an agreement to the contrary, nothing in the present Convention shall affect the rights or obligations of a watercourse State arising from agreements in force for it on the date on which it became a party to the present Convention.'

Astra, Benthos and Ceres are parties to the 1969 Vienna Convention on the Law of Treaties.

At the urging of the UN Secretary-General, the three States have agreed to mediation to resolve their dispute. You have been asked to prepare a legal brief advising the mediator on the legal issues that arise under the law of treaties from these facts.

B.3.1 Objectives of the Parties

- Astra: Seeks to terminate the River Delta Treaty (RDT).
- **Benthos**: Wishes the RDT to remain in force.
- Ceres: Wishes the RDT to remain in force.

B.3.2 Applicability of the Vienna Convention on the Law of Treaties (VCLT)

- All parties (Astra, Benthos, Ceres) are parties to the VCLT.
- Many VCLT provisions reflect customary international law, applicable even if the VCLT (enforced in 1980) does not apply directly to the RDT (enforced in 1977) due to non-retroactivity.
- VCLT Articles 60–62 (material breach, supervening impossibility, fundamental change of circumstances) are customary law and apply regardless.

B.3.3 Can Astra Terminate the RDT?

- Treaty Provisions:
 - RDT lacks provisions on suspension or termination, excluding internal grounds for termination.
 - Object and purpose (Article 1, RDT): Cooperation for reasonable and equitable use of the River Delta.
 - No clear material breach, as facts do not indicate a complete failure to supply water.
- Grounds for Termination (VCLT):
 - Material Breach (Article 60, VCLT):

B.3. TREATIES 297

* Astra and Benthos failed to provide minimum water quantities downstream (Article 10, RDT), breaching Article 1's cooperative purpose.

- * Not a material breach, as drought reduces water availability but does not eliminate it entirely.
- * Astra cannot rely on its own breach to terminate (Article 60).
- * Gabcíkovo-Nagymaros Project (Slovakia case): Material breach requires significant violation of treaty's core obligations, not met here.

- Supervening Impossibility (Article 61, VCLT):

- * Astra's strongest argument: Ongoing drought may render performance impossible.
- * Requires permanent disruption radically transforming obligations.
- * Facts suggest drought is severe but potentially cyclical or temporary, not permanent.
- * Drought linked to climate change does not fully eliminate water sources (e.g., Astra could use desalination or mountain water).
- * Impossibility threshold not met, as obligations remain feasible, albeit challenging.

- Fundamental Change of Circumstances (Article 62, VCLT):

* Requires: (1) unforeseen circumstances, (2) radically transforming obligations.

* Unforeseen Circumstances:

- · Benthos' president's statement ("if the river dries up") suggests droughts were contemplated, undermining Astra's claim of unforeseeability.
- Preparatory work or declaration (not a reservation per VCLT Article 2(1)(d), as it does not modify legal effects) indicates awareness of drought risks.
- · Drought not entirely unforeseen, given climate change knowledge in 2024/2025.

* Radical Transformation:

- · Obligations to supply water remain, though strained by drought.
- · Fisheries Jurisdiction case: Economic instability does not constitute a fundamental change; treaty object (cooperation) persists.
- · Threshold not met, as river has not permanently dried up, and alternative water sources exist.

• Article 56(1), VCLT:

 Absent termination provisions in the RDT, withdrawal is permissible only under Articles 60–62, which Astra fails to satisfy.

• Good Faith (Article 26, VCLT):

- Pacta sunt servanda requires parties to perform treaties in good faith.
- Astra, as a developed state, could explore alternatives (e.g., desalination, sharing mountain water) rather than withholding resources.
- Failure to seek reasonable alternatives breaches Article 26, undermining termination claims.

B.3.4 Treaty Interpretation

VCLT Interpretation Rules:

- Article 31(1): Interpret in good faith, considering ordinary meaning, context, and object/purpose (cooperation for equitable water use, Article 1, RDT).
- Article 32: Supplementary means (e.g., preparatory work like Benthos' statement) confirm drought contemplation.

• UN Watercourses Convention (1997):

- Provides interpretative guidance with similar goals to RDT (Article 5, equitable and reasonable use).
- Reinforces customary expectations of cooperation in water management.

• Astra's Declaration:

- Interpretative declaration, not a reservation (VCLT Article 2(1)(d)), as it clarifies Astra's understanding without modifying legal effects.
- Not a persistent objection to customary law, as Astra's later signing of the 1997
 Watercourses Convention negates such status.

B.3.5 Customary International Law Obligations

• Post-Termination Obligations:

- If RDT is terminated, customary law may still bind parties.
- Article 1 (RDT) is vague, but Article 10 (minimum water supply) reflects specific state practice.
- UN Watercourses Convention (1997): 103 votes in favour, 40 parties, growing acceptance indicates developing customary law (state practice and opinio juris, North Sea Continental Shelf).
- Similarities between RDT (Article 1) and UN Convention (Article 5) suggest customary obligations for equitable water use.
- Astra and Benthos' enforcement efforts imply opinio juris, supporting customary law status.

• Coexistence of RDT and UN Watercourses Convention:

- Article 3, UN Watercourses Convention: Pre-existing agreements (e.g., RDT) remain valid and coexist without conflict.
- No agreement exists to supersede RDT, so both instruments apply.

B.3.6 Benthos' Presidential Statement

• Unilateral Declaration Assessment:

Not a unilateral declaration, as it lacks clear intent to bind Benthos (Nuclear Tests case).

- Vague terminology ("if the river dries up" vs. "drought") and lack of specificity distinguish it from a binding declaration.
- Serves as preparatory work or interpretative statement, not a reservation or persistent objection.

B.3.7 Socioeconomic and Geographic Considerations

Astra's Responsibilities:

- As a developed state, Astra bears greater responsibility to provide water due to its industrial capacity (e.g., desalination).
- Socioeconomic disparities do not alter Benthos and Ceres' equal obligations under the RDT.

Obligations Under RDT:

- Astra has primary obligation to supply water to Benthos, who has a secondary obligation to supply Ceres.
- No guaranteed minimum water for Astra, emphasizing cooperative purpose (Article
 1).

B.3.8 Conclusion

- Astra's termination attempt is invalid under VCLT Articles 60–62, as no material breach, supervening impossibility, or fundamental change of circumstances is established.
- Article 26 (pacta sunt servanda) requires good-faith performance; Astra should explore alternatives (e.g., water sharing) rather than terminate.
- Customary law, reflected in the UN Watercourses Convention, reinforces RDT obligations, ensuring continued cooperation for equitable water use.

B.4 International Law and Australian Law

The United Nations Declaration on the Rights of Indigenous Peoples ('the Declaration') was adopted by the United Nations General Assembly on 13 September 2007, by a majority of 143 states in favour, 4 votes against (Australia, Canada, New Zealand and the United States) and 11 abstentions. The four states that voted against subsequently declared their support for the Declaration (including Australia in 2007, following the election of the Rudd Government).

The Declaration mentions Treaties between Indigenous Peoples and States in its Preamble and in Article 37. The latter provides:

1. Indigenous peoples have the right to the recognition, observance and enforcement of treaties, agreements and other constructive arrangements concluded with States or their successors and to have States honour and respect such treaties, agreements and other constructive arrangements.

2. Nothing in this Declaration may be interpreted as diminishing or eliminating the rights of indigenous peoples contained in treaties, agreements and other constructive arrangements.

You are a legal advisor in the independent Treaty Authority established in Victoria to oversee negotiations between the Victorian Government and the First Peoples' Assembly of Victoria to ensure a fair process in the conclusion of a Treaty that delivers self-determination for Victoria's First Peoples. Victoria was the first State to commit to all three elements of the Uluru Statement from the Heart (Voice, Treaty and Truth). The relevance of the Declaration to the Treaty-making process has been considered in detail by Dr Harry Hobbs. Statewide Treaty negotiations began in Victoria in November 2024.

You have been asked to provide legal advice addressing the following questions:

- 1. What is the status of the Declaration under international law?
- 2. What is the status of the Declaration under Australian law?
- 3. In *Love v Commonwealth* [2020] HCA 3, Bell J (at [73]) cited the Declaration when making the following observation:

"It is not offensive, in the context of contemporary international understanding, to recognise the cultural and spiritual dimensions of the distinctive connection between indigenous peoples and their traditional lands, and in light of that recognition to hold that the exercise of the sovereign power of this nation does not extend to the exclusion of the indigenous inhabitants from the Australian community."

What legal effect was Bell I ascribing to the Declaration under Aboriginal law?

- 4. In what respects does the Advancing the Treaty Process with Aboriginal Victorians Act 2018 (Vic) implement the Declaration in Victorian law?
- 5. What status will a Treaty or Treaties between Indigenous Victorians and the State of Victoria have as a matter of Victorian, Australian and international law?

- UNGA Resolutions are not binding, but they can be evidence of state practice and *opinio* juris for customary law (and may possibly be a piece of soft law)
- This declaration is not a treaty, as there is no objective evidence that the parties sought to be bound nor that they made any decisions
- To determine whether it is a source of law, Art 38(1) must be looked at:
 - It does not fit in with any of the sources mentioned in Art 38(1)
 - It might be possible to argue that it is customary international law under Art 38(1)(b); nonetheless, it would be hard to make out opinio juris on the facts

- It is still possible that there is state practice present, as there are 143 states voting in favour of the declaration; moreover, the reversal in position by the states that voted against it, which all had high levels of Indigenous populations, indicates a strengthening of support for the declaration and hence may evidence state practice
- Moreover, there is some form of international consensus, but there is no specific consensus/practice present
- Some aspects of UN Declarations have attained customary international law status (*Horta v Commonwealth* (1994) 181 CLR 183 (Page 56)), but it is unlikely that this is the case here
- Given the declaration has not been signed and ratified, it is fundamentally not directly binding on states
- Moreover, the UN sets out legal principles; the consensual, non-binding status of its decisions makes it especially active to bring states together
- Declarations are a serious matter; since states do not wish to get on the wrong side of the international community, they are an easy way of getting them all on the same page
- Any detailed analysis of this point must begin with why the declaration is non-binding, but as soft law, it nonetheless evidences state practice and *opinio juris*
 - A link to Horta v Commonwealth (1994) 181 CLR 183 (Page 56) is then required to evidence how UN principles may become customary international law
 - A connection to self-determination must then be made to explore why states continue to nonetheless accept these declarations

- There is no Act directly implementing the Declaration, but there is statute, such as the *Native Title Act 1993*; moreover, aspects of the declaration had already been implemented into Australian law (which had occurred before the signing of this declaration)
- As there is no specific Act in Australia that implements this declaration, it is not binding on Australia's domestic law (since Australia takes a hard transformation approach, it is only binding if the legislature enacts legislation that aligns with the declaration)
 - For full marks, discuss the theories and process that Australia adopts (i.e., monism vs dualism, and the resultant transformation approach)
 - It is possible for customary international law to be a source of domestic law, or otherwise influence Australian law (Mabo)
 - Under these cases, a universally recognised principle of international law will be applied, but does not explicitly form a part of Australian law
- The declaration is quite possibly a source of non-binding soft law
- Under Constitution s 51, international legislation can be implemented into domestic legislation
- In *Chow Hung Ching v R* (1949) 77 CLR 449 (Page 50), Latham CJ held that a universally recognised principle could be applied by the courts

- This approach was followed in Mabo, where it was held that international law is an
 influence on development; if it is customary, it would take effect, but not be directly
 applicable
- The *Polites* principle is of relevance here: in the absence of express words to the contrary, it is assumed that domestic legislation is intended to conform with international law and should be taken as such
- A treaty will only be ratified when legislation with respect to it has been passed in the Commonwealth parliament
- Customary international law can be applied in Australian Courts (Chow Hung Ching v R
 (1949) 77 CLR 449 (Page 50)), but when there is a conflict between domestic and
 international law, domestic law will prevail

- Bell J referred to the Declaration's legal effect, and for the capacity for it to be used as a source of international law
- This is a demonstration of contemporary understanding of indigenous rights, which can be a source of evidence for the current global understanding around this area
- Al-Kateb v Godwin (2004) 219 CLR 562 (Page 60) holds that a direct application of international law to interpret/modify the Constitution would contradict Constitution s 128, which holds that it can only be changed by Australia; thus, any external influence cannot be detrimental to this, nor can it be used to assist in the interpretation of Australia
 - Bell J was using the declaration here to inform her understanding about whether Indigenous people have a connection to their land (thus, it was not a source of law, but rather a supplementary material to help understand the context)
 - In this minority opinion in Al-Kateb v Godwin (2004) 219 CLR 562, Kirby J stated
 that the law should be pragmatic and evolve with the times ("the complete isolation
 of the constitution from international law is not possible/desirable"; "national courts
 and constitutional courts have a duty to interpret constitutional texts with respect to
 international sources")
- Moreover, the exploration of this treaty does not have any legal effect; only the legislature is able to enact treaties/declarations into binding law
- The main issue in Love v Commonwealth [2020] HCA 3 was whether indigenous peoples could be deported as aliens
 - The common law recognises native title, and hence they cannot
 - The use of the Declaration was purely for interpretive purposes
 - The use of extrinsic material is permissible, but has no legal effect
- Furthermore, the approach taken here was noe one of soft transformation

Question 4

- The Victorian parliament can implement the Declaration into Victoria law using its plenary power
- The Declaration was not used in the Act itself, but references were instead placed in the preamble to ensure its relevance, thereby making it highly influential
- The terminology of Art 37 of the declaration is also used to connect the Act to the Declaration (moreover, there are similarities in the Act and the Declaration, giving it substantial adoption but not making it binding)
- The Act does not implement the Declaration, but instead provides the Victorian
 government a framework to be consistent with the Declaration; it still does not have any
 binding effect (in any case, it would be the Federal Government who would enact the
 Declaration, as Federal Parliament has the external affairs power, per Constitution s
 51(xxix))
- The Act is just a framework and shows good faith on the part of the Victorian government, rather than anything of important or of relevant substance
- The treaty upholds the representative process, and recognises the right to self-determination
- It does not directly implement the declaration in Victorian law, but continues to have a strong influence

- The treaty will be binding in Victoria unless there is federal law that conflicts with it, or the commonwealth legislature legislates against it (Commonwealth v Tasmania (1983) 185 CLR 1) (Page 57)
- However, this is not binding on any other territories in Australia, following Constitution s 109
- Since the Commonwealth is not a party to this treaty, it is not binding upon the Commonwealth
- Moreover, this treaty is not binding internationally, as the state of Victoria (being a state of a State) and Indigenous Peoples both are not peoples of international law
 - Under VCLT Art 2(1)(a), only states have the power to enter into a treaty, as only they can consent to its principles
 - There is no evidence of state practice, as Victoria is once again not an international state

B.5 Personality, Statehood and Self-Determination

Aquisita is a large state that acquired a number of colonies, including Bulgan, a mountainous region, in the early twentieth century. Bulgan is home to three nomadic tribes that ranged across the territory's expansive alpine plains during the summer months and then based themselves in three loosely defined areas known as Chinggis, Delkhii and Erenhot. All three nomadic groups are ethnically and racially similar and speak a common language (although each group also speaks a distinct dialogue unique to their group).

In 1963, the Aquisita Parliament passed a law which defined the borders of Delkhii and established the territory as a 'Special Delkhii Administrative Zone'. The Aquisita government described this measure as necessary to maintain public order given past histories of conflict between the Delkhii and other tribes. There was no consultation with the nomadic tribes in Bulgan prior to this law being passed. In 1978, Bulgan was granted independence by Aquisita and became a member of the United Nations, however the status of the 'Special Delkhii Administrative Zone' was unchanged, and ethnic Delkhii peoples were excluded from holding public office or serving in the new Bulgan government.

Over the past five years the nomadic people of Delkhii have been engaged in an armed uprising against the Bulgan administration in Delkhii, and in early 2025 were successful in seizing control of Delkhii's largest city and taking control of Bulgan government offices there. While the group had control of the city, Bulgan forces remained in command of several more remote parts of the Special Delkhii Administrative Zone. The Delkhii have received very extensive financial and other support from Imperia, another state in the region, over several years. Imperia has been accused by Asquisita and the Bulgan government of 'controlling the Delkhii for its own purposes.'

In a public broadcast from the Delkhii Television Centre in March 2025, the leaders of the Delkhii declared that the territory was now the Independent State of Delkhii (ISD), that new boundaries for the state would be announced in coming months, and that action will be taken against 'unfriendly' governments that have not supported the right of the Delkhii to self-determination. Several governments, including Imperia, have recognised ISD, however others have not.

The ISD wishes to apply for membership of the United Nations and seeks your advice on the main issues of international law arising from these facts.

B.5.1 Right to Self-Determination

• Existence of a Right to Secession:

- International law does not explicitly recognize a right to secession but addresses self-determination as a principle of customary international law, binding on all states (erga omnes, Lecture Note p. 47).
- No legal bar exists to the Delkhii people declaring independence (ISD) from Bulgan, but other issues (e.g., genocide) must be exhausted first.

· Delkhii as a 'People':

- The right to self-determination under the ICCPR requires identifying the group as a 'people'.
- UNESCO Final Report (1990): Provides non-exhaustive criteria for 'peoples', including unique dialect, ethnicity, territory, and distinct identity.
- Delkhii meet these criteria: unique dialect, original inhabitants, distinct group within Bulgan.

• Internal vs. External Self-Determination:

- Internal Self-Determination: Exercised within the state without separation.
- External Self-Determination: Involves separation, primarily linked to decolonization (UNGA Declaration on the Granting of Independence to Colonial Countries and Peoples, Articles 1–2).
- Delkhii's situation (segregation in SDAZ, exclusion from governance, lack of consultation) supports external self-determination (Western Sahara, Quebec).
- Quebec case: Clarifies internal vs. external self-determination; serves as a subsidiary source of law, unopposed by the ICJ, reinforcing customary law status.

• Uti Possidetis Juris:

- Respect for existing borders at the time of decolonization applies.
- Bulgan's borders were defined in 1963 during decolonization, with SDAZ established; independence in 1978 fixed these boundaries.
- ISD cannot unilaterally declare new boundaries; 1963 borders must be respected, and 1978 changes are problematic.

B.5.2 Statehood of ISD

• Montevideo Convention (Article 1):

- Reflects customary international law due to widespread state practice and opinio juris (North Sea Continental Shelf).
- Criteria for statehood:

* Permanent Population:

- · Delkhii resemble organized tribes in Western Sahara, where nomadic populations qualified as permanent.
- · SDAZ segregation provides some permanence, despite nomadic nature.

* Defined Territory:

- · SDAZ constitutes a defined territory (first sentence, second paragraph).
- · ISD's declaration of boundaries (second-last paragraph) indicates a loose territorial claim, though problematic under uti possidetis.

* Government:

 Requires an organized and effective government (Kosovo: clear leadership suffices).

- · ISD's control of government offices (third paragraph) and media (DTC) demonstrates governance.
- Effectiveness of government is questionable but not a barrier to statehood if basic criteria are met.

* Capacity to Enter into Relations with Other States:

- · No direct evidence, but ISD's recognition by other states and threats against unfriendly governments suggest capacity.
- · Declaration of independence and boundaries implies intent to engage internationally.

· Additional Statehood Considerations:

- Use of Force: ISD's armed uprising may violate Article 2(4) of the UN Charter, prohibiting use of force in international disputes, as states must be peace-loving.
- Foreign Interference: Imperia's support (potentially military) to ISD may breach Article 2(4), undermining Bulgan's sovereignty.
- Racist Practices: No evidence of racist practices by ISD.
- Permanence: ISD's actions suggest intent for permanent statehood.

B.5.3 Recognition of ISD

• Types of Recognition:

- Constitutive Recognition: Recognition creates statehood (minority view).
- Declaratory Recognition: Recognition acknowledges existing statehood (preferred view).

Application to ISD:

- Several governments have recognized ISD (last sentence, second-last paragraph), indicating declaratory recognition.
- Declaratory recognition aligns with the facts, as ISD meets Montevideo criteria, and recognition confirms rather than creates statehood.

B.5.4 Violation of Bulgan's Territorial Integrity

Assessment:

- ISD's declaration of independence and armed uprising may violate Bulgan's territorial integrity under Article 2(4) of the UN Charter.
- Imperia's support to ISD further infringes Bulgan's sovereignty, constituting foreign interference.

B.5.5 Lawfulness of SDAZ Establishment

• Assessment:

 SDAZ's creation in 1963 segregated the Delkhii, denying governance participation and consultation. - This violates self-determination principles, as it restricts the Delkhii's ability to govern themselves, supporting their claim for external self-determination (*Quebec*).

B.6 Title to Territory

In their original state, the Celestials were a cluster of five small reefs (submerged at high tide) and two rocks (above water at high tide) all within 100 nautical miles (M) of Arema's coast.

The Celestials are subject to competing claims by Arema and Binton. Arema asserts sovereignty over the Celestials on the basis that they are proximate to Arema's coast, were first discovered by a private explorer from Arema in the 1800s (who left a small brass plaque on one of the rocks), and were regularly visited until the 1950s by the Arema navy. As a result of a civil war in 1960 in Arema these naval visits ceased. Arema did not establish a permanent physical presence on Celestials, apart from constructing a small lighthouse on one of the rocks.

From 1965, Binton regularly deployed naval vessels to the Celestials and the brass plaque and lighthouse were removed. Binton publicly claimed the Celestials in 1970, on the ground that they had been abandoned by Arema. Binton then began an extensive program of land reclamation which has transformed the small features into one island. Binton has constructed several military installations on the Celestials and stationed a garrison of troops there. Arema has repeatedly protested the statements and actions of Binton, although in 1980 the Foreign Minister of Arema did make a speech in which he stated that 'the time has come to recognise that Arema no longer has any interest in the remote and inhospitable Celestials.'

In January 2025, Binton asserted a 50 nautical mile 'economic and security zone' around the Celestials, and the Parliament of Binton passed a law making it a criminal offence for 'any foreign national to be present in the economic and security zone of Celestials unless in possession of a valid permit issued by the Binton Department of Homeland Integrity.'

Assess the competing claims of Arema and Binton and the legality of Binton's assertion of sovereignty and jurisdiction over the Celestials.

B.6.1 Issue for Arema

• Terra Nullius:

- Facts indicate the Celestial rocks were uninhabited, supporting Arema's claim of terra nullius.
- Uninhabitable nature strengthens Arema's claim, as the rocks were not suitable for habitation.
- Mabo rejected terra nullius for inhabited lands, but the uninhabited status of the rocks supports Arema's position.

• Discovery:

- Discovered by a private explorer, not a state authority.
- Island of Palmas: Discovery alone does not confer title; it provides only an inchoate (imperfect) title.
- Private citizens cannot acquire territorial title (*Ure v Commonwealth*); only state-authorized actions are valid.
- If the private explorer did not act on behalf of Arema, no rights are conferred to the state.

• Effective Control:

- Evidence of Arema's governmental actions includes naval visits and a lighthouse.
- Indonesia v Malaysia and Malaysia v Singapore (Pedra Branca): A lighthouse demonstrates governmental function and intent to claim sovereignty.
- Regular and consistent naval visits indicate ongoing exercise of authority.
- *Island of Palmas*: For small or remote uninhabitable lands, intermittent governmental presence (e.g., less frequent visits) is sufficient to establish effective control.

B.6.2 Binton's Claims

• Prescription:

 Prescription involves a state acquiring territory through peaceful, public, uninterrupted exercise of sovereignty over time, unchallenged by the original claimant.

Peaceful Exercise:

- * Binton's destruction of Arema's lighthouse and plaque may be seen as non-peaceful.
- * Argue it was largely peaceful: no lives were lost, only a structure and plaque (in poor condition) were removed, and Arema was absent during the act.
- * Facts are silent on Arema's response to the destruction, weakening claims of conflict.

Public Exercise:

* In 1970, Binton publicly claimed the territory, satisfying the publicity requirement.

Uninterrupted Exercise:

- * Binton's control was uninterrupted, as Arema's protests were minimal and ceased in the 1980s.
- * Arema's lack of action post-1980s suggests acquiescence or abandonment.

Length of Time:

- * Binton's control since 1970 (approximately 5 years by 1975) may be insufficient compared to Arema's longer historical claim since the 1800s.
- * Relative duration weakens Binton's prescription claim.

No Public Challenge:

* Arema protested but did not mount a military or significant challenge.

* By the 1980s, Arema's public statement suggested abandonment of the claim.

• Terra Nullius Argument:

- Binton could claim the land was terra nullius if Arema failed to show effective control.
- Presence of a plaque and lighthouse indicates human activity, undermining terra nullius.

· Critical Dates:

- Indonesia v Malaysia and Malaysia v Singapore: Only acts before the dispute's crystallization are relevant.
- 1965 is not a critical date, as Binton's actions (e.g., lighthouse/plaque removal) were not public.
- 1970 is the primary critical date, when Binton's public claim made the dispute known.
- 1980 is a secondary critical date, as Arema's cessation of protests suggests acquiescence or abandonment.
- By 1980, the dispute fully crystallized, with both parties' positions clear, strengthening Binton's claim of Arema's abandonment.

Unilateral Declaration:

- Nuclear Tests Case: A state's authorized public declaration, if clear and unambiguous, is binding under international law.
- Arema's Foreign Minister's 1980 statement, made in a state capacity, suggests abandonment but is ambiguous (lacking explicit intent to cede the territory).
- Ambiguity weakens its binding effect compared to the clear declaration in Nuclear Tests.

B.6.3 Validity of 2025 Law and Maritime Claims

UNCLOS and Maritime Zones:

- Article 121, UNCLOS: Only naturally formed land above water at high tide generates maritime zones (e.g., territorial sea, exclusive economic zone).
- The Celestial rocks, if submerged at high tide, do not qualify as land under Article
 121 and cannot generate a 12-nautical-mile (NM) territorial sea.
- Reclaimed land (e.g., combining rocks into an island) does not count for coastal baselines (South China Sea Arbitration).
- Article 5, UNCLOS: Coastal baselines are measured from the low-tide coast, excluding fully submerged features.

Territorial Sea and Exclusive Security Zone (ESZ):

- A 12-NM territorial sea is permissible from qualifying rocks (above high tide).

- Binton's claimed 50-NM ESZ exceeds UNCLOS limits, as only a 12-NM territorial sea is allowed.
- The 12-NM zone is measured from each qualifying rock, not the mainland or combined landmass.
- Within the 12-NM territorial sea, innocent passage must be granted to foreign vessels.

· Legal Assessment:

- The 2025 law establishing a 50-NM ESZ is invalid under UNCLOS, as it exceeds the 12-NM limit.
- Only rocks consistently above high tide generate a 12-NM territorial sea, measured from their natural baselines.

B.7 State Jurisdiction

Following a military coup in 2010, Istan has become a secretive state which systematically represses any opposition to its military leadership. In 2020, Istan issued a decree which made it a criminal offence, subject to punishment of life imprisonment, to protest against the government of Istan, including in any place outside the territory of Istan. The decree also gave authority to the Istan Justice Minister to sue nationals of Istan for damages for any 'defamation of the Istan state'.

Renee fled to Australia from Istan in 2020, was granted a permanent protection visa and renounced her citizenship of Istan. Renee has been organising weekly protests outside the Istan Embassy in Canberra. At one protest in 2024 Renee threw a can of red paint over one of the walls of the Istan Embassy.

In January 2025, the Istan Prosecutor's Office (IPO) commenced criminal proceedings against Renee in the Supreme Court of Istan. After a summary hearing, Renee was convicted and sentenced to imprisonment in absentia. The IPO also prosecuted several members of Renee's family in Istan for 'aiding an enemy of the Istan state.' Renee's father was detained and repeatedly tortured at the direction of Istan's Chief Prosecutor, who has overseen a large- scale program targeting opponents of the Istan government and their family members. This has involved the use of arbitrary imprisonment, enforced disappearance, torture, and extra- judicial killings. The Justice Minister also commenced civil proceedings, seeking damages against Renee for statements and activities in Australia harmful to the reputation of Istan.

In February 2025 Istan's Chief Prosecutor travelled to Australia in a private capacity. The Australian Government is considering what action, if any, it may take under international law against him.

You are a legal officer in Australia's Department of Foreign Affairs and Trade and have been asked to assess the issues of jurisdiction raised by these facts.

B.7.1 Istan's Jurisdiction to Prosecute Renee

B.7.1.1 Criminal Jurisdiction

• Extraterritorial Jurisdiction Overview:

- Three types: judicial, legislative, and executive.
- Extraterritorial jurisdiction allows a state to take action against its nationals or non-nationals for acts committed outside its territory.
- Example: XYZ v Commonwealth Australia applied extraterritorial jurisdiction to convict an Australian for sexual offences in Thailand, where the act was illegal under Australian law (Criminal Code 1995 (Cth)) but not Thai law.

• Principles of Jurisdiction:

- Territorial Principle:

* Renee's act (throwing paint/protesting) is illegal under Istan's law, making her liable under the territorial principle if committed within Istan.

- Nationality Principle:

- * Renunciation of citizenship does not automatically remove nationality under international law; it is a municipal law matter determined by the state.
- * Facts do not confirm Renee's Australian citizenship, only her renunciation of Istan citizenship.
- * Istan can assert extraterritorial jurisdiction based on Renee's nationality, as renunciation is not recognised unless Istan accepts it (*Nottebohm*).
- * Cases like XYZ v Commonwealth and Joyce v DPP support extraterritorial jurisdiction over nationals.
- * Istan has a strong basis to apply the nationality principle, as Renee's renunciation is not conclusive.

Protective Principle:

- * Throwing paint/protesting may be seen as a violation of Istan's security but does not significantly impact vital state interests (*Eichmann*, *Benitez*).
- * Unlikely to justify jurisdiction, as the act is minor and does not affect core state functions.

Passive Personality Principle:

- * Applies if the victim is an Istan national, but the "victim" here is the embassy.
- * No evidence of harm to individuals, though potential exists (e.g., paint hitting someone).
- * Weak basis for jurisdiction under this principle.

- Universality Principle:

* Does not apply, as throwing paint/protesting is not a crime of universal concern (e.g., piracy, genocide).

B.7.1.2 Civil Jurisdiction

· Limits on Civil Jurisdiction:

- Australian courts will not enforce foreign civil judgments contrary to public policy.
- Istan can assert civil jurisdiction within its territory for claims (e.g., defamation) under its own laws.
- Issue: Enforcing Istan's civil judgment in Australia requires Australian consent, and international law is largely silent on civil jurisdiction enforcement.

· Civil Action Against Renee:

- Istan can bring a civil action against Renee as a national (though her nationality is contested).
- Facts do not suggest defamation, but liability depends on Istan's municipal law.

B.7.1.3 Enforcement Jurisdiction

• Consent Requirement:

- Australia must consent to Istan's enforcement actions against Renee within its territory (*R v Turnbull*).
- Without consent, Istan's jurisdiction cannot be enforced, and extradition attempts would violate Australia's sovereignty.

B.7.2 Australia's Jurisdiction to Prosecute Istan's Chief Prosecutor

B.7.2.1 Criminal Jurisdiction

• Principles of Jurisdiction:

- Territorial Principle: Not applicable, as no crimes were committed on Australian territory.
- Nationality Principle: Not relevant, as the Chief Prosecutor is not nationals of Australia.
- Protective Principle: No vital Australian interests were breached by the Chief Prosecutor's actions.
- Passive Personality Principle: Not applicable, as no Australian victims are involved.

Universality Principle:

- * Applicable to grave crimes (e.g., torture, crimes against humanity) under customary international law.
- * Facts reference torture and crimes against humanity, which fall under the Rome Statute and UN Convention Against Torture (UNCAT).
- * Australia, as a party to the Rome Statute, is obligated to prosecute crimes against humanity.
- * UNCAT, Article 7: Requires states to prosecute or extradite for torture (Article 1(1) defines torture; facts suggest the Chief Prosecutor's actions qualify).

* Australia has standing to arrest the Chief Prosecutor under both the Rome Statute and UNCAT Article 7(1).

Jus Cogens and Customary Law:

- If Australia were not a party to the Rome Statute or UNCAT, torture as a jus cogens norm may still apply, though its status as jus cogens is contested.
- Customary international law would permit prosecution for torture, but the jus cogens status of torture remains debated (ILC is developing a list of accepted jus cogens norms).

• Diplomatic Immunity Considerations:

- Diplomatic immunity prevents prosecution of the Chief Prosecutor while in office (see VCDR and Topic 9).
- Immunity must be considered alongside jurisdictional grounds.

• Treaty Signing vs. Ratification:

- States (e.g., India) may sign treaties like UNCAT to signal agreement but not ratify to avoid binding obligations.
- Australia's ratification of UNCAT and the Rome Statute imposes mandatory obligations to address torture and crimes against humanity.

B.8 Immunity from Jurisdiction I

The Foreign States Immunities Act ('the Act') was enacted in 1985 following an inquiry by the Australian Law Reform Commission (ALRC) on the common law and statutory rules addressing foreign state immunity.

With 2025 being the 40th anniversary of the Act, the Australian Government is considering whether the Act should be reformed to keep up to date with developments in international law.

You are a Legal Officer at the ALRC. Anticipating a potential referral from the Attorney General, the ALRC has requested that you write a memorandum addressing the following issues:

- 1. Whether the international law relating to foreign state immunity has materially changed since 1985;
- 2. Whether additional exceptions to foreign state immunity should be created;
- 3. Whether the provisions of the Act relating to the immunity of foreign heads of state and other government officials should be clarified, and if so, how; and
- 4. Whether the Act should be amended to allow victims of human rights abuses by foreign government opportunities for redress against those victims and their serving and former government officials.

B.8.1 Question 1: Evolution of State Immunity Since 1985

• Material Change in Immunity Approach:

- Since the Foreign States Immunities Act 1985 (Cth) (FSIA), there has been a shift from absolute to restrictive immunity.
- Absolute Immunity: Provides blanket protection for states against civil and criminal proceedings, regardless of the offence.
- Restrictive Immunity: Retains criminal immunity but allows civil liability, reflecting a more limited scope of protection.
- State practice examples:
 - * Russia adopted restrictive immunity in 2006.
 - * China adopted restrictive immunity in 2024, incorporating reciprocity (if one state grants immunity, the other reciprocates).

• International Codification and Developments:

- UN Convention on Jurisdictional Immunities of States and Their Property (2004): Codifies the shift to restrictive immunity, though not in force (24 ratifications, requires 30).
- Pinochet case and UN Convention Against Torture (1987): Demonstrate a move towards restrictive immunity by limiting immunity for serious international crimes, reflecting evolving state practice since 1985.

B.8.2 Question 2: Exceptions to Immunity and Potential Criminal Exceptions

Current Exceptions Under FSIA:

- Section 11, FSIA: Commercial transactions are exempt from immunity (e.g., Firebird v Nauru).
- No exceptions for human rights violations, as seen in Al-Adsani v Kuwait (torture claims rejected due to immunity), Jones v Saudi Arabia, and Zhang v Zemin.

· Adding Criminal Exceptions to FSIA:

- Permissibility Under International Law:

- * Section 9, FSIA: Establishes general state immunity in Australia.
- * International law does not prohibit domestic criminal exceptions, as state sovereignty allows countries to enact internal laws.
- * Domestic law cannot override international obligations (e.g., treaty-based immunities).
- * Extraterritorial enforcement of such laws is limited by international law principles.

- Australia's Legal System:

* Australia follows a dualist approach with hard transformation, requiring domestic legislation to incorporate international law.

* Australia could add criminal exceptions to FSIA, even if global consensus is lacking.

- Jus Cogens Crimes:

- * Article 7, ILC Draft Articles on Immunity of State Officials from Foreign Criminal Jurisdiction (2017): Proposes exceptions for jus cogens crimes (e.g., genocide, torture).
- * Reflects a potential direction for customary international law, though not yet binding.

B.8.3 Question 3: Ambiguities in FSIA and Immunity Scope

· Ambiguities in FSIA:

- Sections 3(3)(b) and 36, FSIA: Lack clarity on the scope and applicability of immunity.
- Silent on immunity for non-troika officials (e.g., *Tatchell v Mugabe*, where immunity depended on function, not title).
- Need for clarification on which officials (beyond Heads of State, Government, and Foreign Ministers) receive immunity.

• Personal vs. Functional Immunity:

- **Personal Immunity (Ratione Personae)**: Applies to high-ranking officials (e.g., troika) during office, covering all acts (*Arrest Warrant Case*).
- Functional Immunity (Ratione Materiae): Applies to official acts, regardless of office status, and persists post-tenure (e.g., UK cases granting functional immunity to a Defence Minister and personal immunity to a Trade Minister).
- Former officials retain functional immunity for official acts but are liable for private acts or pre/post-tenure crimes.

Arresting a Head of State with an ICJ Warrant:

Domestic Law Priority: Chow Hung Ching principle: Construe domestic law to align
with international law; otherwise, follow domestic law (e.g., FSIA s 36(1) on
treatment of incumbent heads of state).

- International Obligations:

- * Arrest Warrant Case: Heads of state enjoy personal immunity in foreign jurisdictions, even for international crimes, unless waived.
- * Rome Statute, Article 27: Removes immunity before the ICC for state parties, but Israel's non-party status limits its application.
- * UN Convention Against Torture (1987): Waives head of state immunity for torture, as in *Pinochet*.
- * Dapo Akande and Talita de Souza Dias: Article 27 may allow state parties to exercise domestic jurisdiction over international crimes, bypassing immunity, or enable ICC primacy when immunity is involved.
- Legal Position: Australia is bound by state and diplomatic immunity under FSIA
 and customary law. An ICJ warrant does not automatically override immunity,
 especially for non-ICC states like Israel, but torture-related exceptions may apply.

B.8.4 Question 4: Enforcement Challenges and Broader Immunity Trends

• ICSID Enforcement Issues:

- Kingdom of Spain v Infrastructure Services Luxembourg (2023 HCA 11): Australia and Spain, as ICSID members, recognize arbitral awards, but execution against state assets raises sovereignty concerns.
- ICSID signatories waive immunity for recognition and enforcement, but execution remains problematic (e.g., seizing state property violates sovereignty).
- First High Court judgment clarifying FSIA waiver for ICSID awards, distinguishing recognition, enforcement, and execution.

• Broader Trends in State Immunity:

- Move to Restrictive Immunity: Codified by the UN Convention (2004), though not in force, and adopted by Russia (2006) and China (2024).
- Municipal vs. International Law: Australia's dualist system requires transformation of international obligations, but domestic law cannot override treaty commitments.
- **Jus Cogens Exceptions**: ILC Draft Article 7 (2017) advocates exceptions for jus cogens crimes, reflecting a push to limit immunity for human rights abuses.
- Rome Statute vs. State Immunity: Article 27 removes immunity (;;before the ICC, but its effect on non-parties or domestic courts is limited (*Arrest Warrant Case*).
- **Human Rights Abuses**: Cases like *Germany v Italy, R v Jones*, and *Zhang v Zemin* highlight tensions between immunity and accountability for serious violations.

Fundamental Cases:

- Arrest Warrant Case (2002): Affirms personal immunity for high-ranking officials in foreign jurisdictions.
- Germany v Italy (2012): Rejects jus cogens exceptions to state immunity in civil cases.
- R v Jones: Limits domestic prosecution of international crimes due to immunity.
- Zhang v Zemin: Upholds FSIA immunity with no implied exceptions.
- Kingdom of Spain v Infrastructure: Clarifies FSIA application to ICSID awards.

B.9 Immunity from Jurisdiction II

Siegfried Private Military Company (the 'Siegfried Group') is a company incorporated in the Cayman Islands that provides security services. It is widely known for supplying mercenaries for use by authoritarian governments worldwide, and there are credible reports by Human Rights Watch that members of the Siegfried Group, including its leadership, have been directly involved in torture and other crimes in multiple jurisdictions.

The head of Siegfried Group, Dimitri Atkin, is currently visiting Australia and staying at the Embassy of Istan in Canberra. Following a military coup in 2010, Istan has become a secretive state which systematically represses any opposition to its military leadership. A

group of protesters gathered outside the Istan Embassy shortly after Atkin arrived, to protest against the Istan government and the Siegfried Group, which has been engaged by the Istan government to support the systematic persecution of opponents of the Istan regime.

Atkin, the Istan Ambassador, and the Ambassador's Executive Assistant, fired rounds from assault rifles into the crowd, with several bullets striking and injuring multiple protesters.

In addition to his official role, the Istan Ambassador operates a business in Australia that imports agricultural products from Istan.

Assess the immunity and other international legal issues arising from the following:

- 1. The protest at the Istan Embassy;
- 2. Proceedings commenced by a plaintiff in the Supreme Court of NSW seeking damages for alleged torture by Atkin when the plaintiff was in Istan;
- Proceedings commenced by plaintiffs in the Supreme Court of NSW against Istan, the Istan Ambassador, the Ambassador's Executive Assistant and Atkin seeking damages for personal injuries suffered while protesting outside the Istan Embassy;
- 4. A criminal investigation in the Australian Capital Territory of the Istan Ambassador, the Ambassador's Executive Assistant and Atkin in relation to the events at the Istan Embassy; and
- 5. Damages proceedings in the Supreme Court of NSW against the Istan Ambassador arising out of a contractual dispute with his importing business.

B.9.1 Question 1: Diplomatic Inviolability and Obligations of the Receiving State

Inviolability of Embassy Premises:

- Article 22(1) of the Vienna Convention on Diplomatic Relations (VCDR): Embassy premises are inviolable.
- Australia, as the receiving state, cannot enter or search the embassy without consent (R v Turnbull; Killing of British Police Officer).
- Embassy premises remain under Australia's jurisdiction but are inviolable (Magno).

Obligations of the Receiving State:

- Article 22(2) of the VCDR: Australia has a strict obligation to protect embassy premises and ensure the peace of diplomatic missions.
- This is an obligation of result, not conduct (*Tehran Hostages*, *Magno*): Australia must achieve the outcome of no harm, regardless of efforts taken.
- Mere protests or demonstrations do not breach Article 22(2), but insulting behaviour impairing the mission's dignity may constitute a violation.

- Australia must prohibit protests that impair the mission's dignity or cause harm.

B.9.2 Question 2: Civil Proceedings and Potential Defendants

Nature of Proceedings:

- Claims involve damages, indicating civil proceedings.

· Atkin's Status and Immunity:

- Articles 1(e), 4, and 7 of the VCDR: Atkin's diplomatic status is unclear, as facts are silent on whether he is accredited by Australia as a head of mission or formally appointed.
- Likely not a diplomat, as he appears to be visiting, and thus enjoys no diplomatic immunity.
- Universal jurisdiction may apply for grave violations.
- Potential defences for Atkin:
 - * Jones v Saudi Arabia and Jones v UK: If Atkin acted with state complicity, suing him cannot circumvent state immunity; torture is not excluded from civil immunity.
 - * Foreign act of state doctrine (*Habib v Commonwealth*): Unlikely to apply due to grave violations of public international law.
 - * Functional immunity: May apply for acts performed in service of Istan, but facts suggest his actions were not official.

• Potential Defendants:

Atkin as a Private Citizen:

- * Foreign States Immunities Act 1985 (Cth), s 9: Atkin is immune unless a separate entity from Istan.
- * *PT Garuda*: Factors to determine separate entity status include ownership, control, function, purpose, and manner of conduct (latter three are more significant).
- * Atkin's engagement to conduct Istan's bidding suggests possible state connection, but no conclusive determination can be made.

- State of Istan:

- * Foreign States Immunities Act, s 9: Istan enjoys immunity.
- * Zhang v Zemin: No implied exceptions exist; the Act's exceptions are exhaustive.
- * Istan is immune from civil proceedings.

Siegfried Group:

- * Habib, Hicks: Foreign act of state doctrine does not apply where public international law is breached.
- * Doctrine applies only to acts by nationals on foreign sovereign territory, which may not fit here.

Approach to Defendants:

 All possible defendants (Atkin, Istan, Siegfried Group) should be addressed due to uncertainty in the facts.

B.9.3 Question 3: Liability of Istan, Ambassador, and Executive Assistant (EA)

• State of Istan:

- Foreign States Immunities Act, s 9: Istan is generally immune.
- Exception under s 13: Personal injury caused by a state's actions allows liability (*Yugoslavia* case: States can be vicariously liable for diplomatic agents).
- Facts analogous to *Tokic*: Istan can be sued for damages caused by its agents.

• Ambassador and Executive Assistant (EA):

 VCDR Articles 1(a) and 1(d): Both may be diplomatic agents, but analysis should treat them separately.

- Ambassador:

- * Article 31(1): Enjoys immunity from civil jurisdiction, with exceptions (e.g., commercial activities) that do not apply here.
- * Immunity likely applies unless declared persona non grata (Article 9).

- Executive Assistant (EA):

- * Article 37(2): EA enjoys functional immunity for acts within official duties.
- * Shooting may fall outside official duties, potentially negating immunity.
- * Yugoslavia: State may be vicariously liable for EA's actions.
- * If EA is an Australian national, no immunity applies under VCDR.
- * Need to clarify EA's staff category and whether the shooting was within official functions.

• Atkin:

- Likely not a diplomatic agent, so no VCDR immunity applies.
- Functional immunity may apply if acting as a state agent, but shooting random individuals (not state enemies) falls outside governmental services.
- No immunity for Atkin in civil proceedings.

B.9.4 Question 4: Criminal Jurisdiction and Immunity

· Ambassador:

- Articles 31(1) and 37(2): Enjoys complete criminal immunity, regardless of the crime's severity.
- Inviolability extends to the ambassador's person and embassy premises.

• Executive Assistant (EA):

- Article 37(2): EA enjoys functional criminal immunity for acts within official duties.
- Same analysis as Question 3: Shooting likely falls outside official duties, but immunity applies if within official functions.
- No immunity if EA is an Australian national.

Atkin:

- Not a diplomatic agent, so no VCDR immunity applies.
- If Atkin remains in the embassy:
 - * Embassy's inviolability prevents arrest (Assange case).
 - * Australia may declare Atkin persona non grata (Article 9), negating any protection from embassy inviolability.
- No criminal immunity otherwise.

B.9.5 Question 5: Civil Jurisdiction for Commercial Activities

Ambassador's Immunity:

- Article 31(1)(c) of the VCDR: Ambassador has immunity from civil jurisdiction, except for commercial activities outside official functions.
- If the ambassador's actions were for personal profit (e.g., conducted "in addition to his official role"), they fall outside official functions, negating immunity.
- More facts needed to confirm the nature of the actions.

• Foreign States Immunities Act:

- Section 11: Commercial transactions are an exception to state immunity.
- If the ambassador's actions constitute a commercial transaction, liability applies with no exceptions.

· Conclusion:

 The ambassador is likely liable for civil claims if the actions were commercial and outside official duties.

B.10 State Responsibility I

Agricola, Pacifica, and Machina are neighbouring states. Agricola has been experiencing a period of internal strife for some years generated by a revolutionary movement within Agricola that is seeking to overthrow the current government. The guerrilla arm of the movement is known as 'Insurcs', and there is evidence that the government of Pacifica has been providing funding, training and small arms to the Insurcs, and has directed the Insurcs to attack certain government facilities in Agricola.

The military forces of Agricola have been stretched in dealing with the internal strife caused by the Insurcs and in January 2024, the State Department of Agricola engaged Control Inc, a private security company incorporated in Machina, to assist the Agricolan military in suppressing the Insurcs.

Shoemakers Ltd is a limited liability company incorporated in Machina. Several years ago Shoemakers Ltd established a shoe manufacturing plant in a small town in Agricola near the border with Pacifica. In April 2024, the factory was badly damaged by grenades in a military operation carried out by Control Inc against Insurcs, and all shoe production has had to cease.

During the April 2024 military operation, some members of Control Inc's security forces left the frontline of the battle, expressly against orders from their commander, and began looting property and attacking citizens in the 'Pacifican Quarter', an area of the town where many persons of Pacifica nationality lived and worked. During these attacks several rockets were fired across the border into Pacifica.

In May 2024 the government of Agricola issued the following statement:

"Agricola regrets any damage that has been occasioned to foreign nationals and their property as a result of recent counter insurgency operations against the Insurcs. The Insurcs pose a grave threat to the very existence of Agricola, and the government of Agricola is fully entitled to use all means at its disposal, including the services of the private security firm Control Inc, to protect the Agricolan nation."

The government of Agricola seeks your advice concerning the issues of state responsibility raised by these events.

B.10.1 General Principles of State Responsibility

• Key Elements:

- Violation or breach of a rule of public international law (PIL).
- Attribution of the conduct to a state.
- Availability of defences under the Articles on State Responsibility (ASR).
- Invocation and standing to raise the matter in an international forum.
- Consequences, including remedies such as cessation, reparation, or apology.

• Attribution Focus:

- Attribution to the state is a critical element for establishing responsibility.
- A state with standing/jurisdiction must exist to raise the violation in a forum.

Common Remedy:

An apology is the most common remedy for state responsibility.

Legal Framework:

 The ILC Articles on State Responsibility (ASR) codify customary international law, providing the framework for analysis.

B.10.2 Responsibility of Pacific (P) for Funding/Training Insures in Arcadia (A)

Attribution to Pacific:

- Issue: Does funding/training the Insurcs by P's government trigger state responsibility under Article 8 of the ASR?

- Article 8: Conduct of private persons/entities is not attributable to a state unless they act under state direction or control (strict test, per *Nicaragua* and *Bosnia* genocide cases).
- Two factors for attribution:
 - * P's government provided arms to the Insurcs.
 - * P's government directed the Insurcs to attack facilities in A.

- Effective Control Test (Nicaragua):

- * Conduct must be an integral part of a state-directed operation (ILC Commentary on Article 8).
- * Insurcs' actions may not meet the threshold of complete dependency on P, as in *Bosnia* (where entities must be wholly dependent on the state).
- * Insurcs did not function as a quasi-state organ, suggesting independence from P's funding for the specific attack.
- Conclusion: Attribution to P is unlikely due to insufficient evidence of complete control or dependency.

• Breach of International Law:

- Per Corfu Channel, states must not allow their territory to be used to harm others, constituting a significant breach if P supported the Insurcs' actions.
- Nicaragua: States are responsible for non-interference in other states' affairs and for their own actions.

• Defences:

- No defence under the ASR applies, particularly necessity (Hungary v. Slovakia test).
- Supporting rebels is not essential for P's survival, and no facts support other defences (e.g., consent or force majeure).

• Consequences:

- Cessation of funding (Article 30, ASR).
- Reparation (Article 31), including compensation (Article 36) or satisfaction (Article 37), as restitution (Article 35) is infeasible.
- Similarity to *Trail Smelter*: Compensation for damages may apply.

B.10.3 Responsibility of Arcadia (A) for Damages to Shoemakers (S)

· Attribution to Arcadia:

- Issue: Can actions of Control Inc. (C), a private company incorporated in Maris (M) but operating in A, be attributed to A for damages to Shoemakers' factory?
- Article 4 (ASR): C is not a state organ, as it is a private company engaged for military support.
- Article 5 (ASR): C may be attributable if empowered by A's law to exercise governmental authority and acted in that capacity.

- Facts confirm C was engaged to assist A's military operations, satisfying the empowerment criterion.
- A's expression of regret may trigger Article 11 (ASR), where state acknowledgment or adoption of private conduct results in attribution (distinct from mere support, per ILC Commentary).
- Conclusion: C's actions are likely attributable to A under Article 5 or Article 11.

• Standing and Invocation:

- M has standing to invoke responsibility on behalf of S under Article 42(a) (ASR), as S is incorporated in M (Barcelona Traction).
- M's connection to S's damages (as S's state of incorporation) grants M the right to bring a claim against A.

• Breach of International Law:

 A's failure to prevent C's actions may breach its obligation to protect foreign nationals' property within its territory.

• Defences:

- No consent from S exists to excuse A's responsibility.
- Self-defence or necessity may be argued, as C was responding to attacks by Insurcs, but necessity requires an essential interest and grave peril (*Rainbow Warrior*).
- Necessity is unlikely, as C's actions were not the only means to protect A's interests.

· Consequences:

- Cessation of wrongful acts (Article 30, ASR).
- Reparation (Article 31, ASR):
 - * Restitution (Article 35) is unlikely due to the warzone context.
 - * Compensation (Article 36) is most appropriate, covering factory damages and lost trade (see *Chorzów Factory* case).
 - * Satisfaction (Article 37), such as A's statement of regret, is insufficient, as it does not address specific damages.

B.10.4 Responsibility of Arcadia (A) for Looting in Pacifica (PQ) and Rocket Attacks

Attribution to Arcadia:

- Issue: Is A responsible for looting and rocket attacks by Control Inc. (C) in PQ, conducted against A's orders?
- Article 5 (ASR): C, a parastatal entity, is empowered by A's law to act in a governmental capacity.
- Article 7 (ASR): Actions exceeding authority or contravening instructions remain attributable if performed in an official capacity.

- Per Caire and Youmans v. Mexico, disobedience does not preclude attribution if C acted in its state-empowered capacity.
- Looting: C's shift to looting does not remove state capacity, as they retained their role as a military contractor.
- Rocket Attacks: Likely not attributable, as they may exceed C's empowered role, but facts are unclear on who conducted them.
- Distinction: Unlike Caire and Youmans (where actors were state organs under Article 4), C operates under Article 5. However, Article 7 applies, and attribution holds if C acted in its empowered capacity.

Breach of International Law:

- Trail Smelter: States are responsible for preventing harmful acts originating from their territory.
- Article 2(4) of the UN Charter: Rocket attacks into PQ may constitute a prohibited use of force, violating territorial integrity.
- Looting and attacks on PQ citizens breach A's obligation to prevent harm by entities under its control.

· Defences:

- Self-defence is precluded, as the actions were not a proportionate response to an armed attack (*Caroline* case).
- Necessity is weak, as looting and rocket attacks were not the only means to protect
 A's interests, and disobedience suggests a disciplinary failure, not a grave peril.
- Force majeure has a high threshold and is inapplicable, as disobedience reflects A's failure to control C, not an external force.
- No circumstances precluding wrongfulness are established.

Standing and Invocation:

- PQ has standing to bring a claim for looting and rocket attacks, as they infringe its sovereignty.
- M may bring a claim for damages to S's factory, as S is its national.
- A's statement of regret does not negate standing for specific claims.

· Consequences:

- Cessation of wrongful acts (Article 30, ASR).
- Reparation (Article 31, ASR), including compensation for damages (Article 36, see Chorzów Factory) and possibly satisfaction (Article 37, e.g., a targeted apology).
- A's existing statement of regret is insufficient, as it lacks specificity to the incidents.
- Reference Rainbow Warrior for cessation and reparation obligations.

B.11 State Responsibility II

Article 19 of the Articles on Diplomatic Protection provides as follows:

Article 19

Recommended Practice

A State entitled to exercise diplomatic protection according to the present draft articles, should:

- (a) give due consideration to the possibility of exercising diplomatic protection, especially when a significant injury has occurred;
- (b) take into account, wherever feasible, the views of injured persons with regard to resort to diplomatic protection and the reparation to be sought; and
- (c) transfer to the injured person any compensation obtained for the injury from the responsible State subject to any reasonable deductions.

Critically assess the object and purpose of Article 19, its legal status, and explain how it could be given effect under Australian law.

B.11.1 Objective Purpose

• Freedom of State Action:

- The principle of state freedom of action is central, as established in Barcelona Traction, affirming states' discretionary right to exercise diplomatic protection.
- The draft article is framed as a recommendation, per Commentary 1, using non-binding language such as "it is recommended".
- The article's title, "Recommended Practice", underscores its non-binding, persuasive nature.

Commentary and Intent:

- Commentary 2 adopts an individualistic approach but remains non-binding on states
- The purpose is to shift from a state-based to a human rights-centric approach, recognising diplomatic protection as a state right rather than an obligation (Barcelona Traction).
- The recommendatory nature reflects the drafters' intent, with the title explicitly labelling it as "Recommended Practice".

- Ambiguous language, such as "should" instead of "must", indicates soft law, aiming to persuade states towards a human rights-centric approach.

Purpose and Cost Recovery:

- The article allows states to recoup costs incurred in exercising diplomatic protection, reflecting varying levels of state effort.
- This aligns with the goal of codifying existing state practice, though it remains recommendatory.

Australian and Comparative Perspectives:

- Australia rejected a human rights-centric approach in the Hicks case, prioritising state discretion.
- Contrast with the UK's Secretary of State case, which adopted a more individual-focused approach, highlighting divergent state practices.

Customary International Law Status:

- The article attempts to codify existing customary international law but lacks binding force.
- States are not ready to accept it as binding, reflecting their preference for discretionary application.
- The draft articles evidence state practice but lack opinio juris, undermining claims of customary international law status.

Why No Treaty or Convention?:

- Codifying the Articles of State Responsibility (ASR) as a treaty would impose obligations, risking state liability for violations.
- States resist binding commitments, fearing rejection or non-compliance, as noted in relevant textbooks.
- The recommendatory nature avoids imposing obligations, aligning with state reluctance to be bound.

B.11.2 Legal Status

Customary Law Assessment:

- Commentary 4 suggests Article 19(b) may reflect customary international law, with evidence of state practice supporting its application absent the recommendatory framework.
- Article 19(c) is problematic, as it does not align with customary law due to inconsistent state practice.

Counterexamples and Precedents:

 The Rainbow Warrior case (France vs. New Zealand) contradicts Article 19(c), highlighting divergent state practices. B.12. USE OF FORCE 327

- In Administrative Decision No. 5 (US), compensation received was treated as a trust, supporting cost recovery.

 The ECtHR's Beau Martin case (France) also permits states to recoup costs incurred in diplomatic protection.

B.11.3 How to Give Effect

• Legislative Implementation:

- Draft and pass legislation to incorporate the draft articles into Australian law.
- The Commonwealth can use the external affairs power (s 51(xxix) of the Constitution) to implement the article through the Department of Foreign Affairs and Trade (DFAT).

Common Law Development:

- Administrative law, as in the Abbasi case, recognises state obligations to provide diplomatic protection.
- Hicks v Ruddock did not adopt this approach, but future cases could explore it.

• Judicial Activism:

 The High Court of Australia could apply the draft articles, adopting a human rights-centric approach through judicial interpretation.

• Incorporation in a Dualist System:

- Australia, as a dualist state, requires domestic incorporation of international law.
- Implementation involves all three branches of government:
 - * Legislative: Enact laws to give effect to the articles.
 - * Executive: DFAT can develop policies under the external affairs power.
 - * Judicial: Courts can interpret and apply the articles if incorporated or persuasive.

B.12 Use of Force

Xeta and Zenith are two rivalrous states vying for economic and military superiority. Tensions have arisen between the two countries over several issues, including the treatment by Zenith of a substantial population of ethnic Xetans (known as the 'Xetani') in Zenith.

Xeta has raised the plight of the Xetani in the United Nations General Assembly and the Security Council for over a decade. Both Xeta and Zenith are members of the United Nations.

In 2024 the General Assembly adopted a resolution calling on 'Zenith to uphold the human rights of the Xetani and respect their right to self-determination'. The situation in Zenith has also been considered by the Security Council on several occasions. However,

one permanent member has repeatedly voted against the adoption of a resolution that would (a) recognise the situation as a 'breach of international peace and security' and (b) call on all UN members 'to take all measures necessary to protect the Xetani in Zenith.'

Concerned at the welfare of the Xetani, the Xetan Defence Force ('XDF') commenced the highly secretive 'Operation Panoptes', which involved a suite of activities designed to protect this population. The XDF:

- Deployed uncrewed high-altitude balloons to undertake surveillance of prison camps in Zenith holding Xetani. During one operation a balloon exploded, and the equipment it was carrying fell on a military barracks in Zenith, killing dozens of soldiers;
- Deployed an uncrewed aerial vehicle ('UAV') to drop munitions on the home of a Zenith miliary commander suspected of the indiscriminate killing of Xetani in the prison camps;
- Provided funding and small arms to the Xetani Revolutionary Force ('XRF'), a small guerrilla group in Zenith; and
- Undertook a cyberattack against internet servers in Zenith with the aim of
 disrupting the operation of the prison camps holding Xetani. The attack had wider
 effects, disabling all Zenith government computer systems for over a week, resulting
 in disruption to multiple essential services including the water supply to Zenith's
 largest city.

On detecting Xetan government involvement in the cyberattack, Zenith released a statement that 'condemned the assault on Zenith's territorial sovereignty' and promised 'that severe retaliatory action would be taken against Xeth'. The Zenith air force bombed several military facilities in Xeta. Several weeks later, the Zenith air force undertook a second round of bombing against a wider range of targets, including the Xetan Parliament.

You are an advisor to the United Nations Secretary General, who has asked you to identify the main issues of international law arising from this situation.

B.12.1 UN Charter Article 2(4)

- **Provision**: UN Charter Article 2(4) states: "All Members shall refrain in their international relations from the threat or use of force against the territorial integrity or political independence of any state, or in any other manner inconsistent with the Purposes of the United Nations."
- **Legal Status**: Recognized as customary international law and a jus cogens norm (*DRC v Uganda* [2005]; *Nicaragua* [1986]; ILC Report 2019).
- Scope: Prohibits armed force (not political or economic pressure) against another state's sovereignty, territorial integrity, or political independence (*Declaration on Friendly Relations*, GA Res 2625, 1970; *Nicaragua* [1986] [188], [191]; *Armed Activities* [2005] [162], [300]).

B.12. USE OF FORCE 329

B.12.2 Humanitarian Intervention and Self-Determination

• Humanitarian Intervention:

- Legality is debated; not widely accepted in international law.
- UK's 2013 Foreign Office memo suggests criteria: (1) convincing evidence of extreme humanitarian distress requiring urgent relief, (2) no practicable alternative to force,
 (3) force necessary and proportionate, limited to humanitarian aims.
- Xeta's actions may partially meet the first criterion (decade-long distress of Xenati), but lack evidence for the second and third, as cyberattacks disrupted non-essential services beyond humanitarian needs.

• Self-Determination:

 Xeta's support for Xenati may align with self-determination principles, but use of force (e.g., funding XRF, cyberattacks) violates Bulgan's territorial integrity, undermining lawful support (*Declaration on Friendly Relations*, Principle 1).

B.12.3 UN Security Council Veto and General Assembly

- UNSC Veto: UN Security Council resolutions are binding under UN Charter Article 25, but veto by permanent members (e.g., over a decade) prevents action under Article 39 (threat to peace).
- UNGA Resolutions: Non-binding, serving as recommendations (*Declaration on Friendly Relations*, GA Res 2625; *Resolution on Definition of Aggression*, GA Res 3314).
- Implications: UNSC inaction due to vetoes blocks collective security measures, leaving states to act unilaterally, risking violations of Article 2(4).

B.12.4 Xeta's Actions (Operation Panoptes)

High-Altitude Balloons:

- Likely not a use of force or bombardment (Resolution on Definition of Aggression, GA Res 3314, Article 3), as an isolated, accidental incident lacks intent (Nicaragua [1986]; Oil Platforms [2003]).
- Violates Zenith's territorial sovereignty through unauthorized surveillance but does not meet the threshold for an armed attack.
- Facts unclear on Xeta's responsibility, weakening attribution.

• UAV Munition Drop:

- Single UAV strike targeting a military commander is a use of force but not an armed attack due to low scale and effect (*Nicaragua* [1986] [195]; *Oil Platforms* [2003] [72]).
- Violates territorial sovereignty and non-intervention principles but lacks gravity for an armed attack.

Funding and Arms Supply to XRF:

- Factually similar to Nicaragua [1986] [115], [195], [205]: Supplying arms to irregular bands (XRF) constitutes a use of force, violating territorial sovereignty, non-intervention, and Article 2(4).
- Effective control by Xeta over XRF likely established (*Nicaragua*; ILC RSIWA Article 8, Commentary [3]), attributing XRF actions to Xeta.
- Funding alone is not an armed attack (*Nicaragua* [228]), but arms supply may qualify as aggression if grave (*Resolution on Definition of Aggression*, Article 3).
- Scale and effects of XRF activities unclear, limiting armed attack classification.

Cyberattack:

- Legal status under Article 2(4) unsettled; non-kinetic force (cyberattacks) debated as use of force (*Tallinn Manual 3.0*, Rules 10–14).
- Michael Schmitt's eight factors for assessing cyber use of force:
 - * Severity: High, as disruption of essential services (e.g., prisons) for over a week caused humanitarian impacts.
 - * Invasiveness: High, targeting Zenith's internet servers.
 - * Military character: Aimed at disrupting prison camps holding Xenati, aligning with Xeta's campaign.
 - * State involvement: XDF acted on Xeta's direct instructions, attributable to Xeta.
 - * Others (immediacy, directness, measurability, presumptive legality): Suggest potential equivalence to conventional force.
- Scale and effects may equate to a conventional use of force, potentially violating Article 2(4), though jurisprudence remains unsettled.

B.12.5 Zenith's Bombings

First Tranche of Bombings:

- Zenith's "severe retaliatory action" suggests retaliation, not self-defence, rendering it unlawful absent UNSC authorization (*Nicaragua* [1986] [176]).
- Self-defence under Article 51 requires an armed attack, necessity, proportionality, and immediate UNSC reporting (*Legality of Nuclear Weapons* [1996] [41]).
- Xeta's actions (balloons, UAV, XRF, cyberattack) may collectively constitute an armed attack under the accumulation of events theory (*Nicaragua* [231]; *Oil Platforms* [64]; *Armed Activities* [2005] [146]).
- Necessity partially met if response was instantaneous (Caroline Case, 1841/1842), but facts are unclear on timing.
- Proportionality not met, as bombing multiple military sites exceeds response to Xeta's smaller-scale actions (Nicaragua [194]; Oil Platforms [51], [61]).
- Failure to report to UNSC violates Article 51, undermining self-defence claim.

Second Tranche of Bombings:

 Anticipatory self-defence requires imminent threat (Caroline Case, 1841/1842), not met as facts show no further Xeta attacks post-cyberattack.

- Attacks on Xeta's parliament and civilian targets are disproportionate and unnecessary (*Armed Activities* [2005] [110], [147]).
- Targeting parliament impairs Xeta's political independence, violating Article 2(4) and Resolution on Definition of Aggression (GA Res 3314, Article 1).
- Constitutes an armed attack under scale and effects test, as civilian and political functions were disrupted (Armed Activities [2005]).
- No UNSC reporting further invalidates self-defence claim.

B.12.6 Conclusion

· Xeta's Perspective:

- Balloons and UAV drop are minor violations of sovereignty, not armed attacks.
- XRF funding and arms supply violate Article 2(4) but may not reach armed attack threshold due to unclear scale.
- Cyberattack potentially constitutes use of force, supporting humanitarian intervention for Xenati, though legality is uncertain.

· Zenith's Perspective:

- Cumulative Xeta actions (accumulation of events) may justify self-defence, but bombings were disproportionate and retaliatory, violating Article 2(4).
- Second bombings, targeting civilian and political sites, are clearly unlawful, failing necessity, proportionality, and UNSC reporting requirements.
- State Responsibility: Both states may bear responsibility under ILC Articles on State Responsibility (e.g., Article 8 for attribution, Articles 30–31 for cessation and reparation), as Xeta's actions and Zenith's disproportionate response breach international obligations.

B.13 Implementation, Enforcement and Accountability

Locrian and Mixolydian are parties to a treaty that seeks to promote sustainable fishing for greenfin tuna in the Dorian Sea (the Treaty for the Conservation of Greenfin Tuna or TCGT).

The treaty provides in Article 1 that the parties 'commit to the conservation and sustainable use of greenfin tuna'. Article 2 states that the parties will meet annually to agree on a total allowable catch for greenfin tuna and national fishing quotas. Article 10 provides that 'in the event of a dispute concerning the implementation of the treaty that has not been settled through negotiation, a party may submit the matter to the International Court of Justice.'

Mode Island is a large island approximately in the middle of the Dorian Sea. It is subject to competing sovereignty claims by Locrian and another state, Aeolian. It has been occupied by Aeolian for several decades. In 2023, in order to sustain the growing population on Mode Island, fishing vessels from Aeolian began catching greenfin tuna,

and continue to do so. Some of these vessels have been offloading their catches in Mixolydian ports for processing and canning. These canning factories are poorly regulated, and release large volumes of pollutants into the Dorian Sea, damaging the greenfin tuna spawning grounds.

At a meeting of the Dorian Regional Economic Organisation in July 2024, a regional forum for economic development, the Locrian Foreign Minister gave a speech attacking Mixolydian for undermining the TCGT 'by stealth' through the 'laundering of the endangered greenfin tuna in Mixolydian ports'. Mixolydian responded with a statement insisting that the government was complying with its obligations and that it would engage in no further discussions on the matter outside the annual meeting of parties under the TCGT.

Locrian, Mixolydian and Aeolian are all members of the United Nations, and Locrian and Mixolydian have deposited declarations under Article 36(2) of the Statute of the International Court of Justice ('ICJ') accepting the compulsory jurisdiction of the Court. Mixolydian's declaration includes no reservations. Locrian's declaration, lodged in January 2024, provides that Locrian does not accept the jurisdiction of the ICJ with respect to disputes '(a) where the parties have agreed to utilise another method of binding dispute settlement, or (b) arising out of facts or situations occurring prior to the making of this declaration.' Locrian wishes to commence proceedings against Mixolydian in the ICJ seeking orders that:

- (a) Mixolydian has breached the TCGT by enabling fishing for greenfin tuna in excess of the agreed national quotas;
- (b) Mixolydian has breached the TCGT by failing to control pollution from canning factories within its territory; and
- (c) Mixolydian has violated Locrian's sovereignty over Mode Island;

Locrian also wishes to request provisional measures from the ICJ. Advise Locrian.

B.13.1 Part A: Establishing ICJ Jurisdiction

Jurisdictional Basis:

- Assess whether the International Court of Justice (ICJ) has jurisdiction.
- Jurisdiction may arise under Article 10 of the Treaty on Conservation and Governance of Tuna (TCGT).
- Dispute crystallised in July 2024, marking the relevant timeline for jurisdiction.

• Treaty-Based Jurisdiction:

- Jurisdiction stems from Article 10 of the TCGT, as both states are parties to the treaty.
- Requires confirmation that the dispute falls within the treaty's scope.

Precondition of Negotiations:

- Negotiations are a prerequisite for ICJ jurisdiction (per Russia v. Ukraine, 2019).
- Facts are silent on whether negotiations occurred or failed.
- If negotiations took place, jurisdiction may be established (per Marshall Islands case for dispute crystallisation).
- Absence of negotiation details may challenge jurisdiction, as negotiation failure is fundamental.

B.13.2 Part B: Substantive Claims and Jurisdictional Considerations

Violation of Treaty Obligations:

- Locrian (L) argues a violation of Article 1 of the TCGT by Maris (M) due to failure in conservation and sustainable use of tuna.
- Last two lines of paragraph 3 of the facts suggest a breach of Article 1, enabling jurisdiction under Article 10.

· Scope of Pollution:

- Determine whether pollution caused by M falls within the TCGT's scope.
- Pollution's impact on tuna conservation is central to the claim.

• Maris's Counterargument:

 M may raise defences against L's claims, potentially arguing the pollution's irrelevance to the treaty or lack of direct causation.

Compulsory Jurisdiction under Article 36(2):

- Both L and M are parties to the ICJ Statute and have accepted compulsory jurisdiction under Article 36(2).
- L can bring the case to the ICJ under this provision.

· Reservations and Declarations:

- Analyse overlapping declarations of L and M for jurisdictional limits.
- L's declaration includes reservations that may restrict ICJ jurisdiction.
- Reservation (b) imposes a time limit, potentially barring L's claim if the dispute falls outside the temporal scope.
- M has no reservations, fully submitting to ICJ jurisdiction.
- L's declaration can be invoked by M (reciprocity principle), limiting jurisdiction based on L's own terms.
- If negotiations have not occurred, L may argue this precludes jurisdiction, further limiting the ICJ's role.

B.13.3 Part C: Alternative Jurisdictional Pathways and Third-Party Issues

• Inapplicability of Article 10:

- Article 10 of the TCGT does not apply, affecting claims under Articles 1 and 2.
- Jurisdiction must rely on other grounds, such as Article 36(2).

• Article 36(2) Application:

- Dispute's crystallisation in July 2024 falls outside L's reservation, enabling jurisdiction under Article 36(2).
- L's reservations may support their argument here, unlike in Part B.

Aeolian as an Indispensable Third Party:

- Aeolian's absence is critical, as paragraph 2 raises a sovereignty claim involving them.
- Aeolian must be a party to the dispute for the ICJ to proceed (Monetary Gold principle).
- Without Aeolian's consent, the case cannot be decided due to the Monetary Gold principle (absence of an essential third party).
- Reference *Portugal v. Australia*, where Indonesia's absence as an indispensable party barred adjudication.

B.13.4 Provisional Measures

Legal Basis and Precedents:

- Provisional measures governed by Article 41 of the ICJ Statute.
- Measures are legally binding (LaGrand, Germany v. US).
- India v. Pakistan case: ICJ stayed execution (urgent measure) but declined release (substantive issue, not urgent).

• Necessity for Part B:

- Irreparable harm to the tuna population due to climate degradation justifies provisional measures in Part B.
- Urgency exists due to the immediate threat to L's fishing interests.
- Part A and Part C lack comparable urgency or irreparable harm, precluding provisional measures.
- Only Part B satisfies conditions for provisional measures due to severe environmental impact.

A

- ACCC v PT Garuda (No 9) [2013] FCA 323 The Australian Competition and Consumer Commission (ACCC) alleged that PT Garuda engaged in price fixing for air cargo services, attempting to use expert evidence to prove public international law; the Federal Court rejected this, holding that public international law, like Australian law, cannot be proved by expert evidence, as the court itself determines the law. The case involved the ACCC's claim against PT Garuda for price fixing. The principle established is that public international law is treated as equivalent to Australian law in Australian courts and cannot be proved through expert evidence.
- Al-Kateb v Godwin (2004) 219 CLR 562 The High Court considered whether a stateless Palestinian man could be indefinitely detained due to the absence of a state for deportation; the majority held that the Australian Constitution is not interpreted to conform with international law, as doing so would violate s 128, which requires a referendum for constitutional amendments. The case involved a challenge to the indefinite detention of a stateless person. The principle clarified is that the Polites principle, which presumes legislation aligns with international law, does not apply to constitutional interpretation.
- Al-Saadoon v Secretary of State for Defence [2010] EWCA Civ 776 Al-Saadoon and others were detained in Iraq by British forces; the UK Court of Appeal held that the UK was bound by the Geneva Conventions, and had a duty to ensure detainees were treated in accordance with international law, including the prohibition on torture, demonstrating that regional customary norms can be applied as international law if they meet the high threshold of stability and continuity. British forces detained Al-Saadoon and others in Iraq, prompting a challenge on their treatment. The principle established is that regional customary norms, when sufficiently stable and continuous, can be enforced as international law, obligating states to uphold international humanitarian standards such as the prohibition on torture.
- Alabama Claims Arbitration (US/Britain) (1872) The US sought compensation from Britain for failing to prevent the construction of Confederate ships during the US Civil War; the tribunal held that Britain could not justify its failure in due diligence by citing insufficient domestic legal authority, establishing that states cannot rely on absent or inconsistent domestic law to avoid international obligations. The case arose from Britain's failure to stop Confederate shipbuilding. The principle confirmed is that states are accountable for international obligations regardless of domestic law deficiencies.
- Anglo-Norwegian Fisheries Case (1951) ICJ Rep 116 The UK challenged Norway's method of drawing baselines, asserting a customary rule prohibiting it; the ICJ held that Norway was exempt from this rule due to its persistent objection from the rule's inception. The case

involved a dispute where the UK contested Norway's baseline delineation for its fisheries zone. The principle confirmed is that a state persistently objecting to a customary international law rule from its formation is not bound by it.

Asylum Case (Colombia v Peru) (1950) ICJ Rep 266 Colombia granted political asylum to de la Torre, which Peru challenged; Colombia invoked a regional customary norm, but the ICJ rejected this, holding that regional standards require a higher degree of stability and continuity to apply as international law. The case arose when Colombia granted asylum to a Peruvian political figure, contested by Peru. The principle established is that regional customary norms must exhibit significant stability and continuity to be recognized as binding international law.

В

- Barcelona Traction (Belgium v Spain) [1970] ICJ Rep 3 Belgium brought a claim against Spain for harm to a Canadian-incorporated company with Belgian shareholders; the ICJ recognized that corporations can have legal personality in international law, allowing their interests to be protected under certain conditions. The case involved a dispute over Spain's actions affecting a company with Belgian interests. The principle established is that international law may recognize domestic legal institutions like corporations for the purposes of legal protection.
- Bay of Bengal (Bangladesh v Myanmar) (2012) ITLOS 12 Bangladesh and Myanmar disputed the delimitation of their maritime boundary in the Bay of Bengal; the International Tribunal for the Law of the Sea resolved the dispute by implicitly adopting general principles of international law into its decision. The case involved a maritime boundary dispute between Bangladesh and Myanmar in the Bay of Bengal. The principle applied is that general principles of international law can be implicitly incorporated to resolve maritime delimitation disputes.
- Bradley v Commonwealth (1973) 128 CLR 557 The Australian government shut down communications to the Rhodesian Information Centre, an agent of the illegal Southern Rhodesian regime, pursuant to a UN Security Council resolution; the High Court held that the resolution had no legal effect in Australia without legislative implementation, as executive action alone cannot incorporate international obligations into domestic law. The case involved the government's attempt to enforce a UN resolution without statutory authority. The principle confirmed is that international resolutions, like treaties, require legislative implementation to have domestic legal effect in Australia.

 \mathbf{C}

Chagos Marine Protected Area Arbitration (Mauritius v UK) (2015) XXXI RIAA 359 Mauritius challenged the UK's establishment of a Marine Protected Area in the Chagos Archipelago; the Tribunal held that it could apply the doctrine of estoppel, derived from various domestic legal systems, to determine the position under international law. The dispute arose over the UK's creation of a marine protected area, contested by Mauritius. The principle established is that international tribunals may draw on domestic legal doctrines like estoppel to inform decisions under international law.

Chow Hung Ching v R (1949) 77 CLR 449 Chinese army laborers convicted of assault in Papua New Guinea, then under Australian UN mandate, claimed immunity as visiting armed forces; the High Court held that no immunity applied, as they were present as civilians, and that customary international law is a source, not a direct part, of Australian law, applicable only if consistent with domestic law. The case involved a claim of immunity by Chinese laborers for assault charges. The principle established is that customary international law influences Australian common law as a source, but only where it aligns with domestic law.

Commonwealth v Tasmania (1983) 158 CLR 1 Tasmania challenged the validity of the World Heritage Conservation Act 1983 (Cth), which implemented the 1972 Convention Concerning the Protection of the World Cultural and Natural Heritage; the High Court held that the legislation was valid under the external affairs power, but the Commonwealth's power to implement treaties is not unlimited and must be proportionate to treaty objectives. The case involved a dispute over Commonwealth legislation protecting world heritage sites. The principle confirmed is that the external affairs power supports treaty implementation, but legislation must be reasonably appropriate and adapted to the treaty's objectives.

D

Dietrich v R [1992] HCA 57 The accused argued for publicly-funded legal representation under the International Covenant on Civil and Political Rights; the High Court held that treaty provisions do not form part of Australian law unless implemented by statute, as ratification alone is an executive act without domestic legal effect. The case involved a claim for legal aid based on an unimplemented treaty. The principle established is that treaties require legislative incorporation to be binding in Australian law.

G

Gabčíkovo-Nagymaros Case (1997) ICJ Rep 7 Hungary and Czechoslovakia disagreed over a 1977 treaty for a joint dam project on the Danube; Hungary suspended work due to environmental concerns, and the ICJ held that neither impossibility nor fundamental change of circumstances justified termination, emphasizing the principle of pacta sunt servanda. The case involved Hungary's attempt to terminate the treaty after suspending work, countered by Czechoslovakia's unilateral alternative. The principle reinforced is that treaties remain binding under pacta sunt servanda, and termination based on impossibility or fundamental change of circumstances requires exceptional conditions.

Η

Habib v Commonwealth (2010) 183 FCR 62 Habib, an Australian citizen, sued the Australian government for damages alleging torture overseas, claiming Australian authorities knew of his mistreatment; the Federal Court held that the foreign act of state doctrine yields to international prohibitions on torture, allowing the common law to reflect universal norms in serious international crimes. The case involved a civil claim for torture committed abroad. The principle established is that the common law should adapt to reflect universal international norms, such as the prohibition on torture, in civil claims involving serious crimes.

Horta v Commonwealth (1994) 181 CLR 183 Plaintiffs challenged the validity of legislation implementing the 1989 Timor Gap Treaty, arguing it was void due to Indonesia's unlawful occupation of East Timor; the High Court held that the external affairs power supports laws applying to geographically external matters, regardless of the treaty's international legality. The case involved a challenge to a treaty recognizing Indonesia's control over East Timor. The principle confirmed is that the external affairs power validates legislation for external matters, even if the underlying treaty is questioned under international law.

K

Koowarta v Bjelke-Petersen (1982) 153 CLR 168 The Aboriginal Land Fund Commission sued Queensland for refusing to approve a land transfer to Aboriginal purchasers, relying on the Racial Discrimination Act 1975 (Cth); the High Court upheld the Act's validity as it implemented the 1969 International Convention on the Elimination of All Forms of Racial Discrimination, affirming that treaty implementation falls under the external affairs power. The case involved Queensland's refusal to allow Aboriginal land purchase. The principle established is that the external affairs power supports legislation implementing international treaties, including those addressing discrimination.

L

- Law Debenture Trust v Ukraine [2023] UKSC 11 Ukraine ceased loan repayments to Russia, citing economic and military duress and countermeasures due to Russia's 2014 annexation of Crimea; the UK Supreme Court held that English law, not international law, governed the contract dispute, but customary international law can serve as a source for common law if consistent with domestic law. The case involved a loan dispute amid Russia-Ukraine conflict. The principle clarified is that customary international law is a source for English common law, but only where it aligns with domestic law.
- Legal Status of Eastern Greenland (Denmark v Norway) (1993) PCIJ Series A/B, No 53 The Permanent Court of International Justice held that Norway was bound by an oral undertaking given to Denmark not to oppose its claim to sovereignty over Greenland, obligating Norway to refrain from contesting Danish sovereignty. The case arose when Norway challenged Denmark's claim, despite an earlier oral commitment. The principle established is that oral undertakings by states can create binding international obligations.
- Legality of the Threat or Use of Nuclear Weapons (1996) ICJ Rep 226 The ICJ held that the use of nuclear weapons is generally contrary to international law, but no specific rule prohibits their use in all circumstances, and UNGA resolutions, while not binding, can provide evidence of customary international law. The case addressed a request for an advisory opinion on the legality of nuclear weapons. The principle clarified is that UNGA resolutions may reflect customary international law, and nuclear weapon use is generally unlawful absent exceptional circumstances.

M

Mabo v Queensland (No 2) (1992) 175 CLR 1 The High Court recognized native title for Indigenous Australians, rejecting automatic incorporation of international law into Australian law but acknowledging its influence, particularly for universal human values like human rights. The case involved a claim for Indigenous land rights. The principle

established is that international law, while not automatically part of Australian law, is a legitimate influence on common law development, especially for universal norms.

Maritime Delimitation and Territorial Questions (Qatar v Bahrain) (1994) ICJ Rep 112 The ICJ held that the 1987 exchanges of letters and 1990 Doha Minutes between Qatar and Bahrain constituted binding international agreements, obligating them to submit their maritime and territorial disputes to the Court, emphasizing that exchanges of letters can form valid treaties. The case involved Qatar's unilateral referral of disputes over the Hawar Islands and maritime boundaries, contested by Bahrain. The principle established is that exchanges of letters and minutes can constitute binding treaties under international law.

N

- Nicaragua v Colombia (2012) ICJ Rep 624 Nicaragua claimed Colombia violated its continental shelf and exclusive economic zone rights; the ICJ held that Nicaragua had rights to an exclusive economic zone, Colombia's actions were unlawful, and treaties reflecting opinio juris may bind non-parties. The dispute arose from Nicaragua's challenge to Colombia's maritime actions. The principle confirmed is that treaties indicative of opinio juris can bind non-parties, and states have enforceable exclusive economic zone rights.
- Nicaragua v United States (1986) ICJ Rep 14 Nicaragua sued the US for supporting Contra rebels; the ICJ held that the US violated international law by using force, that customary international law prohibits such force, and that state practice need only be consistent, not uniform, to form custom. The case stemmed from US support for Nicaraguan rebels, challenged by Nicaragua. The principle established is that customary international law bars the use of force, with consistent state practice sufficing to establish customary norms.
- North Sea Continental Shelf (1969) ICJ Rep 3 Germany, Denmark, and the Netherlands disputed continental shelf boundaries; the ICJ held that customary international law requires good-faith negotiation for delimitation, and equidistance is a method, not a binding rule. The case involved a dispute over North Sea continental shelf boundaries. The principle clarified is that states must negotiate in good faith to delimit continental shelves, with equidistance as a non-binding method.
- Nuclear Test Cases (Australia v France) (1974) ICJ Rep 253 The ICJ held that France's unilateral public declaration to cease atmospheric nuclear tests was binding, establishing that such declarations, made with intent to be bound, have legal effect. The case arose when Australia challenged France's nuclear testing in the Pacific. The principle confirmed is that unilateral declarations by states, publicly made with intent, create binding international obligations.
- Nulyarimma v Thompson (1999) 165 ALR 621 Indigenous Australians argued that the Commonwealth committed genocide by extinguishing native title and failing to seek UNESCO World Heritage listing for Indigenous lands; the Federal Court held that genocide, as a customary international law crime, is not part of Australian common law, and criminal offenses must be created by statute, not courts. The case involved allegations of genocide against Commonwealth officials. The principle established is that customary international law crimes, like genocide, cannot automatically become part of Australian common law without legislative implementation.

P

The Paquete Habana (1900) 175 US 677 The US Supreme Court held that customary international law, which protects foreign fishing vessels in territorial waters, is part of US law, and judicial decisions provide trustworthy evidence of international law. The case involved the seizure of Cuban fishing vessels by the US during wartime. The principle confirmed is that customary international law is enforceable in domestic courts, with judicial decisions serving as compelling evidence.

Polites v Commonwealth (1945) 70 CLR 60 A Greek national challenged conscription into the Australian forces, arguing it violated international law prohibiting alien conscription; the High Court upheld the legislation's validity but emphasized that statutes should be interpreted to avoid breaching international law where possible, establishing the Polites principle. The case involved a foreign national's challenge to conscription. The principle confirmed is that Australian legislation is presumed to align with international law unless clearly inconsistent.

R

R v Jones [2006] 2 All ER 741 Defendants damaged a UK airbase to prevent the crime of aggression during the Iraq War, claiming justification under customary international law; the House of Lords held that the crime of aggression, though recognized in customary international law, is not part of English law without statutory incorporation, preserving legislative authority. The case involved activists damaging military equipment to protest the Iraq War. The principle established is that customary international law crimes, like aggression, require domestic legislation to be enforceable in English courts.

Republic of India v CCDM Holdings, LLC [2025] FCAFC 2 The Full Federal Court of Australia applied VCLT provisions to determine that India's reservation to a convention modified treaty provisions reciprocally for both India and Australia in a foreign state immunity case, reinforcing the principle of reciprocity in treaty reservations. The case involved a dispute over whether India's reservation applied in Australian proceedings. The principle established is that treaty reservations have reciprocal effects, modifying obligations for both reserving and accepting states.

 \mathbf{S}

Sandline Arbitration (1998) Papua New Guinea (PNG) contracted Sandline International for mercenary services but refused to pay the remaining amount, claiming the contract violated its constitution; the tribunal held that international law governed the contract, and PNG could not rely on internal law to invalidate an international obligation. The case involved PNG's non-payment for mercenary services due to constitutional issues. The principle confirmed is that states cannot use domestic law to escape international contractual obligations.

T

Trendex Trading [1977] QB 529 Trendex sued the Central Bank of Nigeria for breaching a contract governed by English law; the Court of Appeal held that the bank could not claim state immunity, as international law had evolved, and English courts could apply these

changes without statutory intervention, reflecting a dynamic incorporation of international law. The case involved a contract dispute over cement shipments. The principle established is that English courts may apply evolving international law rules to domestic cases without parliamentary action.

U

Ure v Commonwealth (2016) 329 ALR 452 Australian citizens attempted to claim sovereignty over unclaimed islands; the Federal Court held that only states, not individuals, can assert sovereignty under international law, affirming *ICJ Statute* Art 38 as good law on international law sources. The case involved citizens' unauthorized sovereignty claims over islands. The principle established is that only states have the capacity to assert territorial sovereignty under international law.

W

Whaling in the Antarctic Case (2014) ICJ Rep 226 Australia challenged Japan's JARPA II whaling program, and the ICJ held that it constituted commercial whaling, violating the International Convention for the Regulation of Whaling, as it was not for scientific research, and resolutions, while not binding, inform treaty interpretation. The case involved Australia's claim that Japan's whaling was commercial, not scientific. The principle clarified is that treaty interpretation under the VCLT considers objective program design, and non-binding resolutions can guide interpretation.

Glossary

В

Bill of exchange A written order binding one party to pay a fixed sum of money to another party on demand or at a predetermined date

 \mathbf{E}

Erga omnes A Latin term meaning "towards all"; refers to obligations that a state owes to the international community as a whole, rather than to specific states

Η

Habeas corpus A legal action or writ by means of which detainees can seek relief from unlawful imprisonment

I

Immunity *ratione materiae* The immunity of an individual from the jurisdiction of foreign national courts by virtue of their acts being performed in their official capacity and as part of their duties as a state official

Immunity *ratione personae* The immunity of an individual from the jurisdiction of foreign national courts by virtue of their status or office in representing a state, regardless of the nature of the acts performed

In rem A legal term meaning "against a thing"; refers to a legal action directed against a specific piece of property, rather than against a person

Inter alia Among other things; used to indicate that a statement or list is not exhaustive and that there are additional items or considerations

J

Jus cogens Peremptory norms of individual from which no derogation is permitted (i.e., they are absolute and binding, irrespective of any objections)

O

Opinio juris A subjective belief that a state perceives itself to be bound by a legal practice

P

344 Glossary

Pacta servanda sunt "Agreements must be kept"; the oldest principle in international law

Prima facie At first sight; based on the first impression; accepted as correct until proven otherwise

Q

Qua In the capacity of; as being; used to indicate the role or function of a person or thing in a particular context

R

Raison d'être The most important reason or purpose for someone or something's existence

U

Ultra vires Beyond the powers; refers to acts performed beyond the scope of authority or power of a person or entity

 \mathbf{V}

Vitiate Spoil or impair the quality or efficiency of something